Remove Watermark Now

Catalog

Combine 1

152 to end 2
वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास- 1-१५१ 96

pdfelement

Remove Watermark Now

Catalog

152 to end 1
वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास- 1-१५१ 95

pdfelement

'अ' का अर्थ बड़ा हितकारी, अग्रज बनकर बढ़ना सीखो।
बड़े भाई हो तुम छोटों को, गले लगाकर बढ़ना सीखो।
'ग' का अर्थ बड़ा सुखकारी, निज गरिमा का ध्यान करो।
गौरवमयी इतिहास तुम्हारा, उसका तुम सम्मान करो।

'र' का अर्थ बड़ा ही प्यारा, रवि सम चमको भूमण्डल में।
शौर्य तुम्हारा अटल रहे, ऐसे बन चमको नीलाम्बर में।
'व' का अर्थ बड़ा गुणकारी, वीरोचित हुँकार भरो।
महावीरों की संतान हो तुम, ऐसा मन में ध्यान धरो।

'आ' का अर्थ बना है सुन्दर, आगे बढ़ते जाना है।
सब भाईयों को साथ में लेकर, उनको गले लगाना है।
'ल' का अर्थ लक्ष्मी माता की, कृपा है तुम पर भारी।
परोपकार के कार्य करो तुम, ऐश्वर्य कमाओ तुम भारी।

अग्रवाल का भाव समझकर, इतिहास रचो गौरवशाली।
वीर-भूमि के वीर-पुत्र हों, संतान बनाओ बलशाली।
अब तुम बनकर प्रचण्ड सूर्य, इस नील गगन में छा जाओ।
विद्युत जैसी गति लेकर, इस महान धरा पर छा जाओ।।

अग्रवालों के अट्ठारह गोत्र

महाराजा अग्रसेन ने तत्कालीन 18 कबीलों को, अर्थात 18 उपजातियों को अर्थात 18 श्रेणियों को, एक सूत्र में आबद्ध करके सुसंगठित वैश्य अग्रवाल जाति का निर्माण किया तथा उनके रक्त की शुद्धता और पवित्रता के लिए, उन्हें गोत्र प्रदान किया। एक गोत्र का व्यक्ति, अपने गोत्र में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता था, अर्थात् अपने गोत्र को बचाकर, दूसरे गोत्र में ही वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर सकता था। रक्त शुद्धि और संस्कारों की पवित्रता के लिए वैश्य अग्रवालों को दूसरी जाति में

वैवाहिक सम्बंध स्थापित करना भी निषिद्ध था।

गोत्र धारण करने का तरीका- अट्ठारह श्रेणियों को एक सूत्र में आबद्ध करने हेतु, एक वैज्ञानिक तरीका अपनाया गया, जिसके अनुसार अट्ठारह यज्ञ किये गये। पहले दिन गर्ग ऋषि के द्वारा यज्ञ कराया गया तथा गर्ग गोत्र प्रदान किया गया। दूसरे दिन गोभिल ऋषि द्वारा यज्ञ कराया गया तथा गोयल गोत्र प्रदान किया गया। तीसरे दिन गौतम ऋषि द्वारा यज्ञ कराया गया तथा गोयन गोत्र प्रदान किया गया। चौथे दिन वात्सल्य ऋषि द्वारा बंसल गोत्र प्रदान किया गया। पाँचवे दिन कौशिक ऋषि द्वारा कंसल गोत्र प्रदान किया गया। छठे दिन शांडिल्य ऋषि द्वारा सिंहल गोत्र प्रदान किया गया। साँतवे दिन माण्डलिक (माण्डक) ऋषि द्वारा प्रदान मंगल गोत्र प्रदान किया गया। आठवें दिन जैमिनी ऋषि द्वारा जिन्दल गोत्र प्रदान किया। नौवें दिन ताण्डय ऋषि द्वारा तिंगल गोत्र प्रदान किया। दसवें दिन औरण (उरू) ऋषि द्वारा ऐरण गोत्र प्रदान किया गया। ग्यारहवें दिन धौम्य ऋषि द्वारा धारण गोत्र प्रदान किया गया। बारहवें दिन मुद्गल ऋषि द्वारा मधुकुल गोत्र प्रदान किया गया। तेरहवें दिन वशिष्ठ ऋषि द्वारा बिन्दल गोत्र प्रदान किया गया। चौदहवें दिन मैत्रेय ऋषि द्वारा मित्तल गोत्र प्रदान किया गया। पन्द्रहवें दिन तैत्तिरेय ऋषि द्वारा तायल गोत्र प्रदान किया गया। सोलहवें दिन भारद्वाज ऋषि द्वारा भन्दल गोत्र प्रदान किया गया। सतरहवें दिन नगेन्द्र ऋषि द्वारा नागल गोत्र प्रदान किया गया। अठारहवें दिन कश्यप ऋषि द्वारा कुच्छल गोत्र प्रदान किया गया। अठारहवें दिन यद्यपि पशु बलि न देने के कारण यज्ञ अधूरा ही छोड़ दिया गया था, तथापि गो प्रदान की कार्यवाही पूर्ण हो चुकी थी।

अट्ठारह गोत्र तथा उनके प्रस्तावित ऋषियों के शुद्ध नाम निम्न प्रकार हैं-

pdfelement
Remove Watermark Now

	गोत्र	प्रस्तावित ऋषि
1.	गर्ग	गर्ग
2.	गोयल	गोभिल
3.	गोयन	गौतम
4.	बंसल	वात्सल्य
5.	कंसल	कौशिक
6.	सिंहल	शाण्डिल्य
7.	मंगल	माण्डक (माण्डलिक)
8.	जिन्दल	जैमिनी
9.	तिंगल	ताण्डय
10.	ऐरण	औरण (उरू)
11.	धारण	धौम्य
12.	मधुकुल	मुद्गल
13.	बिन्दल	वशिष्ठ
14.	मित्तल	मैत्रेय
15.	तायल	तैत्तिरेय
16.	भन्दल	भारद्वाज
17.	नागल	नागेन्द्र
18.	कुच्छल	कश्यप

जाति और गोत्र में अन्तर

1. जाति का आधार श्रम विभाजन है तथा गोत्र का आधार रक्त की शुद्धि है।
2. जाति एक अन्तर्विवाहिक समूह है, जबकि गोत्र वहिर्विवाही समूह है।

3. गोत्र संगठन में ऊँच-नीच का विचार नहीं होता, जबकि जाति प्रथा में ऊँच-नीच का भेद होता है।
4. गोत्र में सामुदायिक भावना कम होती है, जबकि जाति में यह भावना अधिक होती है।
5. गोत्र अपने सदस्यों में खाने-पीने या अन्य मामलों में प्रतिबन्ध लागू नहीं करता, जबकि जाति में यह प्रतिबन्ध होते हैं।

गोत्रों का महत्व

गोत्र ब्राह्मण संस्था थी, लेकिन क्षत्रियों और वैश्यों ने भी अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने हेतु गोत्र प्रथा को अपना लिया। इस विषय में प्रोफेसर वाशम ने अपनी स्पष्ट टिप्पणी करते हुए लिखा है, कि "ब्राह्मणों के सामाजिक सम्मान ने प्रतिष्ठित श्रेणियों का किसी न किसी प्रकार गोत्र प्रथा अपनाने पर पथ-प्रदर्शन किया। क्षत्रियों तथा वैश्यों ने उन्हीं गोत्रों को अपनाया जो कि ब्राह्मणों के थे।"

मैंने यहाँ पर अपनी कविता के माध्यम से अग्रवालों के अट्ठारह गोत्रों की विशेषताओं पर प्रकाश ड़ाला है। इसे बार-बार दोहराने से हमारे अन्दर आत्म-गौरव का स्पन्दन होता है।

अग्रवालों के अट्ठारह गोत्रों की महिमा.....

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

पहला गोत्र 'गर्ग' गोत्र है, निज गरिमा का ध्यान धरो,
वैश्य एकता पल्लवित करके, उसका तुम सम्मान करो।
'गोयल' गोत्र बताता हमको, गौरवमयी इतिहास हमारा,
हेमू जैसे सम्राट हुये हैं, गुप्त काल इतिहास हमारा।

pdfelement
Remove Watermark Now

'बंसल' कहता बलवान बनो तुम, डर कर कभी न जीना।
वीरों की संतान हो तुम, कायर बनकर कभी न रहना।

'सिंहल' कहता सिंह सम गरजो, नील गगन में छा जाओ।
बैरी के सम्मुख आने पर, तुम महाकाल बन जाओ।

'मंगल' कहता सुमंगल करके, इस महान धरा पर छा जाओ।
वैभवमयी इतिहास हमारा, इस भूमण्डल पर छा जाओ।

'जिन्दल' कहता जीना सीखो, गीत प्यार के गाओ।
तुम मानस के राजहंस हो, मोती चुनकर ले जाओ।

'ऐरन' कहता प्रतिदिन हमको, ऐश्वर्यशाली बनना है।
भारतमाता के लाल हो तुम, सुभट, स्वाभिमानी बनना है।

'धारण' गोत्र कहता है हमसे, जग में ऐसा काम करो।
सत्य, प्रेम को धारण करके, जीवन सफल बना डालो।

'मधुकुल' गोत्र कहता है हमसे, मधु जैसे बन जाओ।
अपनी मीठी वाणी से तुम, प्रेम की वर्षा बरसाओ।

'तिंगल' गोत्र कहता है, कसम तिरंगे की खाओ।
राष्ट्र हित यह शीश कटेगा, ऐसी अलख जगाओ।

'गोयन' गोत्र कहता है हमसे, परम्पराओं का ध्यान करो।
गौसेवा का व्रत लेकर तुम, पर्यावरण का ध्यान करो।

'मित्तल' गोत्र कहता है मित्रों, मित्र बनाओं सबको।
अपनी सुन्दर वाणी से, तुम गले लगाओ जग को।

'तायल' गोत्र कहता है हमसे, तारीफ करे हम सबकी।
कभी किसी की ना करें बुराई, हम करें बड़ाई सबकी।

'बिन्दल' गोत्र कहता है हमसे, मोती जैसा बिंध जाओ।
बन कर माला मणियों की, सब एक सूत्र में बंध जाओ।

'भन्दल' गोत्र कहता है हमसे, भय को दूर भगा डालो।
भारतमाता के लाल हो तुम, नया इतिहास रचा डालो।

'नागल' कहता नागराज सम, तुम सबका भार उठाओ।
शेषनाग की भाँति अब तुम, पृथ्वी का भार उठाओ।

'कुच्छल' गोत्र कहता है हमसे, कुछ नहीं असम्भव जीवन में।
अपना लक्ष्य महान बनाओ, पूर्ण कर डालो जीवन में।

'कंसल' गोत्र कहता है हमसे, कंस वृत्ति ना पाओ।
सुन्दर-सुखमय पावन पथ में, अपने कदम बढ़ाओ।

ऊँच-नीच का भेद मिटाकर, सबको गले लगाओ।
प्रेम पीयूष की धार बहाकर, आगे बढ़ते जाओ।

अग्रवालों के अट्ठारह गोत्रों की, महिमा हमने गाई है।
वेद-पुराणों से जो सीखा हमने, वही स्तुति गाई है।।

अग्रोहा के उत्थान-पतन की कहानी

सन् 1888-89 में सी0टी0 रॉजर्स ने सर्वप्रथम अग्रोहा की खुदाई करवाई थी। खुदाई में अन्य सामान के साथ बहुत मात्रा में राख निकली थी जिससे विद्वानों ने यह निष्कर्ष निकाला था कि यहाँ पर भीषण अग्निकाण्ड हुआ होगा। उसके बाद 1938-39 में दुबारा खुदाई का कार्य प्रारम्भ हुआ। उससे यह स्पष्ट हुआ कि यहाँ पर पहले एक समृद्धिशाली शासक रहा होगा तथा इस राज्य की 'संस्कृति' महान रही होगी। इस बार की खुदाई में भी भीषण अग्निकाण्ड की पुष्टि हुई। इस भीषण अग्निकाण्ड के कारण क्या थे इस पर विद्वानों ने अपना म व्यक्त करते हुए लिखा है, कि अग्रोहा अपने वैभव और ऐश्वर्य लिए प्रसिद्ध था। अतः जो भी विदेशी आक्रमणकारी आता था, व अग्रोहा को लूटने का या ध्वस्त करने का प्रयास करता था। सब

pdfelement
Remove Watermark Now

पहले सिकन्दर ने इस राज्य पर आक्रमण किया। उसने मकान गिराकर या तो ध्वस्त कर दिये या उन्हें जलाकर विध्वंस कर दिये। सिकन्दर के आक्रमण के पश्चात् अग्रश्रेणी अग्रोहा के आस-पास बस गये। उसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने जब अपने साम्राज्य का विस्तार किया तब मौर्यों ने इस राज्य की आन्तरिक व्यवस्था को ज्यों का त्यों बने रहने दिया तथा इस क्षेत्र के शासकों ने भी मौर्यों के अधिराज्य को स्वीकार कर लिया।

मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् इस प्रदेश के गणराज्य पुनः सक्रिय हो गये। अग्रोहा के शासकों ने पुनः स्वतन्त्र सत्ता कायम कर ली। इसके बाद वैक्ट्रियाई और शकों ने इस पर आक्रमण किया। ये विदेशी आक्रमणकारी अपने विरोधियों को नष्ट कर देते थे तथा जो भी राजा उनकी अधीनता स्वीकार नहीं करते थे, उन्हें वे लूटपाट करके जला देते थे। इन्हीं आततायियों ने इनकी अधीनता स्वीकार न करने के कारण इस नगर को जलाया होगा। उसके बाद अग्रोहा पुनः बसाया गया। तत्पश्चात तोमर वंशीय राजाओं ने उसे अपने आधिपत्य में कर लिया। उसके बाद यह नगर पृथ्वीराज चौहान के आधिपत्य में आ गया। मौहम्मद गौरी तथा पृथ्वीराज चौहान के मध्य हुए युद्ध ने इस नगर को पूर्णतः नष्ट कर दिया, क्योंकि यह युद्ध हिसार जिले में ही हुआ था। अतः अग्रोहा उस भीषण युद्ध के दुष्परिणाम का भागीदार हुआ। गौरी ने इस युद्ध में विजय के पश्चात् यहाँ के निवासियों को जमकर लूटा, तत्पश्चात इस नगर में भयंकर अग्निकाण्ड हुआ तथा हजारों वैश्य महिलाओं ने आग में कूदकर "जौहर" करके अपने सतीत्व की रक्षा की।

"अग्रवालों की विशिष्ट परम्परा सती पूजा"

अग्रवाल जाति में सतियों का एक गौरवपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ पर कुछ प्रख्यात सतियों के बलिदान की गाथाओं का वर्णन संक्षेप में किया जा रहा है। जिस प्रकार अग्रवाल जाति के गौरव, ऐश्वर्य, वैभव की सम्पूर्ण विश्व में चर्चा की जाती है, उसी के साथ-साथ इन सतियों की गौरवमयी गाथाओं का वर्णन भी किया जाता है। ये महान सतियाँ भी हमारे गौरवमयी इतिहास की महान धरोहर हैं।

1. अग्रोहा की सती शीलादेवी : इस नगर में सेठ हरभजन शाह रहते थे। उनकी एक पुत्री थी शीलादेवी। उसका विवाह मेहताशाह, जो कि स्याल कोट के दीवान थे, के साथ सम्पन्न हुआ। शीलादेवी बहुत सुन्दर थी सियाल कोट का राजा रिसालू भी उसे अपनी पटरानी बनाना चाहता था। एक बार राजा ने मेहता शाह को बाहर भेज दिया तथा स्वयं शीला के महल जा पहुँचा। शीला ने खतरे का अनुमान लगा लिया तथा अपने सतीत्व की रक्षा के लिए राजा के बाल पकड़कर उसे नीचे गिरा दिया और कटारी हाथ में लेकर उसकी छाती पर चढ़कर बैठ गयी। राजा ने पैर छूकर उससे अपने प्राणों की भिक्षा माँगी। तब शीलादेवी को दया आ गयी तथा उसने राजा रिसालू को छोड़ दिया। राजा ने घर पहुँचकर अपनी बाँदी के द्वारा अपनी अगूँठी शीला के बिस्तर में छिपा दी। अगले दिन जब मेहताशाह आया तो उसे बिस्तर पर राजा की अगूँठी दिखाई दी। मेहता के मन में शीला के प्रति विक्षोभ जाग उठा। उसने उसका परित्याग कर दिया। शीला देवी अपने पिता के घर पर अग्रोहा पहुँच गई। कुछ दिन बाद बाँदी (सेविका) ने मेहता शाह को बताया कि शीला देवी निर्दोष है। वह अगूँठी मैंने ही बिस्तर के नीचे छुपाई थी। तब मेहता शाह को अपनी गलती पर पश्चाताप हुआ तथा शीला को

pdfelement
Remove Watermark Now

खोजता हुआ अग्रोहा पहुँच गया और शीला के गम में ही भूखा प्यासा रहकर उसने अग्रोहा में ही अपने प्राण त्याग दिये। जब शीला को यह पता चला तो वह अपने पति के शव को अपनी गोद में रखकर, चिता में बैठ गई। आज उनकी याद में शीला देवी का भव्य मन्दिर अग्रोहा में बना हुआ है।

2. झुझंनू की राणी सती : तनधन दास जी का विवाह मेहम के ठोकुआ ग्राम के सेठ मुरसामल गोयल की पुत्री नारायणी देवी के साथ हुआ था। गौना करवाने जब वे ससुराल पहुँचे, तो नवाब के सैनिकों ने उन्हें घेरकर मार दिया। तत्पश्चात नारायणी देवी ने तलवार सम्भाली तथा कई सैनिकों को मार डाला। कुछ प्राण बचाकर भाग गये। तनधन का एक सेवक बचा था। उसकी सहायता से चिता तैयार करके नारायणी देवी अपने पति के शव के साथ सम्वत 1350 की मार्घ शीर्ष कृष्णा नवमी के दिन सती हो गई। उसी स्थान पर एक विशाल मन्दिर बनाया गया है।

3. झुझंनू की चिड़ी एवं मोली सती : सम्वत् 1352 में दोनों अपने पति सेठ हृदयराम के शव के साथ सती हो गई थीं।

4. झुझंनू की चाबी सती : बागड़ के सूरजमल जी का विवाह चावली देवी के साथ हुआ था। एक बार सूरजमल जी ससुराल जा रहे थे। तब डाकुओं ने उन्हें घेर लिया। डाकुओं से मुकाबला करते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुए। जब चावली देवी को पता चला तो वे ससुराल में आकर पति के साथ सती हो गयी। झुझंनू में उनका मन्दिर आज भी विद्यमान है। इसी प्रकार सतियों के कुछ अन्य उदाहरण निम्न प्रकार से हैं-

5. झुझंनू की खेमी सती तथा मुकी सती

6. मकुन्द गढ़ की बरजल सती

7. फतेहपुर की धोती सती

8. भण्डुदा (सीकरी) की मानासती

9. राम गढ़ की अमर सती

10. जयपुर की रूकमावाई सती

11. लक्ष्मीणगढ़ की तीन सतियाँ

इसके अतिरिक्त गर्ग में अपर्णा सती, सिंहल गोत्र में सुषभामा सती, कंसल गोत्र में स्थोरामा सती, तायल गोत्र में आशा सती, मंगल गोत्र में जैना सती, बिन्दल में पदमा सती, गोयन में अणवे सती, मित्तल में पुरेन्दरी सती, गोयल में मानसी सती, जिन्दल में रूप मती व पदमावती, बंसल में क्षमा सती, कुच्छल में दक्षाणी सती आदि प्रख्यात सतियों की गाथाओं से वैश्य अग्रवाल जाति का इतिहास गौरवान्वित हुआ है।

अग्रवालों में दस्सा-बीसा-पंजा का भेद

यद्यपि अब यह भेद समाप्त होता जा रहा है तथापि इस पर संक्षेप में प्रकाश डाला जा रहा है।

डाक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार के अनुसार जो अग्रवाल रक्त शुद्धि के सिद्धान्त को मानते हैं अर्थात् अपने गोत्र में शादी-विवाह नहीं करते तथा जाति में ही करते हैं, बीसा अग्रवाल है तथा जो रक्त शुद्धि के सिद्धान्त को नहीं मानते वे दस्सा अग्रवाल कहलाते हैं।

अर्थात् जो अपनी जाति से बाहर शादी करते हैं, या अपने ही गोत्र में ही कर लेते हैं, वे दस्सा अग्रवाल कहलाते हैं। मध्य प्रदेश तथा महाराष्ट्र में कुछ अग्रवाल पंजे भी कहलाते हैं। उनकी स्थिति दस्सों से भी नीचे हैं।

pdfelement
Remove Watermark Now

इस विषय में दूसरा मत यह भी है कि अग्रवालों के सुधारवादी आन्दोलन कर्ताओं से असहमति प्रकट करने के लिए कट्टरपंथी लोगों ने, सुधारवादी अग्रवालों को, अपने से हेय समझा। अर्थात कट्टरपंथी अपने को शत प्रतिशत शुद्ध मानते थे, वे बीसा कहलाये तथा सुधारवादियों को वे दस्सा कहने लगे। दस्सों में कुछ और सुधारवादी तथा प्रगतिवादी व्यक्ति हुए। उनको दस्से अपने से हेय समझने लगे और पंजे कहलाये।

अग्रवाल जाति के प्रमुख व्यक्ति

1. **मधुशाह अग्रवाल** : अकबर के समय में टकसाल के इंचार्ज थे।
2. **राजा टोडर मल अग्रवाल** : ये अकबर के दरबार के नवरत्नों में एक थे तथा अकबर के राजस्व मंत्री थे। इन्होंने सबसे पहले कृषि योग्य भूमि की पैमाइश की थी।
3. **राय राम प्रताप** : इन्हें अकबर ने राय का खिताब दिया था।
4. **लाला राधा कृष्ण** : इन्होंने बादशाह मुहम्मद शाह को करोड़ों रुपये उधार दिये थे।
5. **दीवान परतीराम** : इन्हें सुल्तान सिकन्दर लोदी ने दीवान का पद दिया था।
6. **मनोहर दास शाहबनारसी** : ये टीपू सुल्तान के सहायक थे।
7. **राजा बहादुर शम्भू प्रसाद** : हैदराबाद के नवाब ने इन्हें आसफजाही का खिताब दिया था। इनकी एक मुसलमान बेगम भी थी।
8. **राजा शिव प्रसाद बहादुर** : निजाम ने इन्हें इंतजामें फौज तथा मनसबदार हजारी की उपाधि दी थी।
9. **लाला द्वारिका दास** : रुहेल खण्ड में नवाबों के कानूनगो थे।

10. **चौधरी चोखेराम** : इन्हें औरगंजेब ने कानूनगो का खिताब दिया था।
11. **शाह गोविन्द चन्द** : इन्हें अवध के नवाब ने शाह का खिताब दिया था।
12. **दीवान नन्हूमल पटनीराम** : आप पटियाला के महाराजा अमर सिंह के दीवान थे। आपने अपने पूर्वजों की भूमि अग्रोहा में 1765 से 1781 के बीच एक अत्यन्त सुदृढ़ दुर्ग का निर्माण कराया था जिसके अवशेष आज तक विद्यमान है।
13. **शाह रघुवर दयाल जी** : ये लखनऊ नवाब के राजस्व विभाग के प्रधान थे।
14. **दीवान हट्टीराम जी** : आपके पूर्वज कश्मीर स्टेट के दीवान थे। बाद में उन्हें कश्मीर छोड़ना पड़ा। लाला हट्टीराम झींद स्टेट के दीवान रहे थे।

"सुप्रसिद्ध महान साहित्यकार एवं कवि गण"

	नाम	जन्म
1.	श्रीधर	सम्वत् 1189
2.	सुधारू	सम्वत् 1411
3.	हरिशचन्द्र	--
4.	वीरूकवि	सम्वत् 1586
5.	मेधावी	--
6.	छीहल	सम्वत् 1575
7.	नन्द लाल	सम्वत् 1663
8.	भाऊ गर्ग	सम्वत् 1676
9.	वंशीदास	सम्वत् 1695

Remove Watermark Now

10.	रूपचन्द	सम्वत् 1692
11.	जगजीवन	सम्वत् 1701
12.	भगवती दास	सम्वत् 1651
13.	भिनोदी लाल	सम्वत् 1736
14.	मूलचन्द	सम्वत् 1739
15.	मानसिंह	सम्वत् 1706
16.	बिहारी लाल	सम्वत् 1706
17.	धानत राय	सम्वत् 1733
18.	जगत राम	सम्वत् 1784
19.	वृन्दावन लाल	सम्वत् 1784
20.	जोगीदास	--
21.	संतलाल	सम्वत् 1834
22.	निहाल चन्द	सम्वत् 1867
23.	शीतल प्रसाद	सम्वत् 1878
24.	वासी लाल	सम्वत् 1884
25.	परमेष्ठि सहाय	सम्वत् 1894
26.	हरगू लाल	सम्वत् 1903
27.	हीरा लाल	सम्वत् 1913
28.	तुलसी राम	सम्वत् 1916
29.	बख्तावरमल	--
30.	ऋषभदास	सम्वत् 1943
31.	मेहरचन्द	--
32.	दयाचन्द	सम्वत् 1945
33.	बाबू हरिशचन्द	सम्वत् 1850
34.	रत्नाकर प्रसाद	--
35.	बाल मुकुन्द गुप्त	--
36.	हनुमान प्रसाद पौद्दार	--
37.	रायकृष्ण दास	--

अग्रोहा का पुनर्निर्माण

अग्रोहा नगर जलने के बाद खेड़े के रूप में सैकड़ों वर्षों तक पड़ा रहा। अग्रोहा के निवासी आसपास के शहरों में जाकर बस गये। मेहम नगर में रहने वाले हरभज शाह को एक दिन एक व्यापारी मिला जो ग्यारह सौ ऊँटों पर केसर लेकर मेहम आया था। इस व्यापारी का नाम श्रीचन्द था। इसके कारिन्दों को यह आदेश था कि समस्त केसर एक ही व्यक्ति को बेची जायेगी। उसके कारिन्दे नगर-नगर घूमते रहे, पर केसर खरीदने का साहस कोई नहीं कर सका। अन्त में वे कारिन्दे मेहम आये, जहाँ सेठ हरभज शाह की हवेली का निर्माण हो रहा था। सेठ के मुनीम ने हरभज शाह से केसर बेचने वाले व्यापारी की चर्चा की। हरभज शाह ने कहा कि यह प्रतिष्ठा का प्रश्न है। अतः उन्होंने कहा कि मेहम से कोई व्यापारी वापिस नहीं जायेगा। उन्होंने अपने मुनीम और नौकरों को आदेश दिया कि समस्त केसर खरीद कर तहखाने में भरवा दें। केसर खरीद ली गई। श्रीचन्द ने जब यह बात सुनी तो उसने हरभज शाह को एक पत्र लिखा, कि हवेली बनाने में कोई गौरव नहीं, जब तक कि उनकी जन्मभूमि निराश्रित और उपेक्षित पड़ी हुई है।

हरभज शाह को यह बात लग गई। उसने स्यालकोट के राजा रिसालू की मदद से अग्रोहा को पुनः बसाने की योजना को मूर्तरूप देना प्रारम्भ कर दिया। हरभजन शाह ने अग्रोहा के पास ही एक दुकान खोल ली तथा वहाँ आने जाने वाले व्यक्ति को इहलोक और परलोक में उधार चुकता करने की बद पर रूपये उधार देना शुरू कर दिया तथा हर व्यक्ति को अग्रोहा में बसने के लिए मजबूर करता था। अतः इस प्रकार धीरे-धीरे अग्रोहा पुनः आबाद होने लगा तथा सेठ हरभज शाह की प्रतिष्ठा अग्रवाल समाज में सदा-सर्वदा के लिए प्रतिष्ठित हो गई।

pdfelement
Remove Watermark Now

लक्खी का तालाब और हरभज शाह

अग्रोहा बसने के समय में ही एक बनजारे जिसका नाम लक्खी सिंह था, उसने परलोक की बद पर, हरभज शाह से एक लाख रूपये अधार लिए थे। कुछ समय बाद उसके मन मे विचार आया कि यह रूपया मैंने ले तो लिया, पर मैं इसे चुकाऊँगा कैसे? यदि मैं इसे चुका न पाया, तो अगले जन्म में बैल बनकर मुझे यह रकम चुकानी पड़ेगी। उसने विचार किया कि बैल बनकर पिसने से अच्छा है कि मैं ये रूपये यूँ ही वापिस कर दूँ। ऐसा सोचकर वह व्यक्ति हरभज शाह की दुकान पर गया और कहा कि मैं रूपये वापिस करना चाहता हूँ। लेकिन हरभज शाह ने कहा कि ये रूपये उसने परलोक की बद पर उधार लिए हैं, अतः वापिस नहीं हो सकते। लक्खी सिंह निराश होकर वापिस आ गया। उसे रास्ते में एक साधु मिला। लक्खी सिंह ने उन्हें सारी बातें बताईं तथा इन उधार के रूपयों से छुटकारा दिलाने की बात कही, कि नहीं तो मैं, जीवन भर चैन से नहीं सो सकूंगा। साधु ने लक्खी से कहा कि इन रूपयों से तुम यहाँ पर विशाल तालाब बनाओ, जो क्षेत्र के निवासियों की प्यास को बुझा सके। उन्हीं रूपयों से उसने 80 एकड़ भूमि में एक विशाल तालाब बनवाया। उसमें स्वच्छ जल भरकर, उसके चारों ओर सुन्दर-सुन्दर घाट बनवाये। तालाब तैयार होने पर लक्खी सिंह ने इस पर पहरेदार नियुक्त कर दिये और आज्ञा दी, कि तालाब का पानी कोई न पी सके। लोगों ने इसका कारण पूछा, तो लक्खी सिंह ने बताया कि यह तालाब हरभज शाह का निजी तालाब है। जब तक वह नहीं कहेगा, तब तक पानी उसकी बिना आज्ञा के नहीं लिया जायेगा। जब हरभजन शाह को इस बात का पता लगा कि तालाब के किनारे से लोग प्यासे जा रहे हैं, तो वे वहाँ आये और उन्होंने लक्खी सिंह का सारा रूपया जमा कर लिया तथा तालाब पर से

पहरेदारी उठा ली गई। यही तालाब "लक्खी सागर" के नाम से विख्यात हुआ।

अग्रोहा को तीर्थ के रूप में विकसित करने का सूत्रपात

अग्रोहा को तीर्थ के रूप में विकसित करने का सूत्रपात उस समय हुआ जब 5,6 अप्रैल 1975 को सम्पन्न हुए अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन में इस पर विचार हुआ। यह सम्मेलन धर्म भवन, साउथ एक्सटेन्सन नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। इसमें पारित पाँचवे प्रस्ताव के अनुसार यह तय किया गया कि "यह प्रतिनिधि सम्मेलन अग्रवालों की जन्मभूमि अग्रोहा का पुनरूत्थान करने का अनुरोध करता है।"

अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन के पश्चात नागपुर में 6 व 7 सितम्बर 1975 को सम्पन्न हुए अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन की तदर्थ समिति के अधिवेशन में प्रतिनिधि सम्मेलन के प्रस्ताव पर विचार करते हुए सर्व सम्मति से तय हुआ कि अग्रोहा को तीर्थ के रूप में विकसित करने के लिए कार्य आरम्भ किया जाये।

अग्रोहा विकास ट्रस्ट की स्थापना

अग्रोहा को तीर्थ। के रूप में विकसित करने के लिए अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन ने "अग्रोहा विकास ट्रस्ट" की स्थापना की। इसके लिए अलग से विधान तैयार किया गया तथा इसमें आय कर में छूट का प्रमाण पत्र दिया गया। इस विधान को सम्मेलन ने अपने इंदौर अधिवेशन में सर्वसम्मति से स्वीकार किया। 9 जुलाई, 1976 को अग्रोहा विकास ट्रस्ट का विधिवत पंजीकरण हो गया तथा दिनांक 4 अक्टूबर, 1976 को आय कर से छूट का प्रमाणपत्र मिल गया।

pdfelement
Remove Watermark Now

अग्रोहा में शिलान्यास समारोह

29 सितम्बर, 1976 को अग्रोहा में शिलान्यास समारोह का आयोजन किया गया। हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री बनारसी दास जी अस्वस्थता के कारण नहीं पधार सके। अतः पाँच ईंटें तैयार कराकर चण्डीगढ़ भेजी गई। मुख्यमन्त्री ने उन ईंटों की शास्त्रीय ढंग से पूजा की तथा अग्रोहा विकास हेतु अपना आशीर्वाद दिया।

इस समारोह में देश के कोने-कोने से अग्रवाल बन्धु एकत्रित हुए तथा महाराजा अग्रसेन के गगनभेदी नारों के बीच अग्रोहा के नव निर्माण की नींव रखी गई। आज अग्रोहा भव्य रूप में हमारे सामने विद्यमान है। यह वैश्य अग्रवाल जाति के लिए पाँचवे तीर्थधाम के रूप में जाना जाता है।

अग्रोहा में मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं

जब हम सच्चे मन से, सच्ची आस्था के साथ, अग्रोहा जाते हैं, तो हमारी मनोकामनाएं निश्चित रूप से पूर्ण होती हैं।

आइये हम प्रण करें और संकल्प लें-

1. कि हम एक बार अग्रोहा की यात्रा अवश्य ही करेंगे।
2. हम अपने बच्चों का मुण्डन व कर्णछेदन अग्रोहा में ही करायेंगे।
3. हम जात देने के लिए अग्रोहा में जायेंगे।
4. हम अग्रोहा निर्माण हेतु यथाशक्ति तन, मन, धन से सहायता करेंगे।
5. हम प्रत्येक विवाह अथवा शुभ अवसर पर अग्रोहा के लिए दान अवश्य निकालेगें।
6. हम अपने बच्चों के संस्कारों के शुभ अवसर पर अग्रोहा हेतु दान अवश्य भेजेगें।

7. हम नया मकान बनाने पर अग्रोहा के लिए दान अवश्य भेजेंगे।
8. हम अपने प्रतिष्ठानों में अग्रोहा हेतु धर्मादा अवश्य निकालेंगें।
9. हम प्रतिमास या प्रतिवर्ष अपनी आय में से कुछ अंश अग्रोहा अवश्य ही भेजेंगे।
10. हम अपने बच्चों को, परिवार जनों को अग्रोहा अवश्य ले जायेंगे तथा उन्हें अपने गौरवशाली इतिहास की जानकारी देंगे।

"अग्रोहा" के वैभव पर प्रकाश डालते हुए मैंने निम्न कविता में 'अग्रोहा' के प्राकृतिक सौन्दर्य का वर्णन किया है। इसे दोहराने से अग्रोहा का चित्र सामने आ जाता है।

कानन वन सा महक रहा है.....

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

कानन वन सा महक रहा है, अग्रोहा का पावन धाम।
सुरम्य सुगन्धित फैल रही है, अग्रोहा में ललित ललाम।

भाँति-भाँति के फूल खिले हैं, अग्रोहा के उपवन में।
निरख-निरख इनकी शोभा, उत्साह असीम है जन जन में।।

तरह-तरह की द्रुम-लतायें, शोभा देती उपवन में।
भाँति-भाँति के वृक्ष सुशोभित, रहते इस कानन वन में।

कंगन-पायल-नुपुर ध्वनि यहाँ, रोज सवेरे बजती है।
जब महिलायें प्रतिदिन आकर, मंगलाचारण करती हैं।

डाल-डाल पर फूल खिले हैं, फूल-फूल में हैं लाली।
शुभ-सुगन्ध बिखरी है ऐसी, जैसे चन्दन की डाली।।

मेरा मन-मयूर नाच रहा है, तान सुनाये माली।
जल-तरंग बज रहा है ऐसा, जैसे बजती थाली।

pdfelement
Remove Watermark Now

ऊँचे-ऊँचे मन्दिर में जब, घण्टा ध्वनि बजती है।
ऐसा लगता है मानो तब, सरस्वती वीणा बजती है।

भवन-भवन में साज सजे हैं, झाड़-फानूस मंडराते हैं।
मटक-मटक कर मानों स्वयं, तारा-गण यहाँ आते हैं।

द्रुम-लतायें नर्तन करती हैं, तीव्र पवन के झोंकों से।
पत्ते सर-सर बोल रहे हैं, पुलक पवन के झोंकों से।।

कल-कल निनाद करता रहता, सुरम्य सरोवर आँगन में।
झर-झर, झर-झर झरना बहता, इसके सुन्दर प्रांगण में।

महानिशीथ की चंचल किरणें, जब इस पर इठलाती हैं।
इसकी सुन्दर शोभा तब, जन-जन को ललचाती हैं।

ऐसा लगता है मानो तब, हाथों में हाथ लिये।
चाँद स्वयं आया धरती पर, मधुमास को साथ लिये।।

श्रान्त क्लान्त पथिक आता है, दूर-दूर के कोनों से।
आकर यहाँ मुक्ति पाता है, अपने कलुष झमेलों से।

कल्पना साकार लगती है, यह इन्द्र लोक से है न्यारी।
लाल-लाल यहाँ फूल, फूलों से भरी हुई है क्यारी।

गा-गाकर पक्षीगण यहाँ पर, लोल-किलोलें करते हैं।
जिनकी कलरव की ध्वनि से, साज सवेरे बजते हैं।

कुहुं-कुहुं कोयल की बोली, चिड़ियों की चीं-चीं आवाज।
मोरों की है म्याऊँ-म्याऊँ यहाँ, बजा रही है सुन्दर साज।।

शुभ्र-श्वेत पंख वाले यहाँ हंस दिखाई देते हैं।
ऊपर-नीचे तैर-तैर कर, कलरव करते रहते हैं।

मन रोमांचित सा हो जाता निरख-निरख शोभा प्यारी।
स्वर्ग लोक सा उपवन लगता, शोभा-सुन्दर अति प्यारी।।

"अग्रवाल जाति के संगठन"

1. **अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा-** सबसे पहले समाज में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन हेतु श्री जमनालाल बजाज ने सन् 1918 में कुछ युवकों को साथ लेकर समाज सुधार हेतु अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल महासभा की स्थापना वर्धा में की थी।

2. **अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा-** इस महासभा ने अग्रवालों के इतिहास को लिखवाया।

3. **अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन-** इसकी स्थापना 1976 में हुई थी तथा इसके द्वारा निम्न कायक्रमों को अपनाया गया था :

1. अग्रवालों के संगठन के साथ-साथ समस्त वैश्य समाज के घटकों का संगठन बनाना तथा सबको साथ लेकर चलना।
2. कुरीतियों का उन्मूलन करना।
3. अग्रवालों की पुण्य भूमि अग्रोहा का विकास करना।

भारतवर्ष के कोने-कोने में इसकी शाखाएं है तथा इसके प्रांतीय व राष्ट्रीय अधिवेशन स्थान-स्थान पर होते हैं। आज अग्रवालों की पहचान कायम करने में तथा संगठित करने में यह संस्था अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाये हुए है। वर्तमान में इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप मित्तल जी हैं। इसके राष्ट्रीय महामंत्री श्री बाल किशन अग्रवाल जी हैं।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-9

अग्रवालों की कुछ अन्य उपजातियाँ

जैन (अग्रवाल) :

जैन (अग्रवाल) मुख्यरूप से पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा में पाये जाते हैं। इनके गौत्र अग्रवालों की भाँति 18 गौत्र होते हैं तथा ये अग्रसेन जी को ही, अपना आदि पुरुष मानते हैं। बाद में जिन्होंने जैन धर्म स्वीकार कर लिया, वे जैनी हो गये। इनमें वैवाहिक पद्धति एवं अन्य संस्कार, जैन धर्म के अनुरूप होते हैं। पहले जैनी अग्रवाल अपनी लड़की की शादी अग्रवालों में नहीं करते थे। परन्तु अब ये पुरानी मान्यताएं धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही हैं। अब जैनी अग्रवालों, के लड़के व लड़की की शादी अग्रवालों में हो रही हैं। मूलतः यह लोग अग्रवाल ही हैं। केवल धर्म के आधार पर इनका विभाजन हुआ है। इनके धार्मिक संस्कार जैन धर्म के अनुसार ही होते हैं। जैनी अग्रवाल बन्धु अग्रवालों की भाँति उदार, सहृदय तथा समाज को गति देने वाले, जागरुक और उन्नतिशील होते हैं। इन लोगों ने व्यापार, उद्योगों एवं नौकरी आदि क्षेत्रों में अपनी विशिष्टता स्थापित की है।

जैन धार्मिक परम्परा :

राग-द्वेष-काम-क्रोध-मोह आदि विकारों पर विजय प्राप्त करने को *"जिन"*, केवली या अरहन्त कहते हैं। प्राणियों के हित के लिए मार्गदर्शन वाले तीर्थंकर कहलाते हैं। कुल तीर्थकर चौबीस हुए हैं। सबसे अन्तिम तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर (599-527ई0पू0) थे।

धार्मिक सिद्धान्त :

जैन धर्म के अनुसार जीव और अजीव दोनों अनादि शाश्वत तत्व हैं। जीवात्माएं अनन्त हैं। ये परमाणु रूप में पुद्गल द्रव्य हैं। ये जीव और अजीव ही चराचर विश्व के मुख्य उपादान हैं। जैन धर्म के अनुसार इस विश्व का न तो स्रष्टा है, न ही पालनकर्ता है, न ही कोई संहारकर्ता है। जीव और अजीव के संयोग से ही प्रत्येक जीवात्मा का जन्म-मरण, रूप, संसार प्रवाहमान होता है। अपने विकारों के कारण ही जीव को दुःख प्राप्त होते हैं। अपने प्रमाद और अज्ञानतावश ही जीवात्मा संसार चक्र में फंसी रहती है। किन्तु जब आत्मा जागरुक हो जाती है, तब वह कर्मफल को छिन्न-भिन्न करके मुक्त हो जाती है। वही मोक्ष की स्थिति है, वही परमानन्द की स्थिति है।

वैश्य जातीय जैन संत :

भगवान महावीर के समय आनन्द आदि जिन व्रती श्रावकों का विवरण प्राप्त होता है, वे अपने समय के अत्यन्त धनाढ्य वैश्य श्रेष्टि थे। उनके अतिरिक्त सुदर्शन सेठ, धन्य कुमार, शालिभद्र, जिनदत्त आदि वणिक शिरोमणि थे, जिन्होंने विपुल वैभव का परित्याग करके मुनि दीक्षा ली थी। इसके अतिरिक्त भक्तराज धनन्जय, आचार्य हेमचन्द सूरी, आचार्य कल्प आशाधरजी, त्यागी बाबा दौलत राम जी, बाबा लालमन दास जी, बाबा भगीरथ वर्णी, ब्रह्मचारी शीतल प्रसाद आदि जैन साधु-साध्वियों की संख्या तीन-चार हजार है। इसके अतिरिक्त साहित्यिक क्षेत्र, राजनीति क्षेत्र, कला क्षेत्र में भी अनेकों वैश्य कुलोत्पन्न जैन बन्धु रहे जिनका समाज में प्रशंसनीय योगदान रहा है।

pdfelement
Remove Watermark Now

अग्रवालों की कुछ अन्य उपजातियाँ

गिन्दौड़िया अग्रवाल :

गिन्दौड़िया वैश्यों की उत्पत्ति दिल्लीवासी होने के कारण, दिलवारी नाम पड़ा तथा परिवार में शादी-विवाह या मृत्यु भोज के समय गिन्दौड़ा बाँटने की प्रथा के कारण गिन्दौड़िया जान पड़ता है। कुछ लोग इन्हें 'गिन्दौड़िया' तथा गंधर्व में साम्य बतलाकर अग्रसेन की पीढ़ी में गंधर्व नामक पूर्व पुरुष की संतान बतलाते हैं। किन्तु ऐसा मानने का कोई प्रमाणिक आधार नहीं होने से, यही उचित जान पड़ता है कि प्रारम्भ में यह दिल्लीवासी होने के कारण दिलवारी कहलाए। बाद में गिन्दौड़ा बाँटने की प्रथा को जिन्होंने चालू रखा, वे अलग नाम से गिन्दौड़िया पुकारे जाने लगे। गिन्दौड़िया के रीति-रिवाज, रहन-सहन, पूजा-पाठ सब अग्रवालों की भाँति है, केवल स्थान-भेद से इनके नाम पृथक हो गए हैं।

कदीमी अग्रवाल :

कदीमी अग्रवालों का मुख्य वास अलीगढ़, खुर्जा और बुलन्दशहर है। इनके बारे में यह किंवदंती प्रचलित है कि ये अग्रसेन की सबसे पहली संतान हैं, अतः अन्य संतानों के पूर्व की तथा प्राचीनता के कारण उनका नाम 'कदीमी' अर्थात् पुराने बसने वाले पड़ा, परन्तु इस तथ्य का कोई प्रमाण नहीं है। हो सकता है कि अग्रोहा में इनका परिवार अग्रोहा की स्थापना के समय से अति प्राचीन रहा हो, इसलिए ही इनके नाम में उसी प्राचीनता का समावेश पाया जाता है। आज भी पुराने नगर के निवासी और नए रहने वालों में जो अन्तर पाया जाता है, सम्भव है वही प्राचीनता का गौरव, इनकी बिरादरी में भी नामकरण का कारण बना।

श्री परमेश्वरी लाल के अनुसार ये लोग अपने को बीसा अग्रवालों से भी ऊँचा मानते हैं।

ये कहते हैं कि इनके पूर्वज किसी युद्ध में लड़ने गये थे। उन्होंने इसी समय राज्य का भार अन्यों पर छोड़ दिया था। पर जिन पर वह भार छोड़कर गए थे, वह युद्ध की समाप्ति के पूर्व ही देश छोड़कर चले गए थे। अतः युद्ध मे जो परिवार बच कर वहीं के वासी बने रहे, वो कदीमी अग्रवाल कहलाए।

महाजन अग्रवाल :

मारवाड़ में यह शब्द बनियों के लिए प्रयुक्त होता है जिसका अर्थ है व्यापारी। महाजन शब्द बड़े आदमी, सज्जनपुरुष, सेठ, शाह आदि के लिए प्रयुक्त होता है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण अर्थ इसका धनवानों से लिया जाता है। महाजन जैनी तथा वैष्णव दोनों ही वर्गों मे प्राप्त होते हैं। मारवाड़ मे जैनी महाजनों की संख्या अधिक है। इनमें ओसवाल, सरावगी, पोरवाल, श्रीमाल तथा श्री की संख्या अधिक है। शायद इन्हीं का आधार लेकर ही राहुल जी ने लिखा है, कि ये सभी जातियाँ, अग्रवालों की ही उपशाखाएँ हैं। आचार-विचार, रीति-रिवाज, त्यौहार-वार को लेकर इन सभी जातियों में बहुत कम भिन्नता पाई जाती है। अतः अग्रवालों में शादी-विवाह करने में कोई हानि नहीं है। आज के युग में जब सर्वत्र जातिवाद के विरुद्ध आवाजें उठाई जा रही हैं, तब यदि हम केवल वैश्य समाज को ही एकत्र कर एक हो जाएँ, तो निश्चय ही अग्रसेन के युग को पा सकेंगे, क्योंकि महाजनों की अधिकांश जातियाँ प्रधान रूप में व्यापारी हैं। पोरवालों में थोड़े से व्यक्ति जागीरदारों के कामदार का काम करते हैं। सरावगी लोग मारोट, साम्भर, नावा, नागोड़, भरता तथा दिंदवाना में अधिक बसे हैं। पोरवाल, पाली तथा जालोद के परगनों में अधिक हैं।

pdfelement
Remove Watermark Now

अग्रहरी :

अग्रहरी अपने को अग्रवालों से पृथक मानते हैं, किन्तु हमारी धारणा है, कि यह जाति भी अग्रवालों की एक उपजाति ही है। क्योंकि यह जाति भी अपनी उत्पति अग्रसेन की सन्तान हरि से मानती है, तथा अग्रसेन को ही अपना पूर्वज मानती है। वैसे अग्रहरी जाति वालों से हुई बातचीत में उन्होंने अपने को अग्रसेन के भाई शूरसेन की सन्तान बतलाया। इनमें अग्रवालों के सभी गोत्र पाए जाते हैं तथा रीति-रिवाज, रहन-सहन में भी परस्पर समानता पाई जाने के कारण ही 'नेस्फील्ड' और 'रसेल' ने उन्हें अग्रवालों के समान जाति बतलाई है।

डॉ0 परमेश्वरी लाल गुप्त का कहना है कि केवल गोत्रों की समानता से ही जाति की एकता सिद्ध नहीं की जा सकती है। जाति अन्वेषण नामक पुस्तक में उनको आचार भेद व रक्त भेद से विकसित जाति बतलाता है। उनके अनुसार इन लोगों की किसी छोटी सी बात पर मतभेद हो जाने के कारण, इन लोगों ने अपनी गोंठ अलग बना ली। यह मतभेद धार्मिक भी हो सकता है। धार्मिक मतभेद के कारण पृथक उपजातियों की उत्पत्ति के अनेक उदाहरण जैन ग्रन्थों में पाए जातें हैं। अग्रहरी जाति के विलगाव का कारण यही धार्मिक असहिष्णुता रही हो, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। इसी धार्मिक असहिष्णुता के कारण समाज में अनेक उपजातियाँ प्रकाश में आईं।

मारवाड़ी अग्रवाल :

स्थान भेद से अग्रवालों के मुख्य दो ही भेद हैं- मारवाड़ी और देशी अग्रवाल। मारवाड़ की तरफ रहने वाली अग्रवाल जाति, मारवाड़ी अग्रवाल कहलाई। इनके रहन-सहन, बोल-चाल, पहनाव-ओढ़ाव पर राजस्थान की भूमि व संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव है। परन्तु इनके शादी-विवाह के सम्बन्ध अन्य क्षेत्रों के देशी

अग्रवालों मे होते रहते हैं। भौगोलिक दृष्टि से अग्रोहावासी जब देश छोड़कर भागे, तो पास के प्रान्तों में ही अधिक बसे, विशेष तौर से वहाँ, जहाँ से उन्हें व्यापारिक सुविधा अधिक थी। व्यापार की दृष्टि से सभी प्रकार सुविधाजनक होने के कारण यहाँ के निवासियों ने देश-विदेश में अच्छा व्यापार किया है। देश में मारवाड़ी अग्रवाल ही ऐसी जाति मानी जाती है, जिसने विदेशियों की बड़ी कम्पनी को नगद खरीद कर देश को गौरवान्ति किया है।

कहा जाता है कि मारवाड़ी लोग अपने सम्बन्ध देशी अग्रवालों में नहीं करते, परन्तु यह धारणा गलत है। स्थान की दूरी के कारण कन्या देने में लोग हिचकते हैं, अन्यथा मारवाड़ी अपने को किसी भी प्रकार अग्रवालों से पृथक नहीं मानते। भारतीय इतिहास में मारवाड़ के गौरवपूर्ण स्थान के कारण मारवाड़ी अग्रवाल अपने को अन्य अग्रवालों से श्रेष्ठ मानते हैं।

देशी अग्रवाल :

अग्रोहा से निकल कर संयुक्त प्रान्त की तरफ बसने वाले वैश्य अग्रवाल देशी बोले जाते हैं। इनमें भी पुरबिए तथा पछहिए का भेद पाया जाता है, परन्तु वह भी स्थान वाचक शब्द ही है। दोनों में एक समान रीति-रिवाज हैं, केवल शादी के समय पूजे जाने वाले थापों में अन्तर पड़ता है।

इस प्रकार अग्रवालों के जितने अन्य भेद हैं सब प्रदेश व क्षेत्र के नाम पर ही हैं, जैसे महम से निकले महमिए, जांगले, हरियानये, लोहिए आदि।

पर्वतीय अग्रवाल :

डॉ0 परमेश्वरी लाल गुप्त ने अग्रवालों की एक शाखा पर्वतीय अग्रवाल का भी जिक्र किया है, जिनका बड़ा भाग कुमायूँ की पर्वतीय घाटियों में रह रहा है। इनमें गोत्र भेद नहीं पाया

pdfelement
Remove Watermark Now

जाता। इसका कारण यही है कि वहाँ गर्ग गोत्रीय ही पाए जाते हैं।

ऐसा लगता है कि व्यापार, व्यवसाय के कारण कुछ लोग जो पर्वतीय घाटियों पर जाकर बस गये, वे दूरी तथा आने जाने के मार्ग की बाधाओं के कारण वहीं रह गए। अन्यत्र जाकर शादी-विवाह करना भी उनके लिए स्वभावतः कठिन रहा होगा, यही कारण है कि वे वहीं अपनी जाति में स्वगोत्रों में ही विवाह-शादी करने लगे और एक पृथक उपजाति बन गए।

गुजराती अग्रवाल :

'आगर' से निकास मानने वाले सौराष्ट्र निवासी अपने को गुजराती अग्रवाल कहते हैं। कहा जाता है कि, अग्रोहा के वैभव काल में ही ये लोग वहाँ से निकल आये थे तथा अपने निवास स्थान के नाम पर मालवा के पास के क्षेत्रों में आकर बस गये। जहाँ-जहाँ ये अधिक संख्या में बसे, उस क्षेत्र का नाम भी अपने निवास स्थान के नाम पर रख लिया। परन्तु यह 'आगर' अग्रोहा के बाद का बसाया हुआ नगर प्रतीत होता है, जैसे कि बौद्ध कथा में अर्गलपुर का नाम आया है।

इन गुजराती अग्रवालों की यह मान्यता है कि अग्रवाल जाति का उद्भव और विकास यहीं से हुआ है। ऐतिहासिक प्रमाण के अभाव में यह मान्यता उचित नहीं प्रतीत होती। अग्रोहा की प्राचीनता निःसंदेह 'आगर' से अधिक प्रमाणित है।

राजवंशी अग्रवाल अथवा राजशाही :

राजवंशी व राजशाही बिरादरी का इतिहास डा0 सत्यकेतु के अनुसार बहुत प्राचीन नहीं है, किन्तु श्री परमेश्वरी लाल के मत में यह उतना नवीन भी नहीं होना चाहिए, जितना कि सत्यकेतु जी का अनुमान है।

राजशाही वंश के बारे में जो किंवदंती है, वह, वही प्राचीन परम्परा वाली अग्रसेन से उन्हें जोड़ती है। जहाँ राजकन्या और नागकन्या की संताने पृथक-पृथक संस्तरणों में रखी गई हैं। डा0 सत्यकेतु जी का विचार है कि प्रारम्भ में यह साधारण अग्रवालों की ही तरह थे। 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में फरूखसियर के समय जानसठ निवासी राजा रतनचन्द सौभाग्य से अपनी सूझ-बूझ एवं बुद्धि-चातुर्य के कारण मुगल सम्राट के दीवान पद पर जा पहुँचे, जहाँ उन्हें राजा की उपाधि मिली। मुगल साम्राज्य के प्रधान सेनापति (सैयद बन्धु) सैयद अब्दुल खाँ और सैयद हुसैन अली खाँ से इनकी अति घनिष्ठता थी। उनकी इस मैत्री के कारण वह मुगलों के विश्वासपात्र बने और दिनों-दिन राज्य में उन्नति करते गए। उनकी इस उन्नति से साधारण अग्रवाल उनसे ईर्ष्या करने लगे। उन्हें उनके खान-पान, रहन-सहन के ढ़ंग से एतराज होने लगा। फलतः उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया। राजा रतनचन्द वीर एवं साहसी पुरुष थे। उन्होंने बिरादरी के इस अन्याय का प्रतिरोध किया और स्वयं अपने शुभचिंतकों सहित एक अलग समूह बना लिया। इस समूह में संगठित लोग राजा की बिरादरी के नाम से पुकारे जाने लगे। श्री परमेश्वरी लाल गुप्त ने इस बात पर शंका प्रकट की है, कि यदि राजा रतनचन्द कुछ परिवारों को लेकर ही अलग हुए तो अट्ठारह गोत्र कहाँ से आ गए।

डॉ0 परमेश्वरी लाल गुप्त की यह शंका यहाँ उचित ही है, परन्तु यह बात भी समझने योग्य है, कि अट्ठारहवीं सदी का पूर्वार्द्ध बहुत प्राचीन घटना नहीं है। अग्रवालों के अट्ठारह गोत्रों को सभी अग्रवाल जानते हैं। यदि राजशाही बिरादरी का अभ्युदय अग्रवालों की ही एक शाखा से हुआ है, तो निश्चय ही वे अपने अट्ठारह गोत्रों का मूल अधार भूले नहीं होंगे। अतः वह अपने

pdfelement
Remove Watermark Now

को अट्ठारह गोत्रीय कहते हैं तो गलत नहीं कहते। इस बात की छानबीन किए बिना कोई निर्णय देना तर्कसंगत नहीं होगा। यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है, कि इतने बड़े दीवान का साथ देने के लिये कुछ थोड़े ही परिवार सम्मुख न आए होंगे, बल्कि इनमें वे समस्त परिवार अवश्य रहे होंगे, जो समाज व बिरादरी के कठोर बन्धनों से त्रस्त होकर मुक्ति की राह देखने का बहाना ढूँढ़ रहे होंगे। अतः जब राजा रतनचन्द की बिरादरी अलग हुई होगी, तो एक वृहत् संस्था के साथ अलग हुई होगी, जिनमें सभी गोत्रों के अग्रवालों का आ जाना, कोई मुश्किल व असम्भव बात नहीं जान पड़ती है।

अट्ठारवीं शताब्दी तक आते-आते समाज अंधविश्वास, अशिक्षा के अंधकार में घिर गया था। जरा-जरा सी बात पर बिरादरी व पंचायतें समाज से बहिष्कृत करने का दण्ड देने लगी थीं। सामान्य जनता के लिए सिर उठाना मुश्किल हो गया था। अतः यदि राजा रतनचन्द के साथ समाज के भुक्तभोगी लोगों ने, उनका साथ दिया हो, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

डा0 परमेश्वरी लाल ने अपने तर्क की पुष्टि में एक शिलालेख का उदाहरण दिया है। इसका अर्थ श्री गोपालपंत शास्त्री ने राजशाही वैश्य से लिया है। यह शिलालेख अभी भी लखनऊ के प्रान्तीय संग्रहालय में संग्रहीत है। यह शिलालेख बुलन्दशहर के आहार नामक स्थान से प्राप्त महाराज भेज प्रतिहार के समय का है। इसमें हर्ष संवत् 287 (विक्रमी सं0 943) के कुछ पूर्व और पश्चात् के श्री कंचन देवी के मन्दिर की सफाई, लिपाई, केसर, फूल, धूप, दीप, ध्वजा, सिंदूर आदि व्यय के लिए दिये गए 8 दानपत्र अंकित है। उस शिलालेख के 14-15वीं पक्तियों में जो दानपत्र अंकित है उसमें सहायक नाम के एक राजक्षतृयान्वय वणिक का उल्लेख है। इस शब्द का अर्थ राजवंशी वणिक से ही

लिया जा सकता है। आज अग्रवालों के समस्त भेदों के नाम को देखते हुए राजवंशी वणिक भेद ही ऐसा ही भेद लगता है जो राजक्षतृयान्वय वणिक के अर्थ से साम्य रखता है। अतः हो सकता है, कि राजवंशी वणिक शब्द ही आगे चलकर राजवंशी अग्रवाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ हो।

डॉ0 परमेश्वरी लाल को अनुमान है, कि हो सकता है यह राजा की बिरादरी, राजशाही या राजवंशी अग्रवाल, प्रारम्भ में एक ही रहे हों, बाद में राजा रतनचन्द के बिरादरी से पृथकत्व की बात आई, तो राजा रतनचन्द के समर्थक, राजा की बिरादरी के नाम से विकसित हुए होंगे और राजवंशी 'वणिक' राजक्षतृयान्वय वणिक की ही मूल शाखा से विकसित रहे होंगे।

इस विषय में कुछ लोगों का एक मत यह भी है कि राजा रतनचन्द बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। दिल्ली के सम्राट से उनके व्यक्तिगत सम्बन्ध थे। अतः उन्होंने अग्रवाल समाज से विभाजन करके अपना एक अलग गुट बनाया था। जो बाद में और अधिक विस्तृत होकर राजवंशी अग्रवाल या राजशाही के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस गुट के लोगों को राजा रतनचन्द जी ने अपने व्यक्तित्व प्रभाव से शासन स्तर पर सेना में तथा प्रशासन में पटवारी और कानूनगो की नौकरियाँ दिलवायी थीं। राजा रतनचन्द जी के बहुमुखी व्यक्तित्व के सम्बन्ध में हम पिछले अध्याय में विस्तृत जानकारी दे चुके हैं।

शिरोमणि संस्था :

सन् 1892 में लाला खैराती राम जी के मन में यह विचार आया कि एक राजवंश सभा का गठन किया जाये। उनका स्वप्न 1896 में सफल हुआ तथा अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल राजवंशी सभा का गठन किया गया। इसके 1896 में प्रधान

pdfelement
Remove Watermark Now

रायसाहब दामोदर दास तथा मन्त्री श्री मूलचन्द नियुक्त हुये। सन् 1898 से बिरादरी का रिसाला *"हमदर्द कौम"* के नाम से मेरठ में छापा गया। अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल राजवंश सभा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अजय कुमार गुप्ता जी (श्री वासु आटो मोबाइल्स टाटा मोटर्स) सी-6, शास्त्री नगर मेरठ में रहते हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं तथा रुड़की से इन्जिनियरिंग (बी0ई0) किये हुए हैं। आपसे पूर्व आपके पिताजी श्री जय लाल गुप्ता जी भी 1987 में इस सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने थे तथा आपके बड़े भाई स्व0 श्री सुभाष गुप्ता जी भी इस सभा में कई वर्षों तक राष्ट्रीय महामन्त्री रहें हैं। श्री अजय गुप्ता जी वर्तमान मे उ0प्र0 तीरन्दाजी संघ के भी महासचिव हैं तथा उनके धनुर्धरों ने अन्तराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है। आप वैश्य समाज के लिये सदैव समर्पित व्यक्ति हैं। वर्तमान में अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल राजवंश सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र प्रकाश गुप्ता जी हैं। वे डी ब्लॉक, शास्त्रीनगर में रहते हैं।

शिक्षा संस्था :

सन् 1913 मे मास्टर विशम्भर दयाल ने राजा ज्वाला प्रसाद चीफ इन्जिनियर की अध्यक्षता में मेरठ में वैश्य अग्रवाल राजवंश विद्या सभा स्थापित की, जिससे राजवंशी युवकों ने शिक्षा क्षेत्र में भरपूर लाभ अर्जित किया तथा उच्च पद प्राप्त किये।

राजा रतन चन्द का स्मारक :

मुजफ्फरनगर जनपद के कस्बे मीरापुर में आज भी राजा रतनचन्द का स्मारक व कीर्ति स्तम्भ राजा साहब के *"व्यक्तित्व और कृतित्व"* की अमर कहानी को दोहरा रहे हैं तथा उनकी अमर गाथा को गा रहे हैं। राजा साहब के नाम से मीरापुर में शोध संस्थान भी हैं।

निष्कर्ष यह है कि समस्त उपजातियों का विभाजन व विकास की प्रक्रिया का एक ही कारण समझ में आता है। वह है धार्मिक असहिष्णुता एवं कुलों के बढ़ जाने के कारण अपने नए कुल की, अपने पूर्व पुरुष के नाम पर स्थापना। पाणिनी ने स्पष्ट लिखा है, कि कुल जब बढ़कर शत-सहस्त्रों की संख्या में विकसित हो जाते हैं, तो वह अपना नया संघ स्थापित कर लेते हैं। ऐसे कुलों की संख्या पाणिनी के काल में अनेक थी, परन्तु उपजातियों के विकास की प्रक्रिया में यह बात सीधे समझ में नहीं आती। एक कुल के विकसित होने में एक नई उपजाति कैसे बन जाती थी, जबकि उनका गोत्र एक ही होना चाहिए था। अतः उपजातियों के विकास की प्रक्रिया में धार्मिक असहिष्णुता ने भारी योगदान दिया, यही कहना ज्यादा उचित प्रतीत होता है। बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव, शाक्त, आदि धर्मों के विभिन्न मतावलम्बी अपनी मुख्य शाखाओं से आचार-विचार, स्थान, धर्म परिवर्तन के कारण पृथक होते गए। ऐसी पृथक होने वाली समस्त उपजातियों के सामाजिक नियम गोत्रादि तो एक ही रहे, केवल धर्म के देवता, उपासना की पद्धति बदलने के कारण वह ऊँची-नीची पंक्ति में बैठने लगे।

कुछ भी हो जाति का साम्य व भेद आज के युग में उतना महत्व नहीं रखता, जितना संगठन बनाकर एक होना महत्वपूर्ण निश्चय तथा समयानुकूल कदम है। आज न बिरादरी है, न पंचायत है, जो प्राचीन काल के किसी छोटे से अपराध पर परिवार को, पीढ़ी-दर-पीढ़ी दण्डित करने का साहस कर सके।

पिछले 500 वर्षों के इतिहास की सर्वाधिक दुःखद कड़ी यही रही है, कि एक व्यक्ति के अपराध ने समस्त परिवार को पीढ़ियों तक के लिए निष्काषित व दण्डित किया है। संसार के किसी देश में अविद्या व अन्याय का ऐसा दण्ड, पीढ़ी-दर-पीढ़ी पूरे

pdfelement
Remove Watermark Now

समाज को नहीं भुगतान पड़ा है। जैसा कि भारतवर्ष के इतिहास में हुआ है। अच्छे से अच्छा व्यक्ति यदि एक भूल कर बैठा तो इन बिरादरी व पंचायतों ने उसे पुनः सिर उठाने नहीं दिया।

आज आवश्यकता है समाज के पुर्नगठन की। इस दुष्कर कार्य को वही कर सकता है, जो सभी रूढ़ियों से मुक्त होकर स्वच्छ और निर्मल मस्तिष्क से निर्णय लेकर समाज को एक सुरूचिपूर्ण श्रंखला में व्यवस्थित ढंग से आबद्ध कर सके तथा सबको यथानुकूल समाज की संस्तर में उसका उचित स्थान दे सके।

अग्रवालों की उपजातियों के उपर्युक्त वर्णन में कुछ उपजातियों का वर्णन नहीं किया गया है। इसका कारण है कि उन उपजातियों की उत्पति के विषय, में विद्वानों ने जो मत दिये हैं, वे अत्यन्त काल्पनिक हैं और कहीं-कहीं अपमानजनक भी हैं। प्रायः वे एक विशिष्ट आचार के कारण उत्पन्न बताई जाती है, जिनका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता है और सम्भवतः जिनका कोई ऐतिहासिक आधार सर्वथा नहीं रहा होगा। अग्रवालों की जिन उपजातियों का उल्लेख इसमें नहीं आया है, वे निश्चित रूप से अग्रवाल ही हैं, किन्तु उनके विषय में अधिक विवरण प्राप्त नहीं है। अतः इस विषय में और अधिक अन्वेषण की आवश्यकता है।

◆ ◆ ◆

अध्याय-10

अल्ल और बंक

अग्रवालों में कतिपय अल्ल और बंक के आधार पर कुछ नये नामों की उत्पति हुई। उन्हीं अल्ल एवं बंक के आधार पर इनका नामकरण हो गया। कुछ प्रचलित अल्ल एवं बंक का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है :-

खेतान : इस वंश की उत्पति के सम्बंध में कहा जाता है कि कई सौ वर्ष पहले राजस्थान के शेखावटी प्रान्त में खेती दास जी नाम के एक बड़े प्रसिद्ध और प्रतापी व्यक्ति हुए हैं। उन्हीं के नाम से इनके वंशज खेतान नाम से प्रसिद्ध हुए। परन्तु उन्होंने कौन-कौन से ऐसे कार्य किये जिससे वे इतने प्रसिद्ध हुए यह जानकारी अभी तक अज्ञात ही है। इनका गोत्र गर्ग है। खेतान परिवार कलकत्ता, जयपुर, कतरासराय, गया आदि स्थानों पर हैं।

डालमिया : शेखावटी के डालमा नामक ग्राम से निकासी होने के कारण यह परिवार डालमिया नाम से प्रसिद्ध हो गया। यह परिवार अपनी व्यापारिक प्रतिभा और धार्मिक उदारता के कारण अग्रवाल समाज में बहुत प्रसिद्ध है। डालमिया परिवार मारवाड़ी अग्रवालों के चार मशहूर बंको में से है।

रुंगटा : ऐसा कहा जाता है कि इस वंश के पूर्व पुरुषों में खतीदास जी, भोजाराम जी, रुधान जी नामक तीन भाई बहुत प्रसिद्ध हुए। इनमें रुधान जी के वंशज रुधान नाम से प्रसिद्ध हुए। इसी रुधान नाम का अपभ्रंश होते-होते रुंगटा हो गया है।

हलवासिया : यह परिवार अपने मूल उत्पत्ति स्थान

pdfelement
Remove Watermark Now

अग्रोहा से निकल कर हिसार गया। हिसार से इस खानदान ने ओबरा नामक स्थान में अपना निवास बनाया और वहाँ से भिवानी के पास हलवास नामक स्थान में बस गया। हलवास गांव से आकर भिवानी में निवास करने के कारण यह खानदान हलवासिया के नाम से प्रख्यात हुआ।

केड़िया : केड़िया परिवार के मूल पुरुष मुण्डलजी थे। आपके 1137 में स्वर्गवासी होने पर, आपकी चारों पत्नियाँ खेमी, तोली, ठुकरी व संतोषी आपके साथ सती हो गईं। इसके पश्चात् 12 पीढ़ी गुजर गईं। गोपीराम जी के लड़के पोरूरामजी, भोलारामजी ने चैत्र सुदी 1 सं0 1515 में यह स्थान छोड़ दिया और वैसाख सुदी 12 सं0 1515 में एक स्थान पर केर की छरी रोपकर नगर बनवाने का मुहूर्त किया। तभी से इस स्थान का नाम केड़ हुआ। यह स्थान जयपुर स्टेट में है। केड़ में प्राचीन समय के किले में केर का पेड़, आंगन में आज भी मौजूद है।

रानीवाला : भारत के अग्रवालों में रानीवाला परिवार अपना विशेष स्थान रखता है। इस परिवार में माणक चन्द्र जी के सात पुत्रों ने भारत के मुख्य-मुख्य व्यापारिक केन्द्रों पर अनेक फर्में स्थापित की तथा कारखाने खोले। इन प्रतापी और ऐश्वर्यशाली सातों बन्धुओं की माता को परमसौभाग्यशालिनी समझ कर तत्कालीन स्थानीय जनता इनको रानी के नाम से सम्बोधित करने लगी। तब से यह परिवार रानीवाला के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

वीपौपरिया : वीपर गांव से निकास होने के कारण यह लोग वीपौपरिया कहलाते हैं।

चौधरी : अग्रवाल समाज में कई परिवार ऐसे हैं जिनको समय-समय पर राज्य की ओर से या समाज की ओर से चौधरी

का सम्मान प्राप्त हुआ है।

लड़ीवाले : इस खानदान का मूल निवास-स्थान सांगानेर था। इनका गोत्र गर्ग है, तथा बंक लड़ीवाले है। मोती की लड़ियों का व्यापार करने से लड़ीवाले कहलाने लगे। इससे पहले ये चौधरी कहलाते थे।

सांगानरिया : जयपुर के पास सांगानेर नाम का छोटा सा कस्बा है। यहाँ से निकल कर अन्य स्थान पर जाकर बसने वाले सांगानरिया कहलाने लगे।

कमलिया : कम्बल का बहुत बड़ा व्यापार करने के कारण ये लोग कमलिया कहलाने लगे।

खेड़िया : खेड़ी ग्राम से निकास होने के कारण ये लोग खेड़िया के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

मेहणसरिया : मेहणासर (सीकर) के पास है। यहाँ से निकास होने के कारण ये लोग मेहणसरिया कहलाये।

अजितसरियाः अजितसर (बीकानेर) नामक स्थान से निकल कर अन्य स्थान पर बसने वाले अजितसरिया कहलाये।

भुकरका : भुकरका नामक स्थान से निकास होने के कारण यह परिवार भुकरका के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

गाड़ोदिया : इस खानदान के पूर्वज लक्ष्मणगढ़ सीकर के निवासी हैं। गड़ोद नामक स्थान से निकल कर अन्यत्र जाने के कारण गाड़ोदिया नाम से पुकारे जाने लगे। ये गर्ग व गोयल गोत्र के हैं।

कोड़ीवाले : इस खानदान का मूल निवास स्थान बैराठ जिला जयपुर है। बंक मैराठी व गोत्र गर्ग है। जयपुर में यह

pdfelement
Remove Watermark Now

परिवार कोड़ियों का व्यापार करने के कारण कोड़ीवाला नाम से विख्यात हो गया।

विदसरिया : विदासर (बीकानेर) से निकलने के कारण यह परिवार विदसरिया के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

भूकरेड़ी वाला : भूकरेड़ी नामक गांव से निकलने के कारण भूकरेड़ी वाले के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

बुकरेड़ी वाला : बुकरेड़ी से निकलकर रामगढ़ (शेखावटी) में बसे परिवार बुकरेड़ी वाला के नाम से कहलाने लगे।

प्राणसुखका : परिवार में प्राणसुख नाम के एक प्रसिद्ध व्यक्ति होने से परिवार प्राणसुखका नाम से विख्यात हो गया।

कानूनगो : कानूनगो परिवार में पूर्व पुरूष चौखराज जी चौधरी हुए। इनकी मुगल सम्राट बादशाह औरंगजेब के दरबार में बड़ी प्रतिष्ठा थी। आपकी प्रतिभा और योग्यता से प्रसन्न होकर सम्राट ने आपको कानूनगो का खिताब दिया। इसी से खानदान के लोग कानूनगो कहलाने लगे।

चौखनी : गोयल गोत्री श्री चोखाराम जी नाम से एक प्रसिद्ध व्यक्ति हुए है। उनके नाम से उनका खानदान चौखानी नाम से विख्यात हो गया।

टिबड़ेवाला : इस परिवार का मूल निवास स्थान झुंझनु (शेखावटी) है। टिबड़ेवाला बंक पड़ने का कारण यह बताया जाता हैं कि इस परिवार के जेतरूप नामक व्यक्ति को, जब वे झुंझनू के पास टीबे पर ठहरे हुए थे, उस समय किसी ज्योतिषी ने बताया था कि यहीं वास करने से आपका परिवार खूब फले-फूलेगा। अतएव वे टीबे पर रहने लगे। टीबे पर रहने के कारण ही टीबड़ेवाला कहलाने लगे। इनका गोत्र गोयल है।

मोर : मोरबा नामक स्थान से निकास होने के कारण मोर कहलाने लगे। इनका गोत्र गोयल है।

अकूड़िया : अकूड नामक ग्राम से निकास होने वाले परिवार को अकूडिया के नाम से जानने लगे। इनका गोत्र गोयल है।

कहनानी : कई पुश्तों पहले सेठ कनीराम जी नाम के एक बहुत ही प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। इन्हीं के नाम से इस परिवार के लोग कहनानी कहे जाने लगे। इनका गोत्र गोयल है।

मोहनका : बहुत समय पहले खण्डेला में मोहनलाल जी नाम के एक बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति हुए। उन्हीं के वंशज उनके नाम से मोहनका बंक से मशहूर हो गये। इनका गोत्र गोयल हैं।

तोदी : इस परिवार के पूर्व पुरूष तोद नामक ग्राम से चलकर सीकर आये थे। अतएव तोद से आने के कारण तोदी कहलाये। गोत्र गोयल हैं।

चांदगोठिया : इस परिवार के पूर्व पुरूषों का मूल निवास स्थान चन्दगोठी था। वहाँ से निकास होने के कारण चांदगोठिया कहलाये। गोत्र गोयल है।

कन्दोई : अग्रवाल समाज में हलवाई का कार्य करने वाले लोगों को पहले कन्दोई कहा जाता था।

नीचे गर्ग गोत्र के बंक की सूची दी जा रही है-

गर्ग : अजीतसरिया, आमेरिया, आर्य, आसामवाले, इलाइचीवाले, इजारदार, उमरेहा, कमलिया, कयाल, कसेरा, कागजी, कादमावाले, कामड़, कानूनगो, किश्तवाले, किला, केड़िया, केथरीवाले, कोटीवाले, कोड़ी वाले, कोयले वाले, खराकिया, खादूवाल, खिरोड़िया, खुजावाले, खेतान, खेरिया, गंगारपुरवाले,

pdfelement
Remove Watermark Now

गाड़ोदिया, गुड़वाले, गुढ़ावाले, गुरारेवाले, गेवराईवाला, गोटेवाले, गोल्यान, गोटेगांववाले, घोड़े गांव, चराईवाला, चमड़िया, चांदीवाला, चिडीपाल, चौखानी, चौधरी चीमूवाला, चौडेले, छावरिया, छिगनीवाले, जटिया, जाजोदिया, जालोनवाले, जिवुरवाला, जोखानी, झाझूका, ड़ालमिया, ड़ांगवाले, ड़ीड़वानिया, ड़ेरावाले, ड़ोवटीवाले, ढ़ंढ़ाड़िया, ढ़ेरीवाले, तालूका, तोशेखाने वाला, तोषामी, दतूलीवाले, दलाल, दसरापुरिया, दीवान, दौलतपुरवाले, नकारवाले, नवलगढ़िया, नरसिंहपुरिया, नागरका, नाजवाला, नाथका, नागलिया, नारनोलिया, नीमावाले, पटवारी, पत्थरवाले, पतासावाले, परिवावाले, पंसारी, प्राणसुखका, फासीवाले, बनडिया, बरासिया, बासदवाले, बाजारी, बानुडा, बागधर, बामणीवाला, बीपीधरिया, बीदासरिया, बेरिवाल, भगत, भूसारवाले, भूकरकेवाल, भूत, भूकरेड़ी वाला, भूतेरा, भोजनगरवाला, महीपाल, महामिया, मार, मिठ्या, मुरारका, मुंह वाले, मेहणसरिया, मोदी, मोर, मोहनसरिया, रईस, राजपुरया, रानीवाला, रासीवासीया, रामनवभीवाला, रूंगटा, रेलवाले, लडीवाले, लड्ढ़ा, लुहारीवाले, लोडिया, बराढ़ी, शरनं, शोरावाले, सरना, संकर्द सराणी, सांगानेरिया, साडू, सिंधी, सुरेका, सूगला, सूतवाले, हवेलिया, हाथीदांतवाला, हलवासिया, हिमाणिया, हिम्मतसिंहका।

गोयल : आडूकिया, इकड़िया, कनोई, कन्दोई, कयाल, कसदिया, कसेरा, कहनानी, कागलीवाला, काण्डा, कानोड़िया, कारीवाला, कोटावाले, कोंचवाले, गढवाला, गाडोदिया, गुट्गुटिया, गुडवाले, गोयनका, गोइन्का, धीवाले, चकेरे, चांदगथिया, चांदीवाला, चावलवाला, चिरमोले, चुरूवाले, चौधरी, चेकड़ीका, छीतरका, जसरापुरिया, झंड़ेवाला, झरीबुरीवाला, झूमजीवाले, टकसाली, टिकरिया, टिबडेवाल, टेकडीवाल, टोरिया,डीडवानिया तवरेवाला, धानवाला, नानूहाला, पटवारी, पंतगवाले, पट्टीवाले, पंसारी, फर्शीवाला, बंचवाला, बजाज, बथवाल, बांदीकुईवाले, बुधवारी,

बैराठी, भगत, भरूका, भिवानीवाला, भोडूका, भौतिका, भिण्डा, मोहनका, मोदी, मोर, रंगवाला, राईका, रायजादा, राणा, रूवाटिया, रोहिला, लडिया, लुंडूका, लावा, लीला लिहिला, लांड, वाणवाले, वाड़ीजोड़ीवाले, वेद, वैद, शीशवालिया, संतरामजीका, सलमेवाले, सवाईका, समरायवाले, सांभरवाले, सेठ, सोनावाले, हलवाई।

कंसल : अडूकिया, दोसीहाला।

मंगल : आबूवाले, आर्य इंद्रानेवाले, करौलीवाले, कसेरा, काकड़ावाले, कानोडिया, कागाणी, काला, किठानिया, केकडीवाले, खुरड़ीकटु, खेमका, खोयावाले, गजबी, गाबिन्दगढ़वाले, घीवाले, छीटावाला, जगनानी, जाजोदिया, जायल्या, टिकमाणी, टेमाणी, धोलीवाल, नाउका, नोबतका, पच, पपरूनिया, परगनावाले, फिरोजावाले, बैराठी, मंगलूनेवाले, मांगलिक, मोदी, रामुका, लूणका, बाबी, शोभासरिया, सिपुरिया, हरलालका।

मित्तल : आर्य, आलवाले, आडछेवाले, कन्दोई, कसेरा, कागलावाले, कोकड़ा, कोटरावाले, कोयलेवाले, गढ़ैया, गरोठावाला, घीवाले, चांदीवाले, चालीसिया, चेनानिया, चौकसी, जयपुरिया, जड़तारयो, जौहरी, टोरका, डाबडीवाला, ढ़ेलिया, तम्बाकूवाले, श्रारड़, दंगलवाले, धरणीधरका, धेलिया, ध्रुव, नवलगढ़िया, परसरामपुरिया, पहाड़िया, पालड़ीवाला, बगडका, बगडिया, बगरूवाले, पंगरूवाले, बृजवासी, भगेरिया, भूतका, माखरिया, मुरोदिया, मुसद्दी, मुंशीमलवाले, मांठवाले, वैदिक, शाहपुरवाले, साहू, सिसोदिया, हिसारिया।

बंसल : कयाल, करवीवाले, केसरा, कटपीसवाले, कंदोई, कागठिया, कुचामणिया, केजडीवाल, खजांची, खराडी, खालडा, खेमका, खोवाला, गाडिया, गाडोदिया, गिदडा, चिडावावाले, चूड़ीवाले, चेनावत, चौखानी, चौधरी, चौमुवाले, जरिया, जालान, जालानी, घालरीवाला, झूंझनूवाला टाटीवाला, टांटिया, टालीवाला,

pdfelement
Remove Watermark Now

डाणी, डाकीडा, डिग्गीवाले, डेगला, तुलस्यान, तेजावत, तोपरवानावाले, धोईवाले, दारूका, दिमादिया, देवडा, धम्मीवाले, धमोड़, धानुका, नरेडी, नाउका, नागौरी, नेमानी, नोपाणी, पअवारी, पत्थरवाले, प्रहलादका, पाटोदिया, पावटावाले, पोद्दार, फतेहचंदका, फतेहपुरिया, बगियावाले, बजाज, बाडेसिया, बाँसवाला, बुधिया, बूवना, भरतिया, भागेर, मंढावाले, मधुरिया, ममेरीवाले, मसखरा, माउडिया, मांजमवाले, मुहाहिब, मोदी, राजगढ़िया, रामलालका, रूइया, लाठ, लोयलका, वेद, वैद, शाहू, शेखावाटिया, संधी, साहू-सावडिया, सिगलिया, सुल्तानिया, सोमनाथवाला, हिम्मतरामका।

सिंहल : आरसीव, कजारिया, काजड़िया, सिनाका, केशान, कोतवाल, गुमंट, गोरखपुरी, छारिया, जग्गुका, जाजोदिया, जिंद्रगर, जोहरी, झाझरिया, टिबडेवाला, नझोई, नाथानी, निम्बोदिया, नेवटिया, पटवारी, पत्थरवाले, पंसारी, बंका, बकरा, बगडका, बगडिया, बगडोदिया, बतासे, बाजारिया, बेरोलिया, भारतेन्द्र, भावसिंहका, खेमका, खोयावाले, गजबी, गोविन्दगढ़वाले, घीवाले, छोआवाला मंडावेवाला, मोडा, राजगढियां, रासीवासिया, रामूका, रेखान, लड्ढा, लाठ, लालपुरिया, लुहारका, शाह, संगल, सर्राफ, सिंगला, सिंहानिया, सुनारीवाला, हिसारिया, हुण्डीवाले।

ऐरण : इटावावाला, उणियारावाले, कयान, कसेरा, काईका, चिरालिया, चिरमिया, झाझरिया, डींगवाले, ढंढरिया, नाहडिया, नासिकवाले, बजाज, बडेगांववाला, बराजला, मुंशी, राय, सहरिया, साहा, सेंदपुरिया सोंथलिया, सोनका, हरभजनका हरलालका।

तायल : करड़वाले, टिकमाणी, तातलिया, भीमराजका।

बिन्दल : कांवटिया, खेमका, जयपुरिया, धोहतीवाले, पिपरीवाला, फतेहपुरिया, फतेहपुर वाले बागला, बारवाले, भीमसहिया, मंडावेवाला, लटिया, लोढा, सरावगी, सांवलका।

जिन्दल : खेमका, झूरिया, टुकडावाला, तुरकासवाले, नागौरी, पिपरीवाला, पित्ती, सर्राफ।

नोट : देशभर में विभिन्न बंक से प्रचलित तालिका, जिनके गोत्रों की जानकारी हम यहाँ उपलब्ध करा रहे हैं। ध्यान देने की बात है कि कई-कई बंक दो-दो, तीन-तीन गोत्रों में प्रचलित हैं। इनके अलावा अग्रवाल वैश्य अपने नाम के आगे गोत्र के स्थान पर अपने पूर्वजों की जन्मस्थली (गांव) का प्रयोग करते हैं। बंक के विषय में स्वजातीय बन्धुओं को जिज्ञासा रहती है। अतः समाज के अनेक रचित ग्रंथों, स्मारिकाओं व अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर यहाँ सम्पूर्ण तथ्यों की जानकारी दी जा रही है।

♦ ♦ ♦

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-11

चतुरश्रेणी वैश्यों का इतिहास

प्राचीन विश्वास के अनुसार महर्षि च्यवन चतुरश्रेणी वैश्यों के आदि पिता माने गये हैं। चतुरश्रेणी वैश्य वस्तुतः च्यवन ऋषि की ही संतान हैं। महर्षि च्यवन भृगु ऋषि के पुत्र थे। भृगु ऋषि की उत्पति ब्रह्मा की त्वचा से हुयी थी। भृगु ऋषि की पत्नी का नाम ख्याती था। वह कर्दम ऋषि की पुत्री थी। उनके गर्भ से धात्र व विधात्र उत्पन्न हुए थे। उनकी दूसरी पत्नी के गर्भ से कवि का जन्म हुआ था। कवि के पुत्र भार्गव भगवान इसना हुये, जिन्हें बाद में शुक्राचार्य भी कहते हैं। इनकी तीसरी पत्नी का नाम पुलोम्ना था। उनके गर्भ से महर्षि च्यवन का जन्म हुआ था। महाभारत के अनुसार महर्षि च्यवन की तपस्थली नर्मदा नदी के तट पर बताई गयी है। विन्ध्यमेखला के दक्षिण में इस नदी के तटीय जंगलों में अनेक ऋषि-मुनियों के तपोवन थे। उस काल में इस नदी को रेवा नाम से भी सम्बोधित किया जाता था।

इसी रेवाखण्ड में महर्षि च्यवन का सुकन्या के साथ गान्धर्व विवाह हुआ था। कुछ समय के पश्चात महर्षि च्यवन अपने तपोवन को छोड़कर अपनी पत्नी सुकन्या को साथ लेकर उत्तर की ओर चल दिये और आधुनिक हरियाणा के जिला नारनौल के एक छोटे से गाँव के पास कुटीर बनाकर रहने लगे। कुछ पौराणिक उपाख्यानों के आधार पर ऐसा भी मालूम पड़ा है कि महर्षि च्यवन की दूसरी पत्नी का नाम रेवा था और उसी के नाम पर रेवाड़ी कस्बे का नाम पड़ा था। त्रेता युग में महर्षि च्यवन को मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने अपना कुल गुरू माना था। अतः इनका सम्बन्ध अयोध्या नगरी से भी हुआ। इसी काल में

इन्होंने शत्रुघ्न को लवणासुर का वध करने का परामर्श दिया, जिससे कि ऋषि मुनि अरण्यों में स्वच्छन्द रूप से तपस्या कर सकें। राक्षसों का संहार हो जाने पर महर्षि च्यवन भी स्वच्छन्दता पूर्वक इसी वन्य भूमि के पश्चिम भाग में सुकन्या तथा रेवा के साथ रहने लगे। एक दिन आश्रम में अश्विनी कुमार पधारे। आश्रम में सुकन्या को देखकर उन्हें बड़ी दया आयी। उन्होंने सुकन्या से कहा, कि तुम इतने बड़े राजा की कन्या हो और परम सुन्दरी होकर भी, इस बूढ़े सन्यासी को पति बनाकर अपना जीवन नष्ट कर रही हो। यदि तुम्हारी इच्छा हो तो हम तुम्हें एक सुन्दर युवक की पत्नी बना सकते हैं। इस पर सुकन्या ने अश्विनी कुमारों से हाथ जोड़कर निवेदन किया, कि आप दोनों देवताओं के वैद्य हैं। आप कुछ भी कर सकते हैं। असम्भव को सम्भव करना, आपके बायें हाथ का खेल है, लेकिन एक स्त्री से उसके पति को छोड़कर अन्य किसी पुरूष से शादी के बारे में कहना, आपको शोभा नहीं देता है। मेरे पति श्री च्यवन ऋषि वृद्ध हैं अथवा असमर्थ हैं, लेकिन फिर भी वह मेरे पति हैं। मैं उन्हें छोड़कर दूसरे किसी अन्य पुरूष की बात अपने मन में भी, नहीं ला सकती हूँ। सुकन्या का यह उत्तर सुनकर देव-वैद्य अति प्रसन्न हुए। तब उन्होंने च्यवन ऋषि को युवावस्था प्रदान करने के लिये वरदान दिया और उन्होंने च्यवन ऋषि के मनोभाव को समझकर उनके झुर्रियाँ पड़े शरीर को एक कुण्ड में ले गये तथा उन्हें स्नान के लिये जल में प्रवेश कराया। महर्षि च्यवन ने जल में जैसे ही डुबकी लगायी, उनका शरीर परम सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट हो गया।

हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर रूप मिले जाने पर महर्षि च्यवन अति प्रसन्न हुए और उन्होंने अश्विनी कुमार से इस बात की इच्छा प्रकट की, कि उनका शरीर सदैव इसी प्रकार का बना रहे। अश्विनी कुमारों ने ऋषि की इस बात को मान कर, उन्हें एक

pdfelement
Remove Watermark Now

ऐसा अवलेह बनाकर दिया, जिसका सेवन करने से, वे सदैव युवा बने रहे। च्यवन ऋषि ने इसी प्रकार का अवलेह तैयार करके बाँटना प्रारम्भ कर दिया तथा इस अवलेह का नाम "च्यवनप्राश" रखा गया।

कालान्तर में वैद्य, कृषक, गौपालक और दुकानदारों ने मिलकर एक पृथक् वैश्य श्रेणी को जन्म दिया। जिसे चतुरश्रेणी वैश्य नाम से सम्बोधित किया गया। जिन श्रेणियों ने मिलकर चतुरश्रेणी निकाय का संगठन किया था। वे निमन प्रकार हैं-

श्रेणी	कर्म	उपवर्ग
भिषज	वैद्यक	
कीनाश	कृषक	चतुःश्रेणी वैश्य — चार श्रेणियों का निकाय
गोपाल	गोपालन	
वाणिजा	दुकानदारी	

अब चूंकि चार श्रेणियों का निकाय रखा गया है। इसलिए चतुरश्रेणियों वैश्यों का एक वर्ण एक स्वतंत्र इकाई बन गया। अब उनके विवाह सम्बन्ध आदि भी अपने ही वर्ण (बिरादरी) में होने लगे। वर्तमान ब्रजभूमि जिसे शूरसैन प्रदेश कहा जाता था चतुरःश्रेणी वैश्य वर्ण की मौलिक भूमि है। यहीं से चतुरश्रेणी वैश्यों का भारत के विभिन्न भागों को पलायन हुआ।

इस सम्बन्ध में श्री अम्बरीश गुप्ता जी मेरठ द्वारा हमें विस्तृत जानकारी निम्न प्रकार उपलब्ध कराई गयी।

चौसेनी/चतुरसेनी वैश्यों का उद्गम

वैश्यों की अनेकों उपजातियों में चौसेनी वैश्य उपजाति भी है। इस उपजाति के जन्मदाता व आदिपिता महर्षि च्यवन हैं। इस

उपजाति के विषय में यह भी किंवदन्ति है, कि यह वर्ग महाराजा अग्रसेन के लघुभ्राता चतरसैन की संतान हैं। कुछ लोगों का यह कहना है कि ये महर्षि च्यवन की संतान हैं। इनके चार मुख्य व्यवसाय कृषि, गौपालन, व्यापार तथा वैद्यक थे, जिसके कारण चार श्रेणी अर्थात चौसेनी कहलाये।

इस उपजाति के मथुरा, बरेली, अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा व एटा आदि जनपद बाहुल्य क्षेत्र है। वर्तमान में दिल्ली, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश आदि प्रदेशों के विभिन्न नगर इसके विशिष्ट स्थान बनते जा रहें हैं। इस वर्ग ने विभिन्न नगरों, कस्बों व ग्रामीण अंचलों में धर्मशालाएं, अस्पताल, स्कूल व कालिज आदि संस्थाओं का निर्माण कराया है। उनका सम्बंध अपने ही वर्ग के लोगों द्वारा किया जा रहा है। जैसे जनपद बुलन्दशहर में, सेठ मघानन्द इण्टर कॉलिज सराय धासी, चतुरसैनी वैश्य इण्टर कॉलिज करौरा, श्री चतुरसैनी पंचायती भवन खुर्जा, रमामूर्ति कन्या जू0हा0स्कूल खुर्जा के अतिरिक्त मथुरा, अलीगढ़ व आगरा आदि जनपदों में भी अनेक भवन स्थापित हैं।

इस वर्ग का अखिल भारतीय स्तर का 100 वर्षों से भी पुराना संगठन है, जो कि अखिल भारतीय चतुरश्रेणी वैश्य महासभा (रजि0) नाम से है। इसका मुख्यालय चतुरश्रेणी भवन, सुभाष नगर, खुर्जा में है। इस संगठन की उपरोक्त प्रत्येक नगरों में शाखाएं स्थापित हैं। संगठन का प्रत्येक तीसरे वर्ष निर्वाचन होता है। संगठन का मुख्य उद्देश्य अपनी उपजाति का उत्थान करना, निर्बल वर्ग के बच्चों को छात्रवृति प्रदान करना, प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहित व सम्मानित करना, विधवाओं को सहायता प्रदान करना, विवाह योग्य लड़के-लड़कियों की सूची प्रकाशित करना, आदि कार्य है। संगठन के प्रारम्भिक काल से सेठ चिरंजीलाल (किरी), ला0 भूरामल (मचकौली), वैद्य रघुवीर सरन

pdfelement
Remove Watermark Now

(करौरा), ईश्वरी प्रसाद गुप्ता (दिल्ली), सेठ मघानन्द व सेठ लाल किशन जी (सराय घासी), सेठ रघुवर दयाल जी (नैथला), सेठ मुरारीलाल (खुर्जा), ला0 अमीचन्द (बुलन्दशहर), ला0 महावीर प्रसाद (बुलन्दशहर), रमेशचन्द चतुरश्रेणी (बुलन्दशहर), ला0 बनारसीदास (खुर्जा), आदि महानुभाव सक्रिय रहे जोकि अब दिवगंत हो चुके हैं।

वर्तमान में इस उपजाति के उत्थान हेतु बुलन्दशहर के सर्वश्री रमेश चन्द गुप्ता, भगवत स्वरूप गुप्ता, भानु प्रकाश गुप्ता, विजेन्द्र कुमार गुप्ता, खुर्जा के मास्टर किशन लाल, सुनील गुप्ता, अनिल गुप्ता, मेरठ के अम्बरीश गुप्ता, ऋषिपाल गुप्ता, सत्यदेव गुप्ता व शिवदत्त गुप्ता, अलीगढ़ के ला0 रामचन्द्र गुप्ता, महेश चन्द्र गुप्ता, दिनेश गुप्ता व चक्खन लाल गुप्ता, आगरा के शंकरलाल गुप्ता, मथुरा के राहुल गुप्ता, डॉ0 ब्रजमोहन गुप्ता काका जी, नित्यानन्द गुप्ता, जय प्रकाश गुप्ता, श्रीमति उषा गुप्ता, गाजियाबाद के आर0डी0 गुप्ता, दिल्ली के आनन्द स्वरूप गुप्ता, महेन्द्रपाल गुप्ता, मुंशी लाल गुप्ता, रमेश चन्द्र गुप्ता, बनवारी लाल गुप्ता, सुरेश चन्द गुप्ता व ज्ञानप्रकाश गुप्ता आदि लोग सक्रिय हैं।

इस महासभा द्वारा प्रत्येक माह मासिक पत्रिका,'श्री चतुरश्रेणी वैश्य संदेश' मथुरा नगर से प्रकाशित की जाती है। इस पत्रिका के माध्यम से उपजाति की प्रगति, आयोजित महासभा की बैठकों का ज्ञान तथा विवाह योग्य लड़के-लड़कियों की सूची प्रकाशित की जाती है, जिससे समाज के पाठक लाभान्वित होते हैं। अन्य उपजातियों की भांति इस उपजाति में भी 50 गोत्र विद्यमान हैं। गोत्र एक परिवार को परिलक्षित करता है और गोत्र की गोत्र में शादियाँ वर्जित हैं।

इस उपजाति के उपलब्ध गोत्र निम्न प्रकार हैं-

1. वैद्य	2. चंडौसिया	3. सनलीवार	4. निमचानिया
5. सुंड़ेला	6. ठैगसे	7. ब्रजारिया	8. निमवासा
9. कश्यप	10. डोडुआ	11. पल्लीवाल	12. घनौरिया
13. वरदानिया	14. भक्तरिया	15. काटपुरिया	16. मांगलेश
17. पलरवाल	18. बामोरिया	19. भूदेश्वर	20. वनवारिया
21. भृकुटिया	22.भामोरिया	23. हांसेला	24. चौधरिया
25. मयानिया	26. आहरिया	27. लठोरिया	28. बामटे
29. बावोरिया	30. मनसा	31. चंडोसिया	32. जायस
33. गौतम	34. आर्य	35. सिंगारिया	36. भमैया
37.कनकपुरिया	38. तुसिया	39.वामन सुल्तानी	40. वनसैरिया
41. भोजेश्वर	42. दिसवाड़ा	43. पनड़िया	44. डयोडिया
45. आमिया	46. बचलेश्वर	47. अंगिरा	48. मातीहार
49. खैरवाल	50. घीया		

शिक्षा के विस्तार एवं समय की माँग की दृष्टि से, सभी उपजातियों के अधिकांश लोग वर्तमान समय में उपजाति भावना से, ऊपर उठकर अपने बच्चों की शादियाँ, दूसरी उपजातियों, अग्रवाल राजवंशी, गिदौड़िया, जैन व महेश्वरी आदि उपजातियों में करने को तत्पर रहते हैं। आपसी तालमेल व विचारों के समन्वय से ये रिश्ते फलीभूत हो रहे हैं।

उपरोक्त प्रकार का समन्वय हमारी वैश्य जाति के उत्थान हेतु आवश्यक है। इससे वैश्य बिरादरी की एकता व मजबूती परिलक्षित होती है।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-12

वार्ष्णेय वैश्यों का इतिहास

मैंने श्री नित्यामूर्ति वार्ष्णेय बहजोई का एक लेख, वार्ष्णेय वंश की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पढ़ा। उसी के आधार पर वार्ष्णेय समाज की यह सब ऐतिहासिक जानकारी यहाँ पर प्रस्तुत की जा रही है-

वार्ष्णेय वंश की उत्पत्ति एवं इतिहास

हिन्दुओं की प्राचीन पुस्तकों से यह बात अच्छी प्रकार से सिद्ध हो चुकी है कि आर्य लोग उन्नति और विद्या के शिखर पर चढ़े हुए थे और देश में सब प्रकार से शान्ति और समृद्धि थी। सम्पूर्ण लोग चार जातियों में बंटे हुए थे अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। यह कथन यजुर्वेद से भी प्रकट होता है-

ब्राह्मणोस्य मुखमासीत, बाहू राजन्यः कृतः।
उरूतदस्य यद्वैश्यः, पदभ्याम शूद्रो अजायत।।

इसमें संदेह नहीं कि पुराने समय में एक कुल के लोग बहुधा करके अपने पुरखों के नाम से पुकारे जाते थे। यदु की संतान यादव और रघु की राघव कहलाई। इसी प्रकार कौरव, पाण्डव आदि नाम मिलते हैं, परन्तु यह कुलों के नाम उसी प्रकार थे, जैसे आज दिन यूरोप में कुलों के नाम (Family Name) हैं। यह बिरादरियों के नाम नहीं थे। जब बिरादरी बननी शुरू हुई, यही नाम जो विविध कुलों की परस्पर पहचान करने के काम आते थे, उन बिरादरियों के नाम पर रखे गये जो उन कुलों में से उत्पन्न हुई थीं।

प्रश्न यह उठता है कि चार आर्य जाति इतनी विविध जातियों में कैसे और कब बंट गई? इसका उत्तर आर्यों के

प्राचीन इतिहासों से मिल सकता है। महाभारत से जो अपने समय का एक विश्वासनीय इतिहास से प्रगट होता है कि महाभारत की लड़ाई होने से लगभग 150वर्ष पूर्व से आर्यवर्त में बहुत से देशीय एवं सामाजिक झगड़े फैल रहे थे। पुराने रीतिरिवाज और व्यवहार की जगह नये-नये रीतिरिवाज और व्यवहार चलन में आने लगे थे। नई-नई जातियाँ उत्पन्न हो रही थी और परस्पर पहचान करने के लिये मनमाने चिन्हों का प्रचलन हो रहा था। अतः इससे विदित होता हैं कि जातियों का उद्भव महाभारत से कुछ पूर्व से ही माना जा सकता है।

प्राचीन आर्य लोगों की जाति कर्मानुसार थी, न कि जन्मानुसार एक ब्राह्मण, वैश्य कहलाता था और इसके विपरीत एक वैश्य, पुजारी का कार्य करने वाला ब्राह्मण गिना जाता था। उन दिनों जाति का निर्भर कर्म पर था, जन्म पर नहीं था, महाराजा मनु का यह प्रमाण है-

शूद्रो ब्राह्मणतामेति, ब्राह्मणाश्रेति शूद्रताम।
क्षत्रियाज्जात मेवन्तु विद्या द्वैश्या तथैव च।।

अर्थात् शूद्र ब्राह्मण भाव को प्राप्त हो जाता है और ब्राह्मण शूद्र भाव को। इसी प्रकार क्षत्रिय और वैश्य भी।

महाभारत का निम्न श्लोक भी यही भाव दर्शाता है-

शूद्रोऽपि शील सम्पन्नो गुणवान ब्राह्मणों भवेत।
ब्राह्मणोऽपि क्रियाहीनः शूद्रात प्रत्यवरो भवेत।।

अर्थात् शील सम्पन्न और गुणवान शूद्र ब्राह्मण हो जाता है और क्रिया हीन ब्राह्मण शूद्र से भी नीचे हो जाता है।

अब हम वैश्य बारहसैनी (वार्ष्णेय) की उत्पत्ति और विकास का वर्णन करते हैं-

भागवत के नवम स्कंध अध्याय 23 श्लोक 28-29 में

pdfelement
Remove Watermark Now

देखने से मालूम होता है कि चन्द्रवंशी क्षत्रियों में महाराज यदु के वंश में एक पुरूष वृष्णि उत्पन्न हुए। वे बड़े ही प्रतापी थे। उनके नाम से वृष्णि वंश विख्यात हुआ–

वष्णि पुत्रों मधो स्मृतः
तस्य पुत्र शंत त्वासीत वृष्णि जेष्ठयंतः कुलम्
माधवा वष्यार्यो राजन यादवा श्रेचति संज्ञिता।।

अर्थात् वृष्णि महाराज मधु का पुत्र था। मधु के सौ पुत्र थे परन्तु वृष्णि कुल में बड़ा था। कुल का मधुवंश वृष्णि वंश और यदुवंश हुआ।

महाभारत में भी अध्याय 33 श्लोक 54–55 में भी इसी वृष्णि के विषय में यह लेख मिलता है–

मधोः पुत्रशत त्वासीत वृष्ण स्तुस्य वंशमाज।
वृष्णात वृष्णयः मधोस माधवा स्मृता याद्वाय यदुनाः।।

अर्थात् मधु के सौ पुत्र थे। वृष्णि उस कुल में सूर्य के समान था। कुल वृष्णि के नाम से वृष्णि वंश, मधु से मधुवंश और यदु से यदुवंश कहलाया।

जैसा कि पहले लिखा गया है कि वंश के लोग बहुधा अपने पूर्वजों के नाम से पुकारे जाते थे। अतः वृष्णि का कुल वार्षिणी कहलाना चाहिए। इसलिये यह कुल वार्षिणी पुकारा गया, महाराजा कृष्ण भी इस कुल में उत्पन्न हुए, जैसा कि भागवत के नवम स्कंध में 23–24 वें अध्याय से विदित है, इसी पुस्तक के दसवें अध्याय में उनको 'वृष्णि कुल पुष्कर' के नाम से पुकारा गया है–

श्री कृष्ण वृष्णि कुल पुष्कर जो षदिमिनः।

भागवत दशम स्कंध अध्याय 14 श्लोक 40 गीता और अन्य महाभारत योग्य पुस्तकों में भी उनको इस नाम से पुकारा गया है–

अजर्मीधियवात कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुल स्त्रियः।
शौकुदुष्ठ सुवाष्योर्य जायते वर्ण संकरः।।

(भगवत गीता प्रथम अध्याय श्लोक 4)

अथकेन प्रयुक्तायं पापं चरित पुरुषः।
अनिच्छुनपिवार्ष्णेय! बलादि वनियोजतः।।

(भगवत गीता अध्याय 3 श्लोक 36)

इन दोनों श्लोकों में कृष्ण को वार्ष्णेय कहा गया है जिसका अर्थ है कि श्री कृष्ण वृष्णि कुल में उत्पन्न हुए। कुल का नाम वृष्णि था, सरल होने के कारण यह वृष्णि से वार्ष्णेय हो गया।

बारहसैनी यह कहते है कि बारहसैनी शब्द वास्तव में वार्षिणी है। वंश के बहुत से लोग व्यापार का कार्य करने लगे और वैश्य कहलाते हैं। यह बात तो प्रत्यक्ष है कि बारहसैनी और वार्षिणी उच्चारण में एक से हैं। इसलिये यह सम्भव ही नहीं, वरन् निश्चित है कि बारहसैनी ही वार्षिणी था। बोलचाल की भाषा में यह वार्ष्णेय शब्द ही बोला जाने लगा।

कोई क्षत्री जाति ऐसा नहीं है जो वार्षिणी या बारहसैनी या किसी और नाम से पुकारी जाती हो और न किसी ऐसी जाति को जो अपना विकास वृष्णि कुल से बतलाती हो।

यह बात प्रसिद्ध है कि वृष्णि और इनकी संतान मथुरा और उसके आस-पास जगहों में रही थी। वृष्णि का पिता मधु था। इनके नाम से मथुरा, मधुपुरी और उसके आस-पास की जगह मधुवन आदि थीं। महाराज श्री कृष्ण की राजधानी भी मथुरा ही थी। उनका कार्य क्षेत्र वृंदावन, गोवर्धन, नन्दगांव, बरसाना, गोकुल आदि स्थान भी पास-पास हैं। मथुरा और

pdfelement
Remove Watermark Now

वृंदावन के बीच एक जगह अक्रूर के नाम से पुकारी जाती है जो वृष्णि की संतान थे।

बारहसैनी वैश्यों के विषय में निम्न बातें सोचने योग्य हैं-

बारहसैनी मथुरा और जिन जिलों में मिलते है वह उससे मिले हुए हैं। बारहसैनी मथुरा, बुलन्दशहर, अलीगढ़, मुरादाबाद, बदायूँ, एटा आदि जिलों में मिलते है। यदि पश्चिमोत्तर प्रदेश का नक्शा निकाल कर मथुरा को केन्द्र मानकर 84 कोस के अन्तर से वृत खींचा जावे उसी क्षेत्र में बारहसैनी (वार्ष्णेय) जाति का निवास है।

अक्रूर घाट जो वृन्दावन और मथुरा के बीच में एक जगह है गोपीनाथ जी (श्रीकृष्ण) का मन्दिर वार्ष्णेय जाति में उत्पन्न होने के कारण बारहसैनी उनको अपना मुख्य देव मानते हैं और उनको अपने कुल में परमेश्वर का अवतार मानकर बड़ी महिमा के साथ उनकी पूजा उपासना करते हैं। गोपीनाथ (श्रीकृष्ण) के मन्दिर में बारहसैनी के सिवाय और किसी का चढ़ावा नहीं लिया जाता।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को ही बारहसैनी समाज अपना सबसे बड़ा त्यौहार मनता है। इस दिन को वह बारहसैनी दिवस के रूप में भी मनाता है। अतः समस्त साक्ष्यों के आधार पर हम गर्व से कह सकते है कि हम वार्ष्णेय वंशी हैं, जो कि महाभारत कालीन महाराजा वृष्णि से सम्बंध रखता है।

नोट- उक्त लेख में अधिकांश सामग्री बाबू पन्नालाल एडवोकेट इलाहाबाद द्वारा लिखित वंशावली वैश्य बारहसैनी पुस्तक से ली गई है।

◆ ◆ ◆

अध्याय-13

केसरवानी तथा गहोई वैश्यों का इतिहास

केसरवानी : यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- केसर + वानी अर्थात् जो लोग केसर का व्यापार करते थे, वे केसरवानी वैश्य कहलाये। सभ्यता के आदिकाल में ये केसर वाणिक थे, बाद में ये केसरवाणी कहलाये। केसरवाणी शब्द ही कालान्तर में केसरवानी बना। बहुत पूर्व ये लोग, झेलम नदी के तट के पास केसर की खेती तथा उसका व्यापार करते थे। इनका निकास कश्मीर से माना जाता है। ये सूर्य के उपासक थे। इनका ध्वज चिन्ह भी उदीयमान सूर्य था। कश्मीर में राजनैतिक अत्याचारों के फलस्वरूप जब इन्हें कश्मीर छोड़ना पड़ा तब कुछ लोग पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं बंगाल चले गये तथा कुछ लोग दिल्ली, राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र चले गये। पूरब की ओर जाने वाले लोग पुरविया कहलाये तथा पश्चिम की ओर जाने वाले लोग पश्चिमिया कहलाये। दोनों के रीति-रिवाज तथा आचार-विचार और रहन-सहन में भी अन्तर पैदा हो गया। इस प्रकार केसरवानी जाति दो भागों में विभक्त हो गई।

केसरी शब्द का प्रयोग : उड़ीसा के प्रसिद्ध कोणार्क मन्दिर के इतिहास में यह लिखा है कि मन्दिर "सुरेन्द्र केसरी" ने बनवाया था। यह भी पता चलता है कि केसरी राजवंश का शासन 1100 ईसा पूर्व में था। ये सूर्यवंशी थे तथा इनका ध्वज-चिन्ह "उगता हुआ सूर्य" था। इसी को आधार मानते हुए कुछ लोग अपने को "केसरी" शब्द से सम्बोधित करने लगे हैं। बिहार के कांग्रेसी नेता तथा बाद में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्यक्ष श्री सीता राम केसरी शब्द से भी यही तात्पर्य ध्वनित होता है। श्री सीता राम केसरी ने इस जाति को पिछड़ी जाति में मान्यता दिलाई है तथा अन्य वैश्य उपजातियों को भी ऐसा ही करने की सलाह दी है।

सामुहिक विवाह : फिजूल खर्ची, दहेज, दिखावा तथा अन्य अनावश्यक रीति-रिवाजों से बचने के लिए केसरवानी समाज ने सामुहिक विवाह पद्धति प्रारम्भ की, जिसके फलस्वरूप मध्यप्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश में सामूहिक विवाह पद्धति का उदय हुआ और इसमें सैकड़ों सामूहिक विवाह एक साथ सम्पन्न हुए हैं।

समाज के विशिष्ट व्यक्ति

1. **श्री सीता राम केसरी :** कल्याण मन्त्री भारत सरकार तथा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पद पर आसीन रहे।
2. **श्री निरंजन प्रसाद केसरवानी :** मध्यप्रदेश में संसद सदस्य रहे।
3. **श्री राम हित गुप्त :** मध्यप्रदेश में मन्त्री बने।
4. **डॉ0 दुखराम :** प्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ तथा पदमभूषण से सम्मानित हुए।
5. **न्यायमूर्ति श्री प्रेमशंकर गुप्त :** इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रहे।

इनके अतिरिक्त भी अनेकानेक व्यक्ति विधायक बने, तथा अनेक व्यक्तियों ने आई0ए0एस0 तथा आई0पी0एस0 के द्वारा प्रशासनिक सेवाओं में रहकर, समाज को गौरवान्वित किया।

गहोई वैश्य

पाणिनि ने वैश्य के लिए अर्य पद का उल्लेख किया है। (अर्यःस्वामि वैश्ययोः, 3/1/103) गृहस्थ के लिए 'गृहपति' शब्द है। मौर्य-शुंग-युग में गृहपति, समृद्ध वैश्य व्यापारियों के लिए प्रयुक्त होने लगा था। जो बौद्ध प्रभाव को स्वीकार कर रहे थे उन्हीं से 'गहोई' वैश्य प्रसिद्ध हुए।

गहोई शब्द गृहपति से बना है। इसका प्रमाण श्री परमानन्द जैन शास्त्री के लेख से भी मिलता है। गहोइयों की उत्पत्ति व विकास के बारे में वे लिखते हैं-

"प्राचीन गृहपति" जाति का ही वर्तमान नाम गहोई है। प्राचीन काल में अधिकांश गहोई जैन मत के पोषक रहे हैं। इसका प्रमाण वे मूतियाँ व मन्दिर हैं, जिनका निर्माण दसवीं से तेरहवीं सदी तक के काल में गहोईयों द्वारा कराया गया था। बुन्देल खण्ड में आहार, खुजराहो में इनके द्वारा निर्मित जैन मन्दिर पाए गए हैं।

गृहपति जाति अति प्राचीन जातियों में से एक मानी जाती है। यही कारण है कि पाणिनि की अष्टाध्यायी में इनका स्पष्ट उल्लेख आया है। इनमें शैव धर्म के मानने वाले लोग भी थे। खुजराहो में इनके द्वारा निर्मित शिवालय भी पाए गए हैं।

इनकी प्रसिद्ध नेमा जाति बुन्देलखण्ड ओर मालवा में फैली है, परन्तु इनका अधिक भाग मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले में बसा हुआ है। यहाँ के रहने वाले प्रायः सभी वैष्णव हैं। इनमें 'असाटी' लोग वैष्णव होते हुए भी, आचार-व्यवहार में जैनियों से प्रभावित हैं।

गोहोयीर्पभा में इनका परिचय देते हुए कहा गया है ये पटिये लोग शादी-विवाह कराने निमित देश-देश घूमा करते थे।

pdfelement
Remove Watermark Now

अतः सम्पूर्ण परिवारों से सीधा परिचय होने के कारण उन्हें मान्यता दी गई। वस्तुतः गोहोई अपनी उत्पति गृह-पति शब्द से ही मानते हैं। उनका कहना है कि यह जाति अपने वर्ण धर्म पर सदा दृढ़ रही, इसलिए ही इसे गोहोयी की पदवी दी गई। 'गो+होयी' इन तीन शब्दों में समस्त वैश्य कर्मों का सम्पादन हो जाता है। गो से गौरक्षा, कृषि आदि कर्म करना तथा होयी से यज्ञादि करना, दान देना, बोना-काटना आदि। अतः गोहोयी शब्द की यदि व्युत्पति के अनुसार गवेषणा की जाये तो यह उस वर्ग का बोधक बनता हैं, जिसमें समस्त वैश्य कर्म आत्मसात हो जाते हैं।

इनके रीति, रिवाज, गोत्र आदि लगभग सभी अग्रवालों से समानता रखते हैं। इनके बारह गोत्र ओर 116 आंकने हैं जो सभी बारह गोत्रों के अन्तर्गत समाहित हो जाते हैं। वे गोत्र ये हैं-

1. बासर, 2. गोल, 3. कोच्छिल, 4. बादल, 5. जैतल, 6. गोंगल, 7. माल, 8. कासव, 9. कोहिल, 10. वाच्छिल, 11. काच्छिल, 12. वादरायण ।

उपर्युक्त बारह गोत्रों में से वादरायण गोत्र का नाम भर पाया जाता है। इस गोत्र के लोग नहीं मिलते हैं।

श्री मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त इसी समुदाय से सम्बन्धित हैं, जिन्हें राष्ट्र कवि की संज्ञा प्राप्त हुई। इनका भी गहोई वैश्य बन्धु महासभा नाम से संगठन है।

♦ ♦ ♦

अध्याय-14

माहौर, माथुर, सहरालिए वैश्यों का इतिहास

माहौर वैश्य

माहौर शब्द महा + उरू की सन्धि से बना है। कहीं कहीं इसे महावर भी कहा जाता है। जिस प्रकार अग्रवालों का निकास अग्रोहा से हुआ, उसी प्रकार माहौर वैश्यों का निकास माहौर गढ़ से हुआ। जिस प्रकार अग्रवालों की उत्पति महाराजा अग्रसेन जी से हुई, उसी प्रकार माहौर वैश्यों की उत्पति क्षत्रिय वंश में सूर्यवंश की हय शाखा के सहस्रबाहु अर्जुन से मानते हैं। सहस्रार्जुन ने रावण को युद्ध में हराया था। बाद में परशुराम ने सहस्रार्जुन को मार दिया था तथा उनके वंशजों ने परशुराम द्वारा सताये जाने पर, मथुरा की ओर पलायन किया। मथुरा में ये लोग माहौरी-पौरि मौहल्ले में बस गये। यहाँ से कुछ लोग अन्य स्थानों में चले गये। पटना, गया, मगध के माहौर अपना निकास मथुरा से मानते हैं। कुछ माहौर मथुरा से राजस्थान व गुजरात तथा अन्य स्थानों पर जाकर बस गये।

गोत्र : माहौर वैश्यों के गोत्र एवं सम्बन्धित ऋषि/मुनि के नाम निम्न प्रकार है-

	गोत्र	*मुनि*
1.	अठधरा	चन्द्र मुनि
2.	आरमराम	कश्यप मुनि
3.	एकधरा	कुन्डिल मुनि
4.	कन्धवे	कश्यप मुनि

pdfelement
Remove Watermark Now

5.	कपसिमे	शान्डिल मुनि
6.	कुटरियार	शरण मुनि
7.	चरण पहाड़ी	सवेश मुनि
8.	तरवे	वत्स्य मुनि
9.	नव दिया	भारद्वाज मुनि
10.	पवन चौदह	भारद्वाज मुनि
11.	बैशकियार	भारद्वाज मुनि
12.	वडगवे	कण्व मुनि
13.	वरविगहिया	कश्यप मुनि
14.	वरहपूरिया	वशिष्ट मुनि
15.	भवानी	कुशा मुनि
16.	लोहानी	कपिल मुनि
17.	शाहखाता सोहानी	कश्यप मुनि
18.	सेठ	शान्डिल मुनि

माथुर वैश्य

कुछ विद्वान मानते हैं कि मथुरा मे रहने वाले वैश्यों को ही माथुर वैश्य कहा जाता गया है। अतः माथुर वैश्य जहाँ कहीं भी मिलते हैं, उनका निकास मथुरा से ही माना जाता है। माथुर वैश्य अपना आदि पुरुष माथुर ऋषि को मानते हैं।

गोत्र : माथुर ऋषि के 12 पुत्र थे। उसी के आधार पर माथुर वैश्यों के 12 गोत्र माने गये हैं तथा प्रत्येक गोत्र में 6 खेड़े है। इस प्रकार कुल 72 खेड़े हैं। प्रत्येक गोत्र तथा उनसे सम्बंधित खेड़ों का वर्णन हम निम्न प्रकार करते हैं-

	गोत्र	*खेड़े*
1.	गागलस	1. नीम्बोकरया 2. मोरु पुरिया 3. चौसैया 4. सादूपुरिया 5. पेगोरिया 6. मखइया
2.	चांदलस	1. नौगैया 2. मुड़वारिया 3. पचूँनिया 4. अरवारिया
3.	वाक्षलस	1. फरमोइया 2. रेभवार 3. पेन्तीवार 4. डिविया टीका 5. अरवारिया 6. तेरेमनिया
4.	कोशलस	1. जघेनिया 2. कठोरिया 3. कुतुकपुरिया 4. शनिचार 5. जवरेना 6. सल्ल
5.	मांऊलस	1. गिदोलिया 2. गेंदनिया 3. रूनकुतिया 4. जरहरिया 5. बेन्वाजिया 6. केवई
6.	गोलस	1. मईवार 2. भितरकोठिया 3. असवरिया 4. रोनेरिया 5. इकरेलिया 6. विबरहरूआ
7.	वासलस	1.सींगपुरिया 2. हरकातिया 3. सिरोहिया 4. पैगोरिया 5. रेपुरिया 6. बलहिवार
8.	भोलस	1. चौदहराना 2. भांवलपुरिया 3. तेन गुरिया 4. विरजाजरिया 5. मोरेटिया 6. मेहरे
9.	गर्गस	1. रेन्भार 2. ओटिया 3. रईभवार 4. ररहिया 5. मलईया 6. जाटोलिया
10.	भायलस	1. भाडेरिया 2. पारोलिक 3. विरहरूआ 4. अटावर 5. बाबनिया 6. घोटइया
11.	वांदलस (बधिलस)	1. पिचूनिया 2. ओरिया 3. रिंथिरआवगुला 4. रेवरिया 5. रूनकुतिया 6. वारीवार
12.	बसलस	1. मांडेरिया 2. दौदेरिया 3. दोनेरिया 4. तरतुरिया 5. बाजर बेरिया 6. खोहरिया

pdfelement
Remove Watermark Now

प्रमुख व्यक्ति : स्व0 श्री शिव चरण माथुर, मुख्यमन्त्री, राजस्थान इसी उपवर्ग से सम्बन्धित थे। पचकुइयां चौराहा, अशोक नगर आगरा में माथुर वैश्यों की विशाल धर्मशाला है।

सहरालिए वैश्य

सहरालिए वैश्यों की उत्पति सरालक (तक्षशिलादिगण) वर्तमान सहराला, जिला लुधियाना से मानी जाती है। सहरालिए वैश्य यहां से अपना निकास मानते हैं। (सरालकों भिलना यस्य सः सारालकः) डा0 रघुवीर जो भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे थे इसी समुदाय के थे।

◆ ◆ ◆

अध्याय-15

यज्ञसेनी वैश्य, गुलहरे वैश्य, हलवाई या मोदनवाल वैश्यों का इतिहास

यज्ञसेनी वैश्य

यज्ञ के प्रति इनकी अत्यधिक आस्था के कारण ये यज्ञसेनी वैश्य कहलाये। यज्ञसेनी अपना आदि पुरूष यज्ञसेनी जी को मानते हैं, जिन्होंने दक्ष प्रजापति के यज्ञ में शंकरजी द्वारा भेजे गये वीरभद्र को यज्ञ विध्वंस करने से रोका था तथा उसे धराशायी कर दिया था।

पुराणों में कथा आती है कि जब दक्ष प्रजापति ने यज्ञ किया, उसमें उन्होंने अपने दामाद शंकर जी को नहीं बुलाया, परन्तु शंकर जी की पत्नी सती अपने पिता दक्ष प्रजापति के घर पर बिना बुलाये ही पहुँच गयीं। वहाँ उन्होंने शंकर जी का अपमान देखकर, यज्ञकुण्ड में कूदकर आत्मदाह कर लिया। इससे क्रोधित होकर शंकर जी ने वीरभद्र को दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने हेतु भेजा। इधर महर्षि भृगु ने यज्ञ विध्वंस रोकने हेतु ऋचाओं के गायन और आवाहन के साथ ज्योहीं यज्ञ कुण्ड में घृत-आहुति दी, त्योंही यज्ञ कुण्ड से स्वर्ण की सी कान्ति लिए हुए, एक यज्ञ पुरुष प्रकट हुए। यह यज्ञ पुरुष दिग्विजय रथ पर आरूढ़ तथा दिव्य मणि धारण किये हुए थे। उन्हें महर्षि भृगु जी ने "यज्ञसेन" के नाम से सम्बोधित किया। तब इन्होंने यज्ञ-विध्वंस करने वाले गणों से युद्ध करने हेतु, अपने शरीर से, अपने जैसे, चालीस हजार योद्धा पैदा किये। उधर शंकर जी ने दिव्य शक्तियों से सम्पन्न करके वीरभद्र के साथ अपने गणों को दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करने हेतु भेजा। वीरभद्र ने दक्ष प्रजापति

pdfelement
Remove Watermark Now

का सिर काटकर यज्ञ कुण्ड में डाल दिया। उधर यज्ञसेन ने वीरभद्र के साथ तथा यज्ञसेन के चालीस हजार साथियों ने गणों के साथ, भीषण युद्ध किया। तब ब्रह्मा, विष्णु तथा अन्य सभी देवताओं ने शंकर जी का आवाहन किया। शंकर जी प्रकट हुए। उन्होंने युद्ध में मारे गये सभी को जीवन दान दिया। उस समय यज्ञसेन ने भी भक्ति-भाव से शंकर जी की स्तुति की। शंकर जी ने प्रसन्न होकर उनसे वरदान माँगने हेतु कहा। तब यज्ञसेन महाराजा ने शंकर जी से यह वर माँगा कि हम चालीस हजार यज्ञसेन सदैव ही धर्म की रक्षा में लगे रहें। तब शंकर जी ने "तथास्तु" कहा। ये चालीस हजार यज्ञसेन भिन्न-भिन्न ऋषियों के साथ रहने लगे। जिन-जिन ऋषियों के साथ ये रहें, उनके गोत्र ही इनमें प्रचलित हो गये।

गोत्र : इनके गोत्रों का विभाजन निम्न प्रकार से 46 यूथपतियों के नामकरण पर आधारित है तथा ये यूथपति ऋषियों के आश्रमों में यज्ञ की रक्षा एवम् व्यवस्था का कार्य करते थे।

46 यूथपतियों का वर्णन

1.	अग्निसेन	2.	नदीसेन
3.	युक्तिसेन	4.	अजिसेन
5.	शिवसेन	6.	सूर्यसेन
7.	सत्यसेन	8.	महासेन
9.	चन्द्रसेन	10.	मंगलसेन
11.	वुद्धसेन	12.	गुरूसेन
13.	शुक्रसेन	14.	कमलसेन
15.	मधुसेन	16.	रविसेन
17.	ब्रह्मसेन	18.	अंकसेन

19.	रूद्रसेन	20.	श्रुतिसेन
21.	पद्मसेन	22.	विराटसेन
23.	उग्रसेन	24.	कर्णसेन
25.	आदिससेन	26.	मंगलसेन
27.	शूरसेन	28.	शुभसेन
29.	चरणसेन	30.	सुन्दरसेन
31.	इन्द्रसेन	32.	पिंगलसेन
33.	वल्डिहसेन	34.	वरूणसेन
35.	मूर्तिसेन	36.	भद्रसेन
37.	रक्षसेन	38.	अग्रसेन
39.	कुमारसेन	40.	सतिसेन
41.	मरूतसेन	42.	लयसेन
43.	वंगसेन	44.	लहरीसेन
45.	प्रलम्बसेन	46.	गौरसेन

प्रमुख व्यक्ति : 108 स्वामी नारदानन्द सरस्वती, स्वामी ओकांरानन्द जी सरस्वती, श्री जुगल किशोर गुप्त आदि विशिष्ट व्यक्ति इस समुदाय से हुए हैं जिन्होंने वैश्य समाज को गौरवान्वित किया।

गुलहरे वैश्य

जिस प्रकार अग्रवालों का निकास अग्रोहा से, ओसवाल का निकास ओसवा से, बरनवाल का बुलन्दशहर से, माथुर वैश्य का मथुरा से माना जाता है। उसी प्रकार, गुलहरे वैश्यों का निकास भी गौलेर से माना जाता है।

जिस प्रकार लोहे के व्यापार से लोहिया वैश्य बने, केसर के व्यापार से केसरवानी वैश्य बने, सोने के व्यापार से सोनिया

pdfelement
Remove Watermark Now

वैश्य बने, काँसे के व्यापार से कसौधन वैश्य बने। उसी प्रकार, यह माना जाता है कि गुड़ के व्यापार के कारण ही ये गुलहरे कहलाये।

माना जाता है कि गुड़ एवं खाण्ड के उत्पादन का आविष्कार सबसे पहले गुलहरे वैश्यों द्वारा ही किया गया। यज्ञ में गुड़-खाण्ड का प्रसाद वितरण किया जाता है। आदिकाल में गुड़-खाँड का उत्पादन एवं वितरण इन्हीं गुलहरे बन्धुओं द्वारा किया जाता था।

गुलहरे वैश्यों के आदिपुरूष : इनके आदि पुरूष गुलेश्वर महाराज हैं। कहते हैं कि एक बार शतानन्द जी ने श्री सत्य नारायण भगवान के व्रत को देवव्रत के यहाँ पर करवाया। अनेक लोगों ने इस व्रत का साक्षात्कार प्रथम बार किया। कथा में सवाया प्रसादादि का वर्णन आता है। श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ गयी। अतः प्रसाद में कुछ कमी दिखाई देने लगी, तभी गुलेश्वर महाराज ने देवव्रत की प्रार्थना पर अनेक गोलाकार खांडपिंडों (गुड़) का ढ़ेर लगा दिया। तभी से उन्हें "गुलेश्वर महाराज" कहा गया।

गोत्र : गुलहरे वैश्यों में कुछ लोग अपना गोत्र गालव मानते हैं, कुछ कश्यप तथा कुछ गोयल मानते हैं।

हलवाई या मोदनवाल वैश्य

हिन्दू धर्म वर्णव्यवस्था मण्डल की तरफ से प्रकाशित पुस्तक जाति-अन्वेषण के भाग एक के पृष्ठ-287 पर लिखा है कि हलवाई जाति शुद्ध वैश्य हैं और इन्हें वैश्य वर्णानुसार कर्म करने का अधिकार है। इनका गोत्र कश्यप माना जाता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में इन बन्धुओं की बड़ी आबादी है। ग्रामीण क्षेत्रों में हलवाई का कार्य करने से इनकी जाति का नाम ही हलवाई वैश्य हो गया। बिहार तथा उत्तर प्रदेश सरकारों ने इन्हें शैक्षिक तथा

अर्थिक पिछड़ेपन के कारण पिछड़ा वर्ग में घोषित किया है। कुछ लोगों ने अपना नामकरण हलवाई वैश्य से मोदनवाल वैश्य कर लिया। कुछ लोग अपने नाम के आगे साहु शब्द लगाते हैं। मीठा बनाना भी एक उद्योग है। लड्डू को मोदक कहते हैं। उसी आधार पर ये बन्धु मोदनवाल वैश्य कहलाना पसन्द करते हैं। कुछ लोग मोदी भी कहलवाना पसन्द करते हैं।

आदिपुरूष : वैदिक काल में एक "मोद" ऋषि हुए हैं। उन्हें ये अपना आदि पुरूष बताते हैं।

बसाव : पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में अधिक पाये जाते है। कुछ थोड़े बहुत व्यक्ति उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा महाराष्ट्र में भी हैं।

प्रमुख व्यक्ति : 1. कविवर जयशंकर प्रसाद जी जिन्होंने "कामायनी" जैसे महाकाव्य की रचना की थी, का जन्म सुंघनी साहु देवी प्रसाद जी के घर पर काशी में हुआ था। उन्होंने कई नाटक, कहानियाँ तथा उपन्यासों की रचना की थी।

2. स्वामी भजनानन्द सरस्वती, इन्होंने शाहजहाँपुर में एक विशाल मन्दिर बनवाया था।

◆ ◆ ◆

Remove Watermark Now

अध्याय-16

वैश्य जाति के विभिन्न उपवर्गों का इतिहास

अब हम वैश्य जाति के विभिन्न उपवर्गों का इतिहास संक्षेप में दे रहे हैं-

अजुध्यावासी वैश्य

अजुध्यावासी जाति भी अपने को अग्रवालों से भिन्न मानती है। ये लोग उत्तर प्रदेश, बुन्देलखण्ड और बिहार में रहते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि ये अजुध्यावासी केवल अग्रवालों में ही नहीं पाए जाते, वरन् इस नाम के विभाग अन्य जातियों में भी पाए जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता हैं कि यह जाति अयोध्या से निश्रत होने के कारण अपने को अजुध्यावासी कहती है। स्थानभेद से इनका नाम अयोध्यावासी वैश्य पड़ा, जो कालान्तर में रीति-रिवाजों की परम्परा के अनुसार एक पृथक् जाति हो गई।

बरणवाल वैश्य

यह जाति 'बरन' अर्थात् बुलन्दशहर निवास स्थान के कारण 'बरणवाल' कहलाई। इनकी मान्यता है कि यह अग्रसेन के पुत्र 'वराक्ष' की संतान है इसी कारण वराक्ष के नाम पर वरणवाल कहलाये।

माहेश्वरी

यह भी वैश्य समुदाय के सबसे वृहद घटकों में से एक है। इस जाति की उत्पति राजपूतों से मानी जाती है और भगवान शंकर (महेश) से सम्बन्ध स्थापति किया जाता है। यह जाति भी सम्पूर्ण देश में फैली हुई है। उद्योग वाणिज्य में इसका विशेष

प्रभुत्व है। सुप्रसिद्ध बिडला औद्योगिक घराना इसी समुदाय से सम्बन्धित है जिसकी गणना भारत के उच्चकोटि के उद्योगपतियों में होती है। इस जाति ने देश के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्व0 घनश्याम दास बिडला, ब्रजलाल बियाणी, गजाधर सोमानी, श्री कृष्णदास जाजू, श्री रामगोपाल मोहता, श्री बांगड़ आदि इस समाज की महान विभूतियाँ हैं।

ओसवाल वैश्य

वैश्य समुदाय का यह प्रमुख घटक मारवाड के ओसिया नगर से सम्बद्ध है। ओसिया नगर से सम्बन्धित होने के कारण ही इस जाति की संज्ञा ओसवाल पड़ी। इस जाति के लोगों की व्यापार व्यवसाय में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। राज्य के विभिन्न उच्च पदों में भी इस समुदाय के लोग प्रतिष्ठित रहे हैं।

ओसवाल में श्वेताम्बरी एवं दिगम्बरी लोगों का बाहुल्य है। इस जाति में 1444 गोत्र माने जाते हैं। मंडाले मेहता, लोढा, वलाई आदि प्रमुख गोत्र हैं। इस समाज द्वारा निर्मित जैन मन्दिर स्थापत्यकला की दृष्टि से उत्यन्त ही सुन्दर एवं भव्य हैं।

खण्डेलवाल वैश्य

इस समुदाय की उत्पति का स्थान खण्डेला माना जाता हैं स्वर्ण के खण्डों का दान लेने के कारण, खण्डेलवाल ब्राह्मण जाति के खण्डों को खरीद कर, उनसे व्यापार करने से, ये खण्डेलवाल वैश्य कहलाये। इस समाज के लोग भी उद्योग, व्यवसाय और राजनीति में अग्रणी हैं। ये भी देश के कोने-कोने में फैले हुए हैं। लाला हंसराज गुप्त, पद्मभूषण लाला राम प्रसाद अरौलिया, श्री रामेश्वर लाल तरूण, देवकी नंदन विभव, डॉ0 मोती लाल गुप्त आदि इस समाज के अग्रणी नाम हैं।

pdfelement
Remove Watermark Now

महाजन वैश्य

महाजन जाति के वैश्य प्रमुख रूप से पंजाब, हिमाचल प्रदेश जम्मू आदि में पाये जाते हैं। वैसे महाजन का अर्थ होता है महान व्यक्ति। इस समुदाय के लोगों का मुख्य व्यवसाय व्यापार है। इस समुदाय में मेहरचन्द महाजन जैसे ख्याति प्राप्त व्यक्तित्व हुए हैं, जो लाहौर हाईकोर्ट के जज और बाद में सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश बने। इस समुदाय के वैश्यों का संगठन महाजन शिरोमणि सभा के नाम से है।

रस्तौगी, रोहतकी, रूस्तगी वैश्य

श्री अजय रस्तौगी (मै0 चित्रा प्रकाशन मेरठ) जो कि अखिल भारतीय हरिश्चन्द्र वंशीय महासभा के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष हैं, उन्होंने मुझे "हरिश्चन्द्र वंशीय समाज का इतिहास" नामक पुस्तक दी। इस पुस्तक के अनुसार इस समुदाय की उत्पति सूर्यवंशी महाराजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व से हुई। रोहित वंश के होने के कारण ही, ये रोहतगी, रस्तौगी, रूस्तगी कहलाये। इन्हीं रोहिताश्व द्वारा रोहतास गढ़ दुर्ग की स्थापना कराई गयी। यह दुर्ग बिहार में सासाराम जिले में स्थित है। यह दुर्ग अत्यन्त सुदृढ़, अभेद्य तथा सामाजिक दृष्टि से पूर्ण सुरक्षित है। इसमें 950 बड़े कमरे तथा 9000 छोटे कमरे हैं।

इस समुदाय के मुख्य गोत्र निम्न प्रकार हैं–

1. कश्यप गोत्र
2. वशिष्ठ गोत्र
3. भारद्वाज गोत्र
4. गर्ग गोत्र
5. गर्गस गोत्र
6. कौशिक गोत्र

7. कपिलस गोत्र
8. जैमिनी गोत्र
9. दुबलिश गोत्र
10. इन्द्रायण गोत्र
11. तेत्रस गोत्र

इस समुदसय में 84 अल्ल हैं। इस समाज की धर्मशालाएं अनेक स्थानों पर पाई जाती हैं। इस समाज के गणमान्य लोगों में डॉ0 मंगल देव शास्त्री, उपकुलपति सम्पूर्णानन्द बनारस विश्वविद्यालय, डॉ0 रघुनाथ प्रसाद रस्तौगी, कुलपति बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, एयर वाइस मार्शल श्री सुभाष चन्द्र रस्तौगी, वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री बद्री प्रसाद रस्तौगी, डॉ0 मुकुल दास रस्तौगी विशिष्ट वैज्ञानिक, डॉ0 आशुतोष रस्तौगी विश्व ख्याति प्राप्त इंजीनियर, इसके अतिरिक्त सैंकड़ों आई0ए0एस0 एवं आई0पी0एस0 एवं पी0सी0एस0 इस समाज में कार्यरत रहे हैं। तथा सैंकड़ों प्रशासनिक एवं न्यायिक विभूतियाँ कार्यरत हैं। इस समाज की राजनैतिक विभूतियों में श्रीमति सुशीला रोहतगी, विष्णु शरण दुबलिश, जवाहर लाल रोहतगी, जगदीश शरण रस्तौगी, राधा कृष्ण रस्तौगी, मुरारी लाल रोहतगी, राम किशोर रस्तौगी, ब्रिजपाल शरण रस्तौगी आदि हैं। इस समुदाय की "अखिल भारतीय हरिश्चन्द्र वंशीय महासभा" अखिल भारतीय संस्था है।

दक्षिण भारत के वैश्य

दक्षिण भारत में वैश्य पर्याप्त संख्या में हैं और उद्यो व्यवसाय में उनकी प्रमुख भूमिका है। यहां की प्रमुख वैश्य जातियाँ, चेट्टी, सेट्टी, चेट्टीयार, लिंगावत, तेलुगु वर्गीय, कोम वैश्य आदि हैं।

pdfelement
Remove Watermark Now

श्रीमाल वैश्य

मारवाड़ के जालौर के समीप श्रीमाल नगर से इनका निकास होने के कारण, इन्हें श्रीमाल संज्ञा प्राप्त हुई। इस जाति में पर्याप्त संख्या में धनाढ्य एवं सम्पन्न लोग हैं। ये मुख्य रूप से जैन धर्मावलम्बी हैं। इस जाति ने सार्वजनिक कार्यों द्वारा पर्याप्त यशार्जन किया है।

विजयवर्गीय वैश्य

ये वैश्य प्रमुख रूप से इत्र एवं औषधि विक्रय का कार्य करते हैं। ये प्रमुख रूप से राजस्थान के कोटा, अलवर व आंध्र प्रदेश में पाये जाते हैं। ये प्रधानतः शैव और वैष्णव हैं। सुप्रसिद्ध चित्रकार श्री रामगोपाल विजयवर्गीय इसी समुदाय के हैं।

गूजर बनिया

यह शब्द गूर्जर बनिया अपभ्रंश रूप है। मुख्य रूप से गुजरात में बसने के कारण ये गूर्जर बनिये कहलाये। ये वैश्य प्रायः वैष्णव धर्म को मानने वाले हैं तथा इनके आचार-विचार उदार हैं।

कसेरा वैश्य

कसेरा जाति के लोग मुख्य रूप से मिर्जापुर और बनारस में पाये जाते हैं। काँसे-पीतल का व्यापार प्रमुख रूप से करने के कारण इनका यह नामकरण हुआ।

शिवहरे या सोही वैश्य

इनकी उत्पत्ति बुलन्दशहर के सीहोर नगर से मानी जाती है। जहाँ से निकास होने के कारण ये लोग सिहोरिये कहलाये और कालान्तर में यही शब्द "शिवहरे" हो गया। ये लोग भारत के विभिन्न स्थानों पर पाये जाते हैं और अपने आपको उमरे

बनिया, साहू, गुप्त और चौकरने आदि नाम से पुकारतें हैं। सरकारी सेवाओं, सेना आदि में इस समुदाय के लोग पर्याप्त संख्या में हैं, परन्तु मुख्य रूप से इनका व्यवसाय व्यापार है।

धूसर या दोसर वैश्य

इस समुदाय के लोग अपना सम्बन्ध हेमचन्द विक्रमादित्य से जोड़ते हैं, जिसने 10 माह तक दिल्ली पर शासन किया तथा पानीपत के युद्ध में अपूर्व शौर्य का प्रदर्शन किया था। इस समुदाय के लोग लखनऊ, फतेहपुर, बांदा, कानपुर तथा दक्षिण भारत में फैले हुये हैं और मुख्य रूप से प्रशासनिक कार्यों में जुड़े हुये हैं। विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा, गीत के अमर गायक पद्म श्री श्यामलाल गुप्ता पार्षद इसी समुदाय के हैं।

कमलापुरी वैश्य

ये वैश्य अपने आपको कमलापुरी (जौनपुर) से सम्बन्धित बताते हैं। ये उत्तर प्रदेश, नेपाल, बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र तक फैले हुए हैं। मुख्यतः वैष्णवधर्मी हैं। इनका अखिल भारतीय कमलापुरी वैश्य महासभा के नाम से छपरा में संगठन है।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-17

कुछ अन्य वैश्य उपजातियों का इतिहास

रौनियार वैश्य

इनकी उत्पति के सम्बन्ध में एक कथा यह भी आती है कि परशुराम जी के भय से सूर्यवंशी क्षत्रियों ने भागकर रमणीक क्षेत्र में निवास किया। तब वे संसार भर में 'रमनहार' तथा 'रौनियार' नाम से विख्यात हुए। जब परशुराम जी ने क्षत्रियों को मारने की प्रतिज्ञा की, तब कोई मरूस्थल में गया, कुछ विंध्याचल को लांघकर दक्षिण में रमणीय देश गये। जब परशुराम दक्षिण में गये, तब इन क्षत्रियों ने अपनी क्षत्रिय-वृत्ति को त्यागकर वैश्य-वृत्ति का अवलम्बन किया। जब परशुराम जी को इस बात का पता चला तब उन्होंने कहा, कि तुम क्षत्रित्व त्यागकर वैश्यमानी हुए, अतः मैं तुमकों नहीं मारूँगा, परन्तु मैं तुमको श्राप देता हूँ, कि अब तुम क्षत्रिय नहीं बन सकोगे।

तुम वैश्य ही कहलाओगे तथा वैश्यों में अच्छे कहलाओगे। अब तुम इस देश को छोड़कर शीघ्र मगध देश को जाओ।

गुप्तकाल

गुप्तकाल वैश्यों का काल था। जो मूलतः रोनियार वैश्यों का काल माना जाता है। इनका केन्द्र बिन्दु पाटलीपुत्र (पटना) था। वर्तमान में इसे बिहार कहते हैं। गुप्तवंश की स्थापना 'श्रीगुप्त' ने की थी। इसमें अन्य प्रतापी राजाओं में चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय (चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य), कुमार गुप्त आदि हुए। भारतीय इतिहास में "गुप्तकाल" को "स्वर्णकाल" कहा जाता है। इस काल में कला, साहित्य और विज्ञान के क्षेत्र में भारत ने अत्यधिक उन्नति की थी। इनके काल में विष्णु और महालक्ष्मी

की पूजा होती थी, परन्तु अन्य धर्मावलम्बियों को भी धर्मपालन करने की पूरी छूट थी। किसी के साथ पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं होता था। लगभग ढाई सौ वर्षों का यह काल भारतीय इतिहास में "स्वर्णिम काल" के नाम से जाना जाता है।

दिल्ली सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य

कुछ इतिहासकार दिल्ली सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य को रौनियार वैश्य मानते हैं तथा कुछ धूसर वैश्य मानते हैं। जो उन्हें रोनियार वैश्य मानते हैं उनमें इतिहासकार महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन का नाम सर्वप्रथम आता है। पं0 राहुल सांस्कृत्यायन लिखते हैं कि हेमू बिहार का रौनियार वैश्य था। गत हजार वर्षों में भारतभूमि ने हेमचन्द्र जैसा शूरवीर विरला ही पैदा किया। उसकी तुलना राणा सांगा तथा शिवाजी से की जाती है। उसने बाईस युद्ध लड़े और सबमें विजयश्री प्राप्त की थी। यदि अपने तेईसवें युद्ध (पानीपत का युद्ध) में वह अकबर से नहीं हारता तो इस देश का इतिहास कुछ और ही होता।

जन्म : हेमचन्द्र (हेमू) का जन्म 1500 ई0 में एक रौनियार वैश्य परिवार में हुआ था। 22 मई 1545 को शेरशाह सूरी की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र इस्लाम शाह सूरी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। वह कट्टरपन्थी नहीं था। वह हिन्दुओं के साथ अच्छा व्यवहार करता था। वह वित्तीय कार्यों पर वैश्यों को नियुक्त करता था। उसकी नजर में हेमचन्द्र आ गया। उसने हेमू को सरकारी नौकरी में ले लिया तथा उसे बाजार निरीक्षक बना दिया। फिर शाही सेना की रसद का ठेकेदार। फिर सेना में सेनानायक बना दिया। इस्लाम शाह की मृत्यु के उपरान्त उसने सुल्तान आदिल शाह का दिल जीत लिया था। उसने, उसे पहले प्रधान सेनापति बनाया, फिर प्रधानमन्त्री भी बना दिया।

pdfelement
Remove Watermark Now

हिन्दू होते हुए भी वह अपने स्वामी का बड़ा ही विश्वासपात्र तथा अपने अफगान सैनिकों का बड़ा ही प्रिय था। अफगान सरदार उसे बड़े ही आदर के साथ देखते थे। आदिल शाह, सुरा-सुन्दरी और संगीत में ही डूबा रहता था। ऐसे अयोग्य शासक के विरुद्ध अफगान सामन्तों ने विद्रोह कर दिया। तब हेमचन्द्र ने सभी विद्रोहियों को कुचल दिया। तब से वह अपने स्वामी आदिल शाह का अत्यधिक विश्वासपात्र हो गया था। उसने ग्वालियर, इटावा, कालपी, कौल को मुगलों से जीत लिया था तथा मुगलों का पीछा करते हुए वह आगरे तक आ गया। 20 जनवरी 1556 को हुमायूं की मृत्यु दिल्ली में हो गयी थी। अतः आगरे में उसने मुगलों के सेनापति सिकन्दर को हराया, फिर वह दिल्ली की ओर बढ़ा तथा वहाँ पर उसने पीर मुहम्मद और तार्दी बेग को हराया और दिल्ली पर अपना आधिपत्य कर लिया।

22 जनवरी 1556 को हेमचन्द्र दिल्ली के सिंहासन पर बैठा तथा उसने "विक्रमादित्य" की उपाधि धारण की।

तैलिक वैश्य

तेल उद्योग से जुड़े हुये वैश्य बंधु, तैलिक वैश्य कहलाते हैं। ये पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा तथा मध्यप्रदेश में पाये जाते हैं।

प्रसिद्ध व्यक्ति :

1. डा0 मेघनाथ साहा (अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक)
2. डा0 आई0ए0 नरसैया (ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक)

तैलिक वैश्य सांसद :

1. शान्ताराम पोट्दुर्वे चन्द्रपुरा (महाराष्ट्र)
2. श्री समरेन्द्र कुन्डू (उड़ीसा)

3. श्री वैकुन्ठ नाथ साहू (उड़ीसा)
4. श्री संतोष कुमार साहू (उड़ीसा)

सोनार वैश्य

सोने का व्यापार करने वाले सोनार वैश्य अधिकतर बंगाल में पाये जाते हैं। इन वैश्यों पर लक्ष्मी जी की कृपा है। ये अपने नाम के उपरान्त धर, सेन उपनाम रखते हैं। ये मादक दृव्यों से दूर रहते हैं। जज ब्रजेन्द्र कुमार सील इन्हीं में से थे।

कृषि कार्य में रत कुछ वैश्य उपजातियाँ

सैनी वैश्य : यह जाति महाराजा अग्रसेन के छोटे भाई शूरसेन को अपना आदि पुरुष मानती है। आदिकाल में गोपालन, कृषि एवं व्यापार वैश्य जाति के कर्म निश्चित किये गये थे। जिन व्यक्तियों ने व्यापार को अपनाया उन्होंने सामाजिक स्तर पर अत्यधिक तरक्की की तथा जो लोग कृषि या गोपालन में रत रहे, वे अपेक्षाकृत उतनी तरक्की नहीं कर पाये। इनकों काम्बोज, सैनी, काम्बूसैनी, शाक्य, मौर्य, मुराव, माली आदि नामों से पुकारा जाता है। इनके नाम के साथ आया सैनी शब्द, अग्रसेनी, महासेनी, बारहसेनी तथा चौसेनी के समक्ष ही है। इसी समाज में महात्मा ज्योतिराव फुले ने महाराष्ट्र में जन्म लिया जो काम्बोज सैनी जाति की माली उपजाति के थे। उन्होंने पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए विद्यालय खुलवाये तथा महिलाओं को भी वे शिक्षा दिलाने के पक्षधर थे। अतः उन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए भी प्रयास किया।

ओमर वैश्य : यह वैश्य जाति अत्यन्त प्राचीन है। ओमरगढ़, उमरकोट या ऊमरपुर से इनका निकास माना जाता है।

pdfelement
Remove Watermark Now

आज यह जाति आगरा से ललितपुर तक पूर्व में बनारस, आजमगढ़, गोरखपुर में पाई जाती है।

गोत्र : इनका गोत्र कश्यप ही है।

संगठन का नाम : सन् 1928 में ओमर वैश्यों ने *"अखिल भारतीय ओमर वैश्य महासभा"* के नाम से कानपुर में एक महासभा का गठन किया। इस महासभा के माध्यम से अनेक असहाय स्त्री-पुरूष की सहायता की गई, विद्यार्थियों को शिक्षा में सहायता दी गई तथा समाज में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन किया गया।

वस्त्र उद्योग में लगी वैश्य उपजाति

तन्तुवाय वैश्य : तन्तुवाय वैश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल तथा आसाम में पाये जाते हैं। भारत वर्ष में इनकी संख्या लगभग एक करोड़ है। आदिकाल में इन लोगों ने कपास से सूत तथा सूत से कपड़ा बनाने का आविष्कार किया था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : इतिहासकार बी0सी0 लाल ने कोली, शाक्य तथा लिच्छवि को परस्पर सम्बन्धी लिखा है। शाक्य राजा शुद्धोधन के पुत्र सिद्धार्थ का विवाह कोलिय वंश की राजकुमारी यशोधरा के साथ हुआ था। भगवान महावीर लिच्छवि वंश के थे।

विस्तार : ये लोग कोरी, कोली, पटवा, तन्तुवाय वैश्य आदि नामों से पुकारे जाते हैं।

प्रसिद्ध व्यक्ति : वीरांगना झलकारी बाई, इसी तन्तुवाय वैश्य समाज की थीं। जो महारानी लक्ष्मीबाई की सहेली थी। झलकारी का जन्म 1830 में हुआ था। सन् 1843 ई0 में इनका विवाह नयापुरा निवासी पूरन के साथ हुआ था। झाँसी की

रानी लक्ष्मीबाई ने अपने राजमहल में गौरी प्रतिमा स्थापित की, तो उस उत्सव में नगर की सभी स्त्रियों को आमन्त्रित किया गया था। झलकारी बाई भी इस उत्सव में सम्मिलित हुई। झलकारी की आकृति हू-बहू, रानी लक्ष्मीबाई की तरह थी। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने झलकारी बाई के व्यक्तित्व को पहचान कर उसे शस्त्र विद्या हेतु उत्प्रेरित किया। अपनी लगन, मेहनत तथा कठिन परिश्रम से झलकारी बाई कुशल निशानेबाज बन गयी।

सन् 1857 के स्वतन्त्रता के प्रथम महासमर में झलकारी बाई ने अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन किया था। उसने रानी लक्ष्मीबाई के साथ मिलकर अंग्रेजों का मुकाबला किया तथा सैंकड़ों अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया तथा रानी लक्ष्मीबाई को सकुशल कालपी की ओर प्रस्थान करने हेतु सुअवसर प्रदान किया था। झलकारी बाई अकेले ही जनरल ह्यूरोज के शिविर में गई तथा अपने को रानी लक्ष्मीबाई बताकर उसे असमंजस में रखा, ताकि रानी लक्ष्मीबाई सुरक्षित दूर पहुँच जाये। जनरल ह्यूरोज ने भी अनकी विलक्षण प्रतिभा, वीरता, स्वामी भक्ति की बहुत प्रशंसा की थी।

लक्ष्मीबाई की भाँति झलकारी बाई भी भारतीय जनमानस में बहुत ही लोकप्रिय एवं चर्चित रही। वीरता और प्रतिभा किसी भी जाति विशेष की धरोधर नहीं है। कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितने ही साधारण परिवार में जन्मा हो, अपनी प्रतिभा, वीरता, लगन, मेहनत से ऊपर उठकर अपनी पहचान कायम कर सकता है तथा इतिहास के पन्नों में उसका नाम अमर हो सकता है। झाँसी के किले में रानी लक्ष्मीबाई के साथ-साथ झलकारी बा का भी चित्र टँगा हुआ है। झलकारी बुर्ज उसकी वीरता का साक्ष है। बुन्देलखण्ड धरती पर प्रति वर्ष उसकी स्मृति को तरोताज किया जाता है। भारतीय इतिहास में उसका नाम सदा ही आद

pdfelement
Remove Watermark Now

और सम्मान के साथ याद किया जाता रहेगा। जिस प्रकार महाराणा प्रताप के साथ भामाशाह को भी याद किया जाता है, उसी प्रकार रानी लक्ष्मीबाई के साथ झलकारी बाई को भी सदा याद किया जाता रहेगा।

मद्य उद्योग में रत वैश्य जातियाँ

कलवार, जायसवाल वैश्यों का इतिहास

उत्पत्ति : स्मृतियों में कलाल का समानार्थक शब्द शौन्ड्रिक भी आया है। वहाँ उनको मद्य-व्यवसायी लिखा है। कलाल, कलवार, कलचुरि, कलवाला, कल्लवाल, कल्यपाल आदि समानार्थी शब्द हैं। जायसवाल श्री इसी श्रेणी में आते हैं। जायस ग्राम से निकास होने के कारण इन्होंने अपना नाम जायसवाल रखा।

प्रसिद्ध व्यक्ति :

1. अनन्तराम जायसवाल, आप फैजाबाद से लोकप्रिय एवं ख्याति प्राप्त सांसद रहे हैं।
2. श्री प्रकाश जायसवाल, आप वर्तमान में केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री के पद पर आसीन हैं तथा कानुपर से सांसद हैं।

◆ ◆ ◆

अध्याय-18

वैश्यों के लिए महालक्ष्मी पूजन

एक बार देवराज इन्द्र ने माँ लक्ष्मी से पूछा कि आप किसके यहाँ निवास करती हैं।

माँ लक्ष्मी ने कहा- जो अपने धर्म का पालन करते हैं, अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हैं, जिनके हृदय में सरलता, बुद्धिमानी, अहंकार शून्यता, परम सौहार्दता, पवित्रता और करूणा है, जिनमें क्षमा, सत्य, दान, कोमल वचन, मित्रों से अद्रोह का भाव रहता है, उनके यहाँ पर मैं निवास करती हूँ।

एक बार युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म से पूछा कि दादा जी मनुष्य किन उपायों से दुःख रहित रहता है? माँ लक्ष्मी की कृपा किस पर होती है? इस विषय पर एक प्राचीन कथा सुनाते हुए भीष्म जी ने कहा कि एक बार नारद जी ने माँ लक्ष्मी जी से कहा कि हे मातेश्वरी! आप ही बताइये कि आप किस प्रकार प्रसन्न होती हैं? किसके घर में आप स्थिर रहती हैं? किसके घर से आप विदा हो जाती हैं? आपकी सम्पदा किसको विमोहित करके संसार में भटकाती है और किसको असली सम्पदा भगवान नारायण से मिलाती हैं? माँ लक्ष्मी जी ने कहा कि हे देवर्षि नारद! तुमने लोगों की भलाई के लिए तथा मानव समाज के हित हेतु बड़ा ही सुन्दर प्रश्न किया है। अतः सुनो-

पहले मैं दैत्यों के पास रहती थी, क्योंकि वे पुरुषार्थी थे। सत्य बोलते थे तथा वचन के पक्के थे। जो एक बार निश्चय क लेते थे, उसको पूरा करने के लिए तत्परता से जुट जाते थे निर्दोषों को सताते नहीं थे। सज्जनों का आदर करते थे तथा दुष्ट से लोहा लेते थे। लेकिन जब उनके सद्गुण, दुर्गुणों में बदल

pdfelement
Remove Watermark Now

लगे तब मैंने उन्हें छोड़ दिया तथा देव लोक में रहने लगी। समझदार लोग उद्यम से मुझे पाते हैं, दान से मेरा विस्तार करते हैं, संयम से मुझे स्थिर रखते हैं, सत्कर्म से मेरा उपयोग करके अपना जीवन सफल बनाते हैं। सत्य बोलने वाले, वचन में दृढ़ रहने वाले, पुरुषार्थी, कर्त्तव्य पालन में दृढ़ता रखने वाले, अकारण किसी को दण्ड न देने वाले लोगों के पास मैं निवास करती हूँ। हे देवर्षि! जो श्रेष्ठ आचरण करते हैं, वहाँ मैं निवास करती हूँ। पूर्व काल में चाहे कितना भी पापी रहा हो, अधम और पातकी रहा हो, परन्तु जो अब शास्त्रों के अनुसार पुरुषार्थ करता है, मैं उसके जीवन में भाग्यलक्ष्मी, सुखलक्ष्मी, करूणा लक्ष्मी और औदार्य लक्ष्मी के रूप में विराजमान रहती हूँ। जो क्रोध नहीं करते, जिनका दयालु स्वभाव है, जो विचारवान हैं, वहाँ मैं स्थिर होकर रहती हूँ। जो सरल हैं, परोपकारी है, विनम्र हैं, मृदुभाषी हैं, वहाँ में निवास करती हूँ। जो लोग झूठे मुँह रहते हैं, मैले-कुचेले कपड़े पहनते हैं, दाँत मैले-कुचेले रखते हैं, दीन-दुखियों को सताते हैं, माता-पिता की सेवा नहीं करते, शास्त्र और सन्तों को नहीं मानते, गुरूजनों का आदर नहीं करते हैं, ऐसे हीन स्वभाव वाले लोगों का भविष्य दुःखदायी होता है।

जो पुरुष अकर्मण्य, नास्तिक, कृतघ्न, दुराचारी, क्रूर, चोर तथा गुरूजनों के दोष देखने वाला, हो उसके भीतर मैं निवास नहीं करती हूँ। जो स्त्रियाँ सत्यवादिनी, सौम्य, सौभाग्यशालिनी, सदगुणवती, पतिव्रता और कल्याणमय आचार-विचार वाली होती हैं, जो सदा सुन्दर वस्त्रों एवं आभूषणों से विभूषित रहती हैं, मृदुभाषिणी होती हैं, मैं ऐसी स्त्रियों में सदा निवास करती हूँ। मैं अनन्य चित्त होकर तो भगवान नारायण में ही सम्पूर्ण रूप से निवास करती हूँ, क्योंकि उनमें महान धर्म सन्निहित है। उनका ब्राह्मणों के प्रति प्रेम है तथा उनमें स्वयं सर्वप्रिय होने का गुण है।

अतः जो पुरुष अनन्यभाव से नारायण का स्मरण करते हैं और नारायण के समान श्रेष्ठ आचरण करते हैं, मैं भावना द्वारा ऐसे पुरुषों में निवास करती हूँ। वह व्यक्ति धर्म, यश, ऐश्वर्य एवं धन सम्पदा से सम्पन्न होकर सदा बढ़ता ही रहता है।

महालक्ष्मी की प्राप्ति कैसे- सबसे पहले महाराज अग्रसेन जी ने राज्य से च्युत होने पर महर्षि गर्ग से पूछा, कि हे मुनिवर, आप इस महान दुःख से परित्राण हेतु उपयुक्त एवं अद्भुत रहस्य को कहिये, जिससे मैं इस अपार दुःख के सागर को पार कर सकूँ तथा पुनः मैं अपने यश, वैभव, ऐश्वर्य, धन सम्पदा एवं राज्य को प्राप्त कर सकूँ। तब महर्षि गर्ग ने कहा, कि हे राजन! पूर्वकाल में गंगा के किनारे महामुनि मार्कण्डेय जी ने मुझे जो उत्तम आख्यान सुनाया वह ही मैं तुम्हें सुनाता हूँ।

हे राजन! वे ही विद्या की देवी हैं, वे ही ज्ञान की प्रदाता हैं। वे ही धन, वैभव, ऐश्वर्य, स्वर्ग और मोक्ष की प्रदाता हैं। तुम उन्हीं की शरण में जाओ। वे ही तुम्हारे सभी दुःख एवं कष्टों का निवारण करने वाली हैं। श्री महालक्ष्मी की आराधना, चिन्ता-शोकादि को शान्त करके, आयु बढ़ाने वाली तथा परम ऐश्वर्य प्रदान करने वाली है। हे राजन! जिस प्रकार भूख से व्यथित बच्चे माँ के पास जाकर विनय करते हैं, उसी प्रकार कल्याण की इच्छा हेतु प्राणी सकल जगत की माता श्री महालक्ष्मी जी की शरण में जाते हैं। करूणामयी माता श्री महालक्ष्मी जी की तपस्या करने से, कुछ भी अलभ्य नहीं है। अर्थात् सब कुछ उनकी कृपा मात्र से प्राप्त किया जा सकता है।

तब अग्रसेन जी मन और बुद्धि को आत्मा में ल करके, सर्वहित की कामना से, महालक्ष्मी जी की स्तुति प्रकार करने लगे।

pdfelement
Remove Watermark Now

हे जगत माते, जिस प्रकार क्षुधा से पीड़ित होने पर बच्चा माँ की शरण में जाकर विनती करता है, उसी प्रकार मैं भी श्रेय की कामना से आपकी वन्दना करता हूँ।

हे माते! जिस प्रकार अबोध बालक के पोषण हेतु माँ स्वयं ही अपने स्तन, बच्चे के मुख में डाल देती है, उसी प्रकार आप सदा ही हमारा पोषण कीजिए। हे माते, आपकी कृपा के बिना कोई भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता। अतः आप मुझ पर प्रसन्न होकर सभी सिद्धियाँ प्रदान कीजिए। हे जगत माते! आप मुझमें अपनी शक्ति का प्रभाव उत्पन्न करें, जिससे मैं प्रतापी और सर्व अधिकारों से सम्पन्न हो सकूँ। हे माता आप, सभी मनोकामनाओं को फलित करने वाली हैं। आप ही जय, विजय, पराक्रम, परम वैभव एवं परम ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हैं। अतः आप मेरे यहाँ निवास करें, जिस प्रकार आप नित्य देवताओं के यहाँ निवास करती हैं। हे महादेवी! मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ। हे महालक्ष्मी! आप अपने वरदहस्तों में शंख, चक्र, गदा धारण करने वाली हैं। हे महालक्ष्मी! मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ। आप देवताओं द्वारा नित्य पूजिता हैं, मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे माते! आप कोलासुर को भयभीत करने वाली तथा प्रसन्न होने पर समस्त पापों का हरण करने वाली हो, मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

हे जगत माते! आप मन्त्रों की भाँति पवित्र हैं। आप ही अष्ट सिद्धियों, सर्व ऐश्वर्य एवं सर्व भोगों की तथा परम वैभव की प्रदाता हैं। आप ही परम मोक्ष प्रदान करने वाली हो, मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे महादेवी, आप आदि और अन्त से रहित हो, आप स्थूल, सूक्ष्म और महारौद्र सभी रूपों में विद्यमान हो, आप ही महाशक्ति हो, मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

हे जगत माते! आप ही परम ईश्वरी हैं। आप ही स्वर्ण वस्त्रों को धारण करने वाली हैं। आप में ही सारा चर-अचर जगत स्थित है। हे महालक्ष्मी मैं आपकी वन्दना करता हूँ। मैं आपको बारम्बार नमस्कार करता हूँ। हे माते! जो भी आपकी शरण में आया है, वह आपकी कृपा से कृतार्थ हो गया। अतः हे जगदम्बिके, आप मुझ पर प्रसन्न होकर मेरे नयनों के सम्मुख प्रकट होकर मुझे अपने श्रेयप्रद दर्शन दीजिए। यही मेरी कामना है।

हे माते! मैं आपका पुत्र हूँ और आप मेरी माता हैं। अतः अपने पयोधरों की सुधाधार से आप मुझे अभिसिंचित कीजिए।

हे माते! मैं दीनों में अत्यन्त दीन हूँ और आप दयालुता में परम दयालु हैं। तीनों लोकों में आपके अतिरिक्त ऐसा कौन है, जिसकी कृपा दृष्टि मात्र से ही, दीनता समाप्त हो जाये। मैं आपकी शरण में हूँ, अतः हे शरणागत वत्सला आप साक्षात् प्रकट होकर, मुझे दर्शन दीजिए। मैं बारम्बार आपकी वन्दना करता हूँ तथा बारम्बार आपको नमस्कार करता हूँ।

तभी सम्पूर्ण आकाश जो कि गहन अन्धकार में डूबा हुआ था, महालक्ष्मी जी के आगमन पर उनके दिव्य प्रकाश से प्रकाशित हो गया।

तब प्रसन्न होकर महालक्ष्मी जी ने कहा, कि मैं तुम्हारे तप से परम सन्तुष्ट हूँ, अतः तुम जो भी वरदान मांगोगे वह सब प्रदान करके मैं तुम्हें सन्तुष्ट करूँगी।

तब अग्रसेन ने कहा कि हे जगत माते! यदि आप व देना ही चाहती हैं, तो यह वर मुझे प्रदान कीजिए, कि आप मेरी भक्ति सदा ही अविचल रहे, स्थायी रहे तथा अटल रहे। मे

pdfelement
Remove Watermark Now

ध्यान हर पल आपके श्री चरणों में ही लगा रहे। हे जगत माते! जो भी जन आपका यथासम्भव स्मरण करे, आप उनका कभी परित्याग न करें।

तब महालक्ष्मी जी बोली हे वत्स अग्र! तुम्हारे मन में सम्पूर्ण मानवता के विकास की कामना अत्यन्त श्रेष्ठ है। अतः मैं तुम्हें वरदान देती हूँ, कि तुम्हारी सभी मनोकामनाएं एवं अभिलाषाएं पूर्ण हों। महालक्ष्मी जी का यह पवित्र स्तवन सभी लोगों के सन्ताप का नाश करने वाला है। इसका भक्तिपूर्वक जो भी व्यक्ति पाठ करेगा, उसके सभी दुःख, क्लेश एवं संकट दूर हो जाते हैं। जिस कुल में नित्य महालक्ष्मी जी की पूजा, वन्दना, आराधना होती है, उसके घर को श्री महालक्ष्मी जी कभी नहीं छोड़ती। इसका नित्य पाठ करने वालों के सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। यह स्तवन परम श्रेष्ठ है, सत्य है तथा अति दिव्य है। जो इसका पठन, पाठन या श्रवण करते हैं उन्हें मनोवांछित फल प्राप्त होते हैं।

♦ ♦ ♦

अध्याय-19

वैश्यों का सूर्यवंश से सम्बन्ध

प्रतापी राजाओं, महाराजाओं तथा सम्राटों से आच्छादित एवं तेजोमयी प्रकाश पुंज की किरणों की माला से मण्डित सूर्यवंश, जो कि सैकड़ों मणियों से सुसज्जित, शोभित और आलोकित रहा है, जिसका तेज समस्त भुवनों में व्याप्त होकर सारे भूमण्डल में चमचमाया, जिसका यशोगान समस्त देवताओं, दैत्यों, मुनियों, ऋषियों, महर्षियों, किन्नरों, यक्षों, विद्वानों और सिद्धपुरुषों द्वारा एक स्वर में किया गया, जिसकी गाथाओं को वेदों, वेदांगों, पुराणों, उपपुराणों तथा इतिहासों ने समेटा-बटोरा, पुष्पित-पल्लवित और एकत्रित किया। जिसके नरेशों ने देश को चिरकाल तक के लिए, सशक्त राष्ट्रीयता के सूत्र में आबद्ध किया तथा देश की एकता-अखण्डता, शान्ति और समृद्धि के लिए सम्पूर्ण विश्व में एक आदर्श उपस्थित किया। सूर्यवंश के इन्हीं राजा, महाराजाओं और सम्राटों से वंश वृद्धि होने के फलस्वरूप अनेक शाखाओं-प्रशाखाओं तथा उपशाखाओं का निर्माण हुआ और उन्हीं शाखाओं, उपशाखाओं तथा प्रशाखाओं से वैश्य जाति की अनेक उपजातियों का निर्माण हुआ।

सूर्यवंश में महाराजा मान्धाता, सगर, दिलीप, गंगा को पृथ्वी पर लाने वाले महाराजा भगीरथ, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, रोहिताश्व, कुकुत्स्य, मरूत, रघु, अज, दशरथ, भगवान श्री राम, लव-कुश आदि कीर्तिवन्त राजा हुए हैं।

अग्रवालों के प्रथम पुरुष महाराजा अग्रसेन जी क सम्बन्ध भी सूर्यवंश से ही है। महाराजा अग्रसेन ने 17 यज्ञ पू करने के उपरान्त, पशु बलि के कारण अट्ठारहवां यज्ञ अधूरा छो

pdfelement
Remove Watermark Now

दिया। तदुपरान्त अट्ठारहवां यज्ञ इन्होंने अहिंसक तरीक से पूर्ण किया तथा अपना क्षत्रित्व कर्म त्यागकर, वैश्य कर्म ग्रहण कर लिया। यही महाराजा अग्रसेन अग्रवालों के आदि पुरुष कहलाये। इनके राज्य में एक लाख परिवार थे तथा इनके राज्य में जो भी नवागन्तुक व्यक्ति आता था, उसे प्रत्येक परिवार से एक रुपया व एक ईंट दी जाती थी, उन रुपयों से वह नवागन्तुक व्यक्ति अपना व्यापार प्रारम्भ कर देता था तथा ईंटों से अपना मकान बना लेता था। यह थी महाराजा अग्रसेन की समाजवादी व्यवस्था जो कि उन्होंने सम्पूर्ण विश्व के सम्मुख आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व प्रस्तुत की थी।

इसी प्रकार रौनियार वैश्यों का सम्बन्ध भी सूर्यवंश से है। भारतीय इतिहास में "स्वर्णयुग" के प्रणेता गुप्तकाल के नरेश रौनियार वैश्य थे। इस वंश मे चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, कुमार गुप्त आदि कीर्तिवन्त सम्राट पैदा हुए। श्री गुप्त ने "गुप्तकाल" की नींव डाली थी। सन् 275 ईस्वीं से लेकर 550 ईस्वी तक का वह काल भारतीय इतिहास में "स्वर्णकाल" के रूप में जाना जाता है।

सम्पूर्ण विश्व के इतिहासकारों ने गुप्तकाल के नरेशों की सराहना की है। उस समय भारत सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक सूत्र में आबद्ध था तथा अपने चरम विकास की ओर उन्मुख एक विकसित राष्ट्र था। इस काल में विज्ञान, कला और साहित्य के क्षेत्र में भारत ने अत्यधिक उन्नति की थी।

रौनियार वैश्य, क्षत्रिय से वैश्य कैसे बने इस विषय में किंवदन्ती प्रचलित है कि जब परशुराम जी ने क्षत्रिय-विनाश की प्रतिज्ञा ली, तब कुछ सूर्यवंशी क्षत्रियों ने अपना क्षत्रिय कर्म बदल कर वैश्य कर्म स्वीकार कर लिया। जब परशुराम जी को इस बात

का पता चला तब, उन्होंने कहा कि तुम क्षत्रित्व त्यागकर वैश्यमानी हुए हो, अतः मैं तुमको नहीं मारूँगा, परन्तु मैं तुमको शाप देता हूँ कि अब तुम क्षत्रिय नहीं बन सकोगे, अब तुम वैश्य ही रहोगे।

गुप्तकाल जो **वैश्यों** का काल था, वह मूलतः रौनियार वैश्यों का ही **काल माना** जाता है। इसका केन्द्र बिन्दु पाटलीपुत्र (पटना) था। गुप्तवंश की स्थापना 'श्रीगुप्त' ने की थी। गुप्तकाल के नरेशों का पीला झण्डा था तथा उस पर सूर्य का निशान था।

इसी प्रकार दिल्ली सम्राट हेमचन्द्र (हेमू) ने भी विक्रमादित्य की उपाधि धारण की तथा ये 10 माह तक दिल्ली के सम्राट रहे। कुछ इतिहासकार इन्हें रौनियार वैश्य मानते हैं, कुछ इन्हें धूसर वैश्य मानते हैं। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की भाँति इन्होंने भी 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। इसीलिए कुछ इतिहासकारों ने इनका सम्बन्ध गुप्तकाल के नरेशों से माना है। इतिहासकार राहुल सांस्कृत्यायन यह मानते हैं कि हेमू बिहार का रौनियार वैश्य था। यदि पानीपत के युद्ध में हेमू अकबर से नहीं हारता तो इस देश का इतिहास कुछ और ही होता। परन्तु कुछ अन्य इतिहासकार इन्हें धूसर वैश्य मानते हैं। वास्तव में हेमू चाहे रौनियार वैश्य हो, चाहे धूसर वैश्य हो लेकिन उसका सूर्यवंश से सम्बन्ध था। इसीलिए उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी।

'हरिश्चन्द्र वंशीय समाज का इतिहास' नामक पुस्तक में यह दर्शाया गया है कि रस्तौगी, रूस्तगी तथा रोहितगी का सम्बन्ध भी सूर्यवंश से है। इनके अनुसार रोहितासगढ़ दुर्ग, जो कि सासाराम के निकट बिहार में स्थित है, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व ने बनवाया था। इन्हीं रोहिताश्व के वंशज ही रस्तौगी, रूस्तगी और रोहतगी कहलाये तथा रोहिताश

pdfelement
Remove Watermark Now

सूर्यवंशी क्षत्रिय थे। रस्तौगी, रूस्तगी और रोहतगी क्षत्रिय से वैश्य कैसे बने इस सम्बन्ध में हरिश्चन्द्र वंशीय समाज का इतिहास नामक पुस्तक के पृष्ठ 137 पर लिखा है, कि परशुराम के दमन के कारण ये लोग रोहतासगढ़ को छोड़कर मथुरा में आ गये। वहाँ पर चौबों ने इनसे वैश्यों का कार्य लिया। तब से वैश्यों का कार्य करने के कारण ये वैश्य कहलाने लगे। इसी पुस्तक के पृष्ठ 167 तथा 168 पर लिखा है कि जब औरंगजेब दिल्ली के तख्त पर बैठा, तो उसने, रोहतासगढ़ दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में औरंगजेब विजयी रहा। रोहतासगढ़ में लाशों के ढेर लग गये। हजारों रोहताश वंशियों को मुसलमान बनाया गया। रोहतासवंशिय, रोहतासगढ़ से पलायन करके, देश के अन्य हिस्सों में चले गये। रोहतासवंशीयों के प्रति औरंगजेब की क्रूरता यहीं तक सीमित नहीं रही। उसने देश के अन्य भागों में रहने वाले रोहतासवंशियों के कत्लेआम का हुक्म दे दिया। इससे रोहताशवंशियों को अपनी पहचान छिपाने के लिए बाध्य होना पड़ा। जीवित रहने के लिए इन्होंने अपनी जाति और अपना कर्म भी बदल लिया। अपने क्षत्रित्व को छोड़कर उन्होंने वैश्यवृत्ति को अपना लिया। इस प्रकार यह जाति क्षत्रिय जाति से वैश्य जाति में परिवर्तित हो गई।

सूर्यवंश का संक्षिप्त इतिहास

सूर्यवंश के ऐसे कीर्तिवन्त नरेशों के इतिहास की जानकारी होना प्रत्येक वैश्य के लिए परमावश्यक है क्योंकि इन्हीं सूर्यवंशी नरेशों के वंशजों से ही वैश्य जाति की कई उपजातियों का निर्माण हुआ। यहाँ पर मैं सूर्यवंश की 121 पीढ़ियों की जानकारी दे रहा हूँ।

सबसे पहले कश्यप-अदिति से विवस्वान पैदा हुए। विवस्वान और संज्ञा से वैवस्वत मनु पैदा हुए। मनु और श्रद्धा से

इक्ष्वाकु पैदा हुए। इक्ष्वाकु से विकुक्षि तथा विकुक्षि के पुत्र कुकुत्स्य हुए। कुकुत्स्य के अनेना तथा अनेना के प्रतापी पुत्र पृथु और पृथु के विष्टराश्व हुए। इनके पुत्र युवनाश्व हुए और युवनाश्व के पुत्र शावस्त हुए। इनके पुत्र वृहदश्व हुए तथा वृहदश्व के पुत्र हुए कुवलाश्व और कुवलाश्व के दृढ़ाश्व। इनके हर्यश्व हुए। हर्यश्व के निकुम्भ हुए तथा निकुम्भ के अमिताश्व हुए। इनके कृशाश्व हुए, कृशाश्व के प्रसेनजित हुए। प्रसेनजित के युवनाश्व हुए। इन्हीं युवनाश्व के प्रतापी पुत्र मान्धाता हुए। मान्धाता के पुरूकुत्स हुए। पुरूकुत्स के त्रसददस्यु हुए इनके अनरण्य हुए। इनके पृषदश्व हुए इनके हर्यश्व इनके पुत्र हस्त हुए। हस्त के पुत्र सुमना इनके त्रिधन्वा हुए। त्रिधन्वा के त्रय्यारूणि हुए। इनके सत्यव्रत (त्रिशंकु) हुए, इनके सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र हुए। हरिश्चन्द्र के रोहिताश्व तथा रोहिताश्व के हरित पैदा हुए। इनके चम्प हुए तथा चम्प के विजय हुए। विजय के रूरूक हुए। इनके वृक हुए वृक के पुत्र बाहु हुए, बाहु के पुत्र महाराजा सगर हुए। महाराजा सगर के असमंजस हुए। इनके अंशुमान हुए, अंशुमान के महाप्रतापी पुत्र दिलीप हुए, दिलीप के महाप्रतापी पुत्र भगीरथ हुए जो कि गंगा को पृथ्वी पर लाये। भगीरथ के सुहोत्र हुए, सुहोत्र के श्रुति हुए। श्रुति के पुत्र नाभाग हुए। नाभाग के प्रतापी पुत्र अम्बरीष हुए। अम्बरीष के सिंधुद्वीप हुए, इनके अमुतायु हुए, इनके श्रतुपर्ण हुए इनके पुत्र सर्वकाम हुए। इनके सुदास हुए, इनके मित्रसह, इनके अश्मक, इनके मूलक, इनके दशरथ इनके इलिविल हुए। इनके विश्वसह हुए, इनके खट्वाँग हुए। इनके दीर्घबाहु हुए, दीर्घबाहु के महाप्रतापी पुत्र रघु हुए। रघु के पुत्र अज हुए, अज के पुत्र दशरथ हुए। दशरथ के पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम हुए। राम के कुश हुए। इनके अतिथि हुए। अतिथि के निषध हुए, इनके अनल हुए, इनके नभ हुए। नभ के पुत्र पुण्डरीक हुए, पुण्डरीक के पुत्र धन्वा हुए। इनके पुत्र देवानीक हुए। इनके

pdfelement
Remove Watermark Now

अहीनक हुए। अहीनक के पुत्र रूरु हुए, इनके पारित्रायक हुए, इनके पुत्र देवल हुए। देवल के पुत्र बच्चल हुए, इनके उत्क हुए तथा इनके बज्रनाम हुए। बज्रनाम के पुत्र शंखण हुए, इनके युषिताश्व हुए। इनके पुष्य हुए, इनके ध्रुवसन्धि हुए। इनके सुदर्शन हुए, इनके पुत्र अग्निवर्ण हुए। इनके पुत्र शीघ्रग हुए, शीघ्रग के पुत्र मरु हुए। इनके प्रशुश्रत हुए, प्रशुश्रत के पुत्र सुसंधि हुए, इनके अमर्ष हुए तथा अमर्ष के सहसवान् हुए। सहस्वान के पुत्र विश्वभव हुए, इनके बृहद्बल हुए तथा बृहद्बल के बृहत्क्षण हुए, इनके उरुक्षय हुए तथा उरुक्षय के वत्सव्यूह हुए। इनके प्रतिव्योम हुए तथा प्रतिव्योम के पुत्र दिवाकर हुए। दिवाकर के सहदेव हुए तथा सहदेव के बृहदश्व हुए। इनके भानुरथ हुए तथा भानुरथ के पुत्र प्रतिताश्व हुए। इनके सुप्रतीक हुए तथा सुप्रतीक के पुत्र मरुदेव हुए। मरुदेव के पुत्र सुनक्षत्र हुए इनके पुत्र किन्नर हुए। इनके अन्तरिक्ष हुए तथा अन्तरिक्ष के सुपर्ण हुए। सुपर्ण के पुत्र अमित्रजित हुए। इनके वृहद्राज हुए तथा इनके पुत्र धर्मी हुए। धर्मी के पुत्र कृतंजय हुए। इनके रणंजय हुए तथा इनके पुत्र संजय हुए। संजय के शाक्य हुए तथा इनके शुद्धोधन हुए। इनके राहुल हुए, राहुल के पुत्र प्रसेनजित हुए तथा इनके क्षुद्रक हुए। इनके पुत्र कुण्डक हुए तथा कुण्डक के पुत्र सुरथ हुए तथा सुरथ के पुत्र सुमित्र हुए।

वंशवृक्ष और सात पीढ़ियों का ज्ञान

हमें अपनी कम से कम सात पीढ़ियों का ज्ञान होना चाहिए। इस सम्बन्ध में, मैं यहाँ पर यह उल्लेख करना चाहता हूँ कि मुझे एक बार मेरठ में श्री आनन्दप्रकाश अग्रवाल जी के घर पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके घर पर मैंने उनके वंशवृक्ष का अवलोकन किया। इस वंशवृक्ष में उन्होंने सबसे पहले श्री कालू राम का नाम दर्शाया, उनके पुत्र श्री मनसुखराय हुए,

उनके पुत्र श्री सीताराम हुए, उनके पुत्र श्री चैनसुख हुए, उनके पुत्र श्री प्रेमसुख हुए, उनके पुत्र श्री नत्थूमल हुए, उनके पुत्र श्री झण्डूमल हुए, उनके पुत्र श्री चन्दनलाल हुए, उनके पुत्र श्री आनन्द प्रकाश अग्रवाल हुए। आनन्द प्रकाश जी तीन भाई हैं। बड़े भाई स्व0 श्री जयप्रकाश, सबसे छोटे श्री विष्णु प्रकाश अग्रवाल। आनन्द प्रकाश जी के पुत्र का नाम डॉ0 सुधान्शु अग्रवाल तथा इनके पौत्र का नाम तुषार अग्रवाल है। अब हम इनकी सात पीढ़ियों को निम्न प्रकार सूर्यवंश से जोड़कर लिख सकते हैं-

प्रतापी राजाओं, महाराजाओं और सम्राटों से आच्छादित एवं तेजोमयी प्रकाश पुंज की माला से मण्डित सूर्यवंश, जिनकी गाथाओं को इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर उकेरा गया और जिसके नरेशों ने चिरकाल तक देश को सशक्त राष्ट्रीयता के सूत्र में आबद्ध किया तथा देश की एकता अखण्डता, शान्ति और समृद्धि के लिए सम्पूर्ण विश्व में एक आदर्श उपस्थित किया। सूर्यवंश के इन्हीं प्रतापी राजाओं में महाराजा इक्ष्वाकु, पृथु, मान्धाता, सगर तथा गंगा का पृथ्वी पर अवतरण करने वाले महाराजा भगीरथ, सत्यवादी महाराजा हरिश्चन्द्र, महाराजा रघु, दशरथ, मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम आदि कीर्तिवन्त नरेशों ने जन्म लिया। इसी सूर्यवंश में आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व समाजवाद के प्रणेता महाराजा अग्रसेन पैदा हुए। इसी अग्रकुल में श्री कालूराम उनके पुत्र श्री मनसुखराय हुए। उनके पुत्र श्री सीताराम हुए। उनके पुत्र श्री चेनसुख हुए। उनके पुत्र श्री प्रेमसुख हुए। उनके पुत्र श्री नत्थूमल हुए। नत्थूमल के पुत्र श्री झण्डूमल हुए। झण्डूमल के पुत्र श्री चन्दनलाल हुए। चन्दनलाल के पुत्र श्री आनन्द प्रकाश अग्रवाल हुए। जब हम अपने को अपने सात पीढ़ियों से जोड़ते हैं तथा उन पीढ़ियों को महाराजा अग्रसेन से जोड़ते हैं और महाराजा अग्रसेन को सूर्यवंश के प्रतापी राजाओं

pdfelement
Remove Watermark Now

पृथु, मान्धाता, सगर, भगीरथ, रघु, दशरथ और भगवान श्री राम से जोड़ते हैं, तब हमारे अन्तर्मन में एक अपूर्व तेज और गर्व का प्रादुर्भाव होने लगता है तथा हमारा स्वाभिमान जागने लगता है और हम यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि हमारे पूर्वजों ने कितना बलिदान किया है। अब मैं दूसरा उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ। इस ग्रन्थ के लेखक शान्तिस्वरूप के पिता का नाम श्री सीताराम अग्रवाल उनके पिता का नाम सेठ ज्वाला प्रसाद अग्रवाल उनके पिता का नाम श्री देवीसहाय उनके पिता का नाम श्री हिम्मतराम उनके पिता का नाम लाला ताराचन्द उनके पिता का नाम श्री तुलसीराम था। अब हम इन सातों पीढ़ियों को सूर्यवंश से जोड़कर लिखते हैं-

प्रतापी राजाओं, महाराजाओं और सम्राटों से आच्छादित सूर्यवंश, जो कि प्रकाश पुंज की सैंकड़ों मणियों से सुसज्जित, शोभित और आलोकित रहा है और जिसका तेज समस्त भुवनों में व्याप्त होकर, सम्पूर्ण भूमण्डल पर चमचमाया, जिसके यशोगान को, समस्त देवों, दैत्यों, मुनियों, ऋषियों, महर्षियों द्वारा, सिद्ध पुरुषों और विद्वानों द्वारा एक स्वर में किया गया तथा जिसकी गाथाओं को इतिहासों के स्वर्णिम पृष्ठों पर उकेरा गया और जिसके नरेशों ने चिरकाल तक सम्पूर्ण देश को सशक्त राष्ट्रीयता एवं एकता के सूत्र में आबद्ध किया। सूर्यवंश के इन्हीं प्रतापी राजाओं में महाराजा इक्ष्वाकु, पृथु, मान्धाता, सगर, गंगा को पृथ्वी पर लाने वाले महाराज भगीरथ, रघु, दशरथ, भगवान श्री राम जैसे कीर्तिवन्त नरेशों ने जन्म लिया। इसी सूर्य कुल में प्रसेनजित हुए, उनके पुत्र वृहत्सेन हुए, उनके पुत्र वल्लभसेन हुए। इन्हीं वल्लभसेन के अग्रवंश के प्रणेता तथा अग्रवालों के आदि पुरुष महाराजा अग्रसेन हुए। इसी अग्रकुल में श्री तलसीराम हुए, उनके पुत्र श्री ताराचन्द हुए, उनके पुत्र श्री हिम्मतराम हुए, उनके

पुत्र श्री देवी सहाय हुए, उनके पुत्र श्री ज्वाला प्रसाद हुए, उनके पुत्र श्री सीताराम हुए, उनके पुत्र शान्ति स्वरूप गुप्त हुए।

हमें चाहिए कि हम सभी इसी प्रकार अपनी पीढ़ियों की जानकारी प्राप्त करके, अपने को सूर्यवंश से जोड़े। इस प्रकार करने से हम पायेंगे कि हमारे अन्तर्मन में एक अजीब उत्साह का संचार होता है एवं गर्व की अनुभूति होती है और हम अपने पूर्वजों के बलिदान की गाथा याद करने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-20

गौरवमयी वैश्य जाति की दुर्दशा क्यों

क्या थे? क्या हो गये? और क्या होंगे अभी?
आओ विचारें बैठकर, यह समस्यायें सभी।।

विद्वानों ने ठीक ही कहा है कि 'जो जाति अपने इतिहास को भूल जाती है, उसका स्वाभिमान खत्म हो जाता है तथा उसकी उन्नति रूक जाती है तथा वह जाति कालान्तर में पतित हो जाती हैं।' आज यह कहावत वैश्य जाति के लिए चरितार्थ हो रही है। आज वैश्य जाति अपने गौरवशाली इतिहास को भूल गयी है। वह भूल गयी है, कि हम महाराजा अग्रसेन की संतान हैं, वह भूल गयी हैं, कि हम चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की संतान हैं और हम यह भी भूल गये कि हमारी भुजाओं में महान विजेता महाराजा समुद्रगुप्त का लहू हिलौरे ले रहा है तथा हम यह भी भूल गये हैं कि हम दिल्ली की गद्दी पर शासन करने वाले चक्रवर्ती सम्राट महाराजा हेमचन्द्र के वंशज हैं।

गौरवमयी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

वैश्य जाति का इतिहास बहुत ही गौरवमयी इतिहास रहा है। समाजवाद के प्रणेता महाराजा अग्रसेन ने आज से पाँच हजार वर्ष पूर्व अग्रोहा में समाजवादी गणतंत्र की स्थापना की थी। उनके राज्य में जो भी कोई नया परिवार आता था उसे एक ईंट व एक रूपया देकर लखपति बना दिया जाता था तथा रहने के लिए एक मकान एवं व्यापार करने हेतु एक लाख रूपये, यह थी महाराजा अग्रसेन की समाजवाद की अवधारणा जो कि विश्व में अन्यत्र नहीं मिलती।

उसके बाद आता है इतिहास का वह स्वर्णिम पृष्ठ जिसे हम भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहते हैं। यह काल था गुप्तकाल। इस साम्राज्य की स्थापना श्री गुप्त ने की थी तथा इसे आगे बढ़ाया था चन्द्रगुप्त प्रथम तथा उनके पुत्र सम्राट समुद्रगुप्त ने, यह वही समुद्रगुप्त थे जिन्होंने अपने जीवन काल में कुल 92 युद्ध लड़े थे और इतिहास में महान विजेता के रूप में जाने जाते हैं। आज भी मिलीटरी साइंस में पढ़ाया जाता है कि समुद्रगुप्त ने सबसे अधिक युद्ध किये थे। समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय सम्राट बने। जिन्होंने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की तथा जिनके राज्य में सभी व्यक्ति खुले किवाड़ सोते थे और चोरी इकैती नहीं होती थी एवं राष्ट्र में सर्वत्र शान्ति थी। इसी कारण गुप्त काल का 275 वर्षों का काल भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहलाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि वैश्य जाति ने शासन सूत्र सम्भाला है, तो उसमें श्री श्रेष्ठता और विशिष्ठता का परिचय देते हुए वह काल "स्वर्ण काल" कहलाया है।

उसके बाद नाम आता है सम्राट हेमचन्द्र का। वह काल इतिहास में हेमू बनिया के नाम से जाना जाता है। ये दस माह तक दिल्ली के सम्राट रहे। यह एक ऐसा चमत्कारी व्यक्ति था जोकि एक सिपाही से सेनापति बना तथा सेनापति से सम्राट बना। इन्होंने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की।

उसके बाद आता है भामाशाह का वह काल जब मुगलों के अत्याचार ने सम्पूर्ण राजपूताने को मीनाबाजार बना दिया था, तब सेठ भामाशाह ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति राष्ट्र को समर्पित कर दी थी तथा मुगलों के अत्याचारों से अपनी मातृभूमि को बचाया था। आज भी मेवाड़ के विजय स्तम्भ पर सेठ भामाशाह का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है, जो उनकी अपूर्व देशभक्ति की गाथा

pdfelement
Remove Watermark Now

को गा रहा है।

निर्माण कार्यों में योगदान

हजारों स्कूल-कालिज, हजारों धर्मशालायें, हजारों गौशालायें वैश्य जाति के व्यक्तियों द्वारा निर्मित कराये गये। ऐसे कार्य जो कि एक शासक द्वारा कराये जाने चाहिये थे, शासक न होते हुए भी वैश्य जाति ने कराये। सड़के, खड़न्जे, कुएं, तालाब, पार्क, अनाथालय, औषधालय वैश्य जाति के द्वारा निर्मित कराये गये।

ये औषधालय, ये सड़के, ये पार्क, ये धर्मशालायें, ये स्कूल-कालिज, ये अनाथालय वैश्य जाति की यशस्वी गाथाओं तथा यशस्वी परम्पराओं का बखान कर रही हैं। अन्य जातियाँ अपने पैसों को अपने स्वार्थ में ही लगाती हैं। लेकिन वैश्य जाति अपने पैसे को परमार्थ में लगाती है। अन्य सभी जातियाँ धर्मशालाएं बनवाएंगी तो उस पर लिख देंगी, कि यह सिर्फ इसी जाति के लिए है, लेकिन वैश्य जाति सम्पूर्ण मानव जाति के लिए धर्मशालाएं, औषधालय, व्यायामशाला, अनाथालय, सड़कें, खड़न्जें, कुएं पार्क आदि का निर्माण कराती है। वैश्य जाति की ये कल्याणकारी परम्पराएं तथा ये परमार्थ की कल्याणकारी योजनाएं, अनादि काल से चली आ रही हैं। वैश्य जाति के प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूर्वजों की इन परम्पराओं पर गर्व है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

भारत के स्वतन्त्रता में भी वैश्य जाति का महत्वपूर्ण योगदान है। स्वतन्त्रता का आन्दोलन महान वैश्य कुल शिरोमणि पूज्य महात्मा गाँधी के नेतृत्व में लड़ा गया था। सन् 1920 से लेकर सन् 1947 तक का स्वतन्त्रता आन्दोलन का काल गाँधी युग के नाम से प्रसिद्ध है। गाँधी जी के कुशल नेतृत्व के कारण ही हम स्वतन्त्र हुए। गाँधी जी ने सम्पूर्ण भारत वर्ष की दो बार

यात्रा की थी तथा स्वतन्त्रता के इस आन्दोलन को जन-जन का आन्दोलन बना दिया था। पूरा देश एक होकर गांधी जी के पीछे खड़ा हो गया था। इससे पूर्व भी सन् 1947 तक हजारों लोगों ने स्वतन्त्रता की बेदी पर, अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे, लेकिन कोई भी व्यक्ति स्वतन्त्रता के आन्दोलन को जनता का आन्दोलन नहीं बना सका। अतः सभी व्यक्ति असफल हुए। गांधी जी ने इस आन्दोलन को जनता का आन्दोलन बना दिया और सफल हुए।

गांधी जी के साथ लाला लाजपत राय, सेठ हरदयाल एम0ए0, सेठ भगवानदास, सेठ जमनालाल बजाज, सेठ घनश्याम दास बिड़ला, चन्द्रभानु गुप्त, श्री प्रकाश गुप्त, मन्मथनाथ गुप्त आदि वैश्य जाति के महान नक्षत्रों ने अपने त्याग एवं बलिदान से भारत माता को परतन्त्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। ये सभी हमारी वैश्य जाति के गौरव है। वैश्य जाति के इन महान सपूतों के बलिदान एवं त्याग की भारतीय इतिहास में एक अमर गाथा है। जिस पर हम सबको गर्व है।

साहित्यिक क्षेत्र में योगदान

वैश्य जाति ने साहित्यिक क्षेत्र में भी अपना अपूर्व योगदान दिया है। इनमें बाबू हरिशचन्द्र, जगन्नाथ दास, महाकवि जयशंकर प्रसाद, राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त, बाबू गुलाब राय, सियाराम शरण गुप्त, राय कृष्णदास, वासुदेव शरण अग्रवाल आदि अनेक वैश्य जाति के ऐसे महान साहित्कार हैं, जो कि साहित्यिक क्षेत्र में दैदिप्यमान नक्षत्रों की भाँति चमक रहे हैं। जिन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र को नवचेतना, नवजागृति प्रदान की। उन विषम परिस्थिति में जबकि वन्दे मातरम् कहना भी जुर्म था, तब वैश्य जाति इन महान साहित्यकारों ने, राष्ट्रवाद की प्रखर भावना से त राष्ट्रवादी विचारों को जन-जन तक पहुँचाकर राष्ट्रवादी विचारों

pdfelement
Remove Watermark Now

प्रोत्साहन दिया। इन वैश्य साहित्यकारों ने जन-जन को यह बताया कि व्यक्ति से बड़ा राज्य है तथा राज्य से भी बड़ा राष्ट्र है। राष्ट्र के सामने सभी धर्म, सभी जातियाँ तुच्छ हैं। सम्पूर्ण वैश्य जाति में राष्ट्रवाद की यह प्रखर भावना, कूट-कूट कर भरी हुई है।

अकथनीय कहानी

यह कैसी विडम्बना है, कि आज प्रखर राष्ट्रवाद की भावना वैश्य जाति के लिए अभिशाप बनती जा रही है। एक समय था जब वैश्य जाति के पाँच प्रान्तों में मुख्यमन्त्री होते थे। मध्यप्रदेश में तख्तमल जैन, उत्तर प्रदेश में चन्द्रभान गुप्त, राजस्थान में मोहन लाल सुखाड़िया, गुजरात में चिम्मन भाई पटेल तथा दिल्ली में मुख्यमन्त्री तथा महापौर दोनों पदों पर वैश्य बन्धु आसीन होते थे। उ0प्र0 मन्त्रीमण्डल में तेईस मन्त्री वैश्य जाति के होते थे। लेकिन आज सम्पूर्ण भारतवर्ष के किसी भी प्रान्त में वैश्य जाति का कोई भी मुख्यमन्त्री तथा गवर्नर नहीं है। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में भी वैश्य मन्त्री उनकी आबादी के हिसाब से बहुत ही कम हैं।

आज जबकि सामाजिक स्तर के मापदण्ड का आधार भी राजनीति को ही माना जाता है, अर्थात् यदि हमारी जाति के एम0एल0ए0 तथा एम0पी0 संख्यात्मक दृष्टि से ज्यादा हैं, तो हमारा सामाजिक क्षेत्र में भी वजूद कायम हो जायेगा। यदि हम राजनैतिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, तो निश्चित रूप से हमें सामाजिक दृष्टि से भी पिछड़ा हुआ ही माना जायेगा। आज हम देख रहे हैं कि जिन जातियों का सामाजिक क्षेत्र में कोई वजूद नहीं था, आज उन्होंने राजनीति में अपनी पहचान कायम की है, फलस्वरूप ये जातियाँ आज सामाजिक रूप से भी अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो रही हैं। वर्तमान मे वैश्य जाति राजनैतिक

दृष्टि से बहुत ही कमजोर होने के कारण, सामाजिक क्षेत्र में भी कमजोर हैं। अतः हमें अपने एम0एल0ए0 तथा एम0पी की संख्या बढ़ानी अत्यावश्यक है। इस दिशा में हमारी जाति के व्यक्तियों को चिन्तन और मनन करना चाहिए, कि हम अपने एम0एल0ए0 एवं एम0पी0 किस प्रकार बढ़ाने में कामयाब हो सकते हैं।

जरा गौर तो कीजिए

वैश्य जाति के व्यक्तियों ने हमेशा देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया है। जब भी देश पर कोई संकट आ जाता है, तो वैश्य जाति के लोग अपना सब कुछ देश पर कुर्बान कर देते हैं।

वैश्य जाति के हमारे बन्धुओं ने अपना जीवन बहुत ही सादे तरीके से बिताया है। अपना सारा जीवन उन्होंने मारकीन की धोती तथा गाढ़े का कुर्ता पहनकर काट दिया। लेकिन जब मरने का समय नजदीक आता है, तो अपनी सारी सम्पत्ति किसी स्कूल, कालिज या धर्मशाला के नाम पर लिख जाते हैं। लेकिन आज क्या हो रहा है? आज तो वैश्य जाति को टैक्स चोर, मिलावट खोर, डंड़ीमार, शोषक इत्यादि न जाने क्या-क्या कहा जाता है। ऐसा क्यों कहा जा रहा है? ताकि वैश्य जाति का गौरव तथा स्वाभिमान नष्ट किया जा सके, सदा और सर्वदा के लिए। जरा इस बात पर चिन्तन करो, कि यदि कोई फिल्म दिखायी जाती है, तो वैश्य जाति का उसमें कौन-सा रूप दिखाया जाता है। क्या उसमें टैक्स चोर, मिलावट खोर के रूप मे वैश्य जाति को नहीं दिखाया जाता है? क्या हमारा गौरव तथा हमारा स्वाभिमान हमसे छीना नहीं जा रहा है? कौन-सा वैश्य टैक्स चोर है? कौन-सा वैश्य मिलावट खोर है? जितना टैक्स हम देते हैं, क्या कोई और जाति दे सकती है? जितनी सत्यता, पवित्रता, शुद्धता

pdfelement
Remove Watermark Now

हमारे पास है, क्या किसी अन्य के पास हो सकती है? हमारा तो सारा व्यापार ही सत्य व ईमानदारी पर आधारित होता है। ईमानदारी ही हमारी विरासत है। ईमानदारी ही हमारा धर्म है। हमें पीड़ा होती है तब, जब हमारे विरुद्ध एक साजिश के तहत जहर उगला जाता है। क्या इस साजिश का प्रत्युत्तर देना अब जरूरी नहीं हो गया है? कब तक इसे सहन करते जाओगे?

बन्धुओं यह कैसी विडम्बना है

गंगा, गायत्री, गोमाता ये तीनों हमारे मानबिंदु सदैव से ही रहे हैं। धर्म के प्रति वैश्य जाति का हमेशा से झुकाव रहा है। सादा जीवन-उच्च विचार, यही हमारा आदर्श रहा है। फिर क्यों रची जा रही है वैश्य जाति के खिलाफ साजिश? कौन रच रहा है इसे? गम्भीरता से यदि इस पर चिन्तन और मनन किया जाये तो हमे यह पता लगेगा, कि जिसे हमने सर्वदा से सम्मान दिया, आदर दिया, अपनी आँखों पर बिठाया, उन्हीं के द्वारा यह साजिश रची जा रही है।

जगह-जगह नगरों में कथाएं होती हैं। उन कथाओं में हमारी जाति को तृतीय श्रेणी का बताया जाता है। हमारे गौरव को हमसे छीना जाता है। हमारे स्वाभिमान पर चोट की जाती है और हम सब कुछ चुपचाप सहन करते जाते हैं।

आज संविधान के सामने सब बराबर हैं। फिर हम अपने को तृतीय श्रेणी का क्यों मानते हैं। हम भी सर्दश्रेष्ठ हैं। हमारा भी इतिहास महान था, हमारा भी अतीत गौरवशाली था। इस प्रकार की भावना हमारे हृदय में प्रज्ज्वलित होनी चाहिए। पहले हम अपने आप को पहचाने, तभी हम अपने गौरव को पहचान पाएंगे और तभी हम अपने आप को भी महिमा मण्डित करा पाएंगे।

आज जिन जातियों ने अपने आत्म गौरव को पहचान लिया है, वे कहाँ से कहाँ पहुँच गई हैं। जिन्होंने कुछ दिन पहले ही खड़ा होना सीखा था, वे आज दौड़ लगा रहे हैं। क्यों? क्योंकि उन्होंने 'एक जाति विशेष की इस अवधारणा को नकार दिया है, कि वे ही सर्वश्रेष्ठ हैं।' उसी जाति विशेष ने हमें इतना पीछे धकेला है, कि हम दूसरे स्थान पर भी नहीं रहे, बल्कि हमें तीसरे स्थान पर धकेला गया है। यदि हम आज भी सचेत नहीं हुए, तो हमें इसके गम्भीर परिणाम भुगतने पड़ेंगे और हमारी आगे आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी।

आज हमने करोड़ों लोगों को अपनी फैक्टरी, कल-कारखानों, प्रतिष्ठानों, उद्योगों में नौकरी दे रखी हैं। जबकि हमारे स्वजाति के 20 लाख बन्धु बेरोजगार घूम रहे हैं। क्या वे 20 लाख नवयुवक यह नहीं सोचेंगे, कि हमारे समाज के उद्योगपतियों ने हमें क्या दिया है? जबकि अन्य जातियों के उद्योगपति अपने उद्योगों में, केवल स्वजाति के लोगों को ही, स्थान देते हैं। यह एक हकीकत है। यह एक वास्तविकता है। इस पर हमें गम्भीरता से विचार करना होगा। यदि वैश्य जाति के उद्योगपति इस दिशा में सोचना शुरु कर दें, तो वैश्य समाज की बेरोजगारी पूर्णतया समाप्त हो जायेगी।

हमारी कमियाँ

अब प्रश्न उठता है, कि उपरोक्त स्थिति में हम क्यों और कैसे पहुँचे हैं? वे कौन से कारण हैं, जिनकी वजह से आज हमे इतना अपमानित होना पड़ रहा है? यदि हम इस प्रश्न पर गम्भीरता से चिन्तन करें, तो हम पायेंगे कि हमारी निम्नलिखित कमियाँ हैं-

1. नेतृत्व-हीनता
2. राजनीति से पलायन

pdfelement
Remove Watermark Now

3. आपसी प्रेमभाव की कमी
4. हिम्मत व आत्मबल की कमी
5. वैश्य संगठनों की कमी

नेतृत्व-हीनता

आज अखिल भारतीय स्तर पर हमारे समाज का कोई ऐसा संगठन नहीं है जिसके पीछे सम्पूर्ण वैश्य समाज एक होकर चल सके। आज सभी जातियों के सम्पन्न व्यक्ति या राजा महाराजा अपनी जातियों को कुशल नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं। जबकि हमारे समाज के सम्पन्न व्यक्ति नेतृत्व देने से दूर भाग रहे है। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि हमारे समाज में निम्न प्रकार के व्यक्ति है-

(क) अति विशिष्ट व्यक्ति :

ये व्यक्ति अरबपति की श्रेणी में आते हैं। यद्यपि इनकी संख्या बहुत ही कम है तथापि ये व्यक्ति, वैश्य जाति को नेतृत्व देने में सक्षम हैं, लेकिन ये राजनैतिक गुण्डागर्दी के कारण राजनैतिक पचड़ों से दूर ही रहते हैं। साथ ही ये अति विशिष्ट व्यक्ति यह भी सोचते हैं कि आज हम अरबपति अपनी स्वयं की प्रतिभा, मेहनत, निष्ठा, और लगन की बदौलत ही बने हैं। वैश्य समाज का इसमें कोई योगदान नहीं है। इसीलिये स्वजाति के प्रति उनके मन में कोई संवेदना, कोई पीड़ा नहीं है। यदि उनके मन में पीड़ा होती, तो वैश्य जाति का कोई नवयुवक बेरोजगार नहीं घूमता।

(ख) विशिष्ट व्यक्ति :

ये व्यक्ति करोड़पति की श्रेणी में आते हैं इनकी संख्या 2 प्रतिशत से भी कम है। ये व्यक्ति नेतृत्व देने की स्थिति में होते हुए भी, राजनैनिक पचड़ों से दूर ही रहना श्रेयस्कर समझते हैं,

क्योंकि राजनीति की पथरीली राहों पर चलने के बजाय ये, करोड़पति से अरबपति, बनना अधिक पसन्द करते हैं। अपहरण की घटनाएं इनके साथ ही अधिक होती हैं। विशिष्ट व्यक्ति होने के कारण ये व्यक्ति अपने समाज के मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों से दूर ही रहते हैं। इन्होंने अपने उद्योगों में कुछ अपवादों को छोड़कर पंजाबी वर्ग या अन्य वर्गों को ही स्थान दिया है। वैश्य समाज के प्रति इनके मन में कोई संवेदना नहीं है। यदि इनके मन में वैश्य जाति के प्रति कोई पीड़ा होती, तो आज वैश्य जाति की यह दुर्दशा न होती। वास्तव में आज इन लोगों को वैश्य समाज का नेतृत्व करने के लिए आगे आना चाहिए। वैश्य जाति के नवयुवकों की बेरोजगारी की ओर ध्यान देते हुए, उन्हें अपने उद्योगों में स्थान देना चाहिए।

(ग) वैश्य समाज के मध्यम श्रेणी के व्यक्ति :

इनकी संख्या वैश्य समाज में लगभग साठ प्रतिशत है तथा वैश्य समाज के प्रति इनकी विशेष निष्ठा तथा विशेष लगाव रहता है। वैश्य समाज में यदि संघर्ष का थोड़ा बहुत जज्बा है, तो वह इन्हीं लोगों में पाया जाता है, परन्तु इनमें से अधिकतर व्यक्ति, एक पार्टी विशेष से जुड़े हुए हैं। इस कारण उन्हें राजनीति में विशेष सम्मान या संख्या के आधार पर आनुपातिक प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाता। यद्यपि वैश्य समाज का यह मध्यम वर्ग जागरूक है, परन्तु आज इस वर्ग को इस विषय में भी चिन्तन करना चाहिए, कि वैश्य समाज को राजनीति में उचित प्रतिनिधित्व किस प्रकार दिलाया जा सकता है। आज यह एक गंभीर चिन्तन और मनन का विषय है।

(घ) वैश्य समाज का पिछड़ा वर्ग :

प्रायः यह माना जाता है, कि वैश्य समाज में केवल ध
व्यक्ति ही पाये जाते हैं। परन्तु स्थिति इससे भिन्न है। आज वै

pdfelement
Remove Watermark Now

समाज का लगभग पैंतीस प्रतिशत वर्ग पिछड़े वर्ग में आता है। इनके पास न तो रहने के लिये मकान है और न ही दुकान। हमारे ये बन्धु मेहनत मजदूरी करके किसी प्रकार अपने बच्चों का भरण-पोषण करते हैं। इनकी तरफ न तो सरकार का ध्यान जाता है और न ही वैश्य जाति के विशिष्ट व्यक्तियों का ध्यान जाता है। सरकार तो सम्पूर्ण वैश्य जाति को पूँजीपति या उद्योगपति मान लेती है। जबकि पूँजीपति तो मात्र 1 या 2 प्रतिशत ही हैं। लेकिन सरकार ने, वैश्य होने का मतलब धनवान होना, मान लिया है। इन व्यक्तियों का वैश्य समाज के प्रति बहुत ही लगाव रहता है तथा इन्हें यह भी पीड़ा रहती है कि हमारा राजनैतिक स्तर पर या सामाजिक स्तर पर, वजूद क्यों नहीं कायम होता? इस वर्ग की ओर ध्यान देना हम सबका परम कर्तव्य है। बच्चों को रोजगार दिलाने में, बैंक से ऋण दिलाने में, सरकार से मासिक पेंशन दिलाने में तथा बच्चों को शिक्षा दिलाने में, हमें इनका साथ देना चाहिए। हमें यह भी सोचना चाहिए, कि ये भी हमारे भाई हैं।

राजनीति से पलायन

जबसे राजनीति में जातिवाद, गुण्डागर्दी, हिंसा का बोलबाला बढ़ा है। तब से हम राजनीति से दूर हटते जा रहे हैं अर्थात् हम राजनीति से पलायन करते जा रहे हैं। लेकिन यह उचित नहीं है क्योंकि राजनीति दूषित अवश्य है लेकिन आवश्यक भी है। यह तथ्य हमें भलीभाँति समझ लेना चाहिए कि बिना राजनीति के हमारा राजनैतिक तथा सामाजिक वजूद लगभग शून्य हो गया है। आज छोटी-छोटी बातों के लिये राजनैतिक नेताओं का सहारा लेना पड़ता है। सही एफ0आई0आर0 दर्ज कराने के लिये भी किसी राजनैतिक नेता को साथ ले जाना पड़ता है। अन्यथा रिपोर्ट दर्ज नहीं होती। वैश्य जाति के सामने बड़ी विचित्र एवं

दयनीय स्थिति तब पैदा हो जाती है, जबकि अपनी जाति का कोई नेता उनके पास नहीं है तथा दूसरी जाति का कोई नेता उनके साथ जाने को तैयार नहीं होता।

आपसी प्रेम भाव की कमी

वैश्य जाति में आपसी प्रेम-भाव की बहुत कमी है। अरबपति-करोड़पति से, करोड़पति-लखपति से तथा लखपति-गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले अपने ही वैश्य बन्धुओं से बात करने में भी अपना अपमान समझते हैं। यहाँ पर यह उदाहरण देना भी उचित होगा कि एक बार भटौना के कुछ जाट बन्धु अपने भरतपुर के राजा बच्चू सिंह जी से मिलने गये। राजा बच्चू सिंह ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें हुक्का भरकर पिलाया था। जाट बन्धुओं ने बहुत कहा कि राजा साहब आप क्या कर रहे हैं? आप तो हमारे राजा हो, लेकिन बच्चू सिंह ने एक भी नहीं मानी तथा अपने हाथों से ही हुक्का पिलाकर माने। आप स्वयं कल्पना करे कि क्या ऐसा प्रेम-भाव हमारी जाति में है। आज लालू प्रसाद यादव व बहिन मायावती अपनी जाति के लिए कितना कार्य कर रहे हैं। क्या कोई हमारा भाई कर सकता है? यदि ऐसा उच्च कोटि का प्रेम-भाव हमारे बन्धुओं में हो जाए, तो हमारी वैश्य जाति की दुर्दशा स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। कोई भी वैश्य नवयुवक बेरोजगार नही रहेगा।

वैश्य संगठनों की कमी

वैश्य जाति के अनेक संगठन हैं। लेकिन कोई भी वैश्य संगठन उन मौलिक तत्वों की ओर ध्यान नहीं दे रहा है, जो कि वैश्य संगठन के लिए आवश्यक हैं। वे मौलिक तत्व निम्नलिखित हैं-

(क) किसी भी वैश्य संगठन ने वैश्य जाति को राजनीति में उचित प्रतिनिधित्व हेतु कभी कोई आन्दोलन नहीं किया, सिर्फ

pdfelement
Remove Watermark Now

मंच तक भाषणबाजी होकर रह जाती है।

(ख) हमारे जो बन्धु गरीबी की रेखा से नीचे जीवन-यापन कर रहे हैं, उन्हें बेहतर रोजगार दिलाने हेतु अथवा उनकी आवाज सरकार तक पहुँचाने हेतु, कोई आन्दोलन नहीं किया गया, न ही कोई सार्थक प्रयास किया गया।

(ग) कभी भी किसी वैश्य संगठन के अध्यक्ष या मन्त्री ने ऐसा आदर्श प्रस्तुत नहीं किया कि उन्होंने अपने पुत्र या पुत्री की शादी बिना दहेज की हो। केवल मंच पर भाषण देने से कुरीतियाँ समाप्त हो सकती हैं क्या? हमारे नेताओं को अपनी कथनी और करनी का भेदभाव दूर करना होगा। आज हमारे नेताओं को अपने त्याग एवं बलिदान का आदर्श उपस्थित करना होगा।

(घ) कभी भी हमारे किसी संगठन ने सभी उपजातियों को एक मंच पर लाने का सार्थक प्रयास नहीं किया।

(च) कभी भी हमारे किसी संगठन ने वैश्य जाति में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने हेतु एक सुधारवादी आन्दोलन प्रारम्भ नहीं किया।

(छ) सम्पूर्ण वैश्य जाति को एक सूत्र में पिरोने हेतु कभी भी वैश्य जागृति यात्रा प्रारम्भ नहीं की गई।

(ज) वैश्य समाज ने कभी भी हमारे गौरवशाली इतिहास को छपवाने का प्रयास नहीं किया।

हिम्मत एवं आत्म बल की कमी

अन्य जातियाँ अपनी सामूहिक एकता की शक्ति के आधार पर अपनी गलत बातों को भी मनवा लेती हैं, लेकिन हम अपनी सही बातों को भी नहीं मनवा सकते। इसका क्या कारण है? क्योकि हमारे अन्दर हिम्मत और आत्मबल की कमी है। हम

अपने दब्बूपन के कारण या हिम्मत की कमी के कारण अत्याचारों को सहन करते जाते हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने अन्दर आत्मबल, नैतिक बल तथा हिम्मत का जज्बा पैदा करें और गलत बातों का एवं अत्याचारों का डटकर मुकाबला करें। साथ ही अपने हकों को पाने के लिए भी संघर्ष करना आवश्यक है, अन्यथा हम अपने हको से वंचित रह जायेंगे। आगे आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी भी माफ नहीं करेंगी। कुछ बातें गंभीर चिंतन हेतु आपके सामने रखने का प्रयास किया गया है। इन पर गंभीर चिंतन करने की आवश्यकता है।

अखिल भारतीय वैश्य महासभा की स्थापना क्यों?

कोई भी वैश्य संगठन आज तक वैश्य समाज की वर्तमान मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में कामयाब नहीं हो पाया है। क्योंकि हमारे जितने भी संगठन हैं, उन सबकी कथनी और करनी में बहुत बड़ा अन्तर रहता है। हमारे राष्ट्रीय नेता कभी भी यह महसूस नहीं करते हैं, कि हमारे समाज के व्यक्ति भी गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। समाज के ऐसे व्यक्तियों को संगठन से कैसे जोड़ा जाये। समाज के ऐसे व्यक्तियों की मौलिक समस्याओं का निदान कैसे किया जाये? यह एक बड़ा प्रश्न हमारे सामने है। उसका उत्तर हमारे समाज के नेताओं को देना चाहिये, कि जो लोग कुछ वर्षों पहले घुटनों के बल चल रहे थे, वे आज दौड़ लगा रहे हैं और हम जो पहले दौड़ लगा रहे थे, आज घुटनों के बल चल रहे हैं। कहाँ गया हमारा सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक वजूद। हम क्यों दिन प्रतिदिन पिछड़ते जा रहे हैं?

अतः एक ऐसे वैश्य संगठन की आवश्यकता महसूस की जाती रही है, जो वर्तमान परिवेश में राष्ट्रीय मर्यादाओं को पूरा करते हुए वैश्य समाज की एकता को सुदृढ़ करने में तथा वैश्य

pdfelement
Remove Watermark Now

जाति को उसका परम वैभवमयी गौरव दिलाने में एवं वैश्य जाति के बहुमुखी विकास कराने में सक्षम हो। इन्हीं उद्दश्यों की पूर्ति हेतु बाबू प्रेम शंकर गर्ग (एडवोकेट) ने अपना सम्पूर्ण जीवन अपने समाज हेतु देने का निर्णय लिया है तथा उन्होंने अखिल भारतीय वैश्य महासभा के माध्यम से सम्पूर्ण भारतवर्ष का दौरा करके सम्पूर्ण वैश्य समाज में क्रान्ति, जागृति एवं चेतना के तीन गुण प्रवाहित करने का व्रत लिया है। उन्होंने वैश्य समाज के उस वर्ग को, जो कि बड़ी तेजी से आगे बढ़ने को तत्पर है, साथ लेकर अर्थात वैश्य समाज के समस्त नवयुवकों को साथ लेकर सम्पूर्ण वैश्य समाज में क्रान्ति का बिगुल बजाने का संकल्प लिया है ताकि वैश्य जाति का बहुमुखी विकास सम्भव हो सके तथा हमें परम वैभवमयी गौरव प्राप्त हो सके।

संस्था के उद्देश्य

1. सम्पूर्ण वैश्य समाज की लगभग 400 उपजातियों को बड़ी तेजी से कार्यवाही करके, एक मंच पर लाने तथा एक सूत्र में पिरोने की कार्यवाही की जायेगी।
2. वैश्य जाति के गौरवमयी इतिहास को छपवाकर घर-घर में पहुँचाया जायेगा तथा इसका खूब प्रचार एवं प्रयास किया जायेगा।
3. वैश्य समाज के बहुमुखी विकास हेतु सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक उत्थान किया जायेगा।
4. वैश्य जाति के घर-घर में इस नारे को फैलाया जायेगा कि- सबको शिक्षा-सबको काम।
5. वैश्य जाति के 35 प्रतिशत व्यक्ति जो गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहे हैं, उन्हें शासन स्तर पर

तथा व्यक्तिगत स्तर पर पूर्ण सहायता एवं सरंक्षण दिलाने का प्रयास किया जायेगा।

6. वैश्य नवयुवकों को रोजगार दिलाने हेतु वैश्य उद्योगपतियों से निवेदन किया जायेगा।
7. संस्था द्वारा वैश्य नवयुवकों को लघु उद्योग तथा कुटीर उद्योग धंधे लगाने हेतु आवश्यक प्रशिक्षण दिया जायेगा और शासन स्तर पर एवं व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक सहायता दिलाने का प्रयास किया जायेगा।
8. सम्पूर्ण वैश्य समाज के लिये एक जागृति अभियान चलाया जायेगा, ताकि हम अपने गौरवमयी इतिहास को जान सकें तथा अपने अतीत के स्वर्णिम पृष्ठों की भाँति अपने वर्तमान को भी महान बना सकें।
9. वैश्य जाति के विरूद्ध अनर्गल प्रचार को रोका जायेगा।
10. वैश्य महापुरूषों के चित्र घर-घर में लगवाये जायेंगे।
11. वैश्य समाज के सामूहिक हितों को राष्ट्रीय स्तर पर तेजी से उठाने की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी।
12. वैश्य जाति के अधिकारी तथा कर्मचारी वर्ग को भी उचित संरक्षण प्रदान किया जायेगा।
13. वैश्य समाज के सभी संगठनों एवं सभी उपजातियों के साथ सामंजस्य स्थापित किया जायेगा।
14. वैश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने हेतु एक सुधारवादी आन्दोलन प्रत्येक नगर एवं प्रत्येक गाँव में चलाया जायेगा।
15. वैश्य जाति के प्रत्येक नवयुवक को जागरूक एवं जुझारू तथा संघर्षशील बनाने हेतु उनमें आत्मबल का संचार किया जायेगा।

pdfelement
Remove Watermark Now

बाबू प्रेमशंकर गर्ग जी का महान व्यक्तित्व

अखिल भारतीय वैश्य महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमशंकर गर्ग बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं। गौरवमयी वैश्य जाति की दुर्दशा को देखकर उनका हृदय रुदन करता है। अतः उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के लिये समर्पित कर दिया तथा रात-दिन समाज के कार्यों के लिये सम्पूर्ण देश का दौरा करते रहते हैं।

फरवरी 2002 में उत्तर प्रदेश में विधानसभा से पूर्व, उत्तर प्रदेश में केवल 12 विधायक वैश्य थे। बाबू प्रेम शंकर गर्ग जी ने उत्तर प्रदेश का सघन दौरा किया। जगह-जगह सभायें कीं तथा वैश्यों में जागरूकता लाई गई। क्रान्ति का बिगुल फूंका गया। फरवरी 2002 के चुनावों में वैश्यजाति के 21 विधायक उत्तर प्रदेश से तथा 3 विधायक उत्तरांचल से जीते। इस प्रकार 12 से बढ़कर विधायकों की संख्या 24 तक पहुँच गयी। लेकिन यह संख्या हमारी जनसंख्या के अनुरूप नहीं है। उत्तर प्रदेश में हमारे कम से कम 50 विधायक होने चाहिए तथा सभी प्रदेशों में हमारे कम से कम हमारी आबादी के हिसाब से उचित प्रतिनिधित्व के आधार पर 10 प्रतिशत विधायक जीतने चाहिए। बाबू प्रेमशंकर गर्ग अभी भी इसी के लिए प्रयासरत हैं। अभी पिछले दिनों उत्तर प्रदेश में नगरपालिका, महापालिका तथा टाऊन एरिया के चुनाव हुए। आदरणीय श्री प्रेमशंकर गर्ग जी द्वारा सभी स्थानों पर जाकर वैश्य प्रत्याशियों को जिताने हेतु प्रयास किये गये। जहाँ पर दो या तीन वैश्य बन्धु खड़े थे, वहाँ पर जनता से ही पूछा कि कौन जीत सकता है तथा उसी के पक्ष में अपना प्रचार किया। उसका परिणाम सामने आया। कई मेयर की सीट तथा नगर पालिका और टाऊन एरिया में चेयरमैन वैश्य जाति के बन्धु जीतने में सफल हुए एवं वैश्य वोटों के बिखराव को रोकने में सफल हुए।

कई स्थानों पर जहाँ वैश्य जाति का कोई प्रत्याशी नहीं था तथा सींट पिछड़ों के लिए आरक्षित थी। वहाँ पर पिछड़ी जाति के व्यक्तियों के लिए कार्य किया। जैसे मेरठ में मधु गुर्जर तथा गुलावठी में मंगतराम पाल को जिताने हेतु किया गया। गुलावठी में मंगतराम पाल के सामने भारतीय जनता पार्टी के मुकेश शर्मा को टिकट दिया था लेकिन बाबू प्रेम शंकर गर्ग ने स्पष्ट रूप से कहा कि जब यह सीट पिछड़े वर्ग के लिए आरक्षित हैं तो हमें पिछड़े वर्ग के व्यक्ति को ही जिताना चाहिए। अतः मंगत राम पाल जो गड़रिया जाति से हैं, उन्हें जिताने का कार्य किया।

इसी प्रकार मेरठ में मधु गुर्जर को पिछड़ा वर्ग आरक्षित सीट से जिताने का कार्य किया गया। उनकी स्पष्टवादिता तथा राजनैतिक दूर-दृष्टि की सर्वत्र प्रशंसा की गई।

सहयोग एवं समर्थन की कामना

बाबू प्रेमशंकर गर्ग जी ने संस्था के उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु अपना पूरा समय समाज के लिये बलिदान करने का व्रत लिया है। उनके नेतृत्व में यह संस्था उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु कार्य कर रही है। लेकिन इन उद्देश्यों की प्राप्ति तब तक सम्भव नहीं हो सकेगी, जब तक कि सभी वैश्य बन्धुओं का सहयोग प्राप्त नहीं हो पाएगा। अतः अब यह आपका उत्तरदायित्व है, कि आप अपनी संस्था के उद्देश्यों एवं विचारों को घर-घर तक पहुँचाकर, वैश्य एकता एवं राष्ट्र एकता को, मजबूती प्रदान करें। यदि आपको यह विचार पसंद आयें, तो हमें अवश्य ही अपनी भावनाओं से अवगत कराने का कष्ट करें।

शान्ति स्वरूप गुप्
(महामंत्री
अखिल भारतीय वैश्य महासभ
K-220 शास्त्री नगर मेरठ

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-21

समाज को बदल डालो

आज मेरे भारत की तस्वीर क्या हो गयी है? सर्वत्र अस्तता, व्यस्तता, निर्लज्जता के अंकुर फूट रहे हैं। चारों ओर अश्लीलता, अराजकता, अनैतिकता का बोल बाला है तथा अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार का साम्राज्य व्याप्त हो रहा है। देश में व्यवस्था पंगु हो गयी है। सत्ता के शिखर पर चोर, लुटेरे, हत्यारों का कब्जा हो गया है। चहुँ ओर विडम्बनाओं का बोलबाला है। इन विडम्बानाओं से सम्बन्धित कुछ प्रश्न मेरे मस्तिष्क में आ रहें हैं।

प्रश्न 1 : इस पंगु व्यवस्था के लिए दोषी कौन?

उत्तर : इस देश की व्यवस्था बहुत ही दोष पूर्ण हो चुकी है। अभी पिछले दिनों "आज तक" चैनल पर एक समाचार दिखाया गया था। एक लड़की नौएडा (उत्तर प्रदेश) की रहने वाली, सी0बी0एस0ई0 दसवीं की कक्षा में परीक्षा देने हेतु, अपने घर से चली, किसी वी0आई0पी0 के कारण रास्ते बन्द थे। अतः लड़की गली मौहल्लों का चक्कर काटती हुई तीन घण्टे बाद कालिज पहुँची, तब तक पेपर समाप्ति की घण्टी बज चुकी थी। बडी मुश्किल से लड़की को पेपर देने की अनुमति दी गई, लेकिन जब रिजल्ट आया तो कम्प्यूटर में लड़की को अनुपस्थित दिखाया गया था। "आज तक" चैनल में वह लड़की रो रही थी। कौन है इस व्यवस्था के लिए दोषी? उत्तर प्रदेश में हर छोटी से छोटी बात के लिए आये दिन जाम लगा रहता है। कौन है इसके लिए दोषी?

दूसरा उदाहरण : केरल का आता है। जहाँ पर किसी वी0आई0पी0 ड्यूटी के कारण रास्ते बन्द थे। एक व्यक्ति अपने इकलौते लड़के को डाक्टर को दिखाने के लिए ले जा रहा था। रास्ते बन्द होने के कारण वह लड़का रास्ते में ही मर गया। कौन है इसके लिए दोषी?

तीसरा उदाहरण : उत्तर प्रदेश का है। अभी पिछले दिनों चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ की अस्सी हजार कापियाँ आगरा में पकड़ी गयी थीं, जिन्हें आठवीं कक्षा के बच्चे जाँच रहे थे। कौन कर रहा है बच्चों के भविष्य से खिलवाड़? कौन दोषी हैं इसके लिए?

चौथा उदाहरण : अभी पिछले दिनों एक खबर आई थी, कि उत्तर प्रदेश बोर्ड परीक्षा केन्द्र से कापियाँ लादकर एक ट्रक चला, उसमें से कुछ बण्डल रास्ते में गिर गये। उन बच्चों का क्या होगा, जिनकी कापी के बण्डल रास्ते में ही गिर गये? कौन है इसके लिए दोषी?

सरकारी स्कूलों में अव्यवस्था का हाल यह है, कि यदि कुर्सी है, तो मेज नहीं, यदि मेज है, तो कुर्सी नहीं। एक स्कूल में कुल बच्चे चार थे, लेकिन अध्यापक पाँच थे। एक अन्य सरकारी स्कूल में बच्चे दो सौ थे, लेकिन अध्यापक एक था। सभी सरकारी कार्यालयों में अव्यवस्था का साम्राज्य व्याप्त है। इन सरकारी कार्यालयों में सफाई की व्यवस्था का क्या हाल है? सबकों पता है। नगर निगमों में, नगर पालिकाओं में या नगर परिषदों में सफाई की व्यवस्था कैसी होती है, सबको पता है चौराहों पर कूडे के ढ़ेर तथा गन्दगी के ढ़ेर लगे रहते हैं। नाक पर रुमाल रखकर गुजरना पड़ता है। चौराहों पर साँड लडते रहते हैं। कौन हैं इस पंगु व्यवस्था के लिए दोषी?

pdfelement
Remove Watermark Now

"धर्म बड़ा या देश बड़ा"

15 अगस्त सन् 1947 को देश आजाद हुआ। धर्म के नाम पर देश के दो टुकड़े कर दिये गये। एक हिन्दुस्तान, दूसरा पाकिस्तान। 28 प्रतिशत मुस्लिमों को जमीन का 33 प्रतिशत भाग दे दिया गया। धर्म के नाम पर भाई-भाई को मार रहा था। उस समय देश, धर्म के सामने छोटा हो गया था। गाँधी जी उस समय नोआखली (अब बँगला देश) में मुस्लिमों के चँगुल से, हिन्दुओं को बचा रहे थे। जिन्ना ने प्रस्ताव रखा कि पाकिस्तान के हिन्दू भारत चले जायें तथा भारत के मुसलमान पाकिस्तान आ जायें। नेहरू जी से मौलाना आजाद तथा रफी अहमद किदवई ने कहा, कि हमें पाकिस्तानी भेड़िये मार डालेंगे, हम पाकिस्तान नहीं जायेंगे। अतः नेहरू जी ने जिन्ना के इस प्रस्ताव को नहीं माना तथा कहा कि हमारा देश धर्म निरपेक्ष है। हमारे देश में हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सबके साथ समान व्यवहार किया जायेगा। लेकिन आज देश, जाति-धर्म और सम्प्रदाय में बंटता जा रहा है तथा धर्म निरपेक्षता का विकृत रूप सामने आ रहा है। देश के नेताओं में जातिवाद और सम्प्रदायवाद पनपता जा रहा है। आज देश छोटा हो गया है तथा धर्म और सम्प्रदाय बड़े हो गये हैं। देश के नेताओं में देशभक्ति की भावना शनैः शनैः कम होती जा रही है।

व्यक्ति बड़ा या देश बड़ा

सन् 1971 में "गरीबी हटाओ" के नारे के साथ श्रीमति इन्दिरा गाँधी भारी बहुमत से, दुबारा देश की प्रधानमन्त्री बनी। क्या देश की गरीबी दूर हुई? छली गई देश की जनता। सन् 1975 में तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्ष डी0के0 बरूआ ने कहा कि

"इन्दिरा ही भारत है, भारत ही इन्दिरा है" इसका क्या अर्थ है? शायद यही कि "व्यक्ति बड़ा है और देश छोटा है।"

कुर्सी बड़ी या देश बड़ा

सन् 1977 में जे0पी0 के बहु आयामी व्यक्तित्व के कारण जनता पार्टी सत्ता में आई। सभी सांसदों ने महात्मा गांधी की समाधि पर जाकर शपथ ली, कि हम देश में चमत्कारिक परिवर्तन करेंगे तथा हमारी रक्त की एक-एक बूँद देश के लिए समर्पित रहेगी एवं हमारे जीवन का क्षण-क्षण देश के लिए ही समर्पित रहेगा। इन सांसदों ने एक ही झटके में 1979 में पार्टी तोड़ दी। कहाँ गई देश भक्ति? प्रधानमन्त्री की कुर्सी एक थी तथा दावेदार कई थे। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि देश के नेताओं के लिए देश छोटा है तथा कुर्सी बड़ी है।

आज देशभक्ति का सभी राजनेताओं में अभाव है। दलगत स्वार्थ एवं व्यक्तिगत स्वार्थ सभी पर हावी हो रहें हैं। इसलिए देश छोटा हो गया है तथा कुर्सी बड़ी हो गयी है।

प्रश्न 3 :- एक प्रश्न देशभक्त राजनेताओं से :

देश का भविष्य क्या होगा

सन् 1984 में श्रीमती इन्दिरा गांधी के बलिदान के फलस्वरूप श्री राजीव गांधी देश के प्रधानमन्त्री बने। उन्होंने प्रधानमन्त्री पद सम्भालते ही खुलासा किया, कि देश के विकास में एक रूपये में से, केवल 15 पैसे ही लगते हैं। शेष 85 पैसे राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों तथा दलालों की जेब में चले जाते हैं। एक कटु सत्य को देश के प्रधानमन्त्री ने देश की जनता के सामने रखा। देश की जनता ने उस कटु सत्य को स्वीकार किया तथा राजीव गांधी सबके प्यारे, सबके दुलारे तथा सबकी आँखों के तारे बन गये।

pdfelement
Remove Watermark Now

सन् 1989 में श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह का उदय होता है। एक बहुत बड़ी चुनावी सभा में विश्वनाथ प्रताप सिंह का भाषण चल रहा था। सभी लोग देश के भावी प्रधानमन्त्री का भाषण बड़ी तन्मयता से सुन रहे थे, तभी अचानक विश्वनाथ प्रताप सिंह जेब से एक कागज निकालते हैं और जनता की ओर दिखाते हुए कहते हैं, कि "इस कागज पर राजीव गांधी के स्विस बैंक का एकाउन्ट नम्बर है। सत्ता में आते ही, मैं इसे उजागर कर दूँगा।" विश्वनाथ प्रताप सिंह सत्ता में आते हैं तथा देश के प्रधानमन्त्री पद को भी सुशोभित करते हैं, परन्तु देश की जनता को वह एकाउन्ट नम्बर आज तक नहीं मिल सका है। देश की जनता आज भी उस एकाउन्ट नम्बर को जानने के लिए उत्सुक है।

सन् 1990 में श्री पी0 वी0 नरसिंह राव जी देश के प्रधानमन्त्री बने। उन पर हर्षद मेहता ने आरोप लगाया कि "मैंने नरसिंह राव जी को एक करोड़ की रिश्वत दी है।" सांसदों को रिश्वत देकर खरीदने के घोटाले में भी वे फंसे, लेकिन उन्होंने एक बात सिद्ध कर दी, कि हमाम में हमारे सभी राजनेता नंगे हैं। जब उन्होंने सांसद निधि में एक करोड़ रूपये सभी सांसदों को देने की घोषणा की, तो किसी भी दल ने इसका विरोध नहीं किया। आज सांसद निधि के कारण कितना भ्रष्टाचार हो रहा हैं। यह किसी से छुपा हुआ नहीं है।

पाँच जनवरी 2004 को श्री कल्याण सिंह (पूर्व मुख्यमन्त्री उ0प्र0) ने कहा कि सोनिया गांधी का "विदेशी मूल" का कोई मुद्दा नहीं हैं। जनता को बहकावे में नहीं आना चाहिये। वे ब्याहकर आयीं हैं और यहाँ की सभ्यता में पूरी तरह ढ़ल चुकी हैं। सर्वोच्च न्यायालय भी यह निर्णय सुना चुका है। सोनिया गाँधी अब देश की नेता हैं।

सत्रह मई 2004 को श्री कल्याण सिंह जी अचानक कहते हैं, कि "सोनिया गांधी का प्रधानमन्त्री बनना राष्ट्रीय स्वाभिमान पर बहुत गहरी चोट है। भावी पीढ़ियाँ अपने पूर्वजों पर थूकेंगी कि उन्होंने एक विदेशी मूल की महिला को प्रधानमन्त्री बनवा दिया। यह घटना इतिहास के काले पन्ने पर लिखी जायेगी, जनता इसके लिए कांग्रेस व कम्युनिस्टों को कभी माफ नहीं करेगी।"

अभी हाल में ही अपने देश के पूर्व उपप्रधानमन्त्री एवं पूर्व गृहमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवानी जी पाकिस्तान गये। वहाँ पर उन्होंने जिन्ना की समाधि पर फूल चढ़ाये तथा वहाँ रखी किताब में अपने हाथ से यह टिप्पणी लिखी कि जिन्ना साहब धर्म निरपेक्ष थे। जिस व्यक्ति ने साम्प्रदायिकता की आग में देश को झोंक दिया तथा लाखों लोगों को मरवा दिया और साम्प्रदायिक आधार पर ही देश के टुकड़े करवाये, उसे अब आडवानी जी द्वारा धर्म निरपेक्ष बताया जा रहा है। यह कैसी विडम्बना है?

माननीय अटल जी जहाँ कही भी भाषण देते, अपनी पार्टी की तीन प्राथमिकताएँ बताते हुए कहते थे, कि यदि हम सत्ता में आये, तो पहला काम धारा 370 समाप्त करना, दूसरा काम समान नागरिक संहिता लागू करना, तीसरा काम अयोध्या में राम मन्दिर बनाना। माननीय अटल जी 6 वर्ष तक सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर रहे, लेकिन तीनों प्राथमिकताएं याद नहीं आईं। क्या यह विडम्बना नहीं है?

आज इस देश के नेताओं के स्विस बैंकों में अरबों डालर जमा है। यदि यह विशाल धनराशि देश में ही आ जाये, तो देश का कितना विकास हो सकता है तथा विदेशी कर्ज को भी समाप्त किया जा सकता है, लेकिन देश के नेताओं में देशभक्ति का अभाव है, इसलिए यह कार्य नहीं हो सकता।

pdfelement
Remove Watermark Now

प्रश्न 4 :– एक प्रश्न देशभक्त नौकरशाहों से ?

क्यों देते हैं वीरप्पन जैसे लोग सत्ता को चुनौती

वीरप्पन ने 100 से ज्यादा पुलिस अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया था। कर्नाटक सरकार के अधिकतर मन्त्री उससे मिले हुए थे। इसलिए कर्नाटक सरकार उसे आम माफी देना चाहती थी। एक पुलिस अधिकारी जो कि वीरप्पन द्वारा मारा गया था, उसके पिता ने हाईकोर्ट में एक रिट याचिका डाल दी थी, कि जिन लोगों ने उसे पकड़ने के लिए उपना बलिदान कर दिया, वे सब क्या पागल थे? हाईकोर्ट ने आम माफी देने से मना कर दिया। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि अपराधियों और राजनेताओं का आज गठबन्धन हो गया है, इसीलिए राजनीति का पतन हो रहा है।

अभी पिछले दिनों बिहार के डी0जी0पी0 मिस्टर ओझा का बयान आया था कि "शहाबुद्दीन को बचाने में बिहार सरकार (मुख्य मन्त्री रावड़ी देवी) का हाथ है।" इसीलिए अपराधी सत्ता को चुनौती देते हैं तथा इसी प्रकार के अपराधी व्यक्ति, संसद सदस्य या विधायक बन जाते हैं। फिर मन्त्री या मुख्यमन्त्री बन कर सत्ता शिखर पर पहुँच जाते हैं। इनके पास राज चलाने हेतु न तो चिन्तन होता हैं और न ही चरित्र होता हैं तथा न ही अध्ययन और मनन होता है। ऐसे तत्व राजनीति में पहुँच कर "गुण्डाराज" कायम कर लेते हैं। इसी कारण देश की राजनीति का पतन हो रहा है।

इस विषय में, मैं एक कहानी प्रस्तुत कर रहा हूँ। किसी देश में एक राजा के मन्त्री के पुत्र ने कोई बहुत बड़ा अपराध कर दिया था। राजा अपने मंत्री के दबाव में मन्त्री-पुत्र को बचाना चाहता था। लेकिन न्यायाधीश ने उस लड़के के अपराध को देखते हुए उसे मृत्यु दण्ड दे दिया। राजा ने मन्त्री को भड़का

दिया, कि मैं तो माफ करना चाहता था, परन्तु न्यायाधीश नहीं माना। अतः तुम न्यायाधीश का कत्ल करा दो। मन्त्री ने न्यायाधीश का कत्ल करा दिया। उसके बाद सारे देश के न्यायधीशों की एक सभा हुई। उसमें यह तय हुआ कि हम तो न्याय का शासन चाहते है। राजा ने अन्याय का साथ दिया है, एक अपराधी व्यक्ति का साथ दिया है। अतः राजा भी स्वयं अपराधी है। अतएव सभी न्यायाधीशों ने सर्व सम्मति से राजा को मृत्यु दण्ड की सजा सुना दी। राजा को फाँसी पर लटका दिया गया। अतः न्यायाधीशों की कर्तव्य परायणता एवं जागरूकता के कारण एक अन्यायी शासन का अन्त हुआ।

इसी तरह की दूसरी कहानी प्रस्तुत कर रहा हूँ– कथा बहुत पुरानी है परन्तु आज के परिप्रेक्ष्य में चरितार्थ होती है। किसी देश में एक राजा राज्य करता था। उसके राज्य में राजा का लड़का, मन्त्री का लड़का तथा सेनापति का लड़का, तीनों मिलकर देश की जनता के साथ बहुत अत्याचार करते थे। अतः सभी लोग इकठ्ठे होकर राजा के पास गये तथा न्याय देने की बात कही। राजा ने जनता से ही इसका निदान माँगा। कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह सका कि राजा के लड़के को फाँसी दो। तब एक साधु व्यक्ति भीड़ से बाहर आकर राजा के पास जाकर बोला कि मेरे पास इनके अत्याचारों का हल है। राजा ने कहा कि क्या है, सबके सामने बताओ। उस साधु ने कहा कि सभी व्यक्तियों से एक पर्ची ली जाए, जिसमें वे अपनी घटना तथा उससे सम्बंधित अपराधी का नाम लिखेंगे। फिर उस अपराधी को सबके सामने फाँसी दी जायेगी। यह तय हो गया। सभी व्यक्तियों ने अपनी पर्ची एक बड़ी पेटी में डाल दी। अब राजा ने पहले पर्ची उठाई तो उसमें राजा के लड़के का नाम आया। वह पर्ची राजा ने अपनी जेब में रख ली। दूसरी पर्ची उठाई, उसमें मन्त्री के लड़के

pdfelement
Remove Watermark Now

का नाम आया। तीसरी पर्ची उठाई, उसमें सेनापति के लड़के का नाम आया। राजा ने इन्हें भी जेब में रख लिया तथा चौथी पर्ची उठाने के लिए हाथ बढाया, तभी साधु ने राजा का हाथ पकड़ लिया। उसने कहा कि पहले इन तीनों पर्ची वाले अपराधियों को फाँसी दो, तब चौथी पर्ची निकाली जायेगी। राजा उन्हें बचाना चाहता था, लेकिन जनता उन्हें फाँसी देना चाहती थी। तब साधु ने कहा कि राजा हमें पता है, कि इन पर्चियों में अपराधी कौन हैं? हम तो केवल यह चाहते हैं, कि अपराधी चाहे कोई भी हो, कितना ही बड़ा हो, उसे आज ही फाँसी दी जानी चाहिए। अतः तीनो को फाँसी दी गई। पूरे देश में अन्याय और अत्याचार खत्म हो गया। अब ऐसी स्थिति में किस की हिम्मत हो सकती है, कि अपराध कर सके। जो व्यक्ति देश के उच्च पदों पर बैठे हुए हैं, उन्हें इसी प्रकार की दृढता का परिचय देना चाहिए, तभी देश को बचाया जा सकता हैं। जैसा कि श्री टी0एन0 शेषन ने अपने कर्तव्यों और अधिकारों का पालन दृढता के साथ किया और उन्होंने चुनाव प्रक्रिया में सुधार का सूत्रपात किया। ऐसी दृढता सभी उच्च अधिकारियों को दिखानी चाहिए।

प्रश्न 5 :- एक प्रश्न वैश्य जाति के बंधुओं से :-

कौन बचायेगा भारत को

पिछले दिनों पंजाब में श्री के0 पी0 एस0 गिल के नेतृत्व में पुलिस अधिकारियों ने, अपनी जान पर खेलकर आतंकवाद पर काबू पा लिया था। पंजाब की जनता ने तथा देश की जनता ने राहत की सांस ली थी। श्री के0 पी0 एस0 गिल एवं उनके साथी पुलिस अधिकारियों की सराहना सभी अखबारों में की गई थी। लेकिन बाद में उन पुलिस अधिकारियों को सम्मान देने की बजाय परेशान किया गया। उनके विरुद्ध जाँच बिठाई गयी। कई अधिकारियों ने तो तंग आकर आत्महत्या तक कर ली थी। क्या

यह विडम्बना नहीं है? जिन देश भक्त पुलिस अधिकारियों ने देश और प्रदेश को बचाने के लिए, अपनी जान की परवाह नहीं की, उनके साथ ऐसा सलूक क्यों किया गया? आज राजनेताओं और अपराधियों में गठबंधन हो गया है। सत्ता के उच्च शिखर पर भ्रष्टाचार, जातिवाद, भाई-भतीजावाद व्याप्त है। यह हमें खुले आम देखने को मिल रहा है। राष्ट्रनायक ही आज राष्ट्र को छल रहे हैं। क्या यह विडम्बना नहीं हैं? आपकों ऐसा लग रहा होगा कि मैं विषय से भटक गया हूँ, लेकिन मै विषय से कतई नहीं भटका हूँ। मैंने ये पाँच यक्ष प्रश्न सभी से पूछे हैं, क्योंकि इन यक्ष प्रश्नों का गहरा सम्बम्ध वैश्य जाति के व्यक्तियों से है। जो व्यक्ति देश के बारे में चिन्तन करेगा, वह व्यक्ति अवश्य ही इन यक्ष प्रश्नों के बारे में भी चिन्तन करेगा। वैश्य जाति के लोगों ने कभी कुछ नहीं माँगा, केवल यही माँगा कि सम्पूर्ण देश में सुख, शान्ति और समृद्धि रहनी चाहिए। इन सभी प्रश्नों का वैश्य जाति के व्यक्तियों से सीधा सम्बम्ध है। अतः समय की पुकार है कि हम समाज को बदल डालें। हम बदलेंगे, युग बदलेगा, हम जागेंगे, युग जागेगा। अब हमें सम्पूर्ण राष्ट्र का नेतृत्व करने हेतु आगे आना ही होगा।

विडम्बना

"आज मेरे महान भारत की यह कैसी विडम्बना है, कि जो व्यक्ति स्वंय अपराधी है, अपराध के निर्णय का अधिकार भी उसी के हाथों में है।, देश का विधान और संविधान बनाने तथा देश को चलाने का अधिकार भी उन्हीं लोगों के हाथों में है, जो स्वयं अपराधी हैं। अर्थात् जिन हाथों को राज्य संचालन की कला ही नहीं आती, उन हाथों को देश की डोर सौंप दी गई है।

शान्ति स्वरूप गुप्त

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-22

भावी चुनौतियों का सामना कैसे करें?

पिछले अध्याय में हमने गौरवमयी वैश्य जाति की दुर्दशा क्यों? इस तथ्य पर चिन्तन और मनन किया था। अब हम इस अध्याय में इस तथ्य पर चिन्तन करेंगे, कि हम गौरवमयी वैश्य जाति की दुर्दशा को किस प्रकार दूर कर सकते हैं तथा उसे किस प्रकार परम वैभवशाली और ऐश्वर्य से परिपूर्ण बना सकते हैं?

इसके लिए हमें सबसे पहले निम्न तथ्य को जानने का प्रयास करना चाहिए :-

"जीतने वाले कोई अलग काम नही करते,
वे हर काम को अलग ढ़ंग से करते हैं।"
-शिव खेड़ा

उपरोक्त तथ्य को भली भांति समझकर अपने जीवन में इसे उतारने का प्रयास करें।

अब हम निम्न तथ्य को भी जानने का प्रयास करें :-

"सफलता का सही अर्थ है, अपने असली मकसद को
पाना; इसका अर्थ है कि पूरा युद्ध जीतना,
न कि छोटी-मोटी लड़ाईयाँ जीतना।"
-एडविन सी बिलस

आज से ही इसी मूल मंत्र द्वारा सफलता के मार्ग में आगे बढ़ो और इसके लिए आपको अपने अन्दर शक्ति का संचार करना होगा तथा धीर, वीर, गंभीर बनना होगा।

अतः इन गुणों को प्राप्त करने के लिए आप अपने बारे में केवल यह जान लें कि :-

हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों, तुम्हारा इतिहास अमर है,
तुम्हारे उच्च आदर्श अमर हैं, तुम्हारा उज्जवल चरित्र,
शाश्वत सत्यों की तरह, आज भी, ज्योर्तिवन्त है,
तुम्हारा जीवन दर्शन आज भी, जगत को
आलोकित कर रहा है।

अतः उठो, जागो और आगे बढ़ो; एक सुन्दर,
सुखमय भविष्य, तुम्हारा इंतजार कर रहा
है। तुम भी सिद्ध पुरुष बन सकते
हो, तुम भी अवतारी पुरुष
बन सकते हो।

आइये अब हम इस पर विचार करते हैं, कि भावी चुनौतियों का सामना हम किस प्रकार करें-

1. हम अपनी एकता सुदृढ़ करें :

इसके लिए सबसे पहले हम संगठन के महत्व को स्वीकार करते हुए, संगठन की आवश्यकता को स्वीकार करें तथा संगठन शक्ति में कितना बल है, इसे जानने का प्रयास करें। इस विषय में, मैं एक पौराणिक कहानी यहाँ पर प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस कहानी को पढ़कर आप इसके महत्व पर जाने का प्रयास करें तथा जिस भाव से यह कहानी प्रस्तुत की जा रही है उस भाव को ग्रहण करने का प्रयास करे।

समुद्र के किनारे एक निर्जन स्थान पर एक टिटहरी ने दो

pdfelement
Remove Watermark Now

अण्डे दिये, टिट्हरी और टिट्हरा उनकी देखभाल करते रहते थे। एक दिन समुद्र में ज्वार आया, और दोनों अण्डे बह गये। टिट्हरी और टिट्हरा ने अन्न-जल त्याग दिया। जब दूसरे पक्षियों ने उन्हें देखा, तो वे भी अन्न-जल त्यागकर उनके साथ आ गये। अब क्या था दूर-दूर से पक्षीगण वहाँ आ गये तथा अन्न-जल त्याग कर टिट्हरी और टिट्हरे के समर्थन में आ गये। पक्षीराज गरूड को भी पता चला, वे भी उनके साथ आ गये। जब भगवान विष्णु को इस घटना की जानकारी हुई, तो वे भी पक्षीराज गरूड के पास आ गये। वहाँ उन्होंने देखा के दूर-दूर तक करोड़ों पक्षी कतार-बद्ध होकर अन्न-जल त्यागे हुए हैं। उन्होंने कहा कि पक्षियों मुझे बताओ, कि तुम सब ने अन्न-जल क्यों त्याग रखा है? तब पक्षीराज गरूड ने कहा कि भगवान! हमारे प्रिय टिट्हरी और टिट्हरा के बच्चों को समुद्र बहा कर ले गया है। आप कृपया हमें बच्चे समुद्र से वापिस दिलाइये, तभी हम सब अन्न-जल ग्रहण करेंगे। तब विष्णु भगवान ने तुरन्त समुद्र का आवाहन किया, समुद्रराज वहाँ आये तथा टिट्हरी और टिट्हरे के अण्डों को भी ले आये। एकता में कितनी शक्ति है, इसे हम स्वीकार करें।

आइये अब हम यह जानने का प्रयास करें कि जातिवाद क्या है?

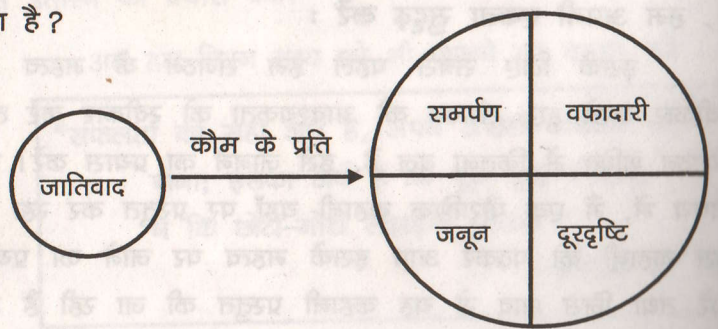

अतः जातिवाद में चार तत्व निहित हैं-

1. कौम के प्रति समर्पण
2. कौम के प्रति वफादारी
3. कौम के प्रति जनून
4. कौम के हित के लिए दूरदृष्टि

भारत एक भावना प्रधान देश है :

हमारे देश के सभी नेतागण देश की जनता की इन्हीं भावनाओं को भुना रहे हैं तथा सभी नेता जनता को जातिवाद की ओर धकेल रहे हैं-

1. माननीय श्री अजीत सिंह जी जाटों में इसी प्रकार की भावना भर रहे हैं।
2. माननीय श्री मुलायम सिंह जी यादवों में इसी प्रकार की भावना भर रहे हैं।
3. माननीय श्री कल्याण सिंह जी लोधों में इसी प्रकार की भावना भर रहे हैं।
4. बहिन मायावती जी दलितों में इसी प्रकार की भावना को भर रही हैं।
5. हमारे मुस्लिम लीडर भी मुसलमानों में इसी प्रकार की भावना को भर रहे हैं।
6. हमारे देश के सभी लीडर मुद्दों की अपेक्षा भावनाओं को भड़काते हैं तथा जनून पैदा करते हैं क्योंकि-

जब किसी व्यक्ति में जनून पैदा हो जाता है, तब वह व्यक्ति दस गुना अधिक तेजी से दौडता है तथा कार्य भी त्वरित गति से पूर्ण हो जाता है।

इसी प्रकार यह भी जानना अत्यावश्यक है, कि जब किसी जाति में जनून पैदा हो जाता है, तब कार्य की गति सौ

pdfelement
Remove Watermark Now

गुना बढ़ जाती है तथा उससे सम्पूर्ण जाति की उन्नति की गति तेजी से बढ़ जाती है।

हमारे देश के नेतागण अपनी जाति के संगठन को निम्न प्रकार तैयार करते है-

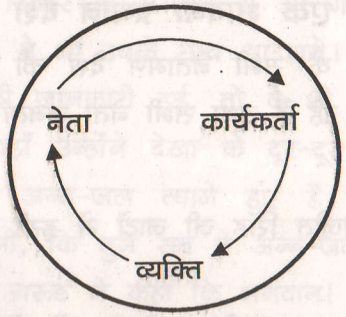

इसे हम इस प्रकार भी कह सकते हैं, कि नेता की पहुँच कार्यकर्ता तक तथा कार्यकर्ता की पहुँच व्यक्ति तक, फिर व्यक्ति अपनी बात को कार्यकर्ता तक और कार्यकर्ता उस व्यक्ति की बात को नेता तक पहुँचाते हैं। इस प्रकार नेता की पहुँच व्यक्ति तक हो जाती है और व्यक्ति की पहुँच नेता तक हो जाती है।

अर्थात् इसे हम निम्न प्रकार आसानी से समझ सकते हैं-

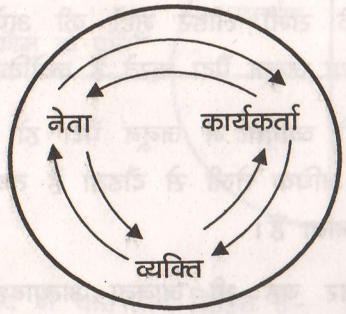

2. वैश्य जाति के नेताओं में जागरूकता की कमी :

आज सभी जातियों के लीडर अपनी जाति के लोगों में जातिगत भावना जागृत करके उसे जनून की हद ले जाते हैं तथा उससे अपना वोट बैंक पक्का करते हैं।

लेकिन वैश्य जाति के नेता क्या करते हैं?

हमारे एक नेता विधायक बने, फिर मंत्री बने, फिर वैश्य जाति के सम्मेलन में जाकर भाषण करते हैं, कि मेरा जातिवाद में विश्वास नही है तथा मेरे यहाँ तक पहुँचने मे वैश्य जाति का कोई योगदान नहीं है।

अगली बार, वे महाशय न तो विधायक बने और न ही मंत्री बने। अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत।

एक निर्माता-निर्देशक ने हमारे एक मुख्यमंत्री को, ऐन दीपावली के दिन, केवल इसलिए मुख्यमंत्री के पद से हटा दिया था, कि वह बहुत ही ईमानदारी के साथ अपने रोल को अंजाम दे रहे थे। वास्तव में हम पूरी फिल्म में एक एक्स्ट्रा की भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। निर्माता-निर्देशक कोई और है, फिल्म का हीरो भी कोई और ही है, हम तो सिर्फ छिड़काव करने और दरी बिछाने तथा मंच को सजाने या भोजन खिलाने का कार्य कर रहे हैं।

हम पिछलग्गू बनकर जी रहे है या बंधुआ-मजदूर बन कर जी रहे हैं। एक सच्ची घटना मेरे याद आ रही है, उ आपके सामने रख रहा हूँ-

pdfelement
Remove Watermark Now

हमारे एक नेता जी एक पार्टी विशेष के बंधुआ-मजदूर थे। एक समारोह में आयोजक महोदय ने पार्टी विशेष की बुराई कर दी। अब क्या था, वे पार्टी विशेष के नेता जी बिफर गये, आयोजकों को गाली देने लगे। कुछ दिन बाद ही चुनाव आया, नेता जी को पार्टी विशेष का टिकट नहीं मिला। अब वे खुद ही पार्टी विशेष को गाली देने लगे तथा अपनी गलती पर पछताने लगे।

वास्तव में हम सब की यही हालत है, जब पार्टी विशेष में विधायक होते हैं, तब हम उस पार्टी विशेष के बंधुआ-मजदूर होते हैं और जब हमें टिकट नहीं मिलता, तब हमें असलियत का ज्ञान होता है, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

3. हमें सत्ता में भागीदारी चाहिए :

इस देश में या प्रदेश में हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हमें अपनी आबादी के हिसाब से सत्ता में भी भागीदारी मिलनी चाहिए। हम सबको दृढ़ता के साथ प्रत्येक राजनैतिक दल के सामने यह मुद्दा उठाना चाहिए। यदि इस प्रदेश में हमारी आबादी दस प्रतिशत है तो हमें चालीस सीटें विधायक की तथा दस सीटें लोकसभा की मिलनी चाहिए। आज सभी जातियाँ अपने जातिगत संगठन बनाकर अपनी इसी माँग को पूरा कर रही हैं। सभी राजनेता अपनी-अपनी जाति को इसी प्रकार बढ़ावा दे रहे हैं। हमारी जाति के अन्दर बिड़ला है, मोदी है, जैन है, मित्तल ग्रुप है, जिन्दल ग्रुप है, न जाने कितने बड़े-बड़े ग्रुप हैं। लेकिन हमारा राजनैतिक वजूद क्या है? कभी इस पर विचार किया है! यदि हम सत्ता में अपनी भागीदारी माँगेंगे, तभी हमारा राजनैतिक और सामाजिक वजूद कायम हो सकेगा।

4. हमें राजनैतिक चेतना जागृत करनी चाहिए :

एक समय था, जब उत्तर प्रदेश में हमारे बाईस-तेईस मंत्री होते थे। लेकिन आज हमारे बाईस विधायक भी नहीं है। इसका कारण क्या है? कभी विचार किया है आपने इस पर। हमारे अन्दर राजनैतिक चेतना का अभाव है। अब हमें भी अपने अन्दर राजनैतिक ज्वाला जागृत करनी पडेगी। दलितों में माननीय श्री काशी राम जी तथा बहिन मायावती ने यही चेतना जागृत की तथा जाटों में चौधरी चरण सिंह एवं चौ० अजीत सिंह जी ने यही चेतना जागृत की। यादवों में माननीय श्री मुलायम सिंह ने यही चेतना जागृत की। माननीय श्री कल्याण सिंह जी ने लोधी जाति में यही चेतना जागृत की।

आज सभी नेता अपनी-अपनी जातियों में राजनैतिक चेतना जागृत कर रहे हैं तथा अपनी जाति को अधिक से अधिक विधायक और सांसद की सीट पर कब्जा करने की युक्तियाँ बता रहे है तथा जाति-गत वोट-बैंक को बढ़ा रहे हैं।

5. हमें अपने गौरवमयी इतिहास का ज्ञान होना चाहिए :

1. हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि गुप्तकाल वैश्य जाति का काल था।
2. हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि गुप्तकाल भारतीय इतिहास का स्वर्णकाल था।
3. हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि गुप्त काल के नरेशों के क्या नाम थे।
4. हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि इतिहास में हर्ष का काल भी वैश्य काल था।

pdfelement
Remove Watermark Now

5. हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि हेमचन्द्र विक्रमादित्य (हेमू बनिया) का काल वैश्य काल था।

6. हमें सेठ भामाशाह के महान त्याग और बलिदान की अमरगाथा का ज्ञान होना चाहिए।

7. हमें राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व का ज्ञान होना चाहिए।

8. हमें स्वतंत्रता संग्राम के वैश्य महापुरुषों की जीवनियों का ज्ञान होना चाहिए।

9. हमें वैश्य कवि और लेखकों का ज्ञान होना चाहिए।

6. हमें अपनी जाति के लोगों को उत्प्रेरित करना चाहिए :

हमारे सभी वैश्य बन्धु अपने वैश्य बन्धु को आगे बढ़ाने में सहयोग करे। "अब टाँग खींचना बन्द करो, अब सहयोग करना प्रारम्भ करो।"

वैश्य उद्योगपति को चाहिए कि वे अपने उद्योगों में वैश्य जाति के लोगों को प्रोत्साहन दें।

वैश्य जाति के नेताओं को चाहिए, कि वे अपनी जाति के लोगों की हर प्रकार से सहायता करें तथा अपने लोगों को आगे बढ़ाने में सहयोग करें और अपनी जाति के नवयुवकों को रोजगार दिलाने में मदद करें।

7. हमें अपनी ताकत का अहसास कराना चाहिए :

हमारी जाति के नेताओं को जरा इस पर भी विचार करना चाहिए कि :-

(क) यदि चौधरी चरण सिंह कांग्रेस में ही रहते तो क्या देश के प्रधानमंत्री बन सकते थे। अर्थात् जब उन्होंने

अपने जाट भाईयों को संगठित करके अपनी ताकत का अहसास कराया तभी वे मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बने।

(ख) यदि बहिन मायावती कांग्रेस में होती, तो क्या वे उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बन सकती थीं। अर्थात् जब उन्होंने दलितों को संगठित करके अपनी ताकत का अहसास कराया तभी वे मुख्यमंत्री बनी।

(ग) यदि श्री मुलायम सिंह यादव या लालू प्रसाद यादव अपनी यादव जाति को संगठित नहीं करते, तो क्या वे मुख्यमंत्री बन सकते थे। अर्थात् अपनी जाति को संगठित करके, अपनी ताकत का अहसास कराना अब जरूरी हो गया है।

इस प्रकार के अन्य बहुत से उदाहरण हैं, जो यहाँ पर दिये जा सकते हैं, परन्तु कहने का तात्पर्य केवल इतना ही है, कि हमें अपनी जाति को संगठित करके अपनी ताकत का अहसास कराना चाहिए।

8. हमें अपनी राष्ट्रीय पार्टी बनानी चाहिए :

हमें अपनी जाति को संगठित करके अपनी राष्ट्रीय पार्टी बनानी चाहिए। जिस प्रकार प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय-पटल पर अनेकानेक नेता, अपनी जातियों को संगठित करके मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री पद तक पहुँचे हैं, उसी प्रकार हमें भी करना चाहिए। निम्न उदाहरण देखिये-

(क) चौधरी चरणसिंह अपनी जाति को संगठित क
प्रधानमंत्री की कुर्सी पर पहुँचे।

pdfelement
Remove Watermark Now

(ख) बहिन मायावती जी दलितों को सुसंगठित करके तथा अपनी नई पार्टी बनाकर उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुँची।

(ग) श्री मुलायम सिंह यादव जी यादवों को संगठित करके अपनी नई पार्टी बनाकर उ0प्र0 में मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुँचे।

(घ) श्री लालू प्रसाद यादव जी बिहार में यादवों को संगठित करके मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुँचे।

(ड़) बिहार में श्री नितीश कुमार कुर्मियों को संगठित करके मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुँचे।

जरा सोचिए, कि यदि हमारी राष्ट्रीय पार्टी होगी तब क्या होगा–

(क) वीरप्पन जैसे लोग सत्ता को चुनौती नहीं दे पायेंगे।

(ख) आतंकवादी और अलगावादी पैदा ही नहीं होंगे।

(ग) देश में कहीं भी "गुण्डाराज" नहीं हो पायेगा।

(घ) अपहरण करने वालों की खैर नहीं होगी।

(ड़) चौरी, डकैती, लूट, हत्याएं नहीं होंगी।

(च) जो कार्य राष्ट्रहित में होगा, वही कार्य होगा। राष्ट्र विरोधी कोई कार्य नहीं होगा।

(छ) राष्ट्र विरोधी ताकतों को ध्वस्त कर दिया जायेगा।

(ज) बिजली 24 घण्टे मिलेगी।

(झ) सभी वस्तुएं प्रचुर मात्रा में मिलेंगी। किसी भी चीज की कोई कमी नहीं होगी।

(ण) टैक्स कम होंगे।

(त) व्यवस्था चुस्त-दुरूस्त होगी। लुंज-पुंज व्यवस्था कहीं नहीं होगी।

(थ) प्रशासनिक स्तर पर तुरन्त एवं सही निर्णय लिये जायेंगे जो राष्ट्र हित में होंगे।

(द) सर्वत्र सुख-शान्ति-समृद्धि होगी।

(ध) जिस प्रकार भारतीय इतिहास में 'गुप्तकाल' भारत का स्वर्णिम काल कहलाता है उसी प्रकार पुनः भारत में सर्वत्र सुख-शान्ति और समृद्धि का साम्राज्य होगा तथा भारतवर्ष में पुनः स्वर्णिम काल का सूत्रपात होगा।

अन्त में, मैं यह कहना चाहूँगा कि–

"जिनके मन में महानता, विचारों में उदारता, आचरण में पवित्रता तथा सोच में व्यापकता हो, वही वैश्य है और यही है वैश्य जाति की परिभाषा"

एवम्

समस्त वैश्य बन्धुओं का आवाहन मैं पुनः निम्न शब्दों साथ कर रहा हूँ–

pdfelement
Remove Watermark Now

हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों,
तुम्हारा इतिहास अमर है,
तुम्हारा उज्जवल चरित्र,
शाश्वत सत्यों की तरह,
आज भी ज्योर्तिवन्त हो रहा है;
तुम्हारा जीवन-दर्शन आज भी,
जगत को आलोकित कर रहा है;
उठो, जागो और बढ़ो,
तुम्हारे रक्त की एक-एक बूँद
तथा तुम्हारे जीवन का क्षण-प्रतिक्षण
इस महान राष्ट्र के लिए ही समर्पित रहेगा।
यही मेरा विश्वास है।

(अन्त में :-)

इस महान राष्ट्र को प्रणाम करते हुए,
यह ग्रन्थ यहीं समाप्त करता हूँ।

शान्ति स्वरूप गुप्त

♦ ♦ ♦

pdfelement
Remove Watermark Now

हमारे विशिष्ट सहयोगी

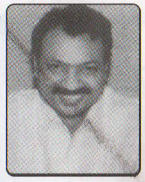

श्री अजय गुप्ता
(श्री वासु आटो मोबाईल्स)
सी-6, शास्त्री नगर,
मेरठ

श्री सन्दीप गोयल
(कपड़े वाले)
पुराना बाजार, हापुड़

श्री सत्य प्रकाश सिंघल
एम०-165 एम० पी० एन्क्लेव
शास्त्री नगर, गाजियाबाद।

श्रीमती ऊषा सिंघल
एम०-165
एम०पी० एन्क्लेव
शास्त्रीनगर गाजियाबाद

इ० हरीश चन्द सिंघल
मै० अनन्त कोरूगेटर्स
''रामान्चल'' गंगा नगर कालोनी
गूलर रोड, अलीगढ़
मो०:- 9927016000

श्रीमती कृष्णा सिंघल
मै० अनन्त कोरूगेटर्स
''रामान्चल'' गंगा नगर कालोनी
गूलर रोड, अलीगढ़
फोन:- 0571-25211820

श्री नरेन्द्र बन्सल
एन के पोलिमर्स
525, कीर्तन वाली गली
जी०टी० रोड, गाजियाबाद
फोन:- 0120-2733167
मो०:- 9312260325

श्रीमती मिथलेश बन्सल
524, कीर्तन वाली गली,
गाजियाबाद
फोन:- 0120-2733167

श्री अरविन्द गर्ग
(सी०ए०)
फ्लैट नं० 13, ब्लाक - ए
नवलखा कॉम्पलेक्स, स्नेह नगर
इन्दौर - 452001
मध्य प्रदेश
मो०:- 9830048313

श्रीमती सुधा गर्ग
फ्लैट नं० 13, ब्लाक - ए
नवलखा कॉम्पलेक्स, स्नेह नगर
इन्दौर - 45200
मध्य प्रदेश
फोन:- 0731-4

श्री दिनेश चन्द बन्सल
(मैसर्स प्रशान्त एण्टरप्रॉइजेज़)
कृष्णा नगर,
बुलन्दशहर 203001
मो०:- 9412227802

श्रीमती मधु
(मैसर्स प्रशान्त
कृष्णा नगर,
बुलन्दशहर 2030
फोन:- 05732-

Remove Watermark Now

वैश्य रत्न बाबू प्रेम शंकर गर्ग

(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

अखिल भारतीय वैश्य महासभा को समर्पित

" वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास "

श्री शान्ति स्वरूप गुप्त
द्वारा लिखित पुस्तक
के विमोचन के पावन अवसर पर

" हार्दिक बधाई "

मैसर्स : चित्रा प्रकाशन मेरठ

" वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास "

श्री शान्ति स्वरूप गुप्त
द्वारा लिखित पुस्तक
के विमोचन के पावन अवसर पर

" हार्दिक बधाई "

नेशनल हैण्डलूम्स इन्डस्ट्रीज

85, मोहकमपुर इन्ड० एरिया फेज ॥
दिल्ली रोड, मेरठ। मो० : 9358400980

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री अजय रस्तोगी
चित्रा प्रकाशन
निवास साकेत, मेरठ

श्रीमती मधु रस्तोगी
धर्म पत्नी श्री अजय रस्तौगी
चित्रा प्रकाशन
मेरठ

श्री प्रदीप सिंघल
डी-ब्लाक,
शास्त्री नगर, मेरठ

श्री गौरव सिंघल
डी-ब्लाक
शास्त्री नगर
मेरठ

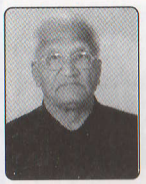

श्री जय कृष्ण माहेश्वरी
डी-ब्लाक
शास्त्री नगर, मेरठ

श्रीमती रूकमणी माहेश्वरी
डी-ब्लाक
शास्त्री नगर
मेरठ

श्री पवन गोयल
(ए०सी०वाले)
51, मधुबन कालोनी
मेरठ रोड, हापुड़
मो.:- 9897200492

श्रीमती रेखा गोयल
51 मधुबन कालोनी मेरठ
रोड, हापुड़
मो.:- 9897200491

श्रीमती लक्ष्मी गोयल
51, मधुबन कालोनी
मेरठ रोड, हापुड़

श्री मोहित गोयल
(ए०सी०वाले)
51 मधुबन काल
हापुड़
मो.:' 9897200

श्री सुशील कुमार अग्रवाल
कोठी गेट
हापुड़

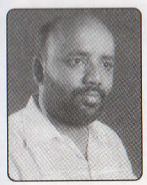

श्री परितोष
पैट्रोल पम्प वाले
हापुड़

Remove Watermark Now

Shiv K. Goel
Sanjeev Goel

Shiv K. Goel

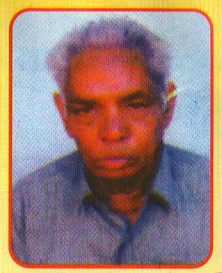

Seth Raghunandan Prasad

Sanjeev Goel

NANDAN FARMS

- parties
- functions
- celebrations

G.T. Road, Dadri, Gautam Budh Nagar (U.P.)
Ph: 0120-2055812, 09412224064, 094122224090

मूलचन्द अग्रवाल
उपसचिव
उ0प्र0 पैट्रोल डीलर्स एसोसियेशन
Ph.: 05732-229073 (O)
229389 (R)

INDIAN OIL

गोपाल सर्विस स्टेशन

डीलरः
इण्डियन ऑयल कारपोरेशन लि0

गुलावठी–245408 (बुलन्दशहर)

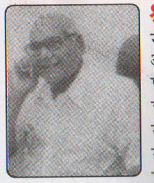

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री गोविन्दलाल अग्रवाल
सचिव
आर०वी०के०इन० इन्जिनियरिंग कालिज, नागपुर
पूर्व अध्यक्ष नाग विदर्भा
चैम्बर आफ कामर्स
रामदेव टेकडी, कटौल रोड़,
गीतिखादान, नागपुर, महाराष्ट्र
फोन:-91-712-2583236

श्री नानक चन्द मित्तल
ज्वाला भवन
बी-133, शास्त्रीनगर
मेरठ ।
मो०:- 9412203400

इं० जय भवगवान गुप्ता
मोहन गैस एजेन्सी
जे०डी० हाऊस, गढ़ रोड,
मेरठ
फोन:- 0121-2763391
मो०:- 9897485656

श्रीमती मंजु गुप्ता
25, कल्याण नगर
मेरठ
फोन:- 0121-2760211

श्री मधुसूदन अग्रवाल
रूचिर भवन, नई बस्ती,
बिजनौर
मो० 9837116374

श्री प्रमोद कुमार गुप्ता
469, न्यू फूलबाग कालोनी,
मेरठ
फोन:- 0121-2764518

श्री अरविन्द गुप्ता
E-227 शास्त्रीनगर,
मेरठ
फोन:-0121-2760005
0121-2423801

श्री अरूण जिन्दल
ब्रांच मैनेजर
बजाज कैपीटल
शिवपुरी हापुड़

इं० सत्येन्द कुमार गर्ग
79/8, शास्त्रीनगर,
मेरठ
मो०:- 9412071393

श्रीमती मधु बाला गर्ग
79/8, शास्त्रीनगर,
मेरठ
फोन:- 0121-2770996

श्री सुरेश चन्द गुप्ता
(किताब वाले)
ओम पेपर मार्ट, मधु मार्किट,
बुढ़ाना गेट, मेरठ

श्री धर्मपाल गुप्ता
जी-39, शास्त्रीनगर
मेरठ।
फोन:- 0121-2764845

Remove Watermark Now

With best compliments from :

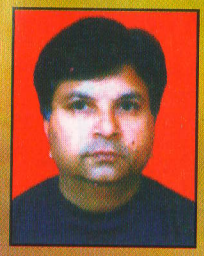

Dinesh Chand Goyal
M. D.

Mohit Goyal
Director

BULANDSHAHR ROLLER FLOUR MILLS (P) LTD.

Mnafacturer of : Brij Brand Aata, Maida, Suji & Bran

Works : Siyana Road, Bulandshahr-203 001 (U.P.)
H.O. : 22, Mandi Fateh Ganj, Bulandshahr-203 001(U.P.)
Tel.: (05732) 286412 (Off.) 286831 (Res.), 287813 (Mill)

हमारे विशिष्ट सहयोगी

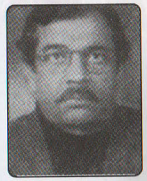

श्री राजीव मोहन गुप्ता
संरक्षक वैश्य समाज, गाजियाबाद
निवास:- 11ए, 181 नेहरूनगर
गाजियाबाद
फोन:- 0120-2700336 (O)
0120-2792195

श्री महेश चन्द्र
(हापुड़ वाले)
मुख्य संरक्षक वैश्य समाज
A-72, लोहिया नगर गाजियाबाद
फोन:- 0120-3943750

श्री आनन्द प्रकाश
संरक्षक वैश्य समाज
आर 2183, राजनगर,
गाजियाबाद
मो०:- 9810866632

श्री राम किशोर अग्रवाल
मुख्य संरक्षक, वैश्य समाज
भगवान गंज मण्डी, मोदीनगर
जि० गाजियाबाद
फोन:- 01232-242220
मो० :- 9412219803

श्री तारा चन्द बन्सल
महामन्त्री वैश्य समाज
525, कीर्तन वाली गली,
गाजियाबाद
फोन:- 0120-2852221

श्री भारत भूषण कंसल
संयोजक एवं वरिष्ठ उपाधयक्ष, वैश्य समाज
अनाज मण्डी, अपोजिट वैश्य धर्मशाला
गाजियाबाद
मो०:- 9810637412

श्री नानक चन्द
(शीरे वाले)
संरक्षक वैश्य समाज
264, बी०एफ० कम्पाउन्ड
रेलवे रोड, गाजियाबाद
मो०:- 9350814998

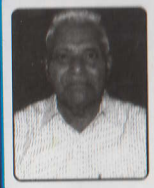

मेजर शिवचरण लाल गर्ग
B-125, शास्त्री नगर
मेरठ
फोन:- 0121-2760546

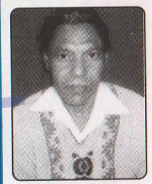

श्री राकेश कुमार बन्सल
336/3, नेहरू नगर,
मेरठ
मो.:- 9759518243

श्रीमती कृष्णा बन्सल
336/3, नेहरू नगर,
मेरठ

श्री लाल चन्द गर्ग
संरक्षक वैश्य समाज
उपाध्यक्ष रोटरी क्लब
122, अपना बाजार
सिकन्द्राबाद

श्री आकाश बन
336/3, नेहरू नगर,
मेरठ

Remove Watermark Now

With Best Compliments From

SATHE ENGINEERING CO. PVT. LTD.

E-198/199, Kavi Nagar Industrial Area, Ghaziabad-201002
Phone : 0120-2700252, 2701256 Fax : 2700316
E-mail sathe@del3.vsnl.net.in

EQUIPMENT RANGE

- CONTINUOUS FLUIDSED BED CRYSTALLISER COLUMN DRYER FOR POLYESTER CHIPS
- T.E.G. BATH
- FLUIDSED BED PACK CLEANING SYSTEM
- DIPHYL BOILER
- SILOS, HOPPERS, BLENDERS FOR POLYESTER CHIPS
- YARN CHIMNEY/INTERFLOOR TUBE
- COLUMNS
- REACTORS
- PRESSURE VESSEL
- HEAT EXCHANGERS
- HYDROGEN BULLETS
- LPG/PROPANE BULLETS AND ROAD TANKERS
- INSTALLATION OF BULLETS
- CRYOGENIC VESSELS (LIQUID OXYGEN TANKS)
- HSD/LDO/FO AND OTHER STORAGE TANKS

CONTINUOUS FLUIDISED BED CRYSTLLISER COLUMN DRYER FOR POLYESTER CHIPS UPTO 100 T.P.D.

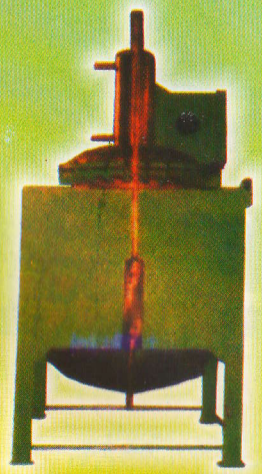

T.E.G. BATH SINGLE/DOUBLE POT

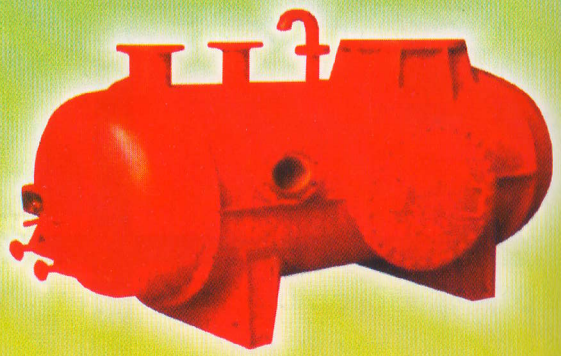

PRESSURE VESSEL AS PER ASME SEC.-VIII DIV.-1

हमारे विशिष्ट सहयोगी

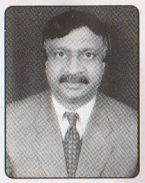

श्री अश्वनी गुप्ता
C-6, शास्त्री नगर,
मेरठ

श्री योगेन्द्र कुमार गुप्ता
नेशनल हैण्डलूम इन्डस्ट्रीज
85 मोहकमपुर इन्ड॰ एरिया
फेज-II, दिल्ली रोड
मेरठ

श्री पवन गोयल
कृष्णापुरी, मेरठ
फोन:- 0121-2761431

श्री श्याम मोहन गुप्ता
रति एन्टरप्राइजेज, लाल कुर्ती
पैठ एरिया, मेरठ
फोन:' 0121-2666783

श्री सुशील राजवंशी
आई-431, शास्त्रीनगर,
मेरठ
फोन:- 0121-2761431

श्री अजय गुप्ता
736/2, शास्त्री नगर, मेरठ
फोन:- 0121-2602765

श्री नन्दलाल गुप्ता
आर॰ एन॰ टायर्स
दिल्ली रोड, मेरठ

श्री मुकुल सिंघल
फूलबाग कालोनी,
मेरठ।

श्री सर्वेश गुप्ता
पी॰ डब्लू॰ डी॰ कम्पाउन्ड
मेरठ ।

श्री गजेन्द्र पाल गुप्ता
पी॰ डब्लू॰ डी॰ कम्पा
मेरठ ।

डा॰ नवीन अग्रवाल
क्लीनिक-आम्रपाली के सामने
गढ़ रोड, मेरठ

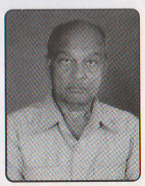

श्री उदयवीर प्र
626/2, जागृति विहार
मेरठ
फोन:- 0121-26013

Remove Watermark Now

With Best Compliments From

The Name You can Trust

SATLENE

POLYPROPYLENE CRIMP YARN

in

130/L.T., 120/2, 120,/1
11/1, 65/1 210/1

SATLENE FDY

FDY 210, 330, 400
600, 840, 1000, 1200,
Flat Intermingled &
Twisted

SATHE SYNTHETICS

D-27, Kavi Nagar Indl. Area, Ghaziabad-201 001(U.P.)
Ph. : 0120-2700336, 2700386 Fax : 0120-2700316

हमारे विशिष्ट सहयोगी

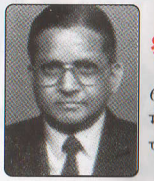

श्री आनन्द प्रकाश अग्रवाल
(मेरठ रत्न)
699/2, शास्त्री नगर
मेरठ
फोन:- 0121-2760757

श्री बालक राम गर्ग
294, ब्रह्मपुरी
मेरठ
फोन:-0121-2516290

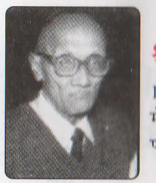

श्री जे० पी० गोयल
107/11, शास्त्रीनगर,
मेरठ।
फोन:-0121-2603323

श्री बृजमोहन माहेश्वरी
310, ब्रह्मपुरी
मेरठ
फोन:- 0121-2518803

श्री अशोक कुमार मित्तल
506, न्यू फूलबाग कालोनी
मेरठ।
मो० :- 9837046837

श्री महेन्द्र कुमार गोयल
आई-633, शास्त्रीनगर
मेरठ।
फोन:-0121-2518803

श्री रजत गुप्ता
मुकुन्दी देवी धर्मशाला,
मेरठ।
फोन:-0121-2521624

श्री प्रवीन गुप्ता
एस-के० पैकेजिंग, जली वाड़ा
मेरठ।
मो०:-9837088444

श्री प्रदुम्न कुमार
लक्ष्मी आटो ट्रेडर्स
तुलसी मार्केट काला आम
बुलन्दशहर
मो.:-9412857408

श्रीमती अंजलि अग्रवाल
202, प्रेम नगर
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-2

श्री सुशील गर्ग
66, बाजार पेड़ामल
मेरठ
फोन:-0121-2522411

श्री कपिल
नेशनल हैण्डलूम
85 मोहकमपुर इन
फेज -II, दिल्ली रो
मेरठ

Remove Watermark Now

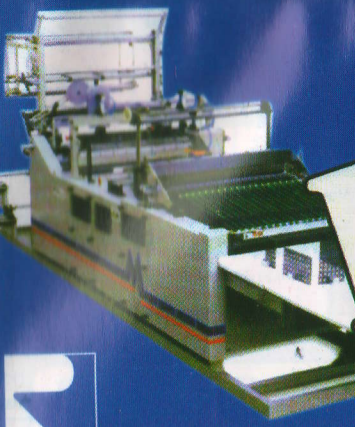

BEST PACKAGING

BEST
Since 1980

A Noida Based Leading Company
Manufacturing of Poly Bags

- Polythene
- P.P.
- Bags-Sheets
- Side Silling & Flap Bags etc.
- Side Seal-Tape insert-on
- LD
- H.M.
- Tubes

Shree Ram Avtar Gupta
A Founder of
Best Packaging
09-07-1937 to 30-01-2005

Dear Customer

- At the outset, we introduce ourselves as the leading manufacturer of Polythene Bags in Noida.
- The main highlights of our setup are.
- We are the first in Noida to install **Fully automatic computerized Hi-speed machine** for most accurate and quality polythene manufacturing.
- We source our raw material direct from manufacturer / distributor to ensure Best Quality food grade polybags. Our polybags are 100% safe for packing eatable products.
- We assure Best Quality polybags at reasonable price and **prompt delivery**.
- We are manufacturing polybags for all type of industries since last 29 years.
- We wish to offer our products to your esteemed organization.

B-28-29, Sector-6, NOIDA-201 301
Contact : Sunil Gupta / 9891402241

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री शिवनन्दन गुप्ता
नेशनल बुक डिपो,
नगर पालिका के सामने
बुलन्दशहर
फोन नं०:-05732-234430

डा० हेम लता गुप्ता
एम०डी०एस०सी०
नेशनल बुक डिपो
नगर पालिका के सामने
बुलन्दशहर
फोन नं० :-05732-234430

श्री ओम प्रकाश जालान
जालान इण्डस्ट्रीज,
दाल मण्डी
बुलन्दशहर
मो०:-099358010489

श्री शिवाजी गर्ग
अग्रसेन मार्ग
रूदौली, जिला फैजाबाद
मो.:- 09935789709

श्री प्रदीप रस्तौगी
रस्तोगी गुक मार्ट
अन्सारी रोड, चौराहा
बुलन्दशहर
फोन:-05732-252461

श्रीमती शोभा रस्तौगी
3, सुन्दर पुरी,
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-282499

श्रीमती रूची रस्तौगी
3, सुन्दर पुरी, बुलन्दशहर
मो0 9927200668

प्रसून रस्तौगी
रस्तौगी बुक मार्ट
अन्सारी रोड, चौराहा बुलन्दशहर
मो0 9837053462

श्री संजीव बन्सल
(डायरेक्टर)
एडवांस कम्पूटर एजूकेशन
अधिकृत-अध्ययन केन्द्र
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक,
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, मेरठ
डी०ए०वी० कालिज के सामने
बुलन्दशहर

श्रीमती अंशु बन्सल
एडवान्स कम्प्यूटर एजुकेशन
डी०ए०वी० कालिज
बुलन्दशहर
मो०:-941261177

श्री सुनील कुमार गुप्ता
मन्त्री वैश्य समाज
पी-85/11
नौएडा
मो०:- 9891402241

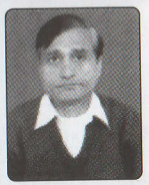

श्री मूल चन्द
हिमालय पेपर्स
बुढ़ाना गेट, जत्ती
मेरठ
फोन:- 0121-24
मो० :-98971858

Remove Watermark Now

आया नोवा का जमाना
हर सफर बने सुहाना

Reliance

Reliance Presents

RELSTAR
QUALITY LUBRICANTS

रेलस्टार अपनाओ, मुनाफा बढ़ाओ

HAMESHA EK KADAM AAGE

Sponsored by:
Authorised Distributors:
Enkay Polymers

नरेन्द्र बंसल
524, Kirtan Wali Gali, G.T. Road
Ghaziabad-201001 (U.P.) INDIA
Tel/Fax: 0120-2747817, 2749017, 273316678
Cell : 9312260325

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री किशन स्वरूप अग्रवाल
एडवोकेट (इन्कमटैक्स)
महिला समिति के सामने
मोती बाग, सिविल लाईन,
बुलन्दशहर

श्रीमती सुमन अग्रवाल
महिला समिति के सामने
मोती बाग, सिविल लाईन,
बुलन्दशहर

श्री आशीष अग्रवाल
एडवोकेट (इन्कमटैक्स)
महिला समिति के सामने
मोती बाग, सिविल लाईन,
बुलन्दशहर

श्रीमती रितु अग्रवाल
चार्टर्ड एकाउन्टैन्ट
महिला समिति के सामने
मोती बाग, सिविल लाईन,
बुलन्दशहर

डॉ० एन०के० गोयल
एम०बी०बी०एस०, एम०डी०
नगर पालिका के सामने
बुलन्दशहर
मो.:-9412744028

श्रीमती रेखा गोयल
नगर पालिका के
सामने, बुलन्दशहर

डॉ० पुनीत गर्ग
बी०एच०एम०एस०
एम०डी०
नगर पालिका के सामने
बुलन्दशहर

डॉ० दीप्ती गर्ग
बी०डी०एस०
नगर पालिका के सामने
बुलन्दशहर

श्री विजेन्द्र कुमार गर्ग
हापुड़
मो.:-9837023692

श्री पदम चन्द गुप्ता
हापुड़
मो.:-989734500

श्री सुशील कुमार गोयल
गोयल रेफ्रीजरेशन
प्रा० लि० (नगर पालिका के सामने)
बुलन्दशहर
फोन:-05732-257041

श्री चन्द्र भा वाल
एडवोकेट इन्कमटै
मोती बाग, बुलन्द
मो.:- 9411409

Remove Watermark Now

SATHE GROUP OF INDUSTRIES

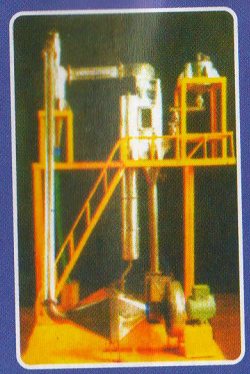

Sathe Engineering Co. Pvt. Ltd.
Mfg. of PP Yarn

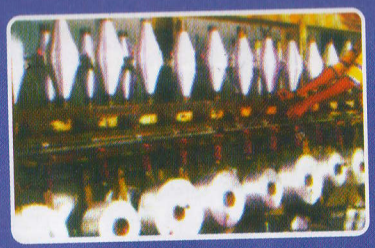

Sathe Petrotex Pvt. Ltd.
Mfg. of PP Yarn &
Texturising Yarn

Advance Institute of Management
An Institute of Professional Education
(A non profitable boby)

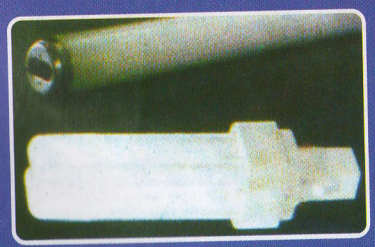

Sathe Lighting Pvt. Ltd.
Mfg. of Flourescent
Tube & C.F.L.

Mangalam Sewa Aamiti
Running a
Charitable Hospital

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री रविकान्त
प्रो॰ होटल कलश
काला आम
बुलन्दशहर
फोन नं:-05732-280223

श्रीमती आश्री
सायबर कैफे, काला आम
बुलन्दशहर।

श्री बृजेश गर्ग
सम्पादक
मैडीकल दर्पण समाचार पत्र
वी॰एन॰ मेडीकल
काम्पलैक्स, बुलन्दशहर
मो:-09319476552

श्रीमती नीरू गर्ग
बी॰एन॰ मैडीकल काम्पलैक्स
निकट कोतवाली
बुलन्दशहर
फोन :- 05732-257841

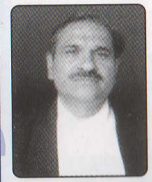

श्री बिशन कुमार
एडवोकेट
प्रेम नगर
बुलन्दशहर
मो:-09412230317

श्रीमती सन्तोष कुमारी
प्रेमनगर
बुलन्दशहर
फोन:-05732-252288

श्री ए॰के॰ गर्ग
फूलबाग कालोनी
मेरठ
फोन:-0121-2762737
मो॰:-9411266518

श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता
657, ब्रहमपुरी
मेरठ
फोन:-0121-2525093
मो॰:-9897203818

श्री दिनेश कुमार अग्रवाल
अग्रवाल गार्नीचर वर्क्स
कचहरी रोड़
बुलन्दशहर
मो:- 9412127351

श्रीमती शैल अग्रवाल
कचहरी रोड
बुलन्दशहर
फोन:-05732-2

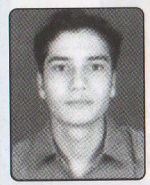

इं॰ ईशान गर्ग
एच-49, गामा II
ग्रेटर नौएडा।

कु॰ तन्वी
इन्जिनियरिंग छा
एमेटी यूनीवर्सिटी

Remove Watermark Now

ONIDA

experience the desire

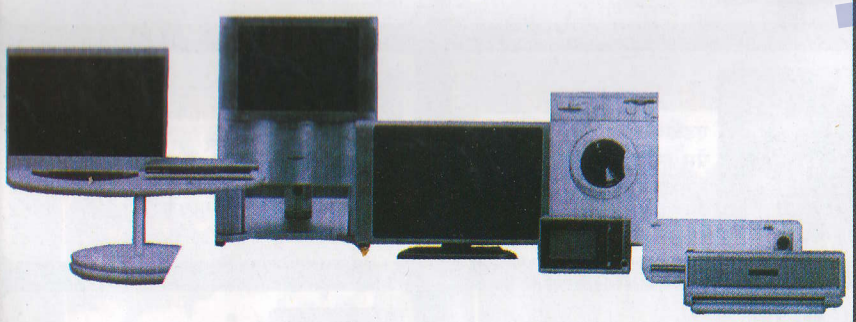

AUTHORISED DISTRIBUTOR :

मोहित मुस्कान
Mohit Muskan

Civil Lines Bulandshahr (U.P.) Ph. 05732 - 326999, 9358811999

Suhil Kumar
Founder

Smt. Padmini Rai
Chair Person

हमारे विशिष्ट सहयोगी

जितेन्द्र प्रसाद गुप्ता
एडवोकेट
डिप्टी गंज, बुलन्दशहर
मो.:- 9837170877

श्रीमती कमलेश गुप्ता
देवी निवास
डिप्टी गंज
बुलन्दशहर
फोन:-05732-286798

श्री गौर किशोर खेतान
मै॰ विजय पैट्रोल पम्प
काली नदी रोड़
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-287051
मो॰:- 09837029701

श्री शिव कुमार गोयल
सौरभ इण्डेन गैस गैस मार्किट
पहासू, जि॰ बुलन्दशहर
प्रान्तीय संगठन मन्त्री
वैश्य महासभा
फोन:- 05733-220028 (R)
220981 (O)
मो॰:- 9719175130

दिगम्बर सिंह चौहान
प्रधान आर्य समाज,
शास्त्री नगर, मेरठ।

श्री एम॰सी॰ गुप्ता
सेवा निवृन्त प्रबन्धक
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया
नगर पालिका के सामने
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-255093
मो॰:- 0941228011

इ॰ अशोक कुमार गुप्ता
(F.I.I.S.A.)
सर्वेयर
10/693, आदर्श नगर कालौनी
बाई पास रोड
बुलन्दशहर
मो॰:- 09837091857

श्रीमती रेनू गुप्ता
आदर्श नगर कालौनी
बुलन्दशहर
फोन:-05732-259487

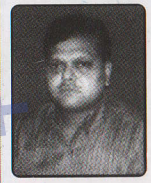

श्री संजीव कुमार मित्तल
अग्रसेन आफसैट प्रैस
राजे बाबू रोड़
बुलन्दशहर

श्रीमती लीना मित्तल
अग्रसेन आफसैट प्रैस
राजे बाबू रोड़
बुलन्दशहर
फोन:-05732-2
मो॰:- 0931945

श्री राजीव बन्सल
एडवोकेट
270 शेख सराय, बुलन्दशहर
फोन:-05732-252406

श्रीमती पुष्पा
270 शेख सराय
बुलन्दशहर
मो.:-0941265

Remove Watermark Now

Information Brochure ››

Hi - Tech

Institute of Engineering & Technology

(Approved by AICTE, New Delhi and affiliated to U.P. Technical University, Lucknow)

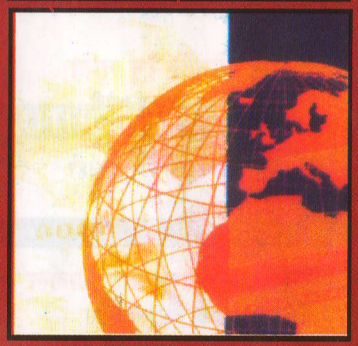

B.Tech.

- Electronics & Communication Engg.
- Computer Science & Engg.
- Information Technology
- Mechanical Engg.

A Unit of Anand Educational Society (AES)

"Hi-Tech Group of Institutions"

Campus:

766, Delhi-Hapur Bye-Pass, 26th Mile Stone,
NH-24, Ghaziabad (U.P.) 201 002
Ph: 0120-2765031, 3226871, M: 9818697091
E-mail:director@hiet.org

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री लोकेश कुमार अग्रवाल
अग्रवाल प्रिन्टर्स
मण्डी श्याम नगर - 203202
गौतमबुद्ध नगर,
फोन:- 0120-256507
मो.:- 9412345919

श्री दिनेश कुमार गर्ग
अध्यक्ष, टिम्बर एवं
बिल्डिंग मैटेरियल, व्यापार संघ,
अयोध्या, गंज दादरी,
जि॰गौतमबुद्ध नगर
फोन:-0120-2665322
मो॰:- 9810539615

श्री मोहित अग्रवाल
10, सुन्दर पुरी
बुलन्दशहर

श्री रोहित अग्रवाल
10, सुन्दर पुरी
बुलन्दशहर

श्री ऋषि कुमार सर्राफ
अध्यक्ष
उ॰प्र॰ वैश्य अग्रवाल महासभा
मैन बाजार जेवर
जि॰ गौतमबुद्ध नगर
फोन:-05738-272341
मो॰:-9412584501

श्री राकेश कुमार गर्ग
एडवोकेट (आयकर)
1044, कायस्थवाड़ा
सिकन्द्राबाद
फोन:- 02735-222076
269503

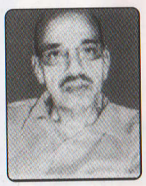

श्री अनिल कुमार गर्ग
चेयरमैन, एलयो
मनाली हादड्रो पावर प्रा॰लि॰ (हि॰प्र॰)
सचिव डी॰ए॰वी॰ (पी.जी) कालिज
बुलन्दशहर
मो॰:- 91-983704276

श्री इ० अंकुर गर्ग
मैनेजिंग पाटनर
रामा इन्जि वर्क्स
रेलवे रोड, बुलन्दशहर
फोन:- 915732-259363 (O)
915732-259516 (R)

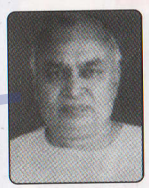

श्री राजेन्द्र कुमार गोयल
प्रो॰ - आँचल मैरिज होम
विनायक होटल,
अलीगढ़ रोड़ खुर्जा
मो॰:-9897029298

श्रीमती उषा गोयल
गोयल बिल्डिंग
नगर पालिका के सा
बुलन्दशहर
फोन:-05732-2546

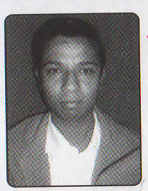

नितिन कुमार गर्ग
अयोध्यागंज, दादरी
मो0 9810539685

श्री कैलाश चन्द्र ाल
(साबुन वाले)
उत्तर प्रदेश उपाध्यक्ष पार
संगठन (रजिस्टर्ड)
मै॰ हितेश सेवा संस्था
हीरापुर, स्याना रोड,
फोन:- 05732-2507
2507
मो॰ :- 0941265740

Remove Watermark Now

शुभकमनाओं सहित :-

स्वच्छ जल ही जीवन है

ARJUN

चापाकल के लिऐ सर्वोत्तम सिलैन्डर

Dinesh Chand Aggarwal
Prop.
(Ex. Partner Ajay Engg. Works)

Smt. Madhu Bansal
Director

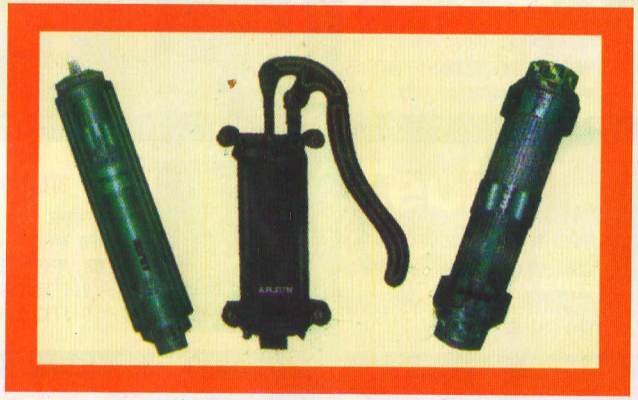

पंजाब के कुशल
कारीगरों द्वारा निर्मित

ASPER
ISI

BEST QUALITY CYLINDERS
MADE IN INDIA

Prashant Enterprises

Mfrs. of :- All kinds of Hand Pump Parts.
India Mark-II Cylinder & Brass Liner.

Krishna Nagar, Bulandshahr -203001 (U.P)
Ph. 05732-255655 (O), Mob, 9412227802

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री प्रदीप वैश्य
महामन्त्री
प्रादेशिक वैश्य मिलन समिति (रजि०
ए-78, गान्धी नगर
मुरादाबाद
फोन नं:-0591-2497921

श्री अरविन्द गुप्ता
प्रादेशिक वैश्य मिलन सकमति (रजि०)
अरविन्द मेडिकल स्टोर गंज गुरह
मुरादाबाद
फोन:- 0591-2423683

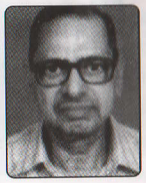

ई० रमा शंकर गर्ग
बी-5/65, सैक्टर 4,
रोहणी, नई दिल्ली-85
फोन :-011-27043265
27044703

श्री गौरव गर्ग
एडवोकेट
तीस हजारी कोर्ट
बी-5/65, सैक्टर 4,
रोहणी, नई दिल्ली-85
फोन :- 011-27043265
27044703

श्री पी० के० गुप्ता
सर्वोदय कालोनी, मेरठ
मो0 9837042647

श्रीमती सरिता गुप्ता
1296/3 शास्त्री नगर, मेरठ

श्री अजय कुमार अग्रवाल
आर्य नगर, हापुड़

श्री मूल चन्द्र अग्रवाल
मन्त्री उ०प्र०
पैट्रोल पम्प डीलर्स एसो०
अध्यक्ष वैश्य महासभा
गोपाल पैट्रोल पम्प
हापुड़ रोड, गुलावठी
फोन:- 05732-229073
नि० 229389

श्री जितेन्द्र अग्रवाल
कैलाश डेयरी
सैक्टर-2 शास्त्री नगर, मेरठ

श्रीमती लक्ष्मी अग्रवाल
पी-4, संजय नगर,
सै.- 23
गाजियाबाद
फोन:-0120-278

श्री दिनेश चन्द गोयल
एम० डी०,
बुलन्दशहर रोलर फ्लोर मिल प्रा0लि0
स्याना रोड़, बुलन्दाशहर
फोन:- 05732-286412

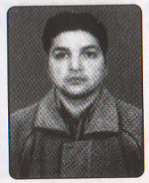

श्री मोहित ग
डायरैक्टर
मै० रामजीलाल र
22, फतहगंज, बु
फोन:- 05732-2

Remove Watermark Now

With Best Compliments from:

Sanjay Gupta

adhunik® Home Fits

The Biggest Show-room of Aligarh)

Having

Exclusive Range of Fancy Brass Door Fittings

(Wholesaler and Retailer)

- W Decorative Curtain Pipe Brackets
- W Fancy Door Handles
- W Aldrops
- W Motrice Lock Handles
- W Bathroom Sets
- W Brass Railing
- W Hinges & Tower Bolts
- W All kinds of Door Fitting locks

(All Items Available in Different Finishes-
Lacquered, Gold Silver, Gold-matt antique.)

7/142, Subhash Road, Aligarh

phone: 0571-2407589, Mob.: 9837058823, 9412732267

Seemant Jay *Vihrant Jay*

हमारे विशिष्ट सहयोगी

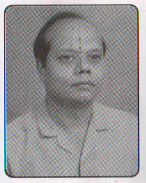

डा० सुरेश चन्द गर्ग
दवाखाना हकीम मुकुट लाल
चौक बाजार, बुलन्दशहर
निवास - निर्मल शरण्य
अशेक विहार, बुलन्दशहर
मो.:-9837305640

श्रीमती नीरज गर्ग
निवास - निर्मल शरण्य
अशोक विहार
प्रदर्शनी ग्राउण्ड सामने
बुलन्दशहर
मो.:-9897331165

डा० अमोल गर्ग
बी०ए०एम०एस०, पी०जी०पी०ए०
गर्ग आयुर्वेदिक पंचकर्म
क्लीनिक, चौक बाजार,
बुलन्दशहर
मो.:-9411835203

डॉ० शानु गर्ग
बुलन्दाशहर
मो.:-9219599778

श्री अशोक कुमार गोयल
ऐडवोकेट/पत्रकार/लोकतन्त्र सैनानी
प्रबन्धक-गौरीशंकर
कन्या महाविद्यालय, बुलन्दशहर
मो.:-941228117

श्रीमती शशि गोयल
3/2, डी०एम० कालिज रोड,
बुलन्दशहर
फोन:-05732-282213

श्री विश्वनाथ केजरीवाल
केजरीवाल मैटल इन्डस्ट्रीज
दाल मण्डी
बुलन्दशहर
फोन:-05732-282245

श्री आशीष केजरीवाल
दाल मण्डी
बुलन्दशहर
मो.:-09358010160

श्री विमल कुमार मित्तल
होटल नटराज
काला आम बुलन्दशहर
मो.:- 9837305559

श्रीमती नीरा मित्तल
होटल ड्रीम पैलेस
काला आम बुलन्द
फोन:-05732-233

राजेन्द्र कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ अभिकर्ता
Z.M./C.M.Club, LIC
निवास: 66, लक्ष्मी नगर, नवाब
छतरी कम्पाउण्ड, बु० शहर
मो0 9410434554

श्रीमती राधा अ
61, लक्ष्मी नगर, बु र।
मो0 9410434554

Remove Watermark Now

With Best Compliments from:

S.T.D Code :05732
(O) : 259326
(R) : 235897
(M) : 9837088924

ER. ARUN KUMAR GARG
B.E. (Electrical)

SIC

SARVOCH (INDIA) CORPORATION

MFGRS OF:

- TRANSFORMERS & ISOLATORS

BANKERS
INDIAN OVERSEAS BANK
BULANDHAHR

RAILWAY ROAD
BULANDSHAHR
203001-(U.P.) INDIA

हमारे विशिष्ट सहयोगी

डॉ० एस०के० गोयल
एम०बी०बी०एस०, एम०डी०
डी०एम० (कार्डियोलोजिस्ट)
"शान्ति दीप" हार्ट एण्ड
लंग्ज इन्स्टीट्यूट
दिल्ली रोड, बुलन्दशहर
फोन:-05732-231122

श्रीमती नीता गोयल
"शान्ति दीप" हार्ट एण्ड
लंग्ज इन्सटीट्यूट
दिल्ली रोड, बुलन्दशहर
फोन:-05732-253777

डॉ० नीरज सिंघल
एम०बी०बी०एस०, एम०एस०
हरीश हॉस्पिटल,
कालाआम
बुलन्दशहर
फोन:-05732-282025

श्रीमती पूनम सिंघल
एम०एस०सी० (गोल्ड मैडलिस्ट)
हरीश हास्पिटल
काला आम
बुलन्दशहर
फोन:-05732-283660

डॉ० पंकज अग्रवाल
एम०एस०
संजीवनी हॉस्पिटल
काला आम, बुलन्दशहर
13, गान्धी वाल निकेतन,
मार्केट काला आम, बुलन्दशहर
फोन:-05732-257615 (R)
05732-254650 (O)

डॉ० प्रेरणा अग्रवाल
एम०बी०बी०एस०
डी०एम०आर०डी० (गोल्ड मैडलिस्ट)
संजीवनी हॉस्पिटल,
काला आम,
बुलन्दशहर
फोन:-05732-257615

डॉ० अरूण कुमार गर्ग
एम० बी० बी० एस
बर्नी कम्पाउन्ड, प्रेम नगर,
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-255781

श्रीमती आभा गर्ग
बर्नी कम्पाउन्ड, प्रेम नगर
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-254256

डॉ० राकेश मित्तल
एम० बी० बी० एस०, डी० सी० एच०
(शिशु रोग विशेषज्ञ)
मित्तल नर्सिंग होम
क्लीनिक - काला आम
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-231909, 28485

डॉ० जी० सी० गर्ग
पूर्व अध्यक्ष रोटरी क्लब
559, मोती बाग,
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-

डॉ० वीरेन्द्र गर्ग
बी० डी० एस०, डेन्टल सर्जन
लोकतन्त्र रक्षक सेनानी
क्लीनिक एवं निवास -
नगर पालिका के सामने
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-287593

श्रीमती बीन
प्रख्यात समाज
सवित्री सदन
नगर पालिका के
बुलन्दशहर
फोन:- 05732-

Remove Watermark Now

Krishna International School

DEDICATED TO EXCELLENCE

(10+2) Affiliated to C.B.S.E

Features at a Glance...

An ISO 9001:2000 Certified School

- Air conditioned class rooms.
- Well Settled Library and laboratories
- Teacher : Students ratio 1:20
- Theater type Auditorium.
- Pastoral and child friendly care.
- R.O. plant for drinking water.
- Transport with cellphone facility.
- Pantry facilities with fresh & nutritious foods.
- Games & Sports:
  Badminton, Billiards, Swimming, Basket Ball etc.

Krishna Nagar, Opp. Reliance Petrol Pump
5th Km. Delhi G.T. Road, Aligarh - 202001
Tel.: 0571- 2409955-56, 3201616,9837050000
e - mail: krishnaschools@yahoo.co.in
www.krishnaschools.net

City Office:
"Ramanchal" Goolar Road, Aligarh-202001
Tel.: 0571-2310920, 2320820

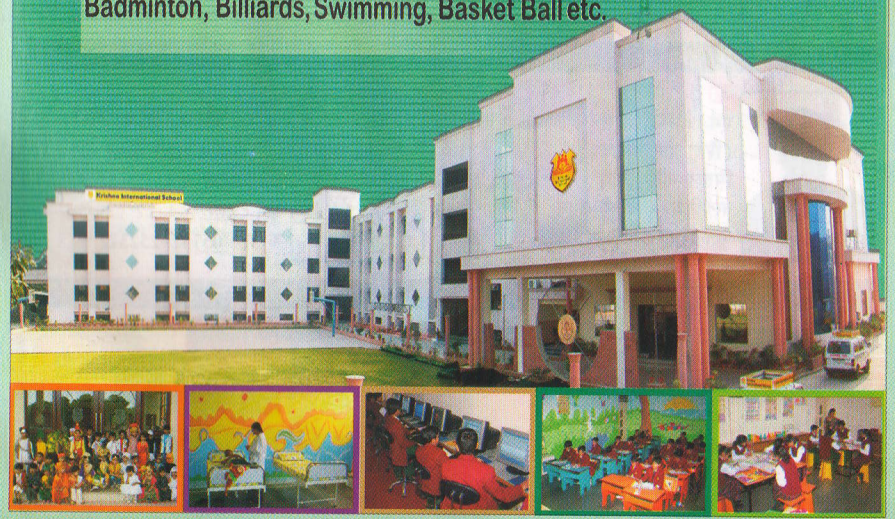

हमारे विशिष्ट सहयोगी

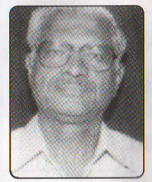

श्री सी०पी० गोयल
F-181, शास्त्री नगर,
मेरठ
फोन:-0121-2604575

श्री संजय गुप्ता
F-24, शास्त्री नगर,
मेरठ
फोन:-0121-2760138

श्री रजनीश गुप्ता
66, हनुमान पुरी, एस०के० रोड
मेरठ
फोन:-0121-2640026

श्रीमती सविता सोमानी
सदर, कबाड़ी बाजार,
मेरठ

श्रीमती गीता जिन्दल
58, आर्य नगर, सूरज कुण्ड रोड,
मेरठ
फोन:-0121-2664002

श्री कृष्ण कुमार गोयल
G-163, अल्फा-2, ग्रेटर नौएडा
मो0 09350053227

श्री उमेश चन्द जालान
जालान पैट्रोल पम्प, बुलन्शहर
मो0 9412227259

श्रीमती उर्मिला जालान
प्रेम नगर, बुलन्दशहर
फोन नं0 05732-286396

श्री नितिन कुमार जालान
जालान पैट्रोल पम्प, बुलन्दशहर
मो0 9997193888

श्रीमती श्वेता जालान
प्रेम नगर, बुलन्दशहर
मो0 9997193888

श्री अम्बरीश गुप्ता
ए०बी० पब्लिक स्कूल, शास्त्रीनगर,
मेरठ।
फोन:-0121-2765044

श्रीमती विमले ता
ए०बी० पब्लिक स्कू नगर,
मेरठ।
फोन:-0121-2765

Remove Watermark Now

वैश्य जाति के गौरव,

वैश्य रत्न बाबू प्रेम शंकर गर्ग

(राष्ट्रीय अध्यक्ष)

अखिल भरतीय वैश्य महासभा को समर्पित पुस्तक

" वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास "

श्री शान्ति स्वरूप गुप्त
द्वारा लिखित पुस्तक
के विमोचन के पावन अवसर पर

"हार्दिक बधाई"

सूर्य प्रकाश सिंह
एडवोकेट
अनूप पैलेस, डी0एम0 रोड,
बुलन्दशहर
फोनः- 05732 - 223721

महीपाल सिंह
एडवोकेट
पूर्व चेयरमैन, गन्ना समिति,
बुलन्दशहर
मो0:- 9412229660

अखिल भारतीय वैश्य महासभा को समर्पित पुस्तक

" वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास "

श्री शान्ति स्वरूप गुप्त
द्वारा लिखित पुस्तक
के विमोचन के पावन अवसर पर

"हार्दिक बधाई"

अनुराग सिंघल
अनुराग मैडिकल एजेन्सी
मैडिकल मार्केट, बुलन्दशहर।

गिरीश चन्द
एडवोकेट (आयकर)
कुचेसर हाऊस, बुलन्दशहर।

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री मनमोहन गोटे वाले
राष्ट्रीय महामन्त्री
अ० भा० वै० अग्रवाल महासंघ,
नया बाजार, दिल्ली

श्री राकेश प्रकाश अग्रवाल
रघुनन्दन ज्वैलर्स
आबू प्लाजा, मेरठ

श्री राज कुमार बंसल
168/1 गान्धी नगर,
मेरठ

श्री पी० के० गोयल
376/2 शास्त्री नगर,
मेरठ

श्री मनोज कुमार गुप्ता
शम्भू नगर, मेरठ
मो० 9412291722

श्री डॉ० पी० एन० सिंघल
आर० एव० इन्स्टीटयूट
सैक्टर-4 शास्त्री, नगर मेरठ

श्री शान्ति मोहन गर्ग
सैक्टर-3 शास्त्री नगर,
मेरठ

श्री मदनलाल गुप्ता
1296/3 शास्त्री नगर,
मेरठ

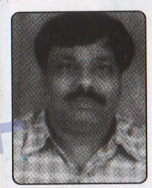

श्री अनिल कुमार अग्रवाल
ग्रीन चैनल
मोहकमपुर मेरठ

श्री के० के० अग्रवाल
सी-91, वैशाली कालोनी,
गढ़ रोड़, मेरठ

श्री कुँवर शेखर विजेन्द्र
प्रति कुलाधिपति, शोभित
विश्वविद्यालय, मेरठ
09810298603

श्री विवेक
चेयरमैन ज्ञान ग्रुप
इन्स्टीट्यूशन्स

Remove Watermark Now

हमारे विशिष्ट सहयोगी

श्री विपिन कुमार गोयल
154, जत्तीवाड़ा,
मेरठ

श्री आर० पी० सिंघल
2/1, सर्वोदय कालोनी,
मेरठ

श्री नरेश गर्ग
कमला नगर,
मेरठ

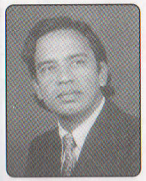

श्री दीपक मित्थल
जी0 टी0 प्रिन्टर्स, अनु बुक्स लेन,
शिवाजी रोड़, मेरठ
फोन : 9837167544

स्नेही बन्धुवर !

इस पुस्तक के विषय में आपके बहुमूल्य विचार व सुझावों की मैं अपेक्षा करता हूँ, जो आगामी संस्करण के प्रकाशन में महत्वपूर्ण व उपयोगी सिद्ध होंगे। कृपया अपने विचार निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें :

शान्ति स्वरूप गुप्त
के0-220, शास्त्री नगर, मेरठ
0121-4000687
9319928164

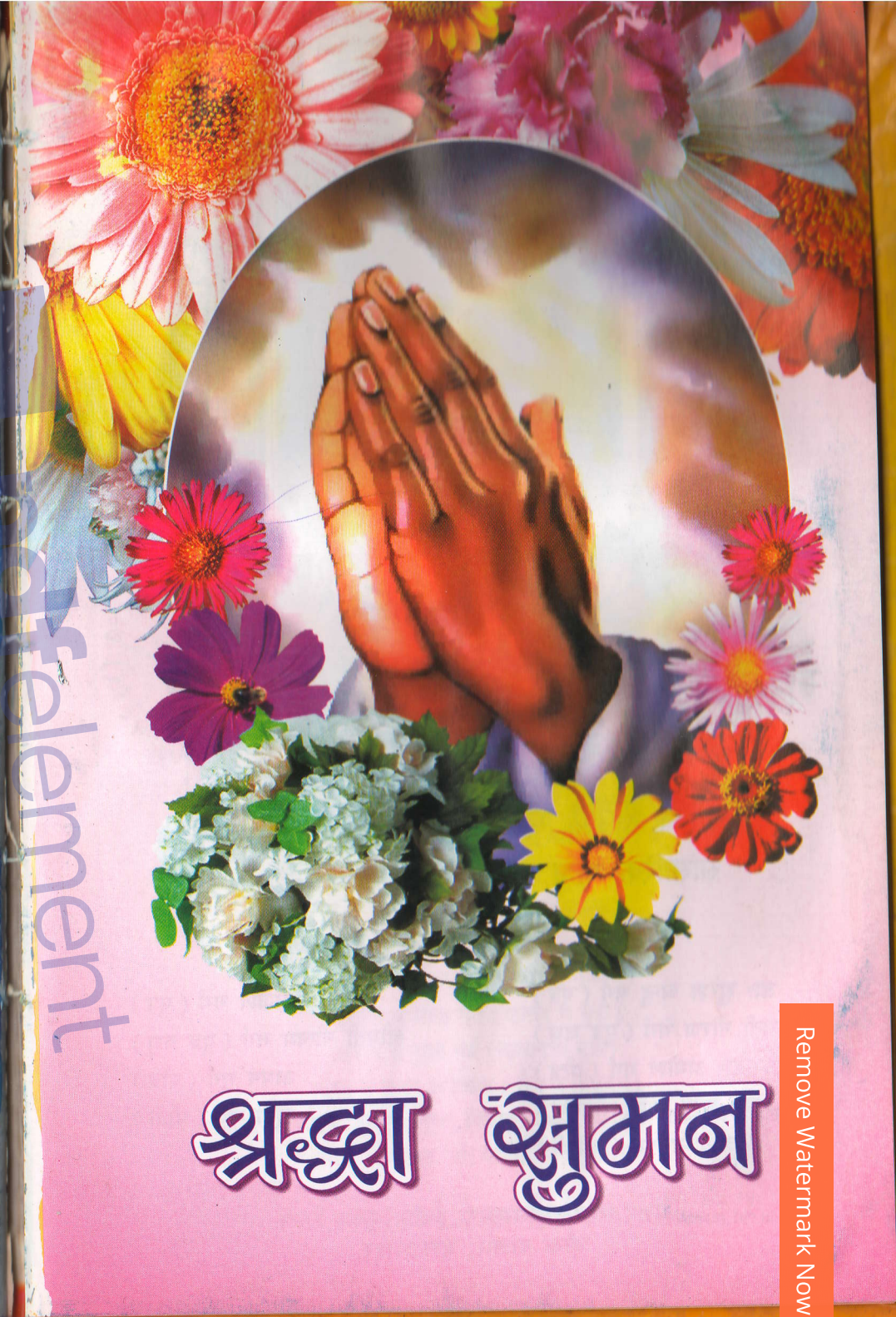

श्रद्धा सुमन

Remove Watermark Now

श्रीद्धेय स्व० वैद्य जगदीश शरण जी

सांसारिक यात्रा (4-6-1928-29-9-2001)

की पुण्य स्मृति में

डा० सुरेश चन्दु गर्ग (पुत्र)
श्रीमती नीरज गर्ग (पुत्र वधु)
डा० अमोल गर्ग (पौत्र)
डा० शानु गर्ग (पौत्रवधु)
अर्णिमा गर्ग (प्रपौत्री)

राजेश गर्ग (पुत्र)
श्रीमती नीलम गर्ग (पुत्र वधु)
अमन गर्ग (पौत्र)
श्रुती गर्ग (पौत्री)

मुख्य संस्थान-दवाखाना हकीम मुकट लाल
चौक बाजार, बुलन्दशहर

स्व० श्री हृदय प्रकाश अग्रवाल

सांसारिक यात्रा (1933–2000)

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरूषं पुरूषर्षभ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृत त्वाय कल्पते॥

जो पुरूष श्रेष्ठ सुख तथा दुख में विचलित नहीं होता और इन दोनों में समभाव से रहता है, वह निश्चित रूप से मुक्ति पाता है।

श्रीमति मिथलेश अग्रवाल (धर्मपत्नी)
अनिल व मधु अग्रवाल (पुत्र व पुत्रवधु)
अजय व रेनू अग्रवाल (पुत्र व पुत्रवधु)
अरूण व सुनीता अग्रवाल (पुत्र व पुत्रवधु)
अतुल व अंजू अग्रवाल (पुत्र व पुत्रवधु)
सुशील व मीना गर्ग (दामाद व पुत्री)
राजेश व नूतन गर्ग (दामाद व पुत्री)
गौरव व चारू अग्रवाल (पौत्र व पौत्रवधु)

पौत्र व पौत्री : सौरभ, अंशुल, पूजा, विपुल, अक्षय, आशीष, करन, व साथ

नाती : विशाल गर्ग, मयंक गर्ग, तुषार गर्ग

Green Channel PUBLICATIONS (INDIA) PVT
WA-121, SHAKARPUR, DEL

pdfelement
Remove Watermark Now

स्व० श्री राधेलाल

सांसारिक यात्रा (1925-1995)

स्व० श्रीमती शान्ती देवी

मृत्यु (2005)

की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

प्रदीप सिंघल (पुत्र)
श्रीमती वर्षा सिंघल (पुत्रवधु)
गौरव सिंघल (पौत्र)
शैली सिंघल (पौत्रवधु)
पलक सिंघल (प्रपौत्री)
अविका सिंघल (प्रपौत्री)

निवास : D- ब्लॉक, शास्त्री नगर, मेरठ।

pdfelement

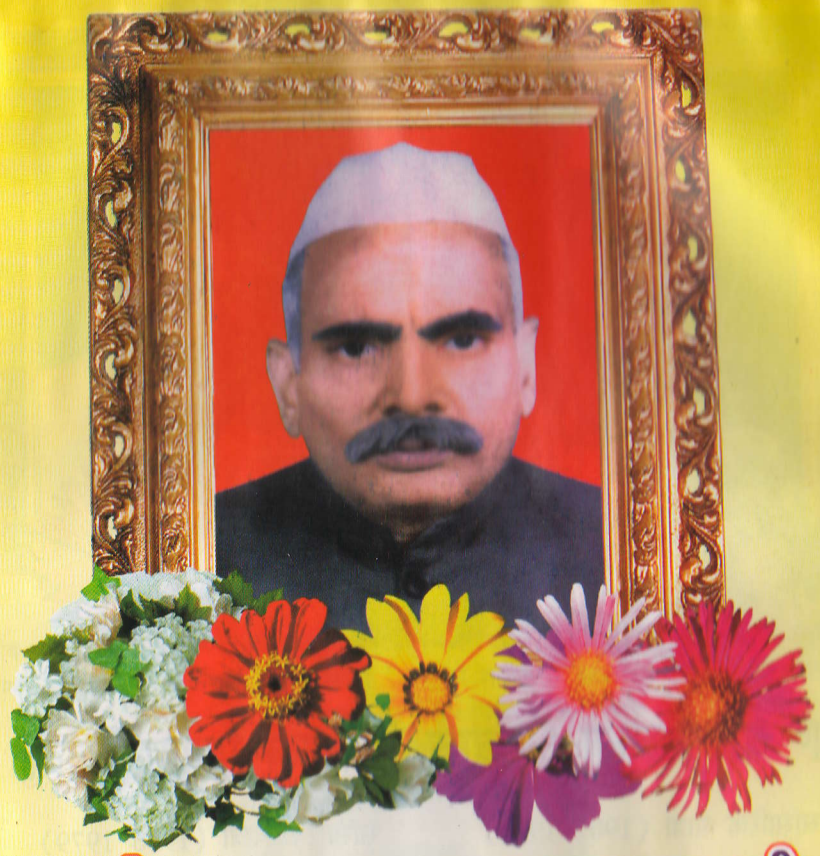

श्रद्धेय स्व० लाला सूरजभान जी

सांसारिक यात्रा (1908-1980)

की पुण्य स्मृति में

रघुनन्दन प्रसाद गोयल (सुपुत्र)
मै0 रघुनन्दन प्रसाद एण्ड संस
दादरी
मै0 सूरज भान शिव कुमार
दादरी
मै0 नन्दन फार्मस
दादरी

पौत्र
शिव कुमार गोयल
9999046400
संजीव कुमार गोयल
9412224090
प्रपौत्र
यश गोयल
कबीर गोयल

निवास : जी0 टी0 रोड, दादरी, गोतमबुद्ध नगर, उ0 प्र0

Remove Watermark Now

ला० चन्दन लाल अग्रवाल

सांसारिक यात्रा (1901-1951)

श्रीमती मनोहारी देवी

सांसारिक यात्रा (1906-1979)

की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रीमती उमा अग्रवाल

पत्नी स्व० जय प्रकाश अग्रवाल (पुत्र वधु)

आनन्द प्रकाश अग्रवाल (पुत्र)

श्रीमती विनोद अग्रवाल (पुत्र वधु)

विष्णु प्रकाश अग्रवाल (पुत्र)

श्रीमती बाला अग्रवाल (पुत्र वधु)

699/2- शास्त्री नगर, मेरठ। फोन : 2760757, मो० : 9412204808

pdfelement

स्व० श्रीमति शकुन्तला गर्ग

सांसारिक यात्रा (31-10-1931, 21-06-1993)

करुणा, दया, क्षमा और परोपकार की साक्षात मूर्ति को हम शत-शत नमन करते हैं।

प्रेम शंकर गर्ग एडवोकेट (पति)

राजीव गर्ग एडवोकेट - श्रीमती अंजु गर्ग (पुत्र-पुत्रवधु) इ० ईशान गर्ग (सुपौत्र), कु० तन्वी गर्ग (सुपौत्री)

श्रीमती रेनू गुप्ता-इ०डी०पी० गुप्ता (पुत्री-दामाद) श्रीमती शालिनी - इ०आर०पी० गोविल (पुत्री-दामाद)

श्रीमती प्रियंका मित्तल-इ० प्रवीण मित्तल (पुत्री-दामाद)

पता - कोठी हरविलास, सिविल लाईन्स, बुलन्दशहर।

स्व० श्रीमती सरला गर्ग एडवोकेट

सांसारिक यात्रा (8-8-1941-25-1-1999)

की पुण्य स्मृति में

ई० रमा शंकर गर्ग (पति)
बी-5/65 सैक्टर-4, रोहिणी, नई दिल्ली-85
011-27043265, 27044703

गौरव गर्ग एडवोकेट
श्रीमती पूजा गर्ग (पुत्र
राहुल (पौत्र), गौरी (

Remove Watermark Now

श्रद्धेय स्व० लाला प्यारे लाल गर्ग

सांसारिक यात्रा (1898-1973)

श्रद्धेय स्व० श्रीमती कपूरी देवी

सांसारिक यात्रा (1899-1965)

की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

पुत्रगण :-

प्रेम शंकर गर्ग

ऐडवोकेट

कोठी हरबिलास, सिविल लाईन्स, बुलन्दशहर

05732-286485

ई० रमा शंकर गर्ग

बी-5/65, सैक्टर 4, रोहिणी,

नई दिल्ली-85

फोन:- 011-27043265,

27044703

pdfelement

स्व० श्रीमति फूलवती देवी

सांसारिक यात्रा (1917-2002)

करुणा, दया, क्षमा और परोपकार की

साक्षात मूर्ति को हम शत-शत नमन करते हैं

तोता राम (पुत्र)
कान्ती प्रसाद (पुत्र)
रामकुमार (पौत्र)
सुनील अग्रवाल (पौत्र)
राजीव अग्रवाल (पौत्र)
संजय अग्रवाल (पौत्र)
बिजेश अग्रवाल (पौत्र)
लोकेश अग्रवाल (पौत्र)
शान्ति स्वरूप (पुत्र)
ब्रिज मुरारी (पुत्र)
अशोक कुमार (पौत्र)
विनय अग्रवाल (पौत्र)
दिनेश अग्रवाल (पौत्र)
मयंक अग्रवाल (पौत्र)
विजय अग्रवाल (पौत्र)

Remove Watermark Now

श्रद्धेय स्व० लाला उग्रसेन श्रद्धेय स्व० श्रीमती अंगूरी देवी

की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

पुत्रगण :-

सुरेश चन्द गुप्ता
लोक तन्त्र रक्षक सेनानी
ओम पेपर मार्ट, मधु मार्किट,
नवीन बाजार, बुढ़ाना गेट, मेरठ।

नरेश चन्द गुप्त प्रधानाचार्य
लोक तन्त्र रक्षक सेनानी
सुदामा पुरी, गुलावटी

मूलचन्द गुप्ता
लोक तन्त्र रक्षक सेनानी
हिमालय पेपर्स, नवीन बाजार,
बुढ़ाना गेट, मेरठ।

गृहस्थी संत - सेठ रंगूमल जी जालान

स्व० सेठ रंगूमल जी जालान

सांसारिक यात्रा (1900–1994)

सेठ रंगूमल जी जालान एक समाज सेवी, उदारमन, कर्मवीर, स्नेहशील, दानवीर, धर्मनिष्ठ एवं संत हृदय व्यकित थे। आपका जन्म बुलन्दशहर के एक सभ्रान्त एवं सुसंस्कारित परिवार में सन् 1900 ई० में हुआ था। आपके पिता सेठ मदनलाल जालान अत्यन्त लोकप्रिय व्यक्ति थे। शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त अल्पायु में ही आप अपने पैतृक व्यापार में जुट गये। आपको उर्दू व मुन्डी भाषाओं का बहुत अच्छा ज्ञान था।

आप अत्यन्त साहसी, कर्मठ एवं सहनशील व्यक्ति थे। यही कारण था कि उन्होंने अपने जीवनकाल में तीन राज्यों में अलग-अलग स्थानों पर 5 दाल मिलों की स्थापना कर उनका सुचारू रूप से संचालन किया। इसके अतिरिक्त उनके कुशल नेतृत्व में सन् 1965 में जालान इण्डस्ट्रीज की स्थापना हुई ,जिसमें हैण्ड पम्प का निर्माण होता है और जो निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है। भगवान श्री कृष्ण का निष्काम कर्मयोग उनके जीवन का सम्बल था।

आप आर्य विद्या सभा व हिन्दी साहित्य परिषद बुलन्दशहर के प्रारम्भिक आजीवन सदस्यों में एक थे। आपने सन् 1980 में बुलन्दशहर में एक धर्मार्थ होम्योपैथिक चिकित्सालय की स्थापना की जिसमें आज भी प्रतिदिन 100 से अधिक रोगियों का कुशल, अनुभवी एवं योग्य चिकित्सक द्वारा सुचारू रूप से उपचार किया जाता है।

आप धार्मिक प्रवृति के संत सेवी व्यक्ति थे तथा जीवन पर्यन्त मानव मूल्यों के अनुपालन के लिए प्रयत्नशील रहे। आपने बुलन्दशहर में स्थित भूतेश्वर मंदिर परिसर में कुलदेवी श्री राणी सती जी का मंदिर एवं ग्राम बहलीमपुरा में शिव मंदिर व आनन्देश्वर मंदिर के सामने एक सत्संग भवन का निर्माण कराया। दाल मंडी के सामने आनन्देश्वर मंदिर की स्थापना में भी आपका सक्रिय योगदान रहा। इसके अतिरिक्त आपन समय-समय पर आवश्यकतानुसार अनेक मन्दिरों, धर्मशालाओं, सत्संग भवनों एवं विद्यालयों में आर्थिक सहयोग किया आप अपने जीवन में स्वान्तः सुखाय साधु सन्तों की सेवा एवं समाज कल्याणार्थ उनके प्रवचनों का आयोजन करते रहे। निर्धनों, फकीरों तथा महात्माओं के लिए सदावर्त का आयोजन करते रहना उनके स्वभाव का अंग था।

आपका जीवन अत्यन्त सादगीपूर्ण रहा ... उनकी मान्यता सादा जीवन व उच्च विचार क... आप आदर्शनिष्ठ और प्रेम के पुजारी थे। आप ... पर निरन्तर चलते रहने के लिए प्रेरणास्रोत है... मृदुभाषी, अक्रोधी, निस्प्रही कर्मयोगी एक गृह... रूप में महान सन्त को हम शत-शत नमन करते ... उनके आदर्शों के अनुसार हम अपने जीवन ... करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेंगे।

– जालान परिव...
दाल मंडी, बुल...

pdfelement
Remove Watermark Now

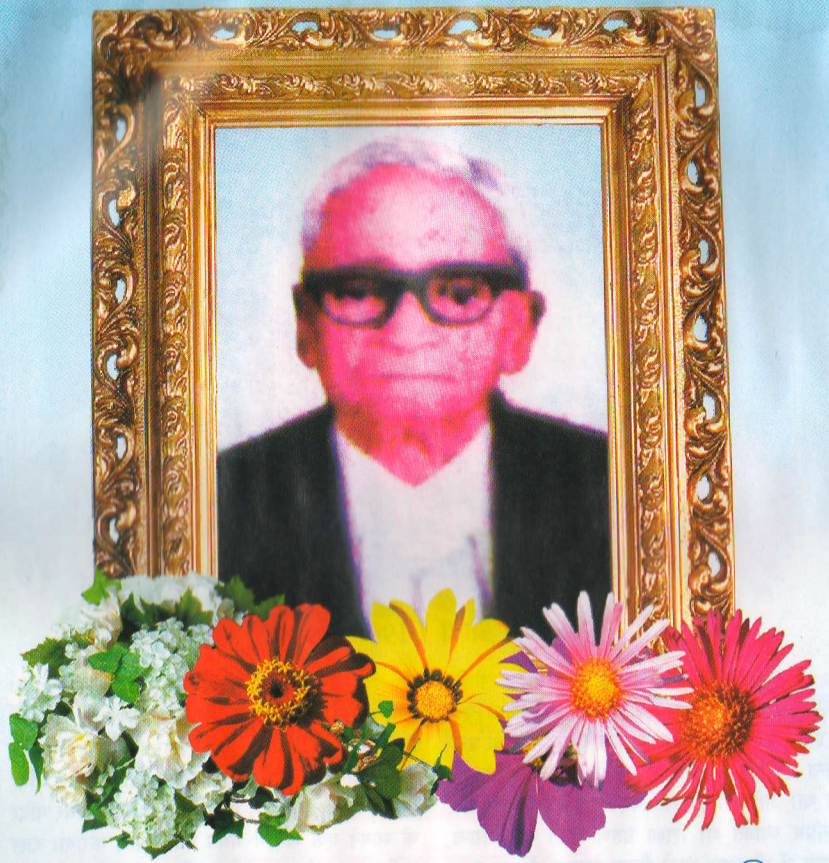

श्रद्धेय स्व० श्री किशन चन्द जी

(वरिष्ठ एडवोकेट)

सांसारिक यात्रा (1916-2003)

की पुण्य स्मृति में

सुपुत्र :-
राजीव बंसल
एडवोकेट
27, शेख सराय,
बुलन्दशहर

पोत्र :-
रोहित बंसल
एडवोकेट
27, शेख सराय,
बुलन्दशहर

श्रद्धेय स्व० श्री जयन्ती प्रसाद जी गुप्ता

(वरिष्ठ एडवोकेट)

सांसारिक यात्रा (10-12-1910, 05-05-1990)

की पुण्य स्मृति में

पौत्र:
शोभित गुप्ता (एडवोकेट)
डिप्टी गंज, बुलन्दशहर, मो0 9997047778

सुपुत्र:
जितेन्द्र प्रसाद गुप्ता (एडवोकेट)
डिप्टी गंज, बुलन्दशहर, मो0 9837170877

श्रद्धेय स्व० श्री दरेशचन्द अग्रवाल

सांसारिक यात्रा (05-03-1936, 17-11-2004)

की पुण्य स्मृति में

सुपुत्र:
पंकज कुमार अग्रवाल
183, के0 पी0 रोड, निकट दाल मण्डी,
छोटा गेट, बुलन्दशहर, फोन: 05732-231346

ध :
श्रीमती शकुन्त ी

pdfelement
Remove Watermark Now

श्रद्धेय स्व० श्री राम अवतार गुप्ता

सांसारिक यात्रा (07-03-1937, 30-01-2005)

की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रीमती सुधा रानी गुप्ता (पत्नी)
सुशील गुप्ता - श्रीमती बबीता गुप्ता (पुत्र - पुत्र वधु)
सुनील गुप्ता - श्रीमती शालिनी गुप्ता (पुत्र - पुत्र वधु)
सौरभ गुप्ता, अनुज गुप्ता (पौत्र)
मुस्कान, स्वाती (पौत्री)

पता: बी- 28, 29, सैक्टर - 6 नौएडा -201301 फोन: 9891402241

स्व० ला० फकीर चन्द गोयल जी

सांसारिक यात्रा (1888-1984)

की पुण्य स्मृति में

श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

ओम प्रकाश गोयल (पुत्र)
देवीचरन (पौत्र)
सन्तोष कुमार (पौत्र)
संजय कुमार (पौत्र)
मनोज कुमार गोयल (पौत्र)

मंगल सैन अग्रवाल (पुत्र)
अशोक कुमार (पौत्र)
मनीष कुमार (पौत्र)
पवन कुमार (पौत्र)
मोहित गोयल (पौत्र)

पता - 51, मधुबन कॉलोनी, मेरठ रोड, हापुड़।

pdfelement
Remove Watermark Now

स्व० श्रीमति पुष्पलता मित्तल

सांसारिक यात्रा (05-05-1928 - 10-11-1996)

की पुण्य स्मृति में

ई० नानक चन्द मित्तल (पति)

पुत्रियाँ एवम् दामाद
श्रीमति मंजू एवम् श्री अनिल कुमार अग्रवाल
श्रीमति सुषमा एवम् श्री शिवेन्द्र कुमार सिंघल
श्रीमति इन्दु एवम् श्री अजय कुमार अग्रवाल
श्रीमति कमलेश एवम् श्री सुशील कुमार अग्रवाल
श्रीमति पूनम एवम् श्री राजेन्द्र मोहन अग्रवाल
श्रीमति बिन्नी एवम् श्री मुकेश गोयल

पता- ज्वाला भवन, बी - 133 शास्त्री नगर, मेरठ
(मोबाईल : 9412203400, फोन :- 2661220)

pdfelement
Remove Watermark Now

लेखक का नाम - शान्ति स्वरूप गुप्त

पिता का नाम - स्व० श्री सीता राम गुप्त

माता का नाम - स्व० श्रीमती फूलवती देवी

शिक्षा - बी०ए०, एल-एल० बी०

जन्मतिथि - 28 जुलाई 1951

परिचय - अपका जन्म ग्राम भटियाना, तहसील हापुड़, जिला गाज़ियाबाद में हुआ। जब आपकी अवस्था मात्र 5 वर्ष थी, तभी आपके पिता श्री सीता राम अग्रवाल का स्वर्गवास हो गया था। आपने वर्तमान परिवेश के सन्दर्भ में, अनेक लेख एवं कविताएँ लिखी हैं। यह इनकी तीसरी पुस्तक है। इससे पूर्व इनकी 'वैश्य जाति की गौरव गाथा' तथा 'आध्यात्मिक जीवन दर्शन द्वारा विश्व शान्ति सम्भव' प्रकाशित हो चुकी हैं। इस पुस्तक में भी आपने कुछ ज्वलन्त प्रश्नों के माधयम से देश और समाज में व्याप्त विडम्बनाओं एवं अव्यवस्थाओं के सम्बन्ध में प्रकाश डाला है।

निवास स्थान - के-220, शास्त्री नगर, मेरठ

फोन - 0121- 4000687,
9319928164

Remove Watermark Now

G. T. Printers, Meerut. 9837167544

वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास

शान्ति स्वरूप गुप्त

महाराजा अग्रसेन

लाला लाजपत राय

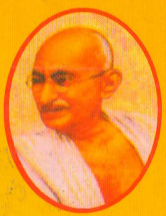

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

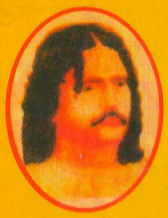

भारतेन्दु हरिश्चन्द

डॉ रघुवीर

सेठ जमनालाल बजाज

डॉ राम मनोहर लोहिया

श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार

श्री शिवप्रसाद गुप्त

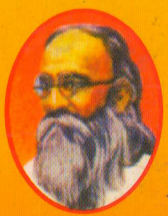

डॉ भगवानदास

Remove Watermark Now

वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास

लेखक - शान्ति स्वरूप गुप्त

प्रकाशक
अखिल भारतीय वैश्य महासभा
कोठी हरविलास, नगर पालिका के सामने, बुलन्दशहर

pdfelement
Remove Watermark Now

© श्री शान्ति स्वरूप गुप्त

वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास

प्रकाशक	:	अखिल भारतीय वैश्य महासभा, कोठी हरविलास, नगर पालिका के सामने, बुलन्दशहर।
प्रथम संस्करण	:	1 जनवरी, 2007
द्वितीय संस्करण	:	जून, 2009
ISBN	:	81-85126-131-4
न्यायालय क्षेत्र	:	मेरठ
सहयोग राशि	:	200/- रुपये मात्र

मुद्रण एवं सम्पादन सहयोग :

दीपक मित्थल
जी0 टी0 प्रिन्टर्स, अनु बुक्स लेन,
शिवाजी रोड़, मेरठ
फोन : 9837167544

इन महान अनथके कदमों को वैश्य समाज का शत-शत नमन

समर्पण

परम श्रद्धेय श्री प्रेमशंकर गर्ग

राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भरतीय वैश्य महासभा, को समर्पित,
जिन्होंने अपना सारा जीवन वैश्य समाज के लिए, समर्पित कर दिया
तथा जो त्याग, तपस्या और बलिदान की साक्षात मूर्ति हैं।

Remove Watermark Now

अखिल भारतीय वैश्य महासभा के पदाधिकारी गण

श्री प्रेम शंकर गर्ग
राष्ट्रीय अध्यक्ष
कोठी हर विलास,
सिविल लाइन्स,
बुलन्दशहर
फोन नं:-05732-286485

श्री नरेश चन्द्र गुप्त
कार्यकारी अध्यक्ष
सुदामा पुरी, गुलावठी
फोन नं:-05732-229322

कैप्टिन के० के० गर्ग
उपाध्यक्ष
डिप्टी कमीश्नर सेलटैक्स
विलासपुर, (छत्तीसगढ़)
मो:-09893022377

श्रीमती रेखा गुप्ता
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अ0भा0 महिला वैश्य महासभा
एन-22 साउथ एक्सटैन्शन,
नई दिल्ली - 110049

ओम प्रकाश गोयल
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
अ0भा0 वैश्य महासभा
51-मधुबन कॉलौनी, हापुड़
मो:- 9897658014

श्रीमती राज गर्ग
उपाध्यक्ष
अ0भा0 महिला वैश्य महासभा
बी-28, नोलखा कॉम्पलेक्स,
स्नेह नगर, इन्दौर (म0प्र0)
मो:-09827072909 0731-2760950

श्री सुशील कृष्ण गुप्त
कोषाध्यक्ष
एच0-292 शास्त्री नगर,
मेरठ।
फोन नं:-0121-2764529
मो:-9319928006

श्री विनीत अग्रवाल शारदा
प्रदेश अध्यक्ष
अखिल भारतीय वैश्य महासभा
कसमण्डा हाऊस, हजरतगंज, लखनऊ
मो0:- 9358404040

श्रीमती शालिनी गोविल
राष्ट्रीय महामंत्री
अ0भा0 महिला वैश्य महासभा
सी-1/4, चन्द्रपुर थर्मल पावर स्टेशन
कॉलोनी, उर्जा नगर, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र
मो:- 9326181844

श्रीमती रेखा गुप्ता
प्रदेश महामंत्री
अ0 भा0 महिला वैश्य महासभा
ई-227, शास्त्री नगर, मेरठ।
फोन:-0121-2760005

समाज के नवनिर्वाचित वैश्य सांसदों को अखिल भारतीय वैश्य महासभा की हार्दिक बधाई

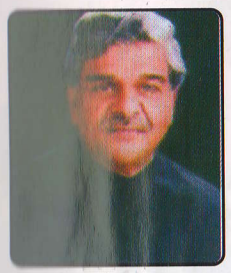

श्री श्रीप्रकाश जायसवाल
कानपुर (उ0 प्र0)

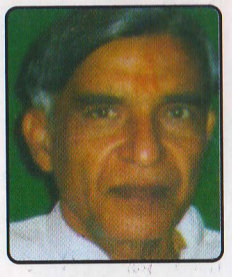

श्री पवन बंसल
चंडीगढ़

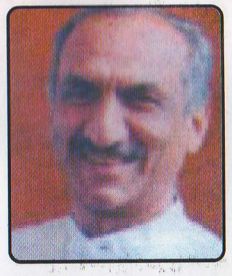

श्री जयप्रकाश अग्रवाल
दिल्ली

श्री नवीन जिन्दल
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

श्री मिलिंद देवड़ा
मुम्बई (महाराष्ट्र)

श्री राजेंद्र अग्रवाल
मेरठ (उ0 प्र0)

श्री प्रवीण एरन
बरेली (उ0 प्र0)

श्री गोरख प्रसाद जायसवाल
देवरिया (उ0 प्र0)

श्री प्रदीप जैन 'आदित्य'
झाँसी (उ0 प्र0)

श्री रवीन्द्र सिंगला
पंजाब

अखिल भारतीय वैश्य महासभा

K-220, शास्त्री नगर, मेरठ, फोन : 0121-4000687, मो0 : 9319925164

Remove Watermark Now

प्रथम संस्करण का विमोचन

दिनांक 7-1-2007 को

शान्ती स्वरूप गुप्त द्वारा लिखित

"वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास"

का विमोचन करते हुऐ

श्री सुरेन्द्र गोयल, सांसद गाजियाबाद

साथ खड़े हैं श्री प्रेम शंकर गर्ग (राष्ट्रीय अध्यक्ष)

एंव श्री नरेन्द्र बन्सल,

श्री तारा चन्द बन्सल, श्री महेश चन्द

श्री नरेश चन्द्र गुप्ता, श्री सुशील गुप्ता आदि

अग्रोहा में "वैश्य जाति की गौरव गाथा" के प्रथम संस्करण का विमोचन करते हुए श्री चमन लाल गुप्ता (केन्द्रीय मन्त्री)

अग्रोहा में श्री चरती लाल गोयल पूर्व विधान सभा अध्यक्ष दिल्ली प्रदेश को "वैश्य जाति की गौरव गाथा" भेंट करते हु
शान्ति स्वरूप गुप्त साथ में हैं श्री रविकान्त गर्ग पूर्व
मन्त्री उ० प्र० सरकार

pdfelement
Remove Watermark Now

अग्रोहा में श्री रविकान्त गर्ग पूर्व मन्त्री उ0 प्र0 सरकार को "वैश्य जाति की गौरव गाथा" भेंट करते हुए श्री शान्ति स्वरूप गुप्त साथ में खड़े हैं श्री नन्द किशोर गोयन्का अध्यक्ष अग्रोहा विकास ट्रस्ट

"वैश्य जाति की गौरव गाथा" के द्वितीय संस्करण का विमोचन करते हुये श्री संजय गर्ग, तत्कालीन लोक निर्माण राज्यमन्त्री उ0 प्र0 सरकार, साथ में खड़े हैं, श्री मन मोहन गोटे वाले महामन्त्री अखिल भारतीय वैश्य अग्रवाल महासंघ, दिल्ली।

अनथके कदम

(कदम..... जो कभी थके नहीं)

हमारे प्रेरणास्रोत श्री हरविलास गुप्ता जी

"एक कर्मयोगी की आठ दशकीय पारी"

श्री हरविलास गुप्ता अपने जीवन की आठदशकीय पारी पूरी कर चुके हैं। 15 दिसम्बर 2008 को उनका 80 वां जन्मदिन मनाया गया है यानि उन्हें 1000 पूर्णिमाओं के दर्शन करने का सौभाग्य मिला हैं। साहस्त्र चन्द्र दर्शन के उपरान्त भी वे चिरयुवा प्रतीत होते हैं। उनके चिर यौवन के पीछे जीवन के प्रति उनकी धनात्मक सोच है। अच्छे से अच्छे और बुरे से बुरे दौर में उन्होंने जीवन को कभी कोसा नहीं। जीवन को प्रभु का वरदान समझ हर क्षण को बेहतर ढंग से जीने की कोशिश ने ही उन्हें चिर युवा बनाये रखा। 8 दशकों के इस लम्बे समयान्तर में उन्होंने कितना कुछ नहीं सीखा होगा, किन्तु उनका कहना है, कि वे आज भी सीखते हैं। उनके अनुसार, सीखना एक सतत् प्रक्रिया है, इसलिए छोटे बड़ों, सभी से सीखना चाहिए।

निश्चित रूप से हम सबको उनकी जीवन शैली और सिद्धान्तों का अनुकरण करना चाहिए। उनके अच्छे स्वास्थ्य एंव शतायु होने की कामनाओं के साथ!

संक्षिप्त जीवन-वृत्त

जन्म तिथि - 15 दिसम्बर 1929
जन्म स्थान - ग्रामः सुरजनवास, जिला - महेन्द्र गढ़ (हरियाणा)
माता - स्व० श्रीमती शरबती देवी
पिता - स्व० श्री दुर्गाप्रसाद गर्ग
शिक्षा - बी०ए०, बी०टी०, एल०एल०बी०
वर्तमान पता - आर-11/4, राजनगर, गाजियाबाद-201002

व्यवसायिक जीवन

1. गोकुलपुर, हरियाणा में अध्यापन कार्य (1955-56)
2. गाजियाबाद आकर मैडिकल स्टोर खोला (1956-57)
3. दिल्ली में रामजस सोसाइटी के विद्यालय नं०6 में अध्यापन (1957-
4. दिल्ली में रामजस सोसाइटी के विद्यालय नं०4 में अध्यापन (1958-
5. गाजियाबाद में साठे इन्जीनियरिंग कम्पनी नाम से कारखाना खोला(1
6. गाजियाबाद में एडवांस इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट की स्थापना (199
7. वर्तमान में साठे समूह में लगभग एक दर्जन से अधिक औद्योगिक इकाईयों का संचालन।

pdfelement
Remove Watermark Now

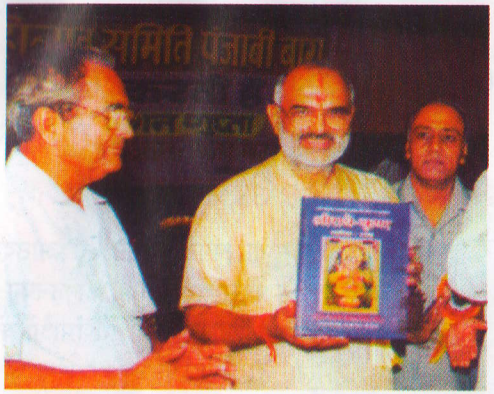

पूर्व मुख्यमंत्री (दिल्ली) स्व० श्री साहब सिंह वर्मा जी के साथ

माँ, गीता और संघ

श्री हरविलास गुप्ता के जीवन में आपकी माता स्व० श्रीमती शरबती देवी, श्रीमद् भागवद् गीता और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बहुत ही महत्वपूर्ण प्रेरकों के रूप में रहें हैं। जहाँ अपनी माँ से आपने ईमानदारी का पाठ सीखा, गीता से सतत् परिश्रम करने का मन्त्र लिया, वहीं संघ से अनुशासित जीवन जीने की कला भी सीखी। इन तीनों के समग्र संयोग को ही उनकी सफलता का मुख्य कारक कहा जा सकता है।

ईमानदारी का पहला पाठ

बात 1949 की है, हरविलास जी की माँ स्व० श्रीमती शरबती देवी ने एक अधन्ना देते हुए बाजार से धनिया, पुदीना लाने के लिए भेजा। आप सब्जी की दुकान पर चहुँचे, हरा धनिया पत्ती और पुदीना आदि खरीदा घर लौट आये। आने पर थैले को उल्टा किया तो धनिये पुदिने के साथ अधन्ना भी साथ निकला। तो इस पर माँ ने कहा कि 'अरे अधन्ना कैसे वापिस आ गया'। आप ने कहा कि 'मुझे पता नहीं माँ' और इस पर माँ ने कहा कि 'जा अभी असको वापिस दे कर आ क्योंकि इस अधन्ने पर अपना हक नहीं है' आप वह अधन्ना तुरन्त वापिस दे कर आये। हरविलास जी के अनुसार "उस दिन मुझे ईमानदारी का पहला पाठ मेरी माँ ने सिखाया"। इन्होंने अपनी माँ द्वारा दिये गये उस संदेश का सारे जीवन पालन किया और किसी की जेब पर इन्होंने नजर भी नहीं डाली।

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करते हुए

व्यवसायिक सफलता का राज

3-D

आपकी व्यवसायिक सफलता का राज है 3-D का मूल मंत्र। 3-D यानि Determination (दृढ़ निश्चय), Dedication (समर्पण) और Devotion (निष्ठा)। आपने जो कार्य किया उसे पूरे आत्मविश्वास, समर्पण भाव और निष्ठा के साथ किया। यही बात है कि आपने जो कार्य हाथ में लिया वह पूरा ही कर के छोड़ा।

गुणवत्ता से समझौता नहीं

आपकी आदत रही है कि आपने कभी गुणवत्ता से समझौता नहीं किया। यही शिक्षा अपनें बेटों को भी दी। 1958 में आपने गाजियाबाद में जब मेडिकल स्टोर खोला तो जल्द ही इसे बन्द करना पड़ा। क्योंकी बाजारी प्रतिद्वन्दिता नकली दवाईयों का चलन था। लेकिन आप अच्छे ब्राण्ड की दवायें ही रखते थे। इसलिए दाम भी अधिक थे। किन्तु ग्राहक कम मानक वाली दवाईयाँ लेने अन्य दुकानों पर जाना पसंद करते थे। इसलिए अन्त में भले ही आपको मैडिकल स्टोर बन्द करना पड़ा किन्तु घटिया दवाईयाँ नहीं बेचीं।

दोहरी मार मत दो!

श्री हरविलास गुप्ता जी के पुत्र राकेश मोहन का कहना है कि उनके पि सदैव सही समझाया है कि बेटा ग्राहक को कभी दोहरी मार मत देना। यानि अधिक क और निम्न गुणवत्ता। यदि गुणवत्ता कम है, तो कीमत भी कम रखना या फिर कीमत ही अधिक रहे पर गुणवत्ता कमजोर मत होने देना।

pdfelement
Remove Watermark Now

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने के बाद धर्मपत्नी स्व० श्रीमती शीला देवी के साथ

काल चक्र यानि समय का पहिया अविराम चलता रहता है। निमिष, पल, घड़ी और दिवस यहां तक कि महीने वर्ष, सदियाँ और युग बीतते चले जाते हैं और समय अपने साथ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को भी परिवर्तित करता है। यानि कि हर क्षण परिवर्तित इस जगत में समय ही सर्वशक्तिमान है। किन्तु इस संसार में कुछ जन ऐसे भी होते है जो स्वयं को समय की धारा के अनुकूल बना लेते हैं और डार्विनवाद के सिद्धान्त पर स्वयं को स्थापित कर, समय की शक्तिशाली लहरों पर अपने अमिट हस्ताक्षर जड़ देते हैं। एक ऐसे ही कालजयी व्यक्तित्व के स्वामी हैं श्री हरविलास गुप्ता जी, जिन्होने समय के समानान्तर चलते हुए और यहां तक कि समय के कई प्रतिकूल झंझावातों का सामना करते हुए, अपने पुरूषार्थ के बल पर, देश और समाज में अपने अस्तित्व को स्थापित किया।

हरियाणा के छोटे से गांव सुरजनवास में जन्में श्री हरविलास गुप्ता जी के जन्म के समय शायद किसी ने नहीं सोचा होगा कि यह बालक आगे चलकर, अपने ही बलबूते सफलतम् लोगों की श्रेणी में स्वयं को खड़ा कर सकेगा। दरअसल ग्रामीण परिवेश और अपर्याप्त संसाधनों के बीच से निकलकर व्यवसायिक जगत में ही नहीं आपितु, समाज और राजनीति में सफलता कें झंडे गाड़ना बड़ी टेड़ी खीर था। किन्तु प्रबल इच्छा शक्ति के चलते आपने अपना व्यवसायिक साम्राज्य ठीक उसी तरह स्थापित किया जैसे कि बया पक्षी छोटे-छोटे तिनकों को बार-बार उठाकर बिना थके उन्हें क्रमबद्ध और अनुशासित तरीके से सहेजता है और फलस्वरूप सुन्दर नीड़ का निर्माण करता है। बया का सुन्दर घोंसला देखकर क्या आप अनुमान लगा सकते हैं, कि जब उसनें घोंसला बनाना शुरू किया होगा तो, उसमे कितना आत्मविश्वास और धैर्य रहा होगा। उसके शुरूआती तिनके कितनी बार गिरे होंगे और उसने बार-बार उन्हें उठाया होगा। बार-बार पिरोया होगा। किन्तु आत्मविश्वास, सतत् परिश्रम और धैर्य के सहारे वह घोंसला बनाने में सफल हो ही जाता है। ठीक उसी तरह क्या आप अनुमान लगा सकते हैं, कि शून्य से चलकर शिखर तक पहुँचने वाले श्री हरविलास गुप्ता जी ने अपने जीवन में कितने पापड़ बेले होंगे? कितना परिश्रम किया होगा? लाभ-हानि और आशा-निराशा के भंवर में कितने गोते खायें होंगे? किन्तु फिर भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी, मेहनत से पीछे नहीं हटे, उपर वाले पर विश्वास रखकर धैर्य के साथ पुरूषार्थ किया और सफलता हासिल की।

लौहार की धोकनी चलाकर गर्म लोहे को पीटना, कपडों का गट्ठर कन्धे पर रखकर लाकर बेचना, बच्चों की टॉफियाँ बेचने से लेकर घर-घर जाकर ट्यूशन पढ़ाना, क्या नहीं किया? लेकिन किसी भी कार्य को आपने छोटा नहीं समझा और जिस कार्य को किया उसे पूरी ईमानदारी समर्पण भाव से किया। यही कारण है कि महज सात सौ रूपये से आरम्भ की गई साठे इन्जीनियरिंग कम्पनी आज साठे समूह में तब्दील होकर सालाना चार सौ करोड़ रूपये से अधिक का कारोबार करती है।

आज 80 वर्ष की आयु में भी आप में इच्छा शक्ति एवं उत्साह यथावत है। यही वजह है कि आपको वृद्धावस्था का अनुभव ही नही होता और नवयुवकों से भी अधिक समय देते है, अपने व्यवसाय और समाज के लिए।

अकेली व्यवसायिक सफलता हासिल करने वाले उद्योगपतियों के उदाहरण तो ढूंढने से मिल जाते है, किन्तु व्यावसाय के साथ-साथ शिक्षा,समाज सेवा और राजनति सभी क्षेत्रों में महती योगदान देने वाले आप जैसे उद्योगपति देश में विरले ही मिलेगें। आपने सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे देश और समाज के लिए जिया है। देशकाल और सामयिक परिस्थितियों से आपका मन उद्वेलित हो उठता है, यही वजह है कि जब आपने अपने क्षेत्र में स्वास्थय सेवाओं का टोटा देखा, तो मंगलम् धर्मार्थ औषधालय स्थापित किया, गाजियाबाद में उच्च शिक्षा की कमी महसूस की, तो एक इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट की स्थापना की, बुन्देलखण्ड की बदहाली देखी तो हाथ बढ़ा दिये वहां के उत्थान के लिए।

Remove Watermark Now

यश गुप्ता राजीव मोहन रवि मोहन राकेश मोहन

बाढ़ें पुत्र पिता के धर्मा

श्री हरविलास गुप्ता जी के चारों पुत्र, सुपुत्र कहे जाने की पात्रता रखते हैं। वही उद्यम, वही कार्यक्षमता और वही जुनून आपके चारों पुत्रों में भी परिलक्षित होता है। यानि के अपने पिता की विरासत को बखूबी संरक्षित एंव पल्लवित करते हुए चारों पुत्र राजीव मोहन, रवि मोहन, राकेश मोहन एवं यश संयुक्त रूप से अपने व्यवसायिक घराने साठे समूह को उत्तरोत्तर प्रगति की ओर ले जा रहें हैं। चूंकि हरविलास गुप्ता जी का सारा जीवन निजी व्यवसाय को बढ़ाने के साथ-साथ समाज सेवा, परमार्थ एंव राष्ट्रीय उत्तरदायित्व के कार्यो में बीता है, इसलिए उक्त सभी आनुवांशिक गुण उनके पुत्रों में भी समाहित होना स्वाभविक है।

श्री हरविलास जी ऐसे हैं .....

फौलादी अटल इरादों ने,
इस्पात का रूख भी मोड़ दिया।
पैतृक होते उद्योगपति,
इस मिथक को, आपने तोड़ दिया॥
मेहनत की परिणति आ ही गयी,
और राष्ट्रपति सम्मान मिला।
एक शहर नही सम्पूर्ण देश में,
कर्मवीर को मान मिला॥

भाजपा अध्यक्ष श्री राजनाथ सिंह के साथ

सामाजिक सरोकार

आपने समाज के लिए बहुत कुछ किया। आपकी प्रवृत्ति रही है कि समाज के लिए कुछ न कुछ रचनात्मक काम किया जाये। वर्तमान में आप अनेको समाजसेवी संस्थाओं के सदस्य, मानद अध्यक्ष और संरक्षक हैं। गाजियाबाद ही नही देश भर के तमाम एनजीओज में आपकी सक्रिय भागीदारी रही है। गाजियाबाद का वरदान नेत्र चिकित्सालय हो या शिशु मन्दिर, न जाने कितनी संस्थाओं की स्थापना एंव संचालन में आपने महती भूमिका निभाई। कुल मिलाकर पूर्णतया निष्काम और नि:स्वार्थ भाव से आपने समाज सेवा की है।

छोटों से सीखने में गुरेज नहीं

श्री हरविलास गुप्ता जी की एक खास विशेषता है कि वे अपने से छोटों या यूँ कहें कि छोटे से छोटे व्यक्ति से भी वे सीखने लायक बात को ग्रहण करते हैं।अपने कारखाने में श्रमिक से लेकर प्रबंधक तक, सब की बात को, बड़े गौर से सुनते हैं और तर्क-संगत विचार मनन भी करते हैं। इसका उन्हें यह लाभ मिला कि बिना किसी तकनीकी प्रशिक्षण के ही, उन्होंने अपने कारखानों में लगने वाले सभी तकनीकी कार्यो में महारथ हासिल की।

pdfelement
Remove Watermark Now

राजेन्द्र अग्रवाल सांसद

मेरठ हापुड़ लोकसभा क्षेत्र

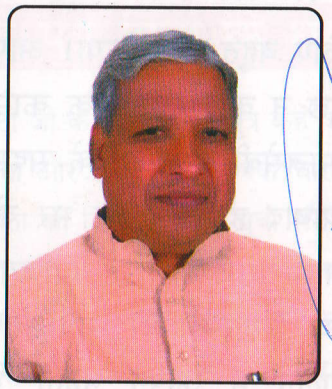

अखिल भारतीय वैश्य महासभा को समर्पित

" वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास "

श्री शान्ति स्वरूप गुप्त

द्वारा लिखित पुस्तक

के विमोचन के पावन अवसर पर

" हार्दिक शुभकामनाएँ "

parliament

पुस्तक का उद्देश्य

जीवित वही है, जिसकी कीर्ति जीवित है। जिसकी कीर्ति नष्ट हो गई, वह तो जीवित भी मृतक के समान ही है। जिसका इतिहास विस्मृत हो गया, पूर्वजों के गुण, वैभव, प्रताप लुप्त हो गये, उनका जीना भी मरने के समान ही है। जाति का इतिहास ही, जाति का जीवन है। जाति का उत्थान, जाति का गतिमान होना, इतिहास पर निर्भर है। जिनकी यश-गाथा को कवियों ने गीतों में लिखा, कारीगरों ने प्रस्तरों में अंकित किया, वे आज भी जीवित हैं। लेकिन जिनकी यशोमालिका को गूंथने वाला कोई नहीं हुआ, उनका नाम लेवा या पानी देवा भी कोई शेष नहीं है।

अपने पुनरुत्थान की वेला में जापान के सम्राट ने विदेशों में विद्यार्थी, शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजे थे। उन्हें यह काम भी सौंपा गया था, कि वे यह पता लगायें कि विदेश उत्थानोन्मुख क्यों है? जब वे वापिस लौटे तो सम्राट ने उन्हें अपने पास बुलाकर चर्चा की। जापान की अवनति का कारण बताते हुए उन विद्यार्थियों ने कहा कि अन्य देशों के पास अपना उज्जवल इतिहास है जिसमें वीरों की वीर गाथा से वे प्रेरणा लेते हैं। अपने इतिहास की प्रेरणा से ही वे गतिमान रहते हैं तथा संघर्षों में भी नहीं घबराते हैं। हमारे देश का कोई इतिहास नहीं है। इसलिए हमारे अन्दर निराशा के भाव रहते हैं। आशा का संचार करने के लिए हमारा इतिहास होना अत्यावश्यक है। अतः जापान के सम्राट ने इतिहासज्ञों की कमेटी बनाई तथा अपने देश का गौरवमयी इतिहास लिखवाया गया। *"उदित होता सूर्य"* उनका राजचिन्ह है। "सारे विश्व पर हमने राज्य किया है" यह जापान के इतिहास में लिखवाया गया। उन्होंने अपना आदि-पुरुष भगवान सूर्य को

Remove Watermark Now

बनाया। आज जापान की अपने इतिहास के कारण ही अग्रिम पंक्तियों में गिनती होती है।

भारतवर्ष में अग्रवाल वैश्य बड़े ही शिक्षित और सम्पन्न हैं। इनका कोई इतिहास नहीं था। अतः अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा ने अपने 1920 के इलाहाबाद अधिवेशन में यह प्रस्ताव पास किया कि जो कोई अग्रवाल जाति का इतिहास लिखेगा, उसे 5000/- का पुरस्कार दिया जायेगा। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने यह इतिहास लिख दिया तथा इस पर पेरिस विश्वविद्यालय से उन्हें डाक्टरेट भी मिली। इस इतिहास से अग्रवालों के अन्दर असीम गौरव का अनुभव हुआ। श्री सत्यकेतु ने महाराजा अग्रसेन से अग्रवाल वंश का प्रारम्भ किया है। आज महाराजा अग्रसेन ऐतिहासिक पुरुष बन गये हैं। अग्रवालों के घर-घर में महाराजा अग्रसेन की मूर्तियाँ हैं। उनके मन्दिर हैं, उनके जलूस निकाले जाते हैं तथा प्रतिवर्ष उनकी जयन्ती बड़े ही धूम-धाम से मनाई जाती है। आज अग्रसेन अग्रवालों के प्रेरणा-स्रोत हैं। महाराजा अग्रसेन ने सारे अग्रवालों को गौरवान्वित करके, विश्व में विशिष्ट स्थान दिलाया है।

इस पुस्तक में मैंने, वैश्य जाति के लगभग साढ़े पाँच हजार वर्षों के गौरवमयी इतिहास को क्रमबद्ध करके, प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में वैश्य जाति अपनी उदारता, मानवता, समाजसेवा के लिए विख्यात रही है। अपनी विलक्षण प्रतिभा, अपनी उत्कृष्ट देशभक्ति, अपनी उत्कृष्ट प्रशासनिक क्षमता से वैश्य जाति ने, न केवल देश में, बल्कि विदेशों में भी ख्याति अर्जित की है। भारतवर्ष के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सॉंस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में वैश्य जाति के लोगों ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है तथा सम्पूर्ण विश्व में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया है। वैश्य जाति के इन्हीं रूपों का दिग्दर्शन

आपको इस पुस्तक में होता हुआ दिखाई देगा। मैंने अक्टूबर 2002 में *"वैश्य जाति की गौरवगाथा"* के नाम से, काव्य संग्रह के रूप में, एक पुस्तक लिखी थी। उसमें मैंने वैश्य जाति के गौरवमयी इतिहास का वर्णन किया था तथा वैश्य जाति के जाज्वल्यमान नक्षत्रों का वर्णन कविताओं के माध्यम से किया था। मेरी यह पुस्तक काफी लोकप्रिय हुई। परिणामस्वरूप मुझे वर्ष 2003 में *"वैश्य जाति की गौरवगाथा"* का द्वितीय संस्करण छपवाना पड़ा। इस पुस्तक से वैश्य जाति के लोगों के अन्दर असीम गौरव का अनुभव हुआ, साथ ही साथ अपने जाज्वल्यमान नक्षत्रों की जानकारी भी सभी बन्धुओं को प्राप्त हुई। उन्हीं बन्धुओं ने तथा अखिल भारतीय वैश्य महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष परम श्रद्धेय श्री प्रेम शंकर गर्ग ने मुझे *"वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास"* लिखने हेतु प्रेरित किया। अतः यह इतिहास आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ।

यद्यपि वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास इतना विशाल एवं इतना विस्तृत है, कि इसे कुछ पृष्ठों में प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है, परन्तु मैं यहाँ पर यह निवेदन करना चाहूँगा कि यह तो केवल हमारे गौरवमयी इतिहास की झाँकी है। वैश्य जाति का शौर्य, वैश्य जाति का त्याग, वैश्य जाति का स्वाभिमान तथा उसकी उज्ज्वल गौरवगाथा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगी।

यह ग्रन्थ व्यावसायिक पुस्तक न होकर सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। अतः कहीं-कहीं लेखकों एवं विद्वानों की थोड़ी सी सामग्री का यथावत उपयोग भी कर लिया गया है। मैं उन सभी विद्वानों एवं प्रकाशकों का अत्यन्त आभारी हूँ, जिनकी सामग्री का उपयोग मैंने इस ग्रन्थ में किसी भी रूप में किया है।

pdfelement
Remove Watermark Now

वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास का यह द्वितीय संशोधित संस्करण आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसमें मैंने प्रथम संस्करण की कुछ कमियों को दूर करने का प्रयास किया है।

इस पुस्तक में भी बहुत सी कमियाँ एवं गलतियाँ आपको दृष्टिगोचर होंगी। मेरा निवेदन है कि आप उन कमियों एवं गलतियों को मुझे सूचित करने की कृपा करें, ताकि अगले संस्करण में उनको सुधारने का प्रयास किया जा सके। साथ ही मेरा यह भी निवेदन है कि जिस भाव से अविभूत होकर मैंने यह इतिहास लिखा है उसी भाव से अविभूत होकर आप इसे पढ़ने का प्रयास करें तथा वैश्य एकता को पुष्पित एवं पल्लवित करने का प्रयास करें।

शान्ति स्वरूप गुप्त
के-220, शास्त्रीनगर, मेरठ

दो शब्द

वैश्य समाज का अतीत बहुत ही वैभवपूर्ण एवं गौरवशाली रहा है। जब तक वैश्य समाज में त्याग बलिदान एवं अपने उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठा रही, तब तक यह समाज देश का ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व का सिरमौर बना रहा। इतिहास में *"गुप्त वंश"* स्वर्णिम युग के रूप में जाना जाता है। आज भी *"गुप्त वंश"* के शासकों की कार्य प्रणाली कानून एवं अर्थव्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा होती है। देश की रक्षा के लिए भामाशाह का मेवाड़-गौरव महाराणा प्रताप के श्री चरणों में सर्वस्व समर्पण, आज भी वैश्य समाज के यश में चार चाँद लगा रहा है।

अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने में वैश्य समाज के गौरव राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, लाला लाजपतराय, डॉ० राम मनोहर लोहिया, डॉ० रघुवीर, सेठ जमनालाल बजाज, डॉ० भगवान दास आदि अनेक महानुभावों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देकर, वैश्य समाज को गौरवान्वित किया है। इसके साथ-साथ आध्यात्म क्षेत्र में, श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा काव्य क्षेत्र में श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द एवं राष्ट्र कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी का विशिष्ट स्थान रहा है।

वैश्य समाज के पूर्वजों ने शिक्षा के क्षेत्र में स्कूलों एवं कॉलिजों की स्थापना, स्वास्थ्य के क्षेत्र में अनेकानेक औषद्यालय, अस्पताल एवं चैरिटेबिल नर्सिंग होम, आम जनता के लाभार्थ कुएँ, प्याऊ, धर्मशालाएँ आदि के योगदान से राष्ट्र के चहुँमुखी विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आज देश में सर्वाधिक स्कूल, कॉलिज, हॉस्पिटल, धर्मशाला केवल वैश्य समाज की ही देन जो हम सब के लिए बहुत ही गर्व का विषय है।

वैश्य समाज युग-प्रवर्तक परम श्रद्धेय महाराजा अग्रसेन जी के समाजवाद, सद्व्यवहार एवं "सबको साथ लेकर चलो" की नीति के अनुरूप देश के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना अविस्मरणीय योगदान दे रहा है। वैश्य समाज द्वारा सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक उत्थान के लिए, किये गये कार्य, समाज के लिए सदैव ही अनुकरणीय रहेंगे। अग्रकुल प्रवर्तक महाराजा अग्रसेन जी द्वारा प्रतिपादित समाजवाद जिसमें अग्रोहा में आने वाले अपने प्रत्येक बन्धु को एक रुपया तथा एक ईंट का सहयोग प्रदान करना, समाजवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है। ऐसा अनुपम उदाहरण विश्व में अन्यत्र नहीं मिलेगा।

आज बड़े दुःख का विषय है कि हम अपने गौरवशाली इतिहास को भूलते जा रहे हैं तथा आपसी द्वेष-भावना में एवं स्वार्थपरता में लिप्त हो रहे हैं जिससे वैश्य समाज अवनति की ओर अग्रसर है। परम श्रद्धेय महाराजा अग्रसेन द्वारा बनाये गये समाजवाद, त्याग एवं संघर्ष जैसे महान आदर्शों को भूल कर आज वैश्य समाज के बन्धु, अपने गौरवशाली इतिहास को भी भूलते जा रहे हैं। आज हमारे समाज को सर्वाधिक आवश्यकता एकजुटता, त्याग, सद्व्यवहार, धर्मपरायणता, पारस्परिक सहयोग की है। इतिहास साक्षी है कि वैश्य समाज ने सदैव इन्हीं गुणों को प्रमुखता प्रदान कर अपनी एक विशिष्ट पहचान एवं प्रतिष्ठा बनाये रखी है।

श्री शान्ति स्वरूप गुप्त जी ने वैश्य समाज के वर्तमान परिदृश्य पर चिन्तन-मनन के उपरान्त *"वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास"* नामक एक ऐसे अलौकिक महान ग्रन्थ की रचना की है, जिसकी वैश्य समाज में व्याप्त निराशा एवं अज्ञानता को दूर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी। उससे पूर्व भी श्री शान्ति स्वरूप गुप्त जी ने, वैश्य जाति के ऊपर नित्य प्रति उपेक्षापूर्ण एवं

अपमान जनक वातावरण से उद्वेलित होकर, वैश्य जाति की *"गौरवगाथा"* जैसी क्रान्तिकारी पुस्तक लिखी थी। जिसके द्वारा वैश्य समाज में नई स्फूर्ति एवं जागरूकता पैदा करने का सकारात्मक एवं प्रशंसनीय कार्य श्री शान्ति स्वरूप गुप्त द्वारा किया गया है।

वर्तमान पुस्तक में वैश्य समाज के शौर्यपूर्ण इतिहास की गौरवशाली संस्मरणों की प्रस्तुति, अद्वितीय एवं प्रभावशाली ढंग से की गई है। ग्रन्थ की भाषा सारगर्भित, सरल तथा प्रवाहपूर्ण है। जो हृदय पर अमिट छाप छोड़ती है।

मैं सभी वैश्य समाज के सम्मानित बन्धुओं से आग्रह करता हूँ कि प्रत्येक वैश्य परिवार में *"वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास"* की यह पुस्तक अवश्य ही होनी चाहिए तथा प्रत्येक वैश्य परिवार के बन्धु एवं बहिन को इस पुस्तक को पढ़ना चाहिए जिससे वर्तमान समय में *"वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास"* पुस्तक वैश्य जाति को एक नई दिशा तथा नया आयाम प्रदान करेगी।

अन्त में, मैं श्री शान्ति स्वरूप गुप्त की इस पहल को धन्यवाद देता हूँ तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

नरेश चन्द्र गुप्त
पूर्व प्रधानाचार्य,
डी० एन० इन्टर कॉलिज, गुलावठी
(उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सम्मानित)
कार्यकारी अध्यक्ष,
अखिल भारतीय वैश्य महासभा

pdfelement
Remove Watermark Now

प्रस्तावना

श्री शान्ति स्वरूप गुप्त जी से मेरा परिचय कुछ समय पूर्व ही एक वैश्य सम्मेलन में हुआ था। श्री गुप्त जी के क्रान्तिकारी विचार, देश के प्रति समर्पित भावना तथा वैश्य समाज को एक माला में पिरोने के प्रयासों ने ही मुझे *"वैश्य समाज मेरठ महानगर"* से जोड़ दिया। वैसे भी जिस देश के राष्ट्रपिता वैश्य हों, उस समाज से जुड़े रहना, मेरे लिए एक गर्व की अनुभूति है। वैश्य समाज के उत्साहित कार्यकर्ताओं के प्रयासों से ही, यह समाज अपना सम्मान बनाये हुए है। श्री विनीत अग्रवाल शारदा, श्री सुशील कृष्ण गुप्त, श्री कृष्ण गोपाल गोयल, श्री अमित कुमार गुप्ता आदि हम लोग विचार-विमर्श करते रहते हैं तथा श्री शान्ति जी को देशप्रेम व वैश्य समाज के बारे में और अधिक लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

आज देश का प्रत्येक क्षेत्र विज्ञान की नित नई सीढ़ियाँ चढ़कर औद्योगिक क्रान्ति के युग में तो प्रवेश कर चुका है, परन्तु हमारे बच्चे व युवा वर्ग अपने पूर्वजों के उच्च आदर्शों एवं संस्कारों को, अपने में समाहित करने में असमर्थ होते जा रहे हैं। यहाँ तक कि उनको अपने पूर्वजों के बारे में भी अधिक जानकारी नहीं है। इसके लिए हमारा भी दायित्व है कि हम युवा वर्ग का रुझान इस ओर पैदा करें। जब माता-पिता को ही, अपने पूर्वजों के बारे में मालूम नहीं होगा, तब वह अपने बच्चों को, इसका ज्ञान कैसे दे सकेंगे? कितना दान-बलिदान किया है हमारे पूर्वजों ने? यही सब पढ़कर व सोचकर, हमारा मन रोमांचित हो उठता है। स्वयं भी कुछ कर गुजरने की दिल में चाह जाग उठती है। श्री गुप्त जी का एक लेख *"गौरवमयी वैश्यजाति की दुर्दशा क्यों?"* मैंने पढ़ा था। यह लेख बहुत ही क्रान्तिकारी एवं प्रभावमयी तथा ओजस्वी था। इसका कारण है इसका जीवन की सच्चाईयों पर

आधारित होना। हम सभी को यह लेख अपने बच्चों के साथ बैठकर बतियाना चाहिए जिससे हमारे समाज के बच्चों में देश प्रेम और वैश्य प्रेम जागृत हो सके और पूर्वजों की मेहनत पर पानी ना फिरने पाये। हमारे पूर्वजों ने जो राष्ट्र प्रेम की बेल लगाई है, हम सब उस बेल में इस कदर लिपट गए हैं कि हम चाहकर भी उससे अलग नहीं हो सकते, भले ही हमारे शरीर के दो टुकड़े क्यों न हो जाये।

गुप्त जी का एक और काव्य संग्रह *"वैश्यजाति की गौरवगाथा"* को पढ़कर व इसका मनन करने से देश व समाज में क्रान्तिकारी आन्दोलन आयेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। ईश्वर की कृपा से मैं भी कुछ सेवा की भावना रखती हूँ और इसी भावना को दिल में संजोकर मैंने इस काव्य-संग्रह की कुछ कविताओं को अपने स्वरों में बाँधने का एक तुच्छ सा प्रयास किया है। साथी भाईयों के आग्रह करने पर, इसे सी. डी. का रूप दिया गया है। हमें अपने घरों में सुबह इन कविताओं को सुनकर, अपने पूर्वजों के बलिदान का स्मरण करके, नतमस्तक होना चाहिए।

श्री गुप्त जी द्वारा लिखित *"वैश्यजाति का गौरवमयी इतिहास"* पुस्तक (मैं तो इसे ग्रन्थ ही कहना चाहूँगी) को, इन्होंने कई अध्यायों में बाँटा है। इस आधुनिकीकरण में भी हमारी समस्याएं वैसी की वैसी बनी हुई हैं। सामाजिक रीति-रिवाज, जात-पात, अंधविश्वास, धार्मिक कट्टरता, लाचार और निर्धन का शोषण, अमर्यादित आचरण आदि हमारे समाज में उसी तरह काली घटा की भाँति छाई हुई हैं जैसे पहले के युग में थी। गुप्त जी की कलम इन्हीं समस्याओं पर आधारित है। उनकी ये भावनाएं मानस मन की भावनाओं को स्पर्श करती हुई, चली जाती हैं और हृदय के कोने-कोने को झंकृत कर देती हैं।

pdfelement
Remove Watermark Now

इस ग्रन्थ को धैर्यपूर्वक पढ़ते जाइयेगा, हमें खुद महसूस हो जाएगा, अरे! ऐसे विशाल हृदय वाले थे हमारे पूर्वज। कितने बलिदान किये हैं, उन लोगों ने, हम तो कहीं भी कुछ भी नहीं हैं। दिल में एक जोश भर जाता है, लगता है- *"बढ़ो- आगे बढ़ो और बढ़ो, बढ़ते ही जाओ।"* क्या हमारे पूर्वजों की मेहनत बेकार जायेगी? नहीं बिल्कुल नहीं। लेखक ने बीच-बीच में अपनी बात कविताओं के माध्यम से कही है, यह उन्होंने मेरे विशेष आग्रह करने पर ही किया है। उनका कवि मन है, कि शांत ही नहीं होता, अन्दर एक ऐसी लगन है, जो कुछ कर गुजरने की चाह रखती है। कहीं-कहीं अच्छाई और बुराई के मध्य संघर्ष को भी दर्शाया है, लेखक ने। इतिहास गवाह है कि हमारे समाज को जब-जब मुसीबतों ने घेरा है, तब-तब ऐसे ही लेखकों की जरूरत पड़ी है।

कहते हैं कि *"कलम की ताकत तलवार से कम नहीं होती।"* कलम का जादू जब चलता है, तो दिल और दिमाग को झकझोर देता है। ऐसा जादू है श्री गुप्त जी की कलम में। वैसे तो श्री गुप्त जी के व्यक्तित्व व उनके ग्रन्थ की व्याख्या बहुत विस्तार से की जा सकती है, जो कि सम्भव नहीं है, जितना भी कहा जाये कम है। इसके एक अध्याय में वैश्य जाति की विशेषताएं हैं। हमारे पूर्वज किन-किन वजह से विशेष रहे हैं, उनकी व्याख्या है। उनकी क्या-क्या खूबियाँ रही हैं। हम सभी के अन्दर कुछ ना कुछ छुपा हुआ है। जरूरत है तो बस अपने अन्दर झाँककर देखने की है। हम यदि खुद भी थोड़ा सा मन्थन करें, तो हमारी प्रतिभा भी ऐसे ही निखरकर आयेगी, जैसे दही बिलोने पर मक्खन ऊपर तैर आता है, बस थोड़े से प्रयास की जरूरत है। इसमें *"वैश्य जाति का उद्भव और विकास"* का भी सुन्दर वर्णन किया है, लेखक ने। यूँ तो वैश्य जाति का काफी विकास

हुआ है लेकिन अभी भी इसकी रफ्तार बहुत धीमी है। हमें तो काफी आगे होना चाहिए था। हम किस प्रकार अपना थोड़ा सा सहयोग देकर इसको चरम पर पहुँचा सकते हैं, यही लेखक की मनोभावना है।

इस ग्रन्थ के एक अध्याय में *"वैश्य जाति का वैभव और ऐश्वर्य"* का बखान भी बड़े ही ओजस्विता के साथ किया गया है। भारतीय समाज अत्याधुनिकीकरण के कारण तेजी से परिवर्तित हो रहा है। इसकी मान्यताएँ और मूल्य बदल रहे हैं। ऐसे समय में, आदर्शों और मूल्यों को स्थापित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। इसी दृष्टि से श्री शान्ति जी ने इस ग्रन्थ में कुछ ऐसे विचार संकलित किये हैं, जिससे हमारा वैश्य वर्ग कुछ प्रेरणा ले सकेगा तथा उसके अन्दर एक नवीन स्फूर्ति एवं नव जागरण का उदय होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

श्रीमती रेखा गुप्ता
प्रदेश महामन्त्री
अखिल भारतीय महिला वैश्य महासभा (उत्तर प्रदेश)
ई-227, शास्त्रीनगर, मेरठ।

pdfelement
Remove Watermark Now

आधार से आभार तक...

आधार...

अप्रैल 2004 तथा जून 2004 में मैंने परम पूज्य श्री श्री रविशंकर जी द्वारा चलाये जा रहे *"आर्ट ऑफ लिविंग"* के कोर्स किये। उनसे मेरे जीवन की दिशा और दशा दोनों ही बदल गई। परम पूज्य गुरूदेव का आशीर्वाद मेरी प्रेरणा और मेरा आधार है।

केवल पाँच वर्ष तक ही, जिनकी सबल बाँहों का सहारा मुझे मिल सका, ऐसे सन्त स्वरूप पिता स्वर्गीय श्री सीताराम के आशीर्वाद ही मेरी प्रेरणा हैं और उनकी मधुर स्मृति मेरा आधार है।

पिता की मृत्यु के बाद जिनके आँसुओं को मैंने निकटता से देखा, जो त्याग, तपस्या और समर्पण की प्रतिमूर्ति थी। ऐसी माँ, स्वर्गीय श्रीमती फूलवती देवी, जिनकी ईश्वर के प्रति अनन्य भक्ति तथा आध्यात्मिक प्रेम ही, मेरी प्रेरणा है और उनकी पावन स्मृति मेरा आधार है।

दो बड़े भाईयों, एक बड़ी बहिन जिनकी गोद में खेला और बड़ा हुआ, श्री तोताराम गुप्ता एवं श्री कान्ति प्रसाद गुप्ता तथा बहिन श्रीमती द्रौपदी देवी, जिनका स्नेह और आशीर्वाद आज भी मेरे साथ है, तथा छोटा भाई ब्रिज मुरारी गुप्ता इसका प्यार आज भी मुझे मिल रहा है, मेरा सम्बल है, मेरा आधार है।

आभार...

मैं उन सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया है। उसमें प्रमुख हैं मेरे प्रेरणा सोत परम श्रद्धेय श्री

प्रेम शंकर गर्ग (राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय वैश्य महासभा), श्री नरेश चन्द गुप्ता (कार्यकारी अध्यक्ष अखिल भारतीय वैश्य महासभा), श्री सुशील कृष्ण गुप्ता (कोषाध्यक्ष अखिल भारतीय वैश्य महासभा), श्री हरविलास गुप्ता (मुख्य संरक्षक अखिल भारतीय वैश्य महासभा), श्री विनीत अग्रवाल शारदा- प्रान्तीय अध्यक्ष अखिल भारतीय वैश्य महासभा उत्तर प्रदेश, श्रीमती रेखा गुप्ता- प्रान्तीय महामन्त्री अखिल भारतीय वैश्य महिला महासभा उत्तर प्रदेश, जिन्होंने वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास लिखने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त मैं आभार व्यक्त करता हूँ श्री नरेन्द्र बंसल गाजियाबाद, श्री ओमप्रकाश जालान बुलन्दशहर, श्री ललित तारा- गीतकार, कवि एवं साहित्यकार, श्री आनन्द प्रकाश अग्रवाल (मेरठ रत्न), श्री अजय गुप्ता (वासु आटो मोबाइल्स), श्री श्याम मोहन गुप्ता, श्री अम्बरीश गुप्ता जिन्होंने मुझे सदैव उत्साहित किया। जिसमें मुख्य रूप से श्री अजय रस्तौगी (मै0 चित्रा प्रकाशन), श्री अनिल अग्रवाल (ग्रीन चैनल पब्लिकेशन), श्री योगेन्द्र कुमार गुप्ता (नेशनल हैण्डलूम इन्डस्ट्रीज), श्री प्रदीप सिंघल, श्री नानक चन्द मित्तल, श्री दीपक मित्थल (अनु बुक्स), श्री ए0 के0 गर्ग, श्री बालक राम गर्ग, मेरठ तथा श्री ओम प्रकाश गोयल (हापुड़)। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय वैश्य महासभा के सम्मानित सदस्यों एवं सभी मित्रों का भी मैं हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने इस पुस्तक को छपवाने में मेरी आर्थिक मदद की।

शान्ति स्वरूप गुप्त
के-220, शास्त्रीनगर, मेरठ

pdfelement
Remove Watermark Now

सन्दर्भ पुस्तकों की सूची

1. वैश्य समुदाय का इतिहास (पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध)
   लेखक- *डॉ० रामेश्वर दयाल गुप्त*
2. अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल
   लेखिका- *डॉ० स्वराज्य मणि अग्रवाल*
3. भारतवर्ष का सम्पूर्ण इतिहास, 1526 से अब तक
   लेखक- *प्रो० श्री नेत्र पाण्डेय*
4. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन तथा भारतीय संविधान
   लेखक- *पुखराज जैन*
5. मध्यकालीन इतिहास की गाइड
   प्रकाशन केन्द्र लखनऊ-7
6. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य
   लेखक- *प्रकाश नगायच*
7. अग्रोहा एक ऐतिहासिक परिचय
   लेखक- *डॉ० चम्पालाल गुप्त*
8. वीरता की विरासत
   प्रकाशक- *अग्रोहा विकास ट्रस्ट*
9. एक ईंट एक रुपया
   लेखक- *ओम प्रकाश गर्ग 'मधुप'*
10. अग्रोहा धाम (कविताओं में)
    सम्पादक- *डॉ० कमल किशोर गोयन्का*
11. श्री अग्रभागवत
    शोध, संकलन एवं भाष्यकार
    श्री राम गोपाल अग्रवाल 'बेदिल'
12. हरिश्चन्द्र वंशीय समाज का इतिहास
    संकलन- *जितेन्द्र नाथ रस्तौगी*

विषय सूची

क्र०सं०	अध्याय	पृष्ठ सं०
1	इतिहास का महत्व	1-5
2	वैश्य जाति की विशेषताएँ	6-19
3	वैश्य जाति का उद्‌भव एवं विकास	20-35
4	वैश्यों का वैभव और ऐश्वर्य	36-55
5	वैश्य जाति में उपजातियों का सृजन	56-67
6	वैश्य समाज की महान विभूतियाँ	68-103
7	अग्रवालों का इतिहास	104-134
8	अग्रसेन, अग्रवाल, अग्रोहा	135-170
9	अग्रवालों की अन्य उपजातियाँ	171-183
10	[illegible] और बंक	184-192
11	चतुरसेनी वैश्यों का इतिहास	193-198
12	वार्ष्णेय वैश्यों का इतिहास	199-203
13	केसरवानी तथा गहोई वैश्यों का इतिहास	204-207
14	महौर, माथुर, सहरालिए वैश्यों का इतिहास	208-211
15	मद्धेशिया वैश्य, गुलहरे वैश्य, हलवाई या मोदनवाल वैश्यों का इतिहास	212-216

क्र0सं0	अध्याय	पृष्ठ सं0
16	वैश्य जाति के विभिन्न उपवर्गों का इतिहास	217-222
17	कुछ अन्य वैश्य उपजातियों का इतिहास	223-229
18	वैश्यों के लिए महालक्ष्मी पूजन	230-235
19	वैश्यों का सूर्यवंश से सम्बन्ध	236-244
20	गौरवमयी वैश्य जाति की दुर्दशा क्यों	245-262
21	समाज को बदल डालो	263-272
22	भावी चुनौतियों का सामना कैसे करें	273-285

◆ ◆ ◆

अध्याय-1

"इतिहास का महत्व"

जिस समाज का अपना इतिहास नहीं होता है, वह समाज कभी शासक नहीं बन पाता है, क्योंकि इतिहास से प्रेरणा मिलती है, प्रेरणा से जागृति पैदा होती है, जागृति से सोच बनती है, सोच से ही ताकत बनती है, ताकत से शक्ति बनती है और शक्ति से ही तो शासक बना जाता है, बिना शक्ति के कोई शासक बन ही नहीं सकता।

वैश्य जाति का इतिहास गौरवमयी, ऐश्वर्यमयी, वैभवमयी, आलोकमयी एवं प्रकाशमयी है। अपने गौरवमयी इतिहास का हमें ज्ञान होना चाहिए कि आज से लगभग 5100 वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेन ने एक सुव्यवस्थित राज्य का आदर्शस्वरूप इस देश को प्रदान किया। उन्होंने एक जनहितकारी राज्य की अवधारणा को मूर्तरूप दिया तथा एक आदर्श की स्थापना करके सम्पूर्ण विश्व के समक्ष एक *"मॉडल राज्य"* प्रस्तुत किया।

इस राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में महाराजा अग्रसेन ने तत्कालीन बिखरी हुई राष्ट्रीय शक्तियों और जातीय स्फुलिंगो को समेटा-बटोरा, पुष्पित-पल्लवित तथा एकत्रित किया और उनको चिरकाल के लिए सशक्त राष्ट्रीयता के सूत्र में आबद्ध कर दिया। देश की एकता-अखण्डता, शान्ति और समृद्धि के लिए, महाराजा अग्रसेन जी ने जो आदर्श उपस्थित किए उसके लिए वे सदा वन्दनीय रहेंगे। इसीलिए आज भी वे सम्पूर्ण वैश्य जाति के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

गुप्त काल भारतीय इतिहास का स्वर्ण काल है। महाराजा चन्द्रगुप्त प्रथम ने इसकी नींव डाली तथा इसमें समुन्द्रगुप्त,

pdfelement
Remove Watermark Now

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, कुमार गुप्त, स्कन्दगुप्त, पुष्यगुप्त, नृसिंह गुप्त जैसे प्रतापी राजा हुए हैं। इस वंश ने लगभग 300 वर्षों तक राज्य किया। यह काल भारतीय इतिहास का स्वर्णिम काल माना जाता है। गुप्त काल के ये महान नरेश हमारे लिए आज भी प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

वर्धन वंश में अनेक प्रतापी राजा हुए हैं लेकिन महाराजा हर्ष वर्धन इनमें सबसे प्रतापी राजा हुए हैं। इनकी दानवीरता की प्रशंसा इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में आज भी अंकित है तथा ये आज भी हमारे प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

दिल्ली सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य (हेमू) 20 जनवरी 1556 से 5 नवम्बर 1556 तक लगभग 10 माह तक दिल्ली की गद्दी के सम्राट रहे। उनका गौरव, उनका त्याग, उनका अदम्य साहस सदैव याद किया जाता रहेगा तथा ऐसे जाज्वल्यमान नक्षत्र से वैश्य जाति को सदैव ही प्रेरणा मिलती रहेगी।

सेठ भामाशाह का देशप्रेम भी सदैव ही भारतीय इतिहास में याद किया जाता रहेगा। आज भी मेवाड़ के विजय स्तम्भ पर सेठ भामाशाह का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। उनकी उत्कृष्ट देशभक्ति की गाथा सदैव ही हमें प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

सम्पूर्ण भारतवर्ष में वैश्य जाति की जनसंख्या लगभग तेरह करोड़ है, परन्तु इतनी बड़ी जनसंख्या में होने के बावजूद भी, वैश्य जाति का राजनैतिक क्षेत्र में वह स्थान नहीं है, जो होना चाहिए था। इसका कारण है कि हम अपने गौरवमयी इतिहास को भूलते जा रहे हैं। यह निश्चित तथ्य है कि जब तक हम राजनीति में अपना वजूद कायम नहीं करेंगे, तब तक

सामाजिक क्षेत्र में भी हमारा वजूद कायम नहीं होगा क्योंकि राजनीतिक सुधार तथा सामाजिक सुधार एक ही गाड़ी के दो पहिये हैं, जिनमें से एक के बिना दूसरे पहिये पर गाड़ी नहीं चल सकती, दोनों की समान आवश्यकता है।

राष्ट्र के उत्थान में वैश्य जाति का अपूर्व योगदान रहा है। मैं यहाँ पर वैश्य जाति के उन महान देदीप्यमान नक्षत्रों का नाम दे रहा हूँ जो कि भारत राष्ट्र की महान विभूतियाँ हैं तथा इन महान विभूतियों के सम्मान में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किये हैं:-

1. महाराजा अग्रसेन, 2. चन्द्रगुप्त मौर्य, 3. सेठ भामाशाह, 4. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, 5. कस्तूरबा गांधी, 6. लाला लाजपत राय, 7. भारत रत्न डॉ0 भगवान दास, 8. सेठ जमनालाल बजाज, 9. राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त, 10. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, 11. सर गंगाराम, 12. डॉ0 राम मनोहर लोहिया, 13 डॉ0 काशी प्रसाद जायसवाल, 14. घनश्याम दास बिडला, 15. डॉ0 राजा सर मुथैया चेट्टियार, 16. मोहन लाल सुखाडिया, 17. बाबू शिव प्रसाद गुप्त, 18. श्रीयुत श्री प्रकाश, 19. कविवर जयशंकर प्रसाद, 20. हनुमान प्रसाद पोद्दार, 21. श्यामलाल गुप्त 'पार्षद', 22. सन्त कवि सुन्दर दास, 23. डॉ0 जगदीश चन्द्र जैन, 24. आचार्य तुलसी, 25. पोट्टि श्री रामलु, 26. डी0 एन0 खोसला, 27. ब्रजलाल बियाणी, 28. बाबू गुलाबराय, 29. आनन्द ऋषि जी, 30. नरेन्द्र मोहन, 31. इन्द्र चन्द्र शास्त्री, 32. ज्योति प्रसाद अग्रवाल, 33. वालचन्द हीराचन्द, 34. पदमपत सिंहानिया, 35. ए0 एम0 एम0 मुरुगप्पा चेट्टियार, 36. जवाहरलाल दर्डा, 37. लाला दीन दयाल, 38. डॉ0 आर0 एम0 अलागप्पा चेट्टियार, 39. के0 के0 बिडला।

इन सभी महान विभूतियों पर सम्पूर्ण वैश्य समाज को गर्व है तथा ये महान विभूतियाँ आज भी वैश्य जाति के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

वास्तव में इतिहास उन चन्द महापुरुषों एवं वीरों की गाथा है, जिनमें अदम्य साहस, संयम, शौर्य और पराक्रम कूट-कूट कर भरा हुआ था। तुम्हारे अन्दर भी ये सारी शक्तियाँ बीज रूप में पड़ी हुई हैं। अपनी इन शक्तियों को तुम जितने अंश में विकसित करोगे उतने ही तुम महान बन जाओगे। अतः उठो और जागो महानता तुम्हारे चरण चूमने को तैयार बैठी है। तुम्हारे अन्दर ईश्वर की असीम सामर्थ्य छुपी हुई है। जिन व्यक्तियों ने अपनी सुषुप्त योग्यताओं को जगाया, वे महान बन गए और इतिहास के पन्नों में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया है। वे संसार में अपनी अमिट छाप छोड़ गए हैं। वे मरकर भी अमर हो गए हैं। प्रतापी राजाओं, महाराजाओं और सम्राटों से आच्छादित, तेजोमयी प्रकाश पुँज की किरणों की माला से मण्डित सूर्यवंश, जो कि सैंकड़ों मणियों से सुसज्जित, शोभित और आलोकित रहा है, जिसका तेज समस्त भुवनों में व्याप्त होकर आकाश में चमचमाया, जिसका यशोगान समस्त देवताओं, दैत्यों, मुनियों, किन्नरों, यक्षों, विद्वानों और सिद्ध पुरुषों द्वारा एक स्वर से किया गया। भारतीय संस्कृति आज भी जिनके सद्कर्मों और आदर्शों से पुष्पित-पल्लवित है। उन्हीं महापुरुषों में मनु, इक्ष्वाकु, पृथु, मान्धाता, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, रोहिताश्व, सगर, दिलीप, गंगा अवतारक भगीरथ, रघु, अज, दशरथ, भगवान श्री राम, लवकुश आदि महान नृपों ने सूर्यवंश में जन्म लिया। इसी सूर्यवंश का गहन सम्बन्ध वैश्य जाति से है। महाराजा अग्रसेन इसी सूर्यवंश में पैदा हुए। वैश्य जाति के गौरव 'गुप्त काल' के नरेश इसी सूर्यवंश की सन्तान हैं। रौनियार वैश्य, धूसर वैश्य एवं

रस्तौगी वैश्य सब सूर्यवंशी शाखाएं हैं। इसका विस्तृत वर्णन अगले अध्यायों में किया गया है। अतः अपने पूर्वजों का ज्ञान होना हमारे लिए अत्यावश्यक है, ताकि अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान को भी महान और तेजोमयी बनाया जा सके।

गर्व से कहो कि हम वैश्य हैं

हमें गर्व है कि हम वैश्य हैं, क्योंकि वैश्य जाति प्रेममयी, भक्तिमयी, श्रद्धामयी, विश्वासमयी एवं करूणामयी जाति है तथा इसके अन्तर्मन में मानवता के प्रति अगाध श्रद्धा, भक्ति, प्रेम तथा विश्वास का निर्मल झरना निरन्तर प्रवाहित होता रहता है।

वास्तव में वैश्य जाति के लोग अमेरिका और ब्रिटेन से भी ज्यादा तकनीकी निष्णात, जापान से भी ज्यादा राष्ट्रभक्त, चीन से भी ज्यादा चतुर तथा जर्मनी से भी ज्यादा श्रेष्ठ हैं। ऐसी महान वैश्य जाति की कुछ प्रमुख विशेषताओं का वर्णन अगले अध्याय में करेंगे।

◆ ◆ ◆

partelement
Remove Watermark Now

अध्याय-2

"वैश्य जाति की विशेषताएँ"

> *वैश्य जाति प्रेममयी, भक्तिमयी, श्रद्धामयी, उदारमयी, विश्वासमयी एवं करुणामयी जाति है। इसके अन्तर्मन से मानवता के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा, भक्ति व विश्वास का निरन्तर निर्मल झरना प्रवाहित हो रहा है।*
>
> *-शान्तिस्वरूप गुप्त*

वैश्य जाति की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का वर्णन हम निम्न प्रकार से कर रहे हैं :-

1. उत्कृष्ट देश भक्ति से परिपूर्ण समाज

वैश्य समाज के व्यक्ति उत्कृष्ट देश भक्ति से परिपूर्ण होते हैं। इसके लिए यहाँ पर मैं कुछ उदाहरण देना चाहूँगा जिससे यह स्वतः ही स्पष्ट हो जायेगा कि वैश्य जाति के लोगों में कितनी देश भक्ति है।

यह सभी जानते है कि जब महाराणा प्रताप अकबर से हल्दी घाटी का युद्ध हार गये थे तब वे जंगलों में घास की रोटी पर जीवन व्यतीत कर रहे थे। उसी समय सेठ भामाशाह उन्हें ढूँढ़ते हुए उनके पास पहुँचे और उन्हें अपनी सारी सम्पत्ति अर्पित कर दी थी। वह धन इतना था कि इससे एक लाख सेना पाँच वर्षों तक लड़ सकती थी। महाराणा प्रताप ने इस धन से सेना इकट्ठी की तथा अकबर पर चढ़ाई कर दी। उन्होंने चित्तौड़गढ़ को छोड़ कर सम्पूर्ण मेवाड़ अकबर से जीत लिया। उस जीत के बाद महाराणा प्रताप ने कहा कि इस जीत का असली हकदार सेठ भामाशाह है तथा इस गद्दी का भी असली हकदार सेठ भामाशाह

ही है। अतः महाराणा प्रताप ने सेठ भामाशाह का अभिनन्दन करने के लिए एक विशाल आयोजन किया तथा मन ही मन में यह तय किया कि राज सिंहासन पर एक बार भामाशाह को बैठाकर, तब मै इस सिंहासन पर बैठूंगा। जिस दिन यह आयोजन था, उस दिन उस जनसभा में सेठ भामाशाह नहीं आये। उन्हें खोजने के लिए उनके घर पर दूत भेजे गये। एक ऊँची पहाड़ी के नीचे वे मृत अवस्था में पड़े हुए थे। उनकी जेब में एक कागज का टुकड़ा मिला, उसमें लिखा था "प्रताप, आगे आने वाली पीढ़ियाँ शायद यह सोचेंगी, कि भामाशाह ने अपने अभिनन्दन कराने के लिए ही धन दिया था। यह धन जो मैंने तुम्हें दिया है, वह राष्ट्र से ही मिला था और राष्ट्र को ही मैंने समर्पित कर दिया। मैंने तुम्हारे ऊपर कोई अहसान नहीं किया। मैंने केवल अपने कर्तव्य का पालन ही किया है और मेरा अभिनन्दन उस दिन हो जायेगा, जिस दिन तुम चितौड़गढ़ को जीत लोगे।" भामाशाह के इस पत्र को पढ़कर प्रताप की आँखों में आँसू आ गये। उसके मुख से निकला कि "जिस देश में ऐसे महान व्यक्ति हों, क्या वह देश कभी गुलाम रह सकता है?" प्रताप ने तभी चितौड़गढ़ को मुगलों से मुक्त कराया तथा मेवाड़ में एक बड़ा भारी स्तम्भ बनवाया, उस स्तम्भ पर आज भी सेठ भामाशाह का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। यदि ऐसे विचार सभी देशवासियों के हो जायें तो यह देश दुनिया का सिरमौर बन सकता है। आज हमें अपने अधिकार तो याद हैं, लेकिन अपने कर्तव्यों को हम भूल गये हैं।

दूसरा उदाहरण सेठ जमना लाल बजाज का है। उन्होंने भी देश को आजाद कराने के लिए ब्लैंक चैक बुक महात्मा गाँधी के चरणों में रख दी थी। देश की आजादी में सेठ जमना लाल बजाज के महान योगदान को कोई नहीं भुला सकता।

Remove Watermark Now

तीसरा उदाहरण सेठ बालचन्द्र का है, एक टनल की खुदाई के ठेके को सेठ बालचन्द्र ने एक करोड़ में लिया था। उसी को एक विदेशी कम्पनी कई करोड़ में लेना चाहती थी। जब विदेशी कम्पनी को ठेका नहीं मिला, तब उसने कहा कि क्या आपके पास टनल की खुदाई कराने हेतु इंजीनियर हैं? सेठ बालचन्द्र ने कहा कि नहीं हैं। मैं इस कार्य हेतु विदेश से विशेषज्ञ इंजीनियर बुलाऊँगा। लेकिन देश का करोड़ों रूपया विदेश नहीं जाने दूँगा। यदि आपको यह ठेका मिल जाता, तो आप इस ठेके से करोड़ों रूपये कमाकर विदेश ले जाते। मैं अपने देश के धन को इस तरह बरबाद नहीं होने दूँगा। विदेशी व्यक्ति सेठ बालचन्द्र की देशभक्ति पर आश्चर्य चकित हो गया।

मेरे पास वैश्य जाति की देश भक्ति के अनेकों उदाहरण हैं। लेकिन अब मैं दूसरी विशेषताओं का वर्णन करता हूँ।

2. अत्यधिक ईमानदारी से परिपूर्ण समाज

वैश्य जाति के लोग अपने कार्यों को बड़ी ईमानदारी के साथ सम्पन्न करते हैं। यदि कहीं पर लिखा मिल जायें कि "अग्रवाल भोजनालय" केवल इस नाम को पढ़कर ही व्यक्ति के अन्दर यह भावना आ जायेगीं कि यह भोजनालय साफ-सुथरा तथा स्वादिष्ट होगा तथा इसके मालिक में ईमानदारी, पवित्रता और स्वच्छता होगी। कहीं कहीं हमें लिखा मिलता है कि "गुप्ता ज्वैलर्स", इसे पढ़कर व्यक्ति यह महसूस करता हैं कि यह वैश्य जाति के लोगों की दुकान है। अतः यहाँ विश्वसनीय सामान ही मिलेगा।

उत्तर प्रदेश में श्री चन्द्रभानु गुप्त मुख्यमंत्री बने। उन पर कोई व्यक्ति भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा सकता। उन्होंने अपनी वसीयत में लिखा कि "मैंने अपना सारा जीवन एक फकीर की भाँति जिया।"

श्री रामप्रकाश गुप्ता को मुख्यमन्त्री के पद से उनकी अत्यधिक ईमानदारी के कारण ही, दीवाली के दिन हटा दिया गया। जब बी0जे0पी0 की हाई कमान से उनके हटाये जाने का कारण अखबार वालों ने पूछा, तो उन्हें बताया गया कि "इतनी ईमानदारी अब राजनीति में नहीं चल सकती।" लेकिन मेरा कहना है कि यदि ऐसी ईमानदारी देश के सभी राजनीतिज्ञों में आ जाए, तो इस देश की दिशा व दशा दोनों ही बदल सकती हैं तथा यह राष्ट्र परम वैभवशाली बन सकता है।

तीसरा उदाहरण मैं यहाँ पर गाँधी जी का देना चाहूँगा। एक बार वर्धा में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था। सभा स्थल रेलवे स्टेशन से तीन मील दूर था। रेलवे स्टेशन से सभा स्थल तक का जाने का किराया घोड़ा ताँगे में दो पैसा (अधन्ना) लगता था। गांधी जी ने राजेन्द्र बाबू से पूछा राजेन्द्र बाबू पैदल आये हो या अधन्नी में आये। राजेन्द्र बाबू ने कहा कि अधन्नी में आया हूँ। गांधी जी ने राजेन्द्र बाबू को बहुत डाँटा तथा कहा कि जब तुम्हें देश की सत्ता मिल जायेगी, तब तुम देश को लूट-लूट कर खा जाओगे। राजेन्द्र बाबू बहुत रोये। लेकिन उन पर गांधी जी का इतना अत्यधिक प्रभाव पड़ा, कि जब वे राष्ट्रपति बने, तब उनके नाम जितनी भी पत्र-पत्रिकाएँ आती थी, उनकी रद्दी बेच कर सारा पैसा राजकीय कोष में जमा किया जाता था तथा जितनी वस्तुएँ उन्हें सम्मान में भेंट की जाती थी, वे सब राष्ट्रीय कोष में जमा होती थीं। राजेन्द्र बाबू द्वारा प्रारम्भ की गई यह परम्परा आज भी कायम है।

चौथा उदाहरण भी गांधी जी का ही है। सन् 1914 जब गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से वापिस आये तो वहाँ के उ परिचितों ने उनको भेंट में गहने, रूपये-पैसे दिये। उन सब इकट्ठा करके उन्होंने वहाँ पर स्थापित गाँधी सत्याग्रह ट्रस्ट

pdfelement
Remove Watermark Now

दान दे दिये। उनकी पत्नी कस्तूरबा को भी गहने व रूपये-पैसे मिले थे। उन्होंने देने में जब आनाकानी की और कहा कि ये तो मुझे मिले हैं, मैं क्यों दूँ? इस पर गाँधी जी ने कहा कि यह आपको इसीलिए मिले हैं कि आप गाँधी की पत्नी हो। कस्तूरबा को नहीं, बल्कि गाँधी की पत्नी को मिले हैं। इसलिये आप भी यह सब ट्रस्ट को दे दो। तभी कस्तूरबा ने अपने गहने, रूपये-पैसे सब ट्रस्ट को दे दिये।

वैश्य जाति की ईमानदारी के बहुत से उदाहरण हैं, जो इतिहास के पन्नों में भरे पड़े हैं।

3. वैश्य जाति के लिए कर्म ही पूजा है

वैश्य जाति के लोग कर्म प्रधान हैं। इनके लिए कर्म ही पूजा हैं, कर्म ही भगवान है। अपने कर्म की बदौलत ही वैश्य जाति के लोगों ने विदेशों में भी अपने प्रतिष्ठान कायम किये हैं। लक्ष्मी नारायण मित्तल ने दुनिया में स्टील किंग के रूप में ख्याति अर्जित की है। अग्रवालों तथा वैश्यों ने अपने कर्म के बल पर अपने प्रतिष्ठान देश-विदेश में कायम किये हैं तथा उन्हें बुलन्दियों के मुकाम तक पहुँचाया है। एक बार सेठ घनश्याम दास बिड़ला जी पानी के जहाज से विदेश जा रहे थे। उनके साथ देवानन्द भी यात्रा कर रहे थे। देवानन्द को पता चला कि बिड़ला जी भी इसी जहाज में यात्रा कर रहे हैं, तो वे उनके पास गये। वहाँ देखा कि बिड़ला जी अपने सेक्रेटरी को पत्रों के उत्तर लिखा रहे हैं। अतः उन्होंने ध्यान नहीं दिया। कुछ देर बाद देवानन्द जी बोले कि मैं फिल्म स्टार हूँ। बिड़ला जी ने कहा कि मैंने तो आज तक कोई फिल्म ही नहीं देखी। आप कौन सी फिल्म के स्टार हैं? देवानन्द जी ने कहा मेरी कई फिल्में गोल्डन जुबली व डायमण्ड जुबली मना चुकी हैं। बिड़ला जी ने कहा कि मैं नहीं जानता कि आप कौन हैं? कृपया आप अपना पूरा परिचय

दीजिए। तब देवानन्द जी ने कहा कि मेरा नाम देवानन्द हैं, मैं फिल्म स्टार हूँ, मेरी कई फिल्मों ने गोल्डन जुबली और डायमण्ड जुबली मनाई है। बिड़ला जी ने कहा कि मैंने आज तक कोई फिल्म ही नहीं देखी, मै फिल्म तो तब देखूं, जब मुझे कार्य से फुरसत मिले। मैं कर्म मे ही विश्वास करता हूँ, कर्म ही मेरे लिए पूजा है, कर्म ही भगवान है। देवानन्द जी अपने सामने उस महान कर्मयोगी को देखकर आश्चर्य चकित रह गये।

ऐसा ही उदाहरण महात्मा गांधी जी का भी है। वे भी महान कर्मयोगी थे। "गांधी शान्ति प्रतिष्ठान" द्वारा गांधी जी के सम्बन्ध में उनके क्षण-क्षण के कार्यों का ब्यौरा छपवाया गया है। उसके प्रत्येक खण्ड में '500 से अधिक पृष्ठ हैं। इस प्रकार बारह खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं। दुनिया में किसी भी व्यक्ति के कार्यों के इतने खण्ड आज तक प्रकाशित नहीं हो सके हैं। विश्व इतिहास में या तो भगवान श्री कृष्ण थे, जो कि एक सारथी होते हुए भी, महाभारत में सारे युद्ध का संचालन उन्हीं के द्वारा हुआ था, या फिर गांधी जी थे, जो कि कांग्रेस के पदाधिकारी न होते हुए भी सारे स्वतन्त्रता आन्दोलन के सूत्रधार रहे। सन् 1921 में देश में असहयोग आन्दोलन चल रहा था, लेकिन चौरी-चौरा में आन्दोलन हिंसक हो गया। वहाँ आन्दोलनकारियों ने थाने में आग लगा दी थी तथा पुलिस अधिकारी एवं कर्मचारी वहाँ जिन्दा जल गये थे। गांधी जी ने तभी असहयोग आन्दोलन पूरे देश में वापिस ले लिया था। जबकि उस समय कांग्रेस के अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे तथा लाला जी को इस घटना का पता बाद में चला। कितने महान कर्मयोगी थे गांधी जी एवं कितनी गहरी पकड़ थी उनकी स्वतन्त्रता आन्दोलन पर, यह इसी तथ्य से हो जाता है।

Remove Watermark Now

4. वैश्य जाति त्यागवादी है, भोगवादी नहीं

वैश्य समाज के लोग जीवन भर धन कमाते हैं और अपने शरीर पर गाढ़े का कुर्ता तथा मारकीन की धोती पहनकर पूरा जीवन व्यतीत कर देते हैं, लेकिन जब मरने का समय निकट आता है, तब कमाया हुआ सारा धन, किसी स्कूल, कालिज या धर्मशाला के लिए दे जाते हैं। एक उदाहरण देखिए–

एक बार लाला लाजपत राय के पास कुछ व्यक्ति चन्दा माँगने के लिए आये। लाला जी उस समय अपने नौकर को डाँट रहे थे कि तूने यह काँच के गिलासों का सैट गिरा कर, मेरा दो आने का नुकसान कर दिया। जो सज्जन चन्दा माँगने आये थे, वे सोचने लगे कि यह कंजूस व्यक्ति क्या देगा? यह दो आने के लिए अपने नौकर को कितना डाँट रहा है? अगर यह देने वाला होता तो नौकर को इतना नहीं डाँटता। कुछ देर बाद लाला जी ने उन लोगों से पूछा कि आप किस कारण मेरे पास आये हो, अपने आने का प्रयोजन बताइये। उन सज्जन व्यक्तियों ने बताया कि हम यहाँ पर एक कन्या इण्टर कालिज बनवाने के लिए आपसे कुछ मदद माँगने आये हैं। लाला जी ने चैक बुक निकाली और पचास हजार का चैक काट कर उन्हें दे दिया। वे सज्जन आश्चर्य चकित रह गये। जो व्यक्ति दो आने के लिए नौकर को इतना डाँट रहा था, उसने पचास हजार रूपये दे दिये। इस धनराशि में विद्यालय का पूरा भवन बनकर तैयार हो जायेगा। अतः हमें कहीं और जाना नहीं पड़ेगा। यह व्यक्ति तो बहुत ही महान है।

इसी प्रकार काँघला के रहने वाले, चन्दन लाल जी थे। उन्होंने अपनी सारी जमीन-जायदाद, बाग-बगीचा एक इण्टर कालिज के निर्माण हेतु दे दिया था। उनके सुपुत्र श्री आनन्द प्रकाश अग्रवाल जी यूनियन बैंक के महाप्रबंधक के पद से

सेवानिवृत्त हुए तथा मेरठ रत्न से विभूषित हुए। इन्होंने अपनी माताजी के नाम पर भी एक विद्यालय बनवाया है। इनका पूरा परिवार राष्ट्रवादी विचारों से ओतप्रोत है।

पूरे देश में स्कूल, कालिज, धर्मशाला वैश्य जाति की ही देन हैं। कितनी महान है यह वैश्य जाति। ये स्कूल, कालिज, धर्मशालाएं आज भी वैश्य जाति की गौरवमयी गाथा को गा रहें हैं तथा इनकी यशकीर्ति को अक्षुण्य बनाये हुए हैं।

5. मानवतावादी एवं करूणामयी दृष्टिकोण

वैश्य जाति मानवतावादी जाति है तथा उसके हृदय में करूणा की भावना सदैव ही प्रवाहित हाती रहती है। दिल्ली के सेठ उत्तम प्रकाश बंसल जी जाड़ों में 100 कम्बल तथा 100 रजाईयाँ अपने घर पर मँगा लेते थे तथा प्रतिदिन सुबह चार बजे घोडे ताँगे में बैठकर, चौराहों पर, स्टेशन पर, बस अड्डे पर जाकर देखते थे कि कौन व्यक्ति जाड़े में सिकुड़ा हुआ सो रहा है। उसके ऊपर लिहाफ उढ़ा देते थे। किसी के पास देखते कि फटे कम्बल में सोया हुआ हैं, उसके ऊपर नया कम्बल डाल देते थे। जब उत्तम प्रकाश पैदा हुए, तभी उनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। वे वजन तौलने वाली मशीन को लेकर स्टेशन के बाहर बैठ जाते थे तथा वजन तौलकर अपना गुजारा करते थे। लेकिन जब वे मरे तब वे करोड़पति थे।

इसी प्रकार मेरठ में सेठ अमीचन्द जी, जाड़ों में प्रातः चार बजे उठकर शहर के विभिन्न मौहल्लों में घूमते थे तथा यह देखते थे कि कौन सिकुड़ा हुआ सो रहा है। उसके ऊपर लिहा या कम्बल डाल कर चले आते थे। सोने वाले व्यक्ति को तो प ही नहीं चलता था कि कौन डालकर चला गया? वह सुबह उठ यही कहता कि रात्रि में कोई भगवान आया होगा और चुपच

pdfelement
Remove Watermark Now

डालकर चला गया होगा। उन्हीं के बेटे अरूण जैन जी हैं जो कि मेरठ में प्रथम मेयर बनें।

इसी प्रकार की घटना सरधने के पास के एक गाँव की है। वहाँ पर भगवाना नाम का एक हरिजन रहता था। उसकी दो बेटियों की शादी तय हो गयी थी। शादी का दिन पास आ गया, लेकिन उसके पास व्यवस्था कुछ भी नहीं हो पायी थी। वह गाँव के बाहर आकर पेड़ पर चढ़ गया। नीचे खड़े लोगों ने पूछा कि पेड़ पर क्यों चढ़ रहा हैं? उसने कहा कि मैं भगवान को देख रहा हूँ। कहते है कि शादी के तीन दिन पहले भगवान आता है। मेरे तो शादी के तीन दिन रह गये हैं। मैं पेड़ पर चढ़कर भगवान को देख रहा हूँ कि किधर से भगवान आयेगा। गाँव में लाला बुद्ध प्रकाश जी रहते थे। किसी ने उन्हें इसके बारे में बता दिया। वे दौड़े हुए आये। उन्होंने भगवाना को कहा नीचे उतर आओ। भगवाना ने कहा कि जब भगवान आयेंगे, तभी मैं नीचे उतरूगाँ। वहाँ उपस्थित लोगों ने कहा कि अरे बावले, भगवान आ गये हैं। तू जल्दी उतर कर उनके दर्शन कर ले। भगवाना नीचे आ गया। सेठ बुद्ध प्रकाश ने उन्हें शादी का सारा सामान दिला दिया और कहा कि ये दोनों मेरी बेटी हैं। मैं ही इनका कन्यादान करूँगा। सभी लोग सेठ बुद्ध प्रकाश की जय-जयकार करने लगे। बाद में सेठ बुद्ध प्रकाश जी सरधने में आकर रहने लगे थे।

ऐसी ही एक कथा सेठ गोविन्द दास की आती है। जबलपुर में रात को कर्फ्यू लग जाता था तथा दिन में हट जाता था। एक मुस्लिम सज्जन मिस्टर खान, अपने रिश्तेदार को स्टेशन छोड़ने आये। लेकिन लौटने में देर हो गई। कर्फ्यू का समय हो गया। अब वे क्या करें? वे एक गली में मुड़ गये। वहाँ उन्हें एक व्यक्ति माथे पर तिलक लगाये दिखाई दिया। तिलकधारी व्यक्ति, खाँ साहब की परेशानी को समझ चुके थे। उन्होंने खान साहब से

कहा कि आप बिल्कुल चिन्ता न करें, रात भर यहीं विश्राम करो, सुबह को कर्फ्यू उठ जायेगा, उठते ही घर चले जाना। खान साहब को, जैसे मुँह माँगी मुराद मिल गयी। रात्रि में उन्हें शैया उपलब्ध करायी गयी, सुबह नाश्ता कराया गया। जब खान साहब विदा होने लगे तो, उनके अश्रुधारा फूट पड़ी। उन्होंने कहा कि "आप साक्षात भगवान हैं।" ये तिलक धारी सज्जन हिन्दी के महान साहित्यकार तथा सांसद, सेठ गोविन्द दास थे। सेठ गोविन्द दास ने कहा कि हमारी संस्कृति में मेहमान को देवता कहा गया है। मैंने जो कुछ भी किया है, वह अपनी संस्कृति के अनुरूप अपने मानवता रूपी कर्त्तव्य का पालन ही किया हैं। यही है वैश्य जाति का महान मानवतावादी एवं करूणामयी दृष्टिकोण का भाव।

6. समाजवादी व्यवस्था के पोषक

वैश्य जाति सम्पूर्ण देश की सुख, शान्ति और समृद्धि की कामना करती है। सबसे पहले महाराजा अग्रसेन जी ने आज से 5100 वर्ष पूर्व समाजवादी व्यवस्था की परिकल्पना की थी। उनके राज्य में जो भी नया व्यक्ति आता था, उसे एक रूपया तथा एक ईंट दी जाती थी। इस प्रकार उसके पास एक लाख रूपया तथा एक लाख ईंट हो जाती थी। एक लाख ईंट से वह व्यक्ति अपना मकान बना लेता था तथा एक लाख रूपयों से वह अपना व्यापार प्रारम्भ कर देता था। ऐसी थी महाराजा अग्रसेन की समाजवादी व्यवस्था। इसी व्यवस्था को आज के युग में डा0 राम मनोहर लोहिया जी ने प्रतिपादित किया। उन्होंने सम्पूर्ण समाज के उत्थान की कामना की। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि जो भी पैसा किसी व्यक्ति के पास है, वह सम्पूर्ण समाज का है, न कि कि व्यक्ति विशेष का। इसी आधार पर उन्होंने सम्पूर्ण समाज सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, साँस्कृतिक तथा धार्मिक उत्थ की अवधारणा प्रस्तुत की। वास्तव में वैश्य जाति गंगा की त

pdfelement
Remove Watermark Now

पावन, कल्पतरु की तरह विशाल, आकाश की तरह महान तथा समुद्र की तरह गहन और गम्भीर है।

7. वैश्य जाति प्रगतिवादी है, अंधविश्वासवादी नहीं

वैश्य जाति वस्तुतः प्रगतिवादी है तथा अंधविश्वास की विरोधी है। वैश्य जाति ने हमेशा रुढ़िवाद, पोगापन्थ तथा कर्मकाण्ड का विरोध किया है। उसने सदैव मृत्युभोज तथा अवैज्ञानिक परम्पराओं का विरोध किया है। वैश्य जाति के लोगों ने धर्म को, विज्ञान पर आधारित बनाया। महावीर स्वामी ने जैन धर्म के द्वारा कर्मकाण्ड और पाखण्ड का विरोध किया था। इसीलिए वैश्य समाज के बहुत से लोगों ने जैन धर्म को अपनाया। वैश्य जाति के लोगों ने सदैव ही सत्य का आचरण करने पर बल दिया तथा कर्मकाण्ड और अंधविश्वास का विरोध किया। उनका व्यापार भी सत्य और शुचिता पर आधारित होता है। वैश्य जाति के लोगों ने जितना व्यापार में शुचिता, पवित्रता और सत्यता को स्थान दिया है, उतना और किसी जाति ने नहीं दिया। इसी शुचिता, पवित्रता और सत्यता के पक्षधर होने के कारण वैश्य जाति ने व्यापार में भी उन्नति की है तथा अपनी साख पूरे विश्व में फैलाई हैं। इसी कारण वैश्य जाति के प्रतिष्ठान पूरे विश्व में फैले हुए हैं।

विश्व में श्री कृष्ण ने सबसे पहले यह अवधारणा प्रस्तुत की थी कि बिना कर्मकाण्ड के भी व्यक्ति भक्तियोग, कर्मयोग और ज्ञानयोग के द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकता है। उन्होंने तामसी प्रवृत्ति के लोगों को भक्तियोग की शिक्षा दी और राजसी प्रवृत्ति के व्यक्तियों को बताया कि वे कर्मयोग के द्वारा मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, तथा सात्विक लोगों को ज्ञानयोग के द्वारा मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बतलाया। सम्पूर्ण समाज के लिए, उन्होंने रास्ता बतलाया जो जिसे अच्छा लगे, अपनाकर मोक्ष प्राप्त कर सकता

है। वैश्य जाति के लोगों ने अंधविश्वास, पोगापन्थ तथा कर्मकाण्ड को छोड़कर कर्मयोग के सिद्धान्त को अपना कर सच्चे कर्मयोगी बने। उन्होंने कर्म को ही पूजा माना तथा कर्म को ही भगवान माना। इसलिए कर्म के द्वारा सम्पूर्ण विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान कायम की एवं यश अर्जित किया। भगवान श्री कृष्ण के बाद गांधी जी ने भी कर्मवाद के सिद्धान्त को आगे बढ़ाया और अंग्रेजी साम्राज्य, जिसके राज्य में सूरज नहीं डूबता था, उनसे भी टक्कर ली। गांधी जी ने कभी भी पोगापन्थ, अंधविश्वास, पाखण्डवाद का समर्थन नहीं किया। इसीलिए उन्होंने छुआ-छूत को समाप्त कराया। मन्दिरों के कपाट हरिजनों के लिए खुलवाए तथा हरिजनों को मन्दिरों में प्रवेश कराया। वस्तुतः गांधी जी के विचार प्रगतिवादी थे। इसीलिए उन्होंने सम्पूर्ण देश का दौरा करके सम्पूर्ण देश को एक सूत्र में बाँध दिया था। उन्हीं के प्रयासों के कारण हम आजाद हुए।

8. वैश्य जाति अव्यवस्था की विरोधी तथा सुव्यवस्था की पोषक है

वैश्य जाति के लोग अव्यवस्था के विरोधी तथा सुव्यवस्था के पोषक हैं। इसीलिए वैश्य जाति के व्यवसायिक प्रतिष्ठानों में व्यवस्था पर बहुत ध्यान दिया जाता है तथा उनके प्रतिष्ठानों में सुव्यवस्था उच्च स्तर की पायी जाती हैं, लेकिन आज सम्पूर्ण देश में व्यवस्था जर्जर हो चुकी है। इसका कारण हैं कि देश की सत्ता में वैश्य जाति के लोग नगण्य हैं। आज जो लोग सत्ता में हैं वे व्यवस्था नहीं कर सकते। क्योंकि मैनेजमैण्ट एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा प्रबंधन करना सिखाया जाता है। हमारे नेता गण सिर्फ चुनाव में जीतना जानते हैं, उनके पास प्रबंधन की कला नहीं हैं। वे नहीं जानते कि देश में सुव्यवस्था और शान्ति कैसे कायम की जाए। हमारे नेता तो सिर्फ भड़काऊ भाषण देकर, देश

pdfelement
Remove Watermark Now

में साम्प्रदायिक दंगे करा सकते हैं या आंतकवादी घटनाओं को बढ़ावा दे सकते हैं। हमारे देश में साम्प्रदायिक दंगों के लिए, आतंकवाद के लिए, भ्रष्टाचार के लिए, अव्यवस्था के लिए कौन दोषी हैं? क्या हमारे सत्ता के शिखर पर बैठे नेता गण दोषी नहीं हैं? जिन लोगों को प्रबंधन की कला नहीं आती, उन लोगों को सम्पूर्ण देश के प्रबंधन का कार्य सौंप दिया गया है। यह भी एक विडम्बना ही है। इस देश की व्यवस्था के कुछ उदाहरण देखिये-

1. राहुल बजाज को एक अवर सचिव के पास चार घण्टे तक इंतजार करना पड़ा।
2. एक उद्योगपति की फाईल में एक सचिव की नोटिंग छः माह में लगी।
3. देश में लगभग चार करोड़ मुकदमें लम्बित है। यदि इसी रफ्तार से इन मुकदमों का निस्तारण हुआ तो कुल 350 वर्ष इनके निस्तारण में लग जायेंगे।
4. एक व्यक्ति को न्याय मिलने में औसतन 20 वर्ष लग जाते है।
5. देश के नेताओं का लगभग पाँच लाख करोड़ रूपया विदेशी बैंकों में जमा है।

मैंने यहाँ पर वैश्य जाति की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डाला हैं। इन्हें पढ़कर आपके हृदय में निश्चित रूप से गर्व और स्वाभिमान की अनुभूति होगी।

इस महान राष्ट्र भक्त, विनम्र और सहृदय वैश्य जाति की विशेषताओं को मैंने निम्न कविता के माध्यम से आपके सामने रखने का प्रयास किया हैं। इसे बार-बार पढ़िये और गर्व का अनुभव कीजिए-

हम औरों को अमृत पिलवाते.....

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

हम श्रेष्ठ पुरूष हैं इसीलिये, हम श्रेष्ठी कहलाते हैं।
हम औंरों को अमृत पिलवाते, स्वयं जहर पी जाते हैं।
सहते-सहते भार सभी का, स्वयं धरा बन जाते हैं।
भारत माता की आन-बान हित, अपना शीश कटाते हैं।
हम औंरों को अमृत पिलवाते, स्वयं जहर पी जाते हैं।

हम दानवता के भंजक हैं, और मानवता के रक्षक हैं।
हम संस्कृति के वाहक हैं, और कायरता के भक्षक हैं।
हम न्याय करें इस धरती पर, और न्यायशील कहलाते हैं।
हम दया-धर्म की रक्षा करते, और दयाशील कहलाते हैं।
हम औंरों को अमृत पिलवाते, स्वयं जहर पी जाते हैं।

हममें पृथ्वी जैसा बल हैं, हम करते नहीं प्रयोग कभीं।
हममें कुबेर का धन हैं, हम करते नहीं दुरूपयोग कभी।
हम देश-धर्म की रक्षा में ही, बल और धन दे जाते हैं।
हम मानवता की रक्षा में ही, सारा जीवन दे जाते हैं।
हम औंरों को अमृत पिलवाते, स्वयं जहर पी जाते हैं।

हम सुव्यवस्था के पोषक हैं, अव्यवस्था दूर भगाते हैं।
हम सुख-शान्ति के द्योतक हैं, अशान्ति दूर भगाते हैं।
हम भारत माँ के वीर पुत्र हैं, वीर- शिरोमणि कहलाते हैं।
हम श्रेष्ठ पुरूष हैं इसीलिए, हम श्रेष्ठी कहलाते हैं।
हम औंरों को अमृत पिलवाते, स्वयं जहर पी जाते हैं।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-3

"वैश्य जाति का उद्भव एवं विकास"

सृष्टि का निर्माण

सबसे पहले किसी कारणवश सूर्य से एक छोटा सा हिस्सा टूट कर सूर्य से अलग हुआ। वह आग का गोला अन्तरिक्ष में घूमता रहा। उससे अन्तरिक्ष में कुछ गैसों का उत्सर्जन हुआ। उन गैसों के संयोग और वियोग से जल की उत्पति हुई। वह जल वर्षा के रूप में लगातार बरसता रहा। आग का गोला धीरे-धीरे ठण्डा होता रहा और उसका ऊपर का भाग ठोस रूप बना जो पृथ्वी कहलाया। नीचे जल और गैसों का भण्डार ही रहा। रासायनिक एवं भौतिक क्रिया होने के फलस्वरूप पहाड़, नदी, महासागर बने। उसके बाद एक कोशिका वाले जीन बने। तत्पश्चात् सरल जीव बने। उसके बाद पेड़ पौधे बने, फिर अन्य जीव-जन्तुओं का धीरे-धीरे विकास होता गया, तत्पश्चात् पशु-पक्षी बने। चौरासी लाख योनियों के बाद या यह कहिये कि एक लम्बी वैज्ञानिक प्रक्रिया के बाद, मानव की उत्पति हुई और इस लम्बी प्रक्रिया में अरबों वर्ष लग गये।

मानव का विकास

सबसे पहले मानव ने पेड़ पर ही रहना सीखा था। उसके बाद उसने पेड़ पर घर बनाया। तत्पश्चात् उसने धरती पर अपना घर बनाया। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की खुदाई के बाद यह सिद्ध हुआ कि आज से लगभग 6000 वर्ष पूर्व एक विकसित सभ्यता भारतवर्ष में विद्यमान थी। सभ्यता के प्रारम्भिक चरण में मानव कन्दमूल फल खाता था। उसके बाद उसने धरती पर हल चलाकर अन्न पैदा करना प्रारम्भ किया।

वैश्य जाति का उद्भव

कहते है कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है। सभ्यता के प्रारम्भिक काल में मानव कबीलों के रूप में रहते थें। वे कन्दमूल-फल खाते थें। फिर कबीलों ने जमीन को बाँटना प्रारम्भ किया तथा अपनी सीमाएं बाँटनी प्रारम्भ की। तब एक कबीले के लोग दूसरे कबीलों की सीमा में घुसकर उनके दुधारू पशुओं को बलात छीनने का प्रयास करने लगे। इससे उन कबीले के लोगों को अपनी रक्षा करने के लिए बलशाली पुरूषों का संगठन बनाना पड़ा। जो हिंसक जानवरों से भी रक्षा करते थे तथा बाह्य शत्रुओं से भी रक्षा करते थे। उसके बाद जब आबादी बढ़ी, तब कबीलों में कार्यों का वितरण करना पड़ा। इस प्रकार श्रम विभाजन से धीरे-धीरे अनेकानेक जातियों का निर्माण होने लगा। जाति निर्माण में मुख्यतया दो मान्यताएँ प्रचलित है- प्रथम मान्यता हैं जिसमें अधिकतर विद्वानों ने यह माना हैं कि आर्य बाहर (मध्य एशिया) से भारत में आये। दूसरी मान्यता के अनुसार आर्य लोग भारत के ही मूल, निवासी हैं। दोनों मान्यताओं के सम्बन्ध में विद्वानों ने अपने-अपने तर्क प्रस्तुत किये हैं। मैं यहाँ पर दोनों मान्यताओं के सम्बन्ध में जातियों के उद्भव एवं वैश्य जाति के उद्भव पर प्रकाश डालना चाहता हूँ। यह आपके ऊपर निर्भर करता है कि आप कौन सी मान्यता को स्वीकार करते हैं। विद्वानों ने दोनों विषय में जो भी तर्क रखे हैं, उनका निरूपण भी हम करेगें। लेकिन सबसे पहले मैं उस मान्यता पर प्रकाश डालूँगा जिसमें विद्वानों ने यह माना है कि आर्य लोग बाहर से आए थे।

पहली मान्यता के अनुसार

"वैश्य भारत के मूल निवासी थे"

जब हम इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि आर्य लोग बाहर से आये थे। जिस समय आर्य लोग भारतवर्ष में आये, उस

pdfelement
Remove Watermark Now

समय भारत में पणि नाम की एक जाति यहाँ रहती थी। जो व्यापार करती थी तथा गोपालन करती थी। गाय के दूध से दही बनाना, क्रीम बनाना, घी बनाना तथा पनीर व छाछ बनाना जानती थी। यही जाति बाद में वणिक फिर वैश्य के नाम से जानी गयी। ऋग्वेद के अनुसार आर्यों को इन पणियों से टक्कर लेनी पड़ी। ऋग्वेद में पणियों और आर्यों की टक्कर का वर्णन आया है। यहाँ उसका वर्णन हम संक्षेप में करते हैं।

ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 108वें सूक्त में सरमा और पणि सम्वाद आया हैं। सरमा आर्यों के राजा की दूती थी। राजा को इन्द्र कहा गया है। इन्द्र ने सरमा को अपनी दूती बनाकर पणियों के पास इसलिए भेजा क्योंकि पणियों ने इन्द्र की गायों को बलात चुराकर पर्वत की गुफाओं मे छिपा दिया था।

पणि और सरमा का सम्वाद :

सरमा– मैं इन्द्र की भेजी दूती हूँ।

पणि– तू इस स्थान तक कैसे पहुँच गयी, यह रास्ता बहुत लम्बा है। तूने नदी कैसे पार की? तू क्यों आई हैं?

सरमा– तुम जो इन्द्र की गायों को लूट कर लाये हो, मैं उन्हें वापिस चाहती हूँ।

पणि– इन्द्र कैसा है। सरमा, तुम हमसे मिल जाओ और इन गायों में तुम्हारा भी हिस्सा हो जायेगा। (वास्तव में पणि कुशल राजनीतिज्ञ थे)।

सरमा– मेरा इन्द्र अपराजेय है। जब वह तुम पर आक्रमण करेगा, डर के कारण तुम जमीन पर लेट जाओगे।

पणि– देख ये वे गौएं हैं। इन्हें हमसे युद्ध किये बिना कोई नहीं ले जा सकता। हमारे पास आयुध भी तीक्ष्ण हैं (अर्थात पणि लोग

रक्षार्थ शस्त्र भी रखते थे)।

सरमा– हमारे बृहस्पति के बाण तुम्हें चैन नहीं लेनें देगें, तुम उनका मुकाबला नहीं कर पाओगे।

पणि– गौ–घोड़े तथा अन्य निधियों का खजाना हम इस पहाड़ की गुफा में दृढ़ता से बन्द करके, हम उसकी रक्षा कर रहे हैं, तू यहाँ व्यर्थ ही आई है।

सरमा– हमारे अंगिरस ऋषि यहाँ आयेंगे और बलपूर्वक गायों को ले जायेंगे।

पणि– तू हमारी बहन बन जा तथा कुछ गायों को लेकर हमारे साथ रह।

सरमा– मैं यह भाई बहिन पना नहीं जानती, तुम हमारी गायें वापिस कर दो।

सरमा वापिस चली जाती है तथा इन्द्र को सारा भेद दे देती है। इन्द्र, बृहस्पति व अंगिरस के साथ सेना लेकर आता है तथा गुफा को नष्ट करके पणियों को परास्त करके गायों को वापिस ले जाता है।

ऋग्वेद में एक मन्त्र में उल्लेख आता है कि पणियों ने अपनी गायों में दूध, दही और घी छिपा रखे थे अर्थात पणियों ने दूध से दही और घी बनाने की पद्धति का आविष्कार किया था। आगे यह भी वर्णन आता है कि पणि लोग किस प्रकार दूध को चार सींगों वाली मथनी से मथ कर घी निकालते थे।

पणियों का ह्रास और भारत से बहिर्गमन

पणिपति का आर्यों के राजा इन्द्र से संघर्ष हुआ। इ
युद्ध में आर्यों की जीत हुई। अतः पणियों को आर्यवर्त्त से खदे
दिया गया। डा0 एस0 सी0 दास, ऋग्वैदिक इण्डिया शैड्यूल

pdfelement
Remove Watermark Now

11पृष्ठ 190 से 197 में लिखते हैं कि आर्यों से तिरस्कृत होने पर पणि लोग तीन भागों में बँट गये।

1. कुछ पणि विदेश चले गये।
2. कुछ पणि देश के दूसरे हिस्सों में चले गये।
3. कुछ पणियों ने आर्यों से मित्रता कर ली।

1. पणियों (वणिकों) का विदेशों में बहिर्गमन

(क) चीन में उपनिवेश

लाकूपेही पुरातत्व वेत्ता ने लिखा है कि ईसा से 700 वर्ष पूर्व भारतीय वणिक चीन में व्यापार करते थे तथा चीन में उन्होंने अपने उपनिवेश बना लिए थे।

प्रोफेसर फरमन डी लाकोपस ने अपनी पुस्तक वेस्टर्न आरोजिन आफ दी अर्ली चाइनीज सिविलाइजेशन में बताया है कि चीन में 680 ईसा पूर्व भारतीय उपनिवेश बने थे, जिन्हें "निगंपर" कहते थें। वहाँ उनकी टकसाल भी थी। 631 ई0पू0 में उलूवंशीय राजकुमार ने पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ भारतीय वणिकों का स्वागत किया था। इन भारतीय वणिकों के उपनिवेश पर चीन के राजा का अधिकार नहीं था। न ही वाणिज्य के लिये, उस राज्य को कोई कर देते थें।

(ख) जावा, सुमात्रा और काम्बोज में उपनिवेश

ईसा से 431 वर्ष पूर्व एक चीन राजा ने भारतीय वणिकों के उपनिवेश ध्वस्त कर दिये। तब ये वणिक जावा, सुमात्रा और काम्बोज द्वीपों की और चले गये तथा वहाँ अपने उपनिवेश कायम किये।

(ग) शेष भूमण्डल का भ्रमण

ईसा से 500 वर्ष पूर्व हिरोडोटस नामक इतिहासकार ने

पणियों (वणिक) को संसार का आदि व्यापारी लिखा है। उसने आगे लिखा है कि यूनान में भी पणि लोग व्यापार हेतु जहाज ले गये थे।

लगभग 400 ई0 के आस पास एक चीनी यात्री फाहियान भारत आया। वह वणिकों के जहाज द्वारा सिंहल द्वीप (लंका) गया था। लंका से वह फिर जावा और बाली द्वीप गया। वहाँ पर उसने भारतीय वैश्यों (वणिकों) के उपनिवेशों को देखा था।

ग्रीस देश के इतिहासकार "एरियन" ने अपने पैरीपल्स नामक ग्रन्थ में लिखा हैं कि भारतीय वणिक अरब देश में उतरा करते थे। "स्ट्रेबो" नामक इतिहासकार ने लिखा है कि भारत ही कपास की भूमि है। कपास भारतीय वणिकों द्वारा मिश्र, सीरिया एवं अन्य देशों जैसे ईरान व इराक में पहुँची।

2. पणियों (वणिकों) का देश के अन्य भागों में गमन

आर्यों से पराजित होने पर कुछ पणियों को आर्यवर्त्त से खदेड़ दिया गया। अतः ये देश के अन्य भागों जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु में चले गये। कुछ पणि लोग असम और बंगाल चले गये। ये पणि लोग भारत के अन्य भागों में फैल गये। ये पणि लोग ही बाद में वणिक फिर वैश्य कहलाये।

3. शेष पणियों की आर्यों से मित्रता

पणि लोग शुद्ध शाकाहारी थे तथा आर्यों की पशु-बलि के विरोधी थे। इन संस्कारों का प्रभाव आर्यों पर भी पड़ा और वे इ पणियों से घुल-मिल गये। उन्हें आर्यों ने अपने साथ मिला लि तथा तीसरा स्थान दिया एवं धन व्यवस्था का कार्यभार इन्हें सौं दिया। आर्यों के ऋषि-मुनि लोगों ने पणियों (वणिकों) को तीस

pdfelement
Remove Watermark Now

स्थान के रूप में मान्यता दी। इनके नीचे अन्य द्राविड़ जातियाँ थीं। जिन्हें आर्यों ने शूद्रों में मान्यता दी। इस प्रकार पहली मान्यता के अनुसार जिसमें आर्य लोग बाहर से आये थे, जातियों का विकास धीरे-धीरे हुआ जिससे भारत के मूल निवासी पणियों को वणिक (व्यापारी) के रूप में मान्यता दी गई। यही पणि बाद में वैश्य जाति के रूप में विश्व में विख्यात हुई।

दूसरी मान्यता के अनुसार

यदि यह माना जाये कि आर्य लोग भारत के ही मूल निवासी थे तो उस स्थिति में वैश्य जाति का उद्‌भव कैसे हुआ। इस विषय में, मैं विस्तार से इसे समझाने का प्रयास करना चाहता हूँ।

ब्राह्मणोस्य मुखमासीत, बाहू राजन्य कृतः।
उरू तस्य यद्वेश्यः पदभ्याम् शूद्रो अजायत।।

अर्थ : विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, बाहों से क्षत्रिय, पेट से वैश्य तथा पावों से शूद्र पैदा हुआ।

वास्तव में इसका अर्थ यह है कि जब आर्यों की जनसंख्या में वृद्धि हुई। तब सम्पूर्ण समाज को चार वर्णों में बाँटा गया। इस सम्पूर्ण समाज का मुख ब्राह्मण, बाहु क्षत्रिय, तथा पेट वैश्य और पैर शूद्र थे।

यहाँ पर मुख, बाहों, पेट और पैर ये सब प्रतीकात्मक हैं। इनका पूर्ण विवेचन निम्न प्रकार है।

1. **मुख** : जिस प्रकार मुख मानव शरीर का मुख्य भाग होता है। इस हिस्से के कार्य होते हैं- बोलना, अध्ययन करना, समझना, समझाना, ग्रहण करना। उसी प्रकार आर्यों ने अपने समाज को गति प्रदान करने के लिए विद्वान लोगों, ऋषियों,

मुनियों तथा तपस्वियों को अध्ययन और अध्यापन का कार्य सौंपा और इन्हें ब्राह्मण की संज्ञा दी गयी। जिस प्रकार नये-नये शोध कार्यों को मस्तिष्क करता हैं, उसी प्रकार ब्राह्मण भी समाज को उसका लाभ देने हेतु सदैव तत्पर रहेंगे। समाज के सभी लोगों को शिक्षा ग्रहण करायेंगे। इसी को दृष्टिगत रखते हुए हमारे ऋषियों और मुनियों ने विभिन्न क्षेत्रों में कई नई खोज कीं। जैसे- आयुर्वेद में नई-नई खोज करके, सम्पूर्ण समाज को स्वस्थ कैसे रखा जाये, यह जानकारी दी गयी। आज भी सम्पूर्ण विश्व में आयुर्वेद को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

ज्योतिष के द्वारा ग्रहों की जानकारी दी गई। आज भी भारतीय पंचाँग, सौ साल बाद तक के ग्रहणों की जानकारी दे देते हैं, कि कब सूर्य ग्रहण होगा और कब चन्द्र ग्रहण होगा? जबकि विज्ञान द्वारा दी गई जानकारी कुछ ही वर्षों तक के लिए होती है। वास्तव में ज्योतिष की गणना बहुत ही सटीक और दीर्घ कालीन होती है। इसका सारा श्रेय हमारे देश के ऋषियों, मुनियों और मनीषियों को है। जिन्होंने अपना सारा जीवन, इन ग्रहों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में ही लगा दिया। तभी उन्हें यह महान उपलब्धि प्राप्त हुई। जिससे आज भी विश्व में भारतीय ज्योतिष विज्ञान की गणनाओं को आदर के साथ देखा जाता है।

अध्यात्म के द्वारा भारतीय ऋषियों, मुनियों और मनीषियों तथा ज्ञानियों ने आत्मा और परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान, सम्पूर्ण विश्व को दिया। इसी के कारण भारत आज भी विश्व का "धर्म गुरू" है।

मुख के ऊपर के हिस्से में आँख भी महत्वपूर्ण अंग है जो दूर-दृष्टि और जागरूकता का प्रतीक है। समाज का यह ब्राह्मण समाज भी दूर-दृष्टि से परिपूर्ण और जागरूक समाज होना चाहिए।

pdfelement
Remove Watermark Now

यह सब कार्य ब्राह्मण वर्ण द्वारा किये गये जिससे सम्पूर्ण समाज को नई दिशा, नई चेतना तथा नवीन जागृति मिली।

2. बाहु : जिस प्रकार शरीर में बाहु का कार्य होता है, शत्रु के आक्रमण को रोकना तथा शत्रु पर आक्रमण करना। उसी प्रकार आर्य लोगों ने अपने समाज की रक्षा करने के लिए तथा शत्रुओं को अथवा दुष्ट लोगों को दण्ड देने के लिए, समाज के निड़र साहसी और मजबूत लोगों को यह जिम्मेदारी सौंपी तथा इन्हें क्षत्रिय की संज्ञा दी गई। जिस प्रकार यदि कोई शत्रु हमारी आँख पर चाकू से वार करता है, तो हमारे हाथ तुरन्त आँख के ऊपर पहुँच जाते हैं तथा हम चाकू के वार को हाथ पर ले लेते हैं। उसी प्रकार क्षत्रिय समाज सम्पूर्ण आर्य समाज या सम्पूर्ण हिन्दू समाज के ऊपर होने वाले वार को, अपने प्राणों की आहुति देकर भी रोकेगा। जिस प्रकार दोनों हाथों में कुल 10 अंगुलियाँ होती हैं और प्रत्येक अंगुली का अपना एक अलग कार्य होता है, उसी प्रकार क्षत्रिय वर्ण के भी निम्न दस कार्य हैं–

1. ***न्याय–*** सम्पूर्ण समाज के साथ बिना किसी भेद-भाव के, न्याय करना तथा न्याय के लिए सदैव तत्पर रहना।
2. ***सुरक्षा–*** सम्पूर्ण समाज को बिना किसी भेद-भाव के सुरक्षा प्रदान करना।
3. ***दण्ड–*** समाज के दुष्ट लोगों को दण्ड देना। जो न्याय में बाधक हैं, जो चोरी, ड़कैती, लूटमार या हत्या करते हैं, उन्हें दण्ड़ित करना।
4. ***धर्म की स्थापना करना–*** धर्म को बढ़ावा देने के लिए अथवा धर्म की स्थापना हेतु, धार्मिक दृष्टि से जो सज्जन व्यक्तियों के कार्य हैं उन्हें प्रोत्साहित करना।

5. ***अधर्म का विरोध–*** जो दुष्कृत्य हैं, उन्हें रोकना तथा दुष्ट-प्रवृति जो कि समाज के लिए हानिकारक हैं, उसका विरोध करना तथा अधर्म का नाश करना।
6. ***सम्मान व अधिकारों की रक्षा–*** सम्पूर्ण समाज का सम्मान करना तथा सम्पूर्ण समाज के व्यक्तियों के सम्मान की रक्षा करना। सम्पूर्ण समाज के अधिकारों की रक्षा करना तथा सम्पूर्ण समाज के अधिकारों को सबके पास पहुँचाना।
7. ***कर्त्तव्य पालन करना–*** अपने कर्त्तव्यों का पालन करना तथा सम्पूर्ण समाज के व्यक्तियों को कर्तव्यों का ज्ञान कराना एवं कर्त्तव्यों का पालन कराना।
8. ***शान्ति स्थापित करना–*** समाज में शान्ति व्यवस्था स्थापित करने हेतु आवश्यक कदम उठाना।
9. ***प्यार की वर्षा करना–*** सम्पूर्ण समाज को समरसता के सूत्र में बाँधकर, बिना किसी भेद-भाव के, सम्पूर्ण समाज में प्यार की वर्षा करके, सम्पूर्ण समाज को मजबूती प्रदान करना।
10. ***समाज को संगठित करना–*** सम्पूर्ण समाज को एकता के पावन सूत्र में आवद्ध करके संगठित करना।

3. पेट : जिस प्रकार पेट का कार्य सम्पूर्ण शरीर में रक्त पहुँचाकर सम्पूर्ण शरीर को पुष्ट करना हैं, उसी प्रकार आर्यों ने समाज के पालन करने के लिए तथा पुष्ट करने के लिए, जिन लोगों को यह कार्य दिया गया, उन्हें वैश्य वर्ण की संज्ञा दी गई।

मानव शरीर में जो कार्य पेट के हैं, वही कार्य वैश्य व
को बताये गये हैं। जैसे पेट मानव शरीर का एक महत्वपूर्ण अ
हैं, वह सम्पूर्ण भोजन को पचाता है तथा उसे खून बनाकर श
के प्रत्येक हिस्से में पहुँचाता हैं, अपने पास वह कुछ भी न

pdfelement
Remove Watermark Now

रखता। उसी प्रकार वैश्य वर्ण सम्पूर्ण समाज का पालन करता है, उसे पोषित करता है तथा उसे पुष्ट करता है। जैसे पेट में एक लीवर होता है, जो रक्त बनाता हैं, फिर किड़नी रक्त साफ करती हैं, फिर दिल उस रक्त को आवश्यकतानुसार शरीर के सभी भागों में पहुँचाता हैं, और यह प्रक्रिया निरन्तर, निर्वाध गति से चलती रहती है। समाज या राष्ट्र के लिए यही कार्य वैश्य वर्ण के लिए है। वे धन को उत्पादित करते हैं, उन्हें इकठ्ठा करके आवश्यकता के अनुसार सम्पूर्ण समाज में बाँट देते है। जैसे एक उद्योगपति के पास उसकी बहुत बड़ी फैक्टरी है। उसमें हजारों लोग काम करते हैं। उनके श्रम की बदौलत खूब सारा धन इकठ्ठा किया जाता है। फिर उस धन को सभी श्रमिकों में बाँट दिया जाता है।

वस्तुतः पेट के मुख्यतया निम्न तीन कार्य होते है–

1. ***हजम करना–*** जो हम भोजन करते हैं, उससे रस, रक्त, माँस, अस्थि, मेद, मज्जा, वीर्य बनते हैं।
2. ***वितरण–*** नस–नाड़ी और शिराओं के द्वारा सम्पूर्ण रक्त को चहुँ और भेजना तथा प्रत्येक अंग की आवश्यकता के अनुसार पूर्ति करना।
3. ***पोषण–*** शरीर के सभी अंगों का पोषण करना।

इसी प्रकार आज भी वैश्य जाति के मुख्य तीन कार्य, सम्पूर्ण समाज को सुख, शान्ति, समृद्धि प्रदान करना हैं, जिससे कि सम्पूर्ण राष्ट्र समृद्धिशाली एवं वैभवशाली बन सके।

4. ***पैर :*** जिस प्रकार पैर ऊँचे–ऊँचे पहाड़ों पर भी चढ़ जाते हैं तथा पैर द्वारा ही नदी, नाले पार किये जाते हैं, उसी प्रकार आर्यों ने कठिन से कठिन कार्य करने के लिए तथा इन तीनों वर्णों की सेवा के लिए, एक वर्ग विशेष की रचना की, उसे शूद्र की संज्ञा दी गयी।

विभिन्न उद्योगों में श्रमसाध्य कार्य इसी वर्ण के द्वारा सम्पन्न किये जाते थे। आज भी कठिन और श्रमसाध्य कार्यों को इसी वर्ग के व्यक्ति बड़ी कुशलता और तन्मयता से सम्पन्न करते हैं तथा सम्पूर्ण समाज की सेवा करते हैं। कठिन से कठिन कार्यों को अपनी मेहनत और लग्न से पूर्ण करने के कारण इस वर्ण के लोगों ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई है तथा ख्याति अर्जित की है।

जिस प्रकार आर्यों ने अपने समाज को चार वर्णों में विभाजित किया, उसी प्रकार पश्चिमी देशों में भी समाज को चार भागों में बाँटा गया है। प्लेटो ने अब से ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व मनुष्य समाज को निम्न चार भागों में बाँटा था–

1- Teacher	शिक्षक
2- Knight	सामन्त
3- Trader	व्यापारी
4- Producer	श्रमिक

वस्तुतः कोई भी वर्ण किसी से छोटा बड़ा नहीं है। सभी बराबर हैं। जिस प्रकार शरीर के सभी अंग महत्वपूर्ण हैं इनमें कोई छोटा बड़ा नहीं है। उसी प्रकार मनुष्य समाज के ये चारों अंग एक समान हैं और सभी अंग महत्वपूर्ण हैं।

वर्णों का निर्माण बहुत धीरे–धीरे हुआ। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ी, उसकी आवश्यकताएं भी बढ़ी। तत्पश्चात कार्यों के विभाजन हेतु वर्ण बने। आदि में तो सभी ब्राह्मण थे। उस समय खे नहीं होती थी और न ही नगर थे एवं न ही आवास थे। स कन्दमूल–फल खाते थे तथा प्रकृति की गोद में खुले में ही रह थे। जब एक ब्राह्मण वर्ण लौकिक व्यवहार में असमर्थ हुआ

pdfelement
Remove Watermark Now

उसने दूसरा वर्ण क्षत्रिय बनाया। जब वह लौकिक व्यवहार में असमर्थ हुआ तो उसने तीसरा वैश्य वर्ण बनाया। फिर भी वह असमर्थ रहा तो चौथा वर्ण शूद्र को बनाया। इसी बात की पुष्टि महाभारत में भीष्म ने युधिष्ठिर से इस प्रकार की हैं, कि आदि में आर्यों में पहले ब्राह्मण वर्ण था। उससे काम न चलने पर क्षत्रिय वर्ण बना। उससे भी काम न चलने पर वैश्य वर्ण बना। फिर भी काम न चलने पर शूद्र वर्ण बना। कर्नल टॉड नामक ब्रिटिश विद्वान ने अस्सी जातियों को गिनाया हैं, जो राजपूती रक्त होते हुए भी कालान्तर में वणिक (व्यापारी) बन गयीं थीं। आदिकाल में शूद्र भी ब्राह्मण बन सकता था। स्वयं मनु ने कहा कि–

"शूद्रो ब्राह्मणतामेति"

अर्थात शूद्र भी ब्राह्मण बन सकता है। इसका अर्थ यह है कि शूद्र भी मेहनत मजदूरी वाले अपने पेशे को छोडकर, ज्ञान साध्य पेशा अपना कर ऋषि मुनि, ज्ञानी, तपस्वी या शिक्षक बन सकते हैं।

लेकिन कालान्तर में यह वर्ण व्यवस्था पेशे को बपौती मानते हुए, जन्म पर आधारित व्यवस्था बन गयी। एक स्थान पर भारद्वाज मुनि भृगु से पूछते हैं कि महाराज जब काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक, चिन्ता, भय, भूख, थकावट हम सब मनुष्यों को समान लगती है तब वर्णों का यह विभाजन क्यों ?

भृगु जी कहते हैं कि– ईश्वर ने सब मनुष्यों को ब्राह्मण ही उत्पन्न किया था। अपने-अपने भिन्न-भिन्न कर्मों ने ही उन्हें वर्णों में विभक्त किया। जिन लोगों ने अपनी रूचि भोग भोगने और साहसी कार्य करने में दी, वह ब्राह्मण से क्षत्रिय बन गये तथा जिनका झुकाव कृषि, व्यापार में हो गया वे ब्राह्मण, वैश्य बन गये। हिंसक, लालची, सफाई रहित ब्राह्मण शूद्र बन गये।

वर्ण से ही जातियों का निर्माण

प्रारम्भ में जब मनु द्वारा वर्ण व्यवस्था बनायी गई थी, तब कोई भी व्यक्ति अपने वर्ण को बदल सकता था। इसी आधार पर बाल्मीकि चाण्डाल से महर्षि (ब्राह्मण) बने तथा व्यास जिनके पिता ब्राह्मण और माता मल्लाह थी, उस समय की व्यवस्था के अनुसार उन्हें निषाद होना चाहिए था परन्तु व्यास ने अपना ज्ञानसाध्य पेशा अपनाया, जिसके कारण वे महर्षि व्यास (ब्राह्मण) कहलाये।

परन्तु कालान्तर में मनु की यह वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गयी। आर्यों का सम्पूर्ण समाज चार वर्णों की बजाय चार जातियों में विभक्त हो गया। फिर उन चार जातियों से पेशे के आधार पर सैकड़ों जातियाँ बनी। यजुर्वेद में पेशे के आधार पर सैकड़ों जातियों का वर्णन आया है। उसके बाद स्थान वाचक जातियाँ बनी जैसे अयोध्यावासी वैश्य, मध्य देशीय वैश्य, कन्नौजिया ब्राह्मण आदि। पुराने नगरों के आधार पर कुछ जातियाँ जैसे पालीवाल आदि। पुराने जनपदों के नाम पर जातियाँ बनी जैसे क्षत्रियगण से खत्री तथा आग्रेयगण से अग्रवाल और अरन्तगण से अरोड़ा जाति बनी। कुछ जातियाँ धार्मिक सम्प्रदायों से उत्पन्न जातियाँ बनी जैसे जैनी, गुसाई, सिक्ख, विश्नोई, जोशी, लिगांयत, बौद्ध आदि।

मैं यहाँ पर वैश्य जाति के लगभग 5500 वर्षों के, गौरवमयी इतिहास को साकार करने वाली, अपनी एक कविता प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसे बार-बार पढ़कर गर्व का अनुभव कीजिए तथा अपने गौरवमयी इतिहास को जानने का प्रयास कीजिए–

pdfelement
Remove Watermark Now

"वैश्य जाति का गौरव गीत"

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

आओ हम सब गावें, वैश्य जाति की, गौरव गाथा।
आओ मिलकर गावें, वैश्य जाति की, अमर कहानी।।
मातृ भूमि हित शीश कटाया, जो थे अद्‌भुत सेनानी।
आओ गावें ऐसे महावीरों की अमर कहानी।।

भारत माता के आदि पुत्र, इतिहास पुरूष विख्यात पणि।
जय अग्रसेन, जय अग्रोहा, जय भारत माँ के मुकुट मणि।।
हे! वीर-पुत्र, भूमि-रक्षक, भारत माता के सुभट लाल।
जय चन्द्रगुप्त, जय समुद्रगुप्त, जय गुप्तकाल, जय स्वर्णकाल।।

हे! कीर्ति रक्षक इतिहास पुरूष, भारत भू के मुकुट भाल।
जय विक्रमी सम्वत, जय उज्जैनी, जय विक्रमादित्य, जय महाकाल।।
हे! अमर पुत्र! हे धर्म पुत्र!! भारत माता के यशोगान।
जय विष्णुगुप्त, जय पाटिलीपुत्र, इतिहास पुरूष अशोक महान।।

हे वीर शिरोमणि! औघड़दानी, अमर संस्कृति के उपादान।
जय वैशाली, जय मगधराज, जय महादानी, जय हर्ष महान।।
हे! भारत माता के दानवीर, हे! वीर-भूमि के जल प्रवाह।
जय मारवाड़, जय चित्तौड़गढ़, जय मेवाड़ केसरी भामाशाह।।

हे! मुगल राज्य के विध्वंसक, दिल्ली सम्राट हेमू महान।
जय वीर व्रती, जय कर्मवीर, जय महावीर, हेमू महान।।
जय जयशंकर, जय रत्नाकर, जय भारतेन्दु कविकुल प्रधान।
जय राष्ट्र कवि, जय मैथिली, जय सत्यकेतु जय गुप्त महान।।

जय गांधी, जय शान्तिदूत, जय सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रणेता।
जय ब्रिटिश राज्य के विध्वंसक, जय भारत राष्ट्र के अध्येता।।
जय लाजपत, जय चन्द्रभानु, जय लोहिया, जय समाजवाद।
जय कैलाश, जय बनारसी, जय वैश्य जाति, जय राष्ट्रवाद।।

आओं हम सब गावें, वैश्य जाति की, गौरव गाथा।
आओं मिलकर गावें, वैश्य जाति की, अमर कहानी।।
मातृ भूमि हित शीश कटाया, जो थे अद्‌भुत सेनानी।
आओं गावें ऐसे महावीरों की अमर कहानी।।

इसे बार-बार पढ़ने से साढे पाँच हजार वर्षों का हमारा गौरवमयी इतिहास साकार हो जाता है। अतः इसे बार-बार दोहराइयेगा।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-4

"वैश्यों का वैभव और ऐश्वर्य"

वैश्यों का इतिहास कहाँ से प्रारम्भ होता है। अब हम इस पर विचार करते हैं। त्रेता युग में जब महाराजा दशरथ राज्य करते थे उस समय श्रवण कुमार उनके शब्द भेदी बाण से घायल होकर, राजा दशरथ को अपना परिचय, एक वैश्य के रूप में देता है। इसी क्रम में त्रेता युग में ब्रह्मवादिनी गार्गी का जिक्र भी वैश्य कन्या के रूप में आता है। इन्होंने तप और योग के बल से ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया। एक बार राजा जनक ने महायज्ञ किया। इसमें उन्होंने विद्वान पुरूष और महिलाओं को आमन्त्रित किया। उन्होंने घोषणा की थी कि जो सबसे ज्यादा विद्वान होगा, वह एक लाख गायें प्राप्त करेगा। महर्षि याज्ञवलक्य ने अपने शिष्यों से गायों को ले जाने हेतु कहा। तब सभी ऋषियों ने याज्ञवलक्य से प्रश्न पूछे। याज्ञवलक्य ने सभी के उतर दिये। अन्त में ब्रह्मवादिनी गार्गी की बारी आई। गार्गी के प्रश्नों से महर्षि याज्ञवलक्य निरूतर होकर क्रोधित हो गये। गार्गी और याज्ञवलक्य का वाद-विवाद देखिये-

गार्गी- व्यक्ति किससे ओत-प्रोत है?

याज्ञवलक्य- व्यक्ति, प्रकृति से ओत-प्रोत है।

गार्गी- प्रकृति किससे ओत-प्रोत है?

याज्ञवलक्य- प्रकृति, जगत से ओत-प्रोत है।

गार्गी- जगत किससे ओत-प्रोत है?

याज्ञवलक्य- जगत, ब्रह्माण्ड से ओत-प्रोत है।

गार्गी- ब्रह्माण्ड किससे ओत-प्रोत है?

याज्ञवलक्य- ब्रह्माण्ड, ब्रह्मलोक से ओत-प्रोत है।

गार्गी- ब्रह्मलोक किससे ओत-प्रोत है?

याज्ञवलक्य- गार्गी, तुम्हारा यह प्रश्न उत्तर की सीमा है। अब तू प्रश्न न कर, नहीं तो तेरा मस्तक पृथ्वी पर गिर जायेगा।

तत्पश्चात् गार्गी ने सभा के सभी विद्वानों को सम्बोधित करते हुये कहा कि जिस प्रकार सोने से सैकड़ों प्रकार के आभूषण बनते हैं, लेकिन स्वर्ण सब आभूषणों में निहित है, मिट्टी से कुम्हार सैकड़ों प्रकार के बर्तन बनाता है, लेकिन मिट्टी सब में निहित है, उसी प्रकार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी ब्रह्म से ओत-प्रोत है। अन्त में गार्गी ने कहा कि इस सभा में महर्षि याज्ञवलक्य ही सबसे ज्यादा विद्वान हैं अतः वे ही इन गायों को ले जाने के अधिकारी हैं।

उसके बाद द्वापर युग में जब वासुदेव जी श्रीकृष्ण को नन्द बाबा और यशोदा मैया के घर छोड़ आये थे, तब श्रीकृष्ण का लालन-पालन नन्द बाबा और यशोदा के घर पर हुआ था। नन्द बाबा और यशोदा वैश्य थे। बृषभान जो कि राधा जी के पिता थे, उस समय उस क्षेत्र में उनका प्रजातन्त्र मौजूद था तथा बृषभान वैश्य राजा थे। राजा बृषभान की कन्या राधा जी वैश्य कन्या थी।

महाभारत में ऐसा भी उल्लेख आता है कि धृतराष्ट्र की एक पत्नी वैश्य जाति की थी तथा उसका पुत्र युयुत्सु था अत्यन्त वीर और साहसी था। जब महाभारत युद्ध प्रारम्भ हु तब युधिष्ठिर ने दोनों सेनाओं के बीच में आकर कहा कि धर्म युद्ध हो रहा है, इसमें आज इसी समय कोई भी व्य अपना पाला बदल सकता है। मेरे पक्ष का व्यक्ति दुर्योधन

pdfelement
Remove Watermark Now

ओर जा सकता है तथा दुर्योधन के पक्ष का व्यक्ति मेरी ओर आ सकता है। तब पाँड़व पक्ष को न्याय संगत देखकर युयुत्सु कौरवों का साथ छोड़कर धर्मराज युधिष्ठिर के साथ आ गया था। युधिष्ठिर ने युद्ध के बाद युयुत्सु को इन्द्रप्रस्थ का राज्य सौंपा था।

अग्रोहा में आग्रेय गणराज्य की स्थापना

आज से लगभग 5100 वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेन ने अग्रोहा में आग्रेय गणराज्य की नींव डाली थी। उस समय वैश्य जाति 18 कबीलों में बँटी हुई थी। उन सबको महाराजा अग्रसेन ने एक मंच पर लाकर एकत्रित किया तथा अग्रोहा में वैश्य जाति का गणराज्य स्थापित किया और उनको "अग्रवाल" की संज्ञा दी। महाराजा अग्रसेन ने ही अग्रवालों के 18 कबीलों को 18 गोत्र प्रदान किये। वही अठारह गोत्र अग्रवालों में आज तक विद्यमान हैं।

महाराजा अग्रसेन का महान व्यक्तित्व

महाराजा अग्रसेन जी का व्यक्तित्व बड़ा ही महान था। उनका ऊँचा ललाट तथा लम्बी भुजाएँ, उनका चौड़ा सीना तथा बुलन्द आवाज, उनकी चमकीली आँखें तथा काली भौहें, उनके चेहरे पर अपूर्व तेज तथा रौबीला शरीर, उनकी महानता के द्योतक थे। उनका व्यक्तित्व प्रभावूपर्ण और आकर्षक था तथा उससे हमेशा रौब टपकता था। उनकी गहनता और गम्भीरता उनकी दूरदृष्टि का परिचायक थी। तभी वे एक महान आग्रेय गणराज्य की स्थापना करने में सफल हुए। यह उनके चुम्बकीय व्यक्तित्व का ही परिणाम था कि उन्होंनें उस समय 18 उपजातियों (कबीलों) में विभक्त वैश्य समुदाय को एक मंच पर लाकर महान साम्राज्य के रूप में प्रतिष्ठापित किया। उनके राज्य में बाहर से कोई भी व्यक्ति आता, उसे एक रूपया और एक ईंट दी जाती थी। अग्रोहा में एक लाख वैश्य परिवार रहते थे। इस प्रकार आगन्तुक व्यक्ति

के पास एक लाख ईंट हो जाती थी, जिससे वह अपना मकान बना सकता था तथा एक लाख रूपयों से वह अपना व्यापार चलाता था। यह थी महाराजा अग्रसेन जी की महान समाजवादी विचारधारा, जो उन्होंनें आज से लगभग 5100 वर्ष पूर्व विश्व के सामने प्रस्तुत की दी थी। वास्तव में महाराजा अग्रसेन समाजवाद के सूत्रधार और प्रणेता थे।

वैश्यों की उपाधि गुप्त

विष्णु पुराण में एक श्लोक आता हैं जिसके आधार पर वैश्यों को गुप्त कहा गया है।

श्लोक–

शर्मा देवस्य विप्रस्य वर्मा त्राता च भू भर्वः।
भूर्ति गुप्तस्य वैश्यस्य दासः शूद्रस्य कारयेत।।

इस सूत्र के आधार पर वैश्य जाति के लोगों ने अपने नाम के साथ *"गुप्त"* उपाधि धारण की।

मौर्य वंश

भारतीय इतिहास में चन्द्र गुप्त ने मौर्य वंश की स्थापना की थी। इनके जन्म के बारे में यह बताया जाता है कि ये एक निर्धन परिवार में जन्मे थे तथा इनके जन्म के कुछ समय बाद ही इनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। जब चाणक्य ने नन्द वंश को समाप्त करने का प्रण किया था, तब यह वीर बालक गायें चराते हुए चरावाहों के साथ मिला था तथा इसने चाणक्य के सामने ही एक शेर जो कि गायों के ऊपर वार कर रहा था, उसे मार डाला था। तब चाणक्य ने उस वीर बालक को अपने साथ लाकर राजनीति की शिक्षा दी तथा उसे राजा बनाया। इसी चन्द्रगुप्त ने मौर्य वंश की स्थापना की थी। इतिहासकार नागेन

pdfelement
Remove Watermark Now

नाथ बसु तथा राधा कुमुद मुखर्जी ने चन्द्रगुप्त मौर्य को वैश्य लिखा है। इनकी शादी भी वैश्य कन्या से हुई थी तथा इनके साले का नाम पुष्पमित्र था जिसे सौराष्ट्र का गर्वनर नियुक्त किया गया था। इन्हीं पुष्पमित्र ने एक बड़ा तालाब बनवाया जिस पर अपने नाम के पूर्व में वैश्य और बाद में गुप्त खुदवाया था। प्रारम्भ में वैश्य जाति के जो कर्म निश्चित किये गये थे उसमें कृषि, गौ पालन, तथा व्यापार मुख्य रूप से वैश्य जाति के कर्म बतलाये गये थे। बालक चन्द्रगुप्त भी गौ पालन करता हुआ चरावाह के रूप में विष्णुगुप्त चाणक्य को मिला था। अतः चन्द्रगुप्त को गौ पालन के रूप में मान्यता देने पर भी चन्द्रगुप्त को वैश्य ही माना जायेगा। इसी प्रकार विष्णुगुप्त अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में शिक्षक का कार्य करते थे। इसीलिए कुछ विद्वानों ने उन्हें ब्राह्मण माना हैं जबकि वे वास्तव में वैश्य थे। यही विष्णुगुप्त चाणक्य चन्द्रगुप्त के प्रधानमन्त्री थे तथा अपनी ईमानदारी और कूटनीति के लिए सुविख्यात थे।

मौर्य वंश का राज्य काल ईसा से 323 वर्ष से लेकर ईसा से 104 वर्ष पूर्व तक रहा अर्थात इस वंश ने कुल 219 वर्षों तक राज्य किया तथा इसके राजा हुए चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, अशोक, कुणाल, दशरथ, इन्द्रपलित, सम्प्रति, शलिशक, देववर्मा, शतधन्वा तथा अन्तिम राजा थे बृहद्रथ, जिन्हें उनके मन्त्री पुष्यमित्र शुंग ने मारकर शुंग वंश की स्थापना की थी।

एक कहावत प्रसिद्ध है कि

"मौर्यस्य राष्ट्रीय वैश्यैन पुष्यमित्रेन कारितः"

जिसका अर्थ हैं कि मौर्य वैश्य साम्राज्य का अन्त उसके ब्राह्मण मन्त्री पुष्यमित्र शुंग ने किया।

महाराजा बिन्दुसार की वैश्य महारानी से उत्पन्न पुत्र

अभय कुमार ने व्यापारियों की श्रेणी के सिद्धान्त को चलाया था जिससे महासेनी, बारहसेनी, चतुश्रेणी, सेन तथा सेनी उपवर्ग बने। महाराजा अशोक की वैश्य महारानी से उत्पन्न उनके पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु श्रीलंका, बर्मा, इण्डोनेशिया, मलेशिया, जापान तथा चीन गये थे।

सातवाहन वंश

मौर्य वंश का नाश बृहद्रथ के ब्राह्मण प्रधानमन्त्री पुष्यमित्र शुंग ने किया था। इसके बाद शुंगवंश का राज्य 57 ई0पू0 तक चला। यह ब्राह्मणों का शासन काल रहा। इस वंश के अन्तिम राजा सुशर्मा का वध उसके मन्त्री पार्वती गुप्त ने किया। इसने गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश के क्षेत्रों को जीत कर विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस वंश के अन्य प्रतापी राजा गौतमी, शातकर्णि, वशिष्ठ, पुलमाली हुए तथा अन्तिम राजा यज्ञश्री थे। इस प्रकार पार्वती गुप्त से लेकर यज्ञश्री तक इस वंश के वैश्य नरेशों ने लगभग 300 वर्ष तक राज्य किया। इनका राज्य काल 57 ई0पू0 से लेकर 243 ईस्वी तक रहा।

गुप्तवंश (243 ईस्वी से 550 ईस्वी तक)

गुप्त काल भारत का स्वर्ण काल

जैन शिला लेखों में तथा विद्या भाष्कर पं0 ज्वाला प्रसाद मिश्र ने अपनी पुस्तक *"जाति भास्कर"* के वैश्य खण्ड में गुप्तकाल को वैश्य काल माना है। इस वंश के सबसे प्रथम नरेश *"श्री गुप्त"* थे। उन्होंने 243 ईस्वी में इस राज्य की नींव डाली थी। इनके बाद घटोत्कच गुप्त उसके बाद चन्द्रगुप्त प्रथम फि समुद्र गुप्त तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय (चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य) जि वीर विक्रमादित्य भी कहतें हैं। उसके बाद कुमारगुप्त उसके स्कन्दगुप्त उसके बाद पुष्यगुप्त उसके बाद नृसिंहगुप्त उसके

pdfelement
Remove Watermark Now

कुमारगुप्त द्वितीय राजगद्दी पर बैठे। इस वंश ने लगभग 300 वर्षों तक राज्य किया।

श्री गुप्त : गुप्त वंश की नींव श्री गुप्त ने डाली थी। इन्होंनें ईस्वी 243 में गुप्त वंश की स्थापना की थी। ये बंगाल में मुर्शिदाबाद के रहने वाले थे। इन्होंने 243 से 282 तक राज्य किया।

घटोत्कच गुप्त : इन्होंने 282 से 319 तक राज्य किया। ताम्रपत्रों में इनके लिए महाराज लिखा गया है।

चन्द्रगुप्त प्रथम : इन्होंने 320 से 335 तक राज्य किया तथा महाराजधिराज की उपाधि धारण की एवम् इन्होंने गुप्त सम्वत प्रारम्भ किया था। यह गुप्त सम्वत् ईस्वी सन् से 57 वर्ष पुराना है। चूँकि ईस्वी से 57 वर्ष पूर्व वैश्य राजा पार्वती गुप्त ने वैश्य राज्य की स्थापना की थी इसीलिए गुप्त सम्वत् ईसा से 57 वर्ष पूर्व से ही लागू किया गया। इसी गुप्त सम्वत् को चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) ने विक्रमी सम्वत् के रूप में प्रचलित कराया क्योंकि वैश्यों का राज्य ईस्वी से 57 वर्ष पूर्व पार्वती गुप्त द्वारा प्रारम्भ हुआ था। विक्रमी सम्वत् में उसी समय को गुप्त काल की मान्यता दी गई।

समुद्रगुप्त : इस वंश मे प्रतापी राजा महाराजाधिराज समुद्रगुप्त हुए। उन्होंने अपने जीवन काल में 82 युद्ध किये थे तथा राज्य की सीमाओं को बढ़ाया था। इन्हें आज भी महान विजेता के रूप मे जाना जाता है। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया था तथा वैश्य जाति की कीर्ति को चहुँ ओर फैलाया था। इन्होंने 335 से 375 ईस्वी तक कुल 40 वर्षों तक राज्य किया। इतिहास में ये महान विजेता के रूप में विख्यात हैं। इस महान

सम्राट की विजय कीर्ति को आज भी मिलीटरी साइन्स में पढ़ाया जाता है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय : समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद उसका बड़ा पुत्र रामगुप्त गद्दी पर बैठा। लेकिन वह एक अयोग्य शासक सिद्ध हुआ। उसने शकराजा से डर कर सन्धि कर ली और उस सन्धि के अनुसार उसे अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी को शकराजा को भेंट स्वरूप देना था। लेकिन यह सन्धि रामगुप्त के छोटे भाई चन्द्रगुप्त द्वितीय को पसन्द नहीं थी। अतः चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ध्रुवस्वामिनी का भेष धारण करके अपने 3000 बहादुर साथियों के साथ रात्री में शकराजा के शिविर में प्रवेश किया। शकराजा यह समझ रहा था कि ध्रुवस्वामिनी अपनी सहेलियों के साथ आई है। घूँघट उठाते ही चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी बलिष्ठ भुजाओं से शकराजा को उठाकर पटक दिया तथा उसका अन्त कर दिया। उसके साथियों ने शकराजा के बहुत सैनिकों को मार डाला। शकों पर विजय के बाद जब चन्द्रगुप्त अपनी राजधानी गया, तब इसके विश्वास पात्र सेनापति ने रामगुप्त की हत्या कर दी तथा चन्द्रगुप्त प्रथम को सम्राट घोषित कर दिया। तभी परम सुन्दरी ध्रुवस्वामिनी ने भी चन्द्रगुप्त प्रथम के गले में जयमाला डाल दी। उसकी दूसरी पत्नी नागकुल की कुबेरनागा थी। शकराजा को हराकर उसने विशाल साम्राज्य की स्थापना की तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की एवं विक्रमी सम्वत् चलाया। यह ईस्वी सन् से 57 वर्ष पूर्व से सम्भवतः इसीलिए रखा गया क्योंकि ईस्वी से 57 वर्ष पूर्व सातवाहन वंश के प्रतापी राजा पार्वती गुप्त ने उज्जैन में गुप्त साम्राज्य की आधारशिला रखी थी। यह उज्जैन नगरी अपने वैभ और ऐश्वर्य के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय पुनः इस उज्जैन नगरी को शकराजा से जीतकर अपना विज स्तम्भ उज्जैयनी में स्थापित किया। तभी उसने विक्रमी सम्व

pdfelement
Remove Watermark Now

प्रारम्भ किया। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने दिल्ली में भी महरौली नामक स्थान पर एक विशाल लौह स्तम्भ स्थापित किया जो आज तक मौजूद है। इन्होंने अयोध्या का राम जन्मभूमि मन्दिर तथा कृष्ण जन्मभूमि मन्दिर मथुरा में बनवाया था। इनकी महानता की कहानियाँ आज भी वीर विक्रमादित्य के नाम से घर-घर में, दादी, नानी द्वारा सुनाई जाती हैं। इन्होंने अपने राज्य में विष्णु व महालक्ष्मी जी के मन्दिर भी बनवाये थे। उन्होंने समुद्रगुप्त की भाँति अश्वमेध यज्ञ भी किया था। उसका साम्राज्य उत्तर में अफगानिस्तान तक, पूर्व में आसाम तक, पश्चिम में गुजरात तक तथा दक्षिण में नर्मदा नदी तक था। उसने अपनी पुत्री का विवाह दक्षिणी भारत के वाकाटक राज्य के प्रतापी राजा रुद्रसेन से किया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सन् 375 से 415 तक राज्य किया।

फाहियान का भारत में आगमन

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में एक चीनी विद्वान फाहियान भारत में आया था। उसने गुप्तकाल को वैश्यकाल माना है। उसने तत्कालीन शासन व्यवस्था का वर्णन किया है। उसने लिखा है कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में सर्वत्र सुख-शान्ति और समृद्धि थी। चन्द्रगुप्त स्वयं विद्वान था तथा विद्वानों का आदर करता था। कालिदास और वररुचि जैसे विद्वान उसके शासन काल में ही हुए थे। उसके शासन काल में साहित्य, विज्ञान, व्यापार, उद्योगधन्धे तथा कला कौशल के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई। पाटलीपुत्र के राजमहल को देखकर फाहियान लिखता है कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह महल मनुष्यों ने नहीं बल्कि देवताओं ने बनवाया है। इसकी सुन्दरता अद्भुत और अनुपम है। उस काल में लोग खुले किवाड़ सोते थे। कहीं चोरी डकैती नहीं होती थी। फाहियान लिखता है कि उसने रास्ते में एक सोने का गहना पड़ा देखा, शाम को लौटने पर भी वह वहीं पड़ा था। ऐसी थी उस

काल (वैश्यकाल) की श्रेष्ठ शासन व्यवस्था।

कुमार गुप्त : यह भी गुप्तकाल का एक महाराजा था। इसने भी अश्वमेध यज्ञ किया था तथा स्वर्ण मुद्रायें चलाई थीं। यह भी अपने पिता की भाँति प्रतापी राजा था तथा इसने अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखा था। उसने 415 ईस्वी से 456 ईस्वी तक राज्य किया।

स्कन्द गुप्त : कुमार गुप्त की मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र स्कन्द गुप्त गद्दी पर बैठा था। उसने भी अपने दादा चन्द्रगुप्त द्वितीय की भाँति विक्रमादित्य की उपाधि धारण की थीं। वह अत्यन्त वीर और पराक्रमी सम्राट था। उसने तीन विदेशी महाशक्तियों- यवन, बल्हिक और कुषाण का मुकाबला किया तथा इन विदेशी आक्रान्ताओं को पकड़ कर मृत्युदण्ड दिया। इन्होंने 456 ईस्वी से 467 ईस्वी तक राज्य किया।

प्रकाश गुप्त (पुष्य गुप्त) : स्कन्द गुप्त के जीवन काल में ही उनके पुत्र का देहावसन हो गया था। अतः पुत्र के शोक में वह राज-काज से विमुख हो गया तथा अपना राज-पाट अपने छोटे भाई पुष्य गुप्त को सौंप दिया। पुष्य गुप्त ने कुछ दिन राज्य किया फिर उसने अपने पुत्र नृसिंह गुप्त को राज्य सौंप दिया।

नृसिंह गुप्त : नृसिंह गुप्त ने लगभग 40 वर्षों तक राज्य किया। उसके बाद बुद्धगुप्त, भानुगुप्त, तथागत गुप्त, हर्षगुप्त, कृष्णगुप्त तथा जीवितगुप्त का राज्य रहा। उसके बाद कुमार गुप्त द्वितीय ने राज्य को सम्हाला तथा हूणों से युद्ध किया। इसके बाद हूणों के लगातार आक्रमणों से इनकी शक्ति क्षीण हो गयी।

pdfelement
Remove Watermark Now

गुप्त काल की मुद्रा : गुप्तकाल में सोने, चाँदी तथा ताँबे की मुद्रायें होती थीं। इन मुद्राओं के एक ओर राजा की मूर्ति होती थी, जो धनुष बाण लेकर युद्ध करता हुआ दिखाई देता था, या घुड़सवार के रूप में दिखाई देता था। दूसरी ओर महालक्ष्मी को प्रधानता दी गई। इससे इनके वैश्य होने की पुष्टि होती है, क्योंकि महालक्ष्मी वैश्य जनों की कुलदेवी हैं। महाराजा अग्रसेन ने भी अपने शासन काल में महालक्ष्मी को वैश्यों की कुलदेवी मानते हुए लक्ष्मी पूजा घर-घर में शुरू कराई थी। आज भी महालक्ष्मी वैश्य जाति की कुलदेवी हैं।

"गुप्तकाल भारत का स्वर्णकाल"

गुप्त वंश के नरेशों ने लगभग 300 वर्षों तक राज्य किया। इस काल में भारत का चहुँमुखी विकास हुआ। इस समय राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक उन्नति के साथ-साथ सम्पूर्ण भारत, एकता के प्रबल सूत्र में आबद्ध था। गुप्त नरेशों ने राष्ट्र की धार्मिक विभिन्नताओं और विषमताओं को दूर करके उनमें साम्यता स्थापित की तथा सम्पूर्ण राष्ट्र को एकता के प्रबल सूत्र में आबद्ध किया। विभिन्न जातियों, विभिन्न वर्गों, विभिन्न धर्मों के लोग जो एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते थे, उन सबको प्यार का संदेश दिया। गुप्तकाल में सभी मनुष्य खुले किवाड़ सोते थे तथा सबमें प्यार और भाई-चारा व्याप्त था। गुप्त नरेशों ने सम्पूर्ण राष्ट्र में सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से एकता स्थापित की। इसीलिए "गुप्तकाल" भारत का "स्वर्णकाल" कहलाता है।

वर्धन वंश

उत्तर भारत में छठी शताब्दी के अन्त में लगभग 569 ई0 के आस-पास आदित्यवर्धन ने थानेश्वर में वर्धन राज्य की

नींव डाली थी। उसके बाद प्रभाकर वर्धन इस वंश का एक प्रसिद्ध राजा हुआ। उसने हूणों को उत्तर पश्चिम भारत से बाहर खदेड़ दिया था। उसकी मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र राज्यवर्धन थानेश्वर की गद्दी पर बैठा। राज्यवर्धन लगभग 604 ई0 में गद्दी पर बैठा था लेकिन 606 में बंगाल के राजा शशांक ने राज्यवर्धन का वध कर दिया। तब राज्यवर्धन का छोटा भाई हर्षवर्धन मात्र 16 वर्ष की आयु में सन् 606 में थानेश्वर की गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठने के समय हर्ष के सामने बहुत बड़ी कठिनाईयाँ आई। उसके बहनोई गृहवर्मन, जो कि कन्नौज का राजा था, को मालवा नरेश देवगुप्त ने मार डाला था तथा हर्ष की बहिन को बंदी बना लिया था। सबसे पहले हर्ष ने अपनी बहिन को बंदीगृह से मुक्त कराया। गृहवर्मन के कोई संतान नहीं थी अतः हर्ष को कन्नौज का शासन भी सम्भालना पड़ा। उसने देवगुप्त को पराजित करके मालवा राज्य को भी अपने अधीन कर लिया था। फिर उसने मगध पर अधिकार किया। तत्पश्चात उसने आगे बढ़कर गुजरात के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को हराया। बाद में ध्रुवसेन से उसने अपनी पुत्री का विवाह कर दिया तथा उसका राज्य उसे वापिस कर दिया। फिर उसने बंगाल पर चढ़ाई कर दी और वहाँ के शासक शशांक को हराकर अपने भाई की मौत का बदला लिया। अब बंगाल पर भी हर्ष का आधिपत्य हो गया। इस प्रकार हर्ष का साम्राज्य उत्तर में पंजाब, दक्षिण में नर्मदा, पूर्व में बंगाल तथा पश्चिम में गुजरात तक फैल गया। कवि बाणभट्ट ने हर्ष को, हर्षचरित मे वैश्य राजा लिखा है। हर्ष ने 647 ई0 तक राज्य किया। हर्ष के बाद यह साम्राज्य उत्तराधिकारी के अभाव में छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया। वर्धन वंश ने कुल 78 वर्षों त राज्य किया था। हर्ष के शासन काल में एक चीनी विद्वान ह्वे साँग भारत आया था। उसने हर्ष के समय की शासन व्यवस्था का वर्णन किया है। उसने लिखा है कि उस समय नालन्दा

pdfelement
Remove Watermark Now

दस हजार विद्यार्थी अध्ययन करते थे। वहाँ पर विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा के साथ भोजन, वस्त्र, तथा रहने के लिए पूर्ण सुविधा थी। इसमें योग्य विद्यार्थियों को ही प्रवेश मिलता था। उस समय लोग सुखी और सम्पन्न थे तथा सच्चे और ईमानदार थे। हर्ष स्वयं भी बड़ा विद्वान था तथा विद्वानों का आदर करता था। उसके दरबार में बाणभट्ट प्रसिद्ध विद्वान थे। उन्होंने हर्षचरित तथा कादम्बरी की रचनाएँ की। हर्ष ने स्वयं नागानन्द, रत्नावली और प्रियदर्शिका की रचना की थी। हर्ष के साम्राज्य में तीन विश्वविद्यालय थे। तक्षशिला, नालन्दा और उज्जैन। इन तीनों विश्वविद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी तथा रहना और खाना भी निःशुल्क था। हर्ष बड़ा दानी था। वह प्रत्येक पाँच वर्ष बाद मेले का आयोजन प्रयागराज में करता था तथा अपना सारा धन गरीबों, अनाथों और अपाहिजों में बाँट देता था। इससे उसकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई थी। वह सभी धर्मों का आदर करता था।

मेत्रक वंश

525 ईस्वी से 650 ई0 तक मेत्रक वंश के वैश्यों ने बल्लभी (गुजरात) में अपना राज्य स्थापित किया। इन राजाओं में धनसेन, ध्रुवसेन, धरमसेन, शिलादित्य आदि राजाओं ने राज किया। इनका अन्तिम राजा ध्रुवसेन द्वितीय था जिस से हर्ष ने अपनी पुत्री का विवाह किया था।

वाकाटक वंश

वाकाटक वंश के वैश्यों ने दक्षिण भारत में वाकाटक में अपना राज्य स्थापित किया था। यहाँ रूदसेन, प्रवर सेन, भद्रसेन, पृथ्वी सेन आदि राजाओं ने राज्य किया। इसके प्रथम शासक रूद्रसेन से चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह किया था।

मालवा के वैश्य राजा

मालवा में वैश्य राज्य करते थे। जिस समय हर्षवर्धन थानेश्वर की राजगद्दी पर बैठा उससे कुछ समय पूर्व उसके बहनोई गृह वर्मन को मालवा के नरेश देवगुत ने मार डाला था तथा हर्ष की बहिन राज्यश्री को बंदी बना लिया था। हर्ष ने राजगद्दी पर बैठते ही सबसे पहले अपनी बहिन को छुड़वाया था। फिर उसने मालवा पर आक्रमण करके देवगुप्त को पराजित किया तथा उसके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया था। इस वंश के राजाओं ने मालवा पर लगभग 80 वर्षों तक राज्य किया था।

दिल्ली सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य

हेमू का असली नाम हेमराज था। वह रेबाड़ी में शोरे तथा नमक का व्यापार करता था। कुछ इतिहासकार हेमू को धूसर वैश्य कहते हैं। कुछ रौनियार वैश्य मानते हैं। शेरशाह सूरी की मृत्यु 22 मई 1545 ईस्वी को हुई। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र इस्लामशाह सूरी ने हेमराज को सेना के लिए रसद की आपूर्ति में नियुक्त किया। फिर उसे शाही सेना में रसद का निरीक्षक बना दिया। उसकी ईमानदारी और प्रतिभा को देखकर इस्लामशाह ने उसे सेना में छोटा सा पद दे दिया। लेकिन हेमू ने इस्लामशाह का ध्यान अपनी ओर इतना आकृष्ट किया कि उसने हेमू को प्रधान सेनापति बना दिया। इस्लामशाह की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र आदिलशाह सूरी भी हेमू की स्वामिभक्ति और ईमानदारी पर मुग्ध था। उसने हेमू को प्रधान सेनापति के साथ-साथ प्रधानमन्त्री का दायित्व भी सौंप दिया। हेमू ने अफगान सेना का दिल भी जीत लिया था। वह अफगान सैनिकों का प्रिय पात्र तथा अपने स्वामी आदिलशाह का विश्वासपात्र था। अफगान सरदार उसे बड़े ही आदर की दृष्टि से देखते थे तथा उस पर अपने प्राण तक न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते थे।

patelement
Remove Watermark Now

उसने चुनार से लेकर दिल्ली तक कुल 22 युद्ध लड़े थे और किसी भी युद्ध में वह पराजित नहीं हुआ था। 20 जनवरी 1556 को दिल्ली में हुमायूँ की मृत्यु हो गई। हुमायूँ का पुत्र अकबर उस समय पंजाब में था। तब हेमू ने अपने आपको दिल्ली का सम्राट घोषित कर दिया तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। दिल्ली में हेमू की सेना का युद्ध हुमायूँ की सेना से हुआ। मुगलों के सेनापति तार्दीबेग ने सभी प्रान्तीय गवर्नरों को दिल्ली बुला लिया था। बैरमखाँ ने पंजाब से अपने विश्वसनीय सेनापति पीरमुहम्मद को दिल्ली भेज दिया। परन्तु हेमू की सेना के सामने मुगल सेना हारने लगी, पीरमुहम्मद मैदान छोड़कर भाग गया। तार्दीबेग भी हताश होकर पंजाब भाग गया। वहाँ बैरमखाँ ने तार्दीबेग का वध कर दिया। अब बैरमखाँ स्वयं दिल्ली की ओर चल दिया तथा पानीपत के मैदान में 5 नवम्बर 1556 को हेमू की सेना का मुगल सेना से भीषण युद्ध हुआ। इसे पानीपत का द्वितीय युद्ध कहा जाता है। इस युद्ध में हेमू बड़ी वीरता से लड़ा परन्तु दुर्भाग्यवश हेमू की आँख में एक तीर लगा तथा रक्त की धार बहने लगी। हेमू वहीं मूर्छित होकर गिर पड़ा। फलतः उसकी सेना में भगदड़ मच गई। बैरमखाँ ने अकबर से कहा कि वह हेमू के सिर को धड़ से अलग कर दे परन्तु अकबर ने घायल और मरणासन्न व्यक्ति पर तलवार चलाना उचित नहीं समझा। अतएव बैरमखाँ ने अपनी तलवार से हेमू के सिर को उसके धड़ से अलग कर दिया। भाग्य ने इस युद्ध में हेमू का साथ नहीं दिया, अन्यथा भारत की तस्वीर कुछ और ही होती। भारत में पुनः गुप्तकाल की भाँति स्वर्णकाल का उदय होता। लेकिन विधाता को यह मन्जूर नहीं था। उसे तो कुछ और ही मन्जूर था। इस विजय से अकबर का दिल्ली और आगरा पर अधिकार हो गया। इस प्रकार लगभग दस माह तक हेमू दिल्ली की गद्दी का सम्राट रहा।

यद्यपि 5 नवम्बर, 1556 को भारत सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य का सूर्य अस्त हो गया था परन्तु उसका गौरव, उसका त्याग, उसका अदम्य साहस, उसका उत्साह, उसका देशप्रेम, उसकी उज्जवल गाथा भारत के इतिहास में सदा अमर रहेगी तथा वह एक दैदीप्यमान नक्षत्र की भाँति सदा भारतीय इतिहास में चमकता रहेगा और एक महान सम्राट के रूप में वह हमेशा ही याद किया जाता रहेगा।

हेमू एक महान सम्राट : हेमू एक महान सेनानायक के साथ-साथ एक महान सम्राट भी था। उसमें अदम्य उत्साह तथा साहस था। भयानक से भयानक संकट आ जाने पर भी उसका धैर्य कभी भंग नहीं होता था। उसमें निर्भीकता तो मानों कूट-कूट कर भरी हुई थी तथा उसमें गजब की रण-पटुता थी। अपनें इन्हीं गुणों के कारण वह एक साधारण सिपाही से सेनानायक बना, फिर प्रधान सेनापति बना, तत्पश्चात प्रधानमन्त्री बना और फिर एक महान सम्राट बना।

एक महान विजेता : वह एक महान विजेता था। उसने चुनार से दिल्ली तक 22 युद्ध लड़े थे और सब में विजयी हुआ था। इसलिए वह एक महान विजेता कहलाया। परन्तु तेइसवें युद्ध में अर्थात् पानीपत के दूसरे युद्ध में, भाग्य ने उसका साथ नहीं दिया, इसीलिए उसके दुर्भाग्य का एक तीर उसकी आँख में जा घुँसा, जिससे उसी दिन उसके जीवन के सूर्य का अस्त हो गया। अन्यथा इस देश की तस्वीर कुछ और ही होती। और यह राष्ट्र गुप्तकाल की भाँति पुनः परमवैभवशाली और परम समृद्धिशाली होता।

प्रधानमन्त्री भामाशाह

भामाशाह के पिता का नाम भारमल था। उन्हें महाराणा उदय सिंह ने अलवर से बुलाकर अपने यहाँ पर प्रधानमन्त्री दे

pdfelement
Remove Watermark Now

रूप में सन् 1553 ईस्वी में नियुक्त किया था। 1563 ईस्वी में उदय सिंह की मृत्यु होने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र महाराणा प्रताप सिंह को राज सिंहासन पर बैठाया गया था। भारमल की मृत्यु के बाद उनका पुत्र भामाशाह प्रधानमन्त्री के पद पर प्रतिष्ठापित किया गया था। राज्य में राजा के बाद सबसे ऊँचा स्थान प्रधानमन्त्री का होता था। अकबर यह चाहता था कि महाराणा प्रताप उसका अभिनन्दन करने के लिए स्वयं उसके दरबार में आये, परन्तु महाराणा को यह स्वीकार नहीं था। फलतः उसने राणा प्रताप से युद्ध करने का निश्चय किया।

सन् 1576 ई0 में अकबर ने राजा मानसिंह के नेतृत्व में अपनी सारी सेना राणा प्रताप से युद्ध के लिए भेजी। हल्दीघाटी के मैदान में घमासान युद्ध हुआ राजपूतों ने मुगलों के छक्के छुड़ा दिये थे। ऐसा प्रतीत होने लगा कि विजयलक्ष्मी राणा प्रताप का आलिंगन करेगी लेकिन तभी यह खबर उड़ा दी गई कि अकबर स्वयं एक विशाल सेना लेकर आ रहा है। तब राणा ने अपनी सेना के कुछ विश्वस्त सिपहसालारों को लेकर अरावली की पहाड़ी की ओर पलायन कर दिया और वहीं से अपनी स्वतन्त्रता का संग्राम जारी रखा। उदयपुर, चितौड़ और मेवाड़ पर अकबर का अधिकार हो गया। तब भामाशाह अपने कुछ साथियों के साथ मालवा में रामपुरे की ओर चला गया। वहाँ के अधिपति राव दुर्गा ने भामाशाह और उसके साथियों का बड़ा ही मान-सम्मान किया तथा उन्हें प्रतिष्ठा के साथ रखा। उधर शाही सेनापति शाहबाज खाँ ने उदयपुर में शाही सेना के डेरे डलवा दिये थे। जब महाराणा प्रताप अरावली के दुर्गम जंगलों में भटक रहे थे तभी अवसर पाकर प्रधानमन्त्री भामाशाह ने शाही सेना के माले पर चढ़ाई कर दी तथा शाही सेनापति शाहबाज खाँ से 25 लाख रूपये और 20 हजार अशर्फियाँ दण्ड स्वरूप वसूल की गई। तब भामाशाह,

महाराणा को ढूढ़ने के लिए अरावली के जंगलों में गये, जहाँ महाराणा प्रताप घास की रोटियाँ खाकर स्वतन्त्रता की अलख जगा रहे थे। चूलिया नामक ग्राम में महाराणा प्रताप और भामाशाह की भेंट हुई। वहीं पर भामाशाह ने अपना सारा धन महाराणा प्रताप के चरणों में रख दिया था। इस धन से 50 हजार की सेना एकत्रित की गई जिसको 6 वर्ष तक के लिये यह धन काफी था। उन्होंने शाही सेना के थानों पर आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में महाराणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने मुगल सामन्त सुल्तान खाँ का वध कर दिया। इस विजयश्री से प्रताप का हौंसला बढ़ गया। इसके बाद उन्होंने कुम्भलमेर पर भी कब्जा कर लिया। फिर उन्होंने जावरे को जीता। तत्पश्चात् उन्होंने चितौड़गढ़ को छोड़ कर सारे मेवाड़ पर अधिकार कर लिया। इन युद्धों में प्रधानमन्त्री भामाशाह स्वयं तलवार लेकर लड़ते थे तथा युद्ध का संचालन करते थे। धन तो बहुत से लोगों के पास होता है, परन्तु उसे राष्ट्र को समर्पित करने वाले बहुत कम लोग होते हैं। जो ऐसे लोग होते हैं, उनकी तुलना सेठ भामाशाह से की जाती है। आज साढ़े चार सौ वर्ष बाद भी सेठ भामाशाह का नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है। आज भी मेवाड़ के विजय स्तम्भ पर सेठ भामाशाह का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। आज भी राजस्थान में पंचायतों में, शादियों में, बारातों में, विशेष उत्सवों में सर्वप्रथम तिलक या मिलाई का गौरव वैश्य जाति को ही दिया जाता है।

मैंने वैश्य जाति के वैभव और ऐश्वर्य को निम्न कविता के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है। इसे बार-बार दोहराने से हमारे अन्दर एक नवस्फूर्ति एवं नवजागृति का संचार होता है।

pdfelement
Remove Watermark Now

अपने बलिदानो से सींचा हमने.....

(रचयिता–शान्ति स्वरूप गुप्त)

हम वीर भूमि के वीर पुत्र हैं, गौरवमयी इतिहास हमारा।
अपने बलिदानों से सींचा हमनें, भारत का इतिहास सुनहरा।।
हमने ही झेलम के तट पर, इतिहास लिखा गौरवशाली।
हमने सैल्यूकस का मर्दन करके, इतिहास रचा वैभवशाली।
हमने ही चन्द्रगुप्त बनकर, यूनानी यवनों को मारा।
ये यवन विदेशी अब भी, गाते हैं यशोगान हमारा।
अपने बलिदानों से सींचा हमने, भारत का इतिहास सुनहरा।।
हम चन्द्रगुप्त, हम समुद्रगुप्त, हम विक्रमादित्य कहलाये।
भारत भू की इस महान धरा पर, स्वर्णकाल हम लाये।
हमने ही हूणों को पीटा, हमने ही शकराजा को मारा।
जो बैरी बनकर आये थे, वे सब गाते हैं गुणगान हमारा।
अपने बलिदानों से सींचा हमने, भारत का इतिहास सुनहरा।।
मुगलों के अत्याचारों पर, हम हीं हेमचन्द्र बन जाते हैं।
जब भीड़ पड़ी भारत माँ पर, हम भामाशाह बन जाते हैं।
हमने ही इन यवनों को पीटा, हमने ही मुगलों को मारा।
देखो, ये घोर विरोधी अब भी, गाते हैं गुणगान हमारा।
अपने बलिदानों से सींचा हमने, भारत का इतिहास सुनहरा।।
और स्वतन्त्रता की वेदी पर, हम ही गाँधी बन जाते हैं।
गाकर देशभक्ति के गीतों को, हम राष्ट्र कवि बन जाते हैं।
हमनें ही अंग्रेजों का विध्वंस किया, हमने ही दानवता को मारा।
इस विश्व–पटल पर अब भी, सब गाते हैं गुणगान हमारा।
अपने बलिदानों से सींचा हमने, भारत का इतिहास सुनहरा।।
हम ही मन्मथ, हम ही लाला, हम ही चन्द्रभानु कहलाये हैं।
प्रिय मातृ भूमि की रक्षा में, हम सदा ही आगे आये हैं।
हमने ना कभी रुकना सीखा, ना कायरता दिखलायी है।

इस भारत भू पर अब भी, है स्वर्णमयी इतिहास हमारा।
अपने बलिदानों से सींचा हमने, भारत का इतिहास सुनहरा।।
जब हम रण भूमि में जाते हैं, तब हम प्रलय बन जाते हैं।
बैरी के सम्मुख आने पर, हम स्वयं काल बन जाते हैं।
जब आवाहन माँ का होता है, हम महाकाल बन जाते हैं।
हमारी रग–रग में भरा हुआ है, देशभक्ति का प्यार घनेरा।
अपने बलिदानों से सींचा हमने, भारत का इतिहास सुनहरा।।
हम वीर भूमि के वीर पुत्र हैं, गौरवमयी इतिहास हमारा।
अपने बलिदानों से सींचा हमने, भारत का इतिहास सुनहरा।।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-5

"वैश्य जाति में उपजातियों का सृजन"

जैन विद्वानों ने वैश्यों की उपजातियों का वर्णन किया है। कर्नल टाड ने 84 उपजातियों का वर्णन किया है। लेकिन प्रश्न यह है कि उपजातियों का विभाजन किस प्रकार हुआ। उसके सृजन का आधार क्या था? इस विषय में हम निम्न आधारों पर विचार करते हैं-

1. ***कर्म के आधार पर वर्गीकरण :*** आदिकाल में कुछ ब्राह्मणोचित कर्म त्यागकर, आजीविका हेतु वैश्य कर्म स्वीकार करने पर, ब्राह्मण वैश्य बने। इसी प्रकार क्षत्रिय लोगों ने युद्ध में हार जाने या हिंसा छोड़ देने पर या आजीविका हेतु वैश्य कर्म अपनाया तथा वे क्षत्रिय वैश्य बने। इसी प्रकार कुछ शूद्रों ने शूद्रोचित कर्म त्यागकर वैश्य कर्म धारण करने पर शूद्र वैश्य बने।

2. ***श्रेणी के आधार पर विभाजन :*** डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल अपनें *"गुप्त अभिलेख"* में लिखते हैं कि गुप्त कालीन आभिलेखों से यह स्पष्ट है कि वैश्यजन छोटी-छोटी समितियाँ बनाकर या समूह बनाकर व्यापार करते थे। कालान्तर में ये समितियाँ या समूह ही श्रेणी के रूप में विकसित हुए। यहीं से उपजातियों के सृजन की श्रृंखला प्रारम्भ हो गयी। इस श्रेणी परम्परा में वैश्य जाति की जो उपजातियाँ बनीं वे आज भी मौजूद हैं। जैसे- बारहसेनी, चौसेनी, यज्ञसेनी, अग्रसेनी, महासेनी, शूरसेनी आदि।

3. ***जनपद के नाम पर विभाजन :*** वैश्य जाति की कुछ उपजातियाँ जनपद विशेष, स्थान विशेष तथा क्षेत्र विशेष के नाम पर विकसित हुईं निम्न उदाहरण दृष्टव्य हैं-

1.	अग्रोहा जनपद से	-	अग्रवाल वैश्य
2.	बुलन्दशहर जनपद से	-	बरनवाल वैश्य
3.	मथुरा जनपद से	-	माथुर वैश्य
4.	माहौरगढ़ जनपद से	-	माहौर वैश्य
5.	गौलेर जनपद से	-	गुलहरे वैश्य
6.	मोरवरी जनपद से	-	मौर्य वैश्य
7.	अयोध्या जनपद से	-	अयोध्यावासी वैश्य
8.	खण्डेला जनपद से	-	खण्डेलवाल वैश्य
9.	चुरू जनपद से	-	चुरूवाल वैश्य
10.	मध्यदेशीय जनपद से	-	मध्यदेशीय वैश्य
11.	जायस जनपद से	-	जायसवाल वैश्य
12.	पोरवन्दर जनपद से	-	पोरवाल वैश्य
13.	मारवाड़ जनपद से	-	मारवाड़ी वैश्य
14.	कन्नौज जनपद से	-	कान्यकुब्ज वैश्य
15.	धूसर जनपद (रेवाड़ी) से	-	धूसर वैश्य
16.	पाली जनपद से	-	पालीवाल वैश्य
17.	मेड़ता जनपद से	-	मेड़तवाल वैश्य
18.	टैंक जनपद से	-	टैंकवाल वैष्य
19.	खातर जनपद से	-	खातरवाल वैश्य
20.	औरवा जनपद से	-	ओसवाल वैश्य

इस प्रकार हम देखते हैं कि जनपद, क्षेत्र या स्थान विशेष के द्वारा अनेक वैश्य उपजातियाँ बनी।

4. ***वस्तु विशेष का व्यापार करने पर विभाजन-*** जैसे गुड़ का व्यापार करने पर गुड़िया वैश्य या गुलहरे वैश्य, लोहे का व्यापार करने पर लोहिया वैश्य, केसर का व्यापार करने पर केसरवानी वैश्य, पिस्ते का व्यापार करने पर पिसरवानी वैश्य, लवण का व्यापार करने पर लाड़वाणि या लाड़वानी वैश्य, कपड़े

pdfelement
Remove Watermark Now

का व्यापार करने पर तन्तुवाय वैश्य, तेल का व्यापार करने वाले तैलिक वैश्य, गांधी का व्यापार करने वाले गांधी वैश्य बने। इस प्रकार वस्तु विशेष का व्यापार करने पर अनेकानेक उपजातियों का निर्माण हुआ।

5. अल्ल के आधार पर उपजातियों का विभाजन– वैश्य जाति में कुछ उपजातियों का निर्माण अल्लों के आधार पर हुआ। अल्ल के आधार पर लगभग 84 अल्लों का निर्माण निम्न प्रकार हुआ–

1. राज पुरिया
2. विलास पुरिया
3. भरत पुरिया
4. कमल पुरिया
5. अग्नि पुरिया
6. सीरोठिया
7. मारोठिया
8. मजीठिया
9. तेन गुरिया

कालान्तर में इन अल्लों के आधार पर भी उपजातियों का विभाजन हुआ तथा इस प्रकार अनेकानेक उपजातियों का निर्माण हुआ।

सन् 1882 में वैश्य जाति का सर्वप्रथम संगठन स्थापित हुआ। जो *"अखिल भारतीय वैश्य महासभा"* के रूप में प्रतिस्थापित हुआ। इसके वर्तमान अध्यक्ष श्री प्रेमशंकर गर्ग (बुलन्दशहर) हैं। उन्होंने बताया कि 8 जनवरी सन् 1901 में उ0प्र0 के मुख्यसचिव को *"अखिल भारतीय वैश्य महासभा"* ने एक पत्र लिखा कि वैश्य जाति की निम्न 42 उपजातियों को वणिक, बनिया या वक्काल न लिखकर वैश्य लिखा जाये।

42 उपजातियों की सूची

1. अग्रवाल	2. राजवंशी	3. बरनवाल
4. चुरूवाल	5. श्रीमाल	6. श्रावक
7. माहेश्वरी	8. खण्डेलवाल	9. वीजावर्गीय
10. ओसवाल	11. नागर	12. बारह सैनी
13. चौसेनी	14. माहौर	15. माथुर
16. रस्तौगी	17. गहोई	18. गुजराती
19. कदीमी अग्रवाल	20. गिंदौड़िया	21. धाकड़
22. मेड़तवाल	23. कोलवार	24. जांगडे
25. पुरूवाल	26. भगेरवाल	27. अटोड़े
28. मोढ़	29. पालीवाल	30. जैनी
31. लोहानिया	32. कुमार तनय	33. पोकरे
34. टौंकवाल	35. पुरूवाल	36. नेमे
37.पदमावती	38. नरीसिंह पुरे जैनी	39. दसौरे
40. खटौरे	41. डीडू	42. पोरवाल

आइने अकबरी में वैश्य जाति के 84 उपवर्ग लिखे हुए हैं। अर्थात् अकबर के समय तक वैश्य जाति की 84 उपजातियाँ बन चुकी थी।

अखिल भारतीय वैश्य महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रेमशंकर गर्ग द्वारा वैश्य जाति की 380 की सूची हमें उपलब्ध कराई गयी। उन्होंने बताया कि दक्षिण भारत की कुछ उपजातियाँ इसमें और सम्मिलित हो सकती हैं जिसके बाद यह संख्या 390 तक पहुँच जायेगी। सम्पूर्ण भारत वर्ष में वैश्य जाति की कु उपजातियाँ अभी हमे अज्ञात हैं। अतः यह संख्या 400 तक पहुँच सकती है। इस विषय में अभी भी हमारी खोज जारी अतः अभी हम श्री प्रेमशंकर गर्ग द्वारा उपलब्ध कराई गई सू के अनुसार 380 उपजातियों की सूची यहाँ पर प्रस्तुत कर रहे हैं–

pdfelement
Remove Watermark Now

वैश्य जाति की 380 उपजातियों की सूची

1. अग्रवाल	2. कदीमी अग्रवाल	3. राजवंशी
4. राजाशाही	5. बरनवाल	6. वर्णवाल
7. चुरूवाल	8. श्रीमाल	9. श्रावक
10. श्रावगी	11. माहेश्वरी	12. खण्डेलवाल
13. वीजावर्गीय	14. विजय वर्गीय	15. औसवाल
16. नागर	17. बारहसेनी	18. माहुर
19. माहौर	20. महावर	21. माथुर
22. रस्तौगी	23. रूस्तगी	24. रोहितगी
25. गहोई	26. गुजराती	27. गिदौडिया
28. गंधारिया	29. धाकड़	30. मेड़तवाल
31. कोलवार	32. जागड़े	33. पुरूवाल
34. भगेरवाल	35. अटोडे	36. मौढ़
37. पल्लीवाल	38. पालीवाल	39. जैनी
40. लोहानिया	41. लोहानी	42. कुमार तनय
43. नेमे	44. पद्मावती	45. नरसिंहपुरे जैनी
46. दसौरे	47. खटोरे	48. चतुश्रेणी
49. डीडू	50. केसरवानी	51. शिवहरे
52. गुलहरे	53. गोलवारा	54. महाजन वैश्य
55. झाँकड़े	56. भटेबडे	57. यज्ञसेनी
58. कान्यकुब्ज	59. दोसर	60. लोहिया
61. मेहता	62. बाथम	63. कसौंधन
64. ओमर	65. माहुरी	66. रौनियार
67. जायसवाल	68. चौरसिया	69. तैलिक
70. अयोध्यावासी	71. अवधिया	72. अवधपुरिया
73. सुनमानीय	74. चौसेनी	75. वार्ष्णेय

वैश्य जाति की 380 उपजातियों की सूची

76. अग्रहरी	77. मध्यदेशीय	78. शौड्रिक
79. भगत	80. आर्य वैश्य	81. कोमटी
82. महाराजन	83. मिहिर	84. मिहिरिया
85. मऊर	86. मौर्य	87. महावणि
88. उसमार	89. कुंवरे	90. खोवी
91. पिसरबानी	92. शूरसेन	93. शूरसेनी
94. बरसानी	95. काठ	96. जमेय
97. कमलपुरिया	98. कमलापुरी	99. कथ
100. गुडिया	101. कपोला	102. पुरातन
103. खण्डायत	104. हरसौर	105. गोभुज
106. सेठी	107. लिंगायत	108. अड़ाजत
109. आनेपवाल	110. अजमेरा	111. अड़ोरा
112. अष्टावर	113. अड़ालिया	114. अचतवाल
115. अरचितवाल	116. उनवाल	117. अढय
118. उर्वला	119. इन्दौरिया	120. कठेरवाल
121. कुर्मी बनिया	122. काकरिया	123. कजोहीवाल
124. कम्बोवाल	125. करनेरा	126. कन्दोईया
127. कथोला	128. कठोरा	129. करटीवाल
130. ककोला	131. कोलापुरी	132. कुन्थतर
133. कपाड़िया	134. कापड़िया	135. कुरवार
136. कश्मीरी	137. काणु	138. काखना
139. कादू	140. खड़ेता	141. खातर वाल
142. खोची	143. खारवा	144. खेमवाल
145. खडायचा	146. खेरवाल	147. गोलपुरी
148. गोलापुरी	149. गसोरा	150. गुसारवा

pdfelement
Remove Watermark Now

वैश्य जाति की 380 उपजातियों की सूची

151. गंगेरवाल	152. गोगवार	153. गवचक
154. गजेरा	155. गौरी	156. गौरत
157. गढ़वाली	158. गमराडा	159. गूजरवाला
160. गंधारिया	161. गोडलाई	162. गोरखे
163. गंगापारी	164. गोहले	165. धामी
166. चित्रवाल	167. चौलोडिया	168. चक्कचाप
169. चकौडे	170. चतुरथ	171. तलनडा
172. नचत्रा	173. चीतोडा	174. खांटी
175. जारोला	176. जीवणवाल	177. जैतवाल
178. जम्बू	179. जेमा	180. जलोरा
181. जमनिया	182. जैतीसवार	183. जलहरी
184. जिगोंपाटी	185. झालियारा	186. जलोरा
187. झडौला	188. तटार	189. टकचाल
190. टटोरिया	191. टीटोडा	192. ठठवाल
193. ठाकरवाल	194. ठाकुर	195. डीडोरिया
196. डीसावल	197. उमर	198. ओमर
199. डावसीवैस	200. द्वारकावासी	201. दसोरा
202. दसारा	203. दोइलवाय	204. देशवाल
205. दासादी	206. देवारी वाल	207. दिल्ली वाल
208. धवलवाल	209. धारवाल	210. धारीवाल
211. धाडीवाल	212. धोईवाल	213. धवल कोष्टी
214. नागेन्द्रा	215. नाधोरा	216. नरोढ़ा
217. नरसिया	218. नराया	219. नाथचल्ला
220. नहामे	221. नागदह	222. नवामरा
223. नोटिया	224. नादिला	225. नागनहेसा

वैश्य जाति की 380 उपजातियों की सूची

226. नाणी	227. नाडरा	228. पटोलिया
229. पदमीरा	230. पतेवाल	231. पंचमवाल
232. पुष्कर वाल	233. पुरवाल	234. पवाचिया
235. पिबदी	236. पडासिया	237. पंचम
238. पासरीवाल	239. पासरा	240. पटवता
241. पधारा	242. पांटिवाल	243. पोकरीवाल
244. प्रवरा	245. प्रहराव	246. पटानिया
247. पटना पुरी	248. पचमपोखरा	249. गाऊदास
250. बैस बनिया	251. बड़ेसा	252. बुढल
253. बौगार	254. ब्रहमकाया	255. बगबग
256. बाबरिया	257. बारहमांसी	258. बोहरा
259. बरगास	260. बंदनौरा	261. भूगडवाल
262. भाकरिया	263. भवन गेह	264. भारीजा
265. भगोरवाल	266. भुगंडा	267. भृत्यपुरी
268. भाटिया	269. बटेनरा	270. भागऊ
271. भूगत	272. भ्रगादी	273. मौध
274. मेहवाडा	275. मंगोस	276. मांडलियाँ
277. मेडारा	278. मटिया	279. माया पुरिया
280. मथपर	281. मांडारा	282. मंडीहड
283. मैथल	284. मीरनवाल	285. मुईहार
286. मोरको	287. मेड़तवाल	288. मिहिरवाल
289. रजपुरी, रजपटिया	290. रोथाई	291. रोगोरा
292. रुइया	293. रामपुरिया	294. रहटी
295. राजोरिया	296. लाडीसाक	297. लाड
298. लुहारिनया	299. लाहू	300. लाकम

pdfelement
Remove Watermark Now

वैश्य जाति की 380 उपजातियों की सूची

301. लवेच	302. वरूरी	303. विदियादा
304. वैश	305. विश	306. वटीवरा
307. वयाद	308. बीसलवार	309. बोगरा
310. वर्णवरा	311. बध्र	312. बसमी
313. बायेदा	314. वायेज	315. बाइस
316. वस्ता	317. बादर वाल	318. वाग्रीवा
319. वरीरी	320. वागरोटा	321. वदवईया
322. वणछवाल	323. वाचड	324. वेडनारा
325. वाहोरा	326. बाल्मीवाल	327. बडेहा
328. बंदरवाल	329. बारमाका	330. सोनी
331. सोजतवाल	332. सोहरवाल	333. सौराठिया
334. सूतल	335. सरालिया	336. सतवाल
337. सलाऊ	338. सरखरल	339. सुराणी
340. सौधत	341. सिल्हरवार	342. सान पुरिया
343. सीत गुरू	344. सहेल	345. सडाइया
346. स्वरिव	347. सारडेवाल	348. सिंगार
349. सेतवाल	350. सौनेया	351. साहू
352. सारविया	353. बाथम	354. साचोरा
355. सुरसरवाल	356. श्रीखण्ड	357. हलोरा
358. होहल	359. हरद	360. हाकरिया
361. हूम	362. हरसौर	363. हरदुई
364. हलवाई वैश्य	365. गाँधी	366. मारवाड़ी
367. मारवारी	368. गुप्ते	369. चेट्टी
370. सेन गुप्त	371. बाजोरिया	372. तन्तुवाय
373. शाह	374. कान्देवाल	375. कलवार
376. मोहनीत	377. बनिया	378. वणिक

379. कसेरा	380. ठठेरा	

वैश्य जाति की उपरोक्त उपजातियों के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हैं कि कुछ उपजातियों की संख्या बहुत कम हैं तथा कुछ उपजातियाँ तो बहुत ही छोटे-छोटे क्षेत्रों में ही सिमटी हुई हैं। कुछ उपजातियाँ नगरों तक, कुछ उपजातियाँ कुछ ग्रामों तक ही सीमित हैं। इन उपजातियों का अस्तित्व चाहे बहुत ही सीमित क्षेत्र में ही है, परन्तु ये उपजातियाँ ऐसी हैं, जिनको बड़े ही शोध के द्वारा ज्ञात किया गया है। अभी भी बहुत सी ऐसी उपजातियाँ अवशेष हैं जिनका दायरा और भी सीमित हैं, उनके सम्बन्ध में शोध अभी जारी है।

वैश्य जाति की यहाँ पर हमनें 380 उपजातियों का उल्लेख किया है। इसके अलावा कुछ उपजातियाँ अभी अज्ञात हैं। इन सभी उपजातियों में गोत्र भी होते हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण वैश्य समाज आज हजारों वर्गों, उपवर्गों और गोत्रों में बँटकर अपनी शक्ति को क्षीण कर चुका है। यदि सम्पूर्ण वैश्य समाज एक मंच पर आकर अपनी सामूहिक शक्ति का परिचय दे तो यह समाज बहुत बड़ी ताकत बन सकता है। आज आवश्यकता हैं इन सभी उपजातियों को जोड़कर पुनः एक किया जाये। जैसे महाराजा अग्रसेन ने उस समय की सभी वैश्य उपजातियों को एकत्रित किया। उन्होंने उस समय 18 कबीलों में बँटे हुए वैश्य समाज को एक मंच पर लाकर अपना अलग साम्राज्य स्थापित किया और सम्पूर्ण वैश्य समाज को एक अलग पहचान दिलाई। आज भी यह एक आवश्यकता है, कि वैश्य समाज की सभी उपजातियों को एक किया जाये तथा सम्पूर्ण वैश्य जाति को वोट बैंक के रूप में स्थापित किया जायें। तभी वैश्य जाति की अपनी अलग पहचान कायम हो पायेगी। जैसे अन्य जातियों ने अपना वोट बैंक

pdfelement
Remove Watermark Now

स्थापित करके अपनी अलग पहचान बनाई है।

वैश्य जाति की विजय पताका को देश-विदेश में फहराने वाले महान राष्ट्र भक्तों की विजय-गाथा को प्रदर्शित करने वाला तथा सम्पूर्ण वैश्य जाति को प्ररेणा देने वाला यह महान "विजय गीत" मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ-

विजय-गीत

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

वैश्य जाति की विजय पताका, वेदों ने फहराई है।
वैश्य जाति की गौरव गाथा, इतिहासों ने गाई है।।
समाजवाद के प्रणेता, इतिहास रचा गौरवशाली।
शौर्य जिनका चमक रहा हैं, जैसे सूरज की लाली।।
अग्रसेन महाराज बने थे, वीर प्रतापी बलशाली।
है अद्भुत उनकी यश गाथा, अद्भुत उनकी प्रणाली।।
अमर कीर्ति फैल रही हैं, यह नील गगन तक छाई है।
वैश्य जाति की गौरव गाथा, इतिहासों ने गाई है।।

चन्द्रगुप्त और समुद्रगुप्त, इतिहास पुरूष हैं भारत के।
वीर विक्रमादित्य सरीखे, सम्राट बने हैं भारत के।।
गुप्तकाल बना था स्वर्णकाल, शक हूणों का मर्दन करके।
जो वैरी सिर पर आये थे, उनका सिर छेदन करके।।
गुप्तवंश की अमर पताका, विश्व-पटल पर छाई है।
वैश्य जाति की गौरव गाथा, इतिहासों ने गाई है।।

मुगलों का मद हरने वाला, हेमू वीर महान था।
तलवारों पर चलने वाला वैश्य, जाति की शान था।।
दिल्ली का सम्राट बना था, वीरों की सन्तान था।
वह हिन्द केसरी कहलाया, भारत माँ की शान था।।

उस महापुरुष की महिमा, इतिहासों ने भी गाई है।
वैश्य जाति की गौरव गाथा, इतिहासों ने गाई है।।

मेवाड़ केसरी भामाशाह भी, अद्भुत पुरूष निराला था।
वह संस्कृति का वाहक था, इतिहास बनाने वाला था।।
सूर्य बनकर चमक रहा हैं, हिन्दुत्व बचाने वाला था।
अमर हो गया उसका जीवन, राष्ट्र बचाने वाला था।।
उस महापुरुष की महिमा, महाकवियों ने भी गाई है।
वैश्य जाति की गौरव गाथा, इतिहासों ने गाई है।।

अंग्रेजों का विध्वंसक वह, गाँधी वीर महान था।
वीर-शिरोमणि कहलाया वह, भारत माँ की संतान था।।
सत्य-अहिंसा और प्रेम ही, उसका अस्त्र महान था।
सत्याग्रह का पाठ पढ़ाया, अखिल विश्व की शान था।।
उस हिन्द-केसरी गाँधी ने, आजादी हमें दिलाई है।
वैश्य-जाति की गौरव गाथा, इतिहासों ने गाई है।।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-6

"वैश्य समाज की महान विभूतियाँ"

हिन्दुओं से जजिया कर हटवाने वाले राजवंश प्रवर्तक राजा रतन चन्द जी

राजवंशी अग्रवाल समाज के प्रर्वतक राजा रतन चन्द्र ने सन् 1701 में सैयद बन्धुओं का कोषाध्यक्ष बनकर, मुगल दरबार दिल्ली के पाँच हजारी मनसबदार बनकर राजा साहब का खिताब पाया। बाद में आपको शाह का खिताब भी मिला। आपने हिन्दुओं को अनेक लाभ पहुँचाये। 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बहादुरशाह गद्दी पर बैठा। उसकी मृत्यु के बाद जहाँगीर शाह 1712 में शहंशाह बना। उसके बाद सैयद बन्धुओं और रतनचन्द की सहायता से उसके भतीजे फरूखसियर ने 1713 में अपने आपको बादशाह घोषित कर दिया। फरूखसियर के बादशाह बनने पर वास्तविक शक्ति सैयद बन्धुओं के हाथों में आ गयी थी। सैयद बन्धुओं में से एक भाई प्रधानमन्त्री बना तथा दूसरा भाई सेनापति बना। राजा रतनचन्द ने फरूखसियर से हिन्दुओं के ऊपर से 1713 में जजिया कर हटवा दिया। लेकिन फरूखसियर ने मुल्ला-मौलवियों के कहने में आकर 1719 में पुनः हिन्दुओं पर जाजिया कर लगा दिया। जबकि राजा रतनचन्द ने फरूखसियर को इसी आधार पर सहायता दी थी। परन्तु बादशाह बनने पर फरूखसियर अपने वायदे से मुकर गया। यह जजिया कर हिन्दुओं के लिए बहुत ही अपमानजनक था। अतः राजा रतनचन्द ने सैयद बन्धुओं और मराठों की सहायता से फरूखसियर को 1719 में मरवा दिया तथा उसके पोते को गद्दी पर बैठाया। उससे राजा रतनचन्द ने सबसे पहला आदेश हिन्दुओं

को जाजिया कर समाप्ती का कराया। जजिया कर की वजह से हिन्दुओं को अपमानित होना पड़ता था। वास्तव में जाजिया कर हिन्दुओं के लिए अपमान का एक कड़वा घूंट था जो सभी हिन्दुओं को जबरदस्ती पीना पडता था। लेकिन राजा रतनचन्द ने अपने कौशल द्वारा इसे समाप्त करा दिया था। राजा रतनचन्द का जन्म कस्बा मीरापुर जिला मुजफ्फरनगर में हुआ था। सन् 1701 में जानसठ के सैयद बन्धुओं ने आपको कोषाध्यक्ष नियुक्त किया। सैयद बन्धुओं से उनकी दोस्ती के कारण उस समय अग्रवाल समाज ने उनके पुत्र की शादी में गिन्दौड़ा लेने से मना कर दिया था। फलस्वरूप राजा रतनचन्द ने अपना एक अलग संगठन बनाया और उस संगठन के लोगों को पटवारी तथा जमींदार बनवाया। अपने प्रभाव से राजा रतनचन्द ने अपने संगठन के लोगों को शाही दरबार में ऊँचे-ऊँचे ओहदों पर पहुँचाया तथा सेना में भरती कराया। राजा रतनचन्द जी ने, जो अपना अलग संगठन बनाया, वही कालान्तर में वैश्य अग्रवाल राजवंशी समाज कहलाया। इसीलिए सभी राजवंशियों को राजा रतनचन्द का अनुयायी कहा जाता हैं। राजा रतनचन्द एक दूरदृष्टा थे। हिन्दुओं के ऊपर से उन्होंने जजिया कर हटवाकर एक महान और पुनीत कार्य किया था। उनके इस कार्य को सम्पूर्ण हिन्दू समाज कभी नहीं भुला सकेगा तथा राजा रतनचन्द का नाम भी इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

कालान्तर में जब मुहम्मदशाह गद्दी पर बैठा तब उसके सैयद बन्धुओं से सम्बन्ध खराब हो गये। अतः उसने बड़े सैयद बन्धु हुसैन अली को मरवा दिया और राजा रतनचन्द जी को अपने पास बुलाकर सैयद बन्धुओं के खजाने के बारे में पूछ लेकिन उन्होंने खजाने की जानकारी शहंशाह को नहीं दी। अत मुहम्मद शाह ने राजा रतनचन्द का सिर काटने का आदेश दिया

pdfelement
Remove Watermark Now

बाद में छोटे सैयद बन्धु को भी 1720 में विष देकर मार दिया गया।

अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध संघर्ष में वैश्यों का योगदान

स्वतन्त्रता के पुजारी वित्तमन्त्री अमरनाथ बाँठियाँ (ग्वालियर) :

एक जून 1857 को तात्या टोपे और नाना साहब पेशवा की सेना ने ग्वालियर के किले पर सिन्धिया तथा अंग्रेजों की सेना को परास्त करके कब्जा कर लिया। तब सिन्धिया के वित्तमन्त्री अमरनाथ बाँठियाँ ने महाराजा जयाजी राव सिन्धिया का खजाना, विजेता स्वतन्त्रता सेनानी तात्या टोपे को सौंप दिया ताकि ये स्वतन्त्रता सेनानी इस धन से सम्पूर्ण भारत वर्ष को अंग्रेजों से मुक्त करा सके। यह लगभग सात करोड़ रूपयों की विशाल धनराशि थी। इससे तात्या टोपे ने अपने सभी सैनिकों का तीन माह का रुका हुआ वेतन प्रदान किया तथा विजय की खुशी में प्रत्येक सैनिक को दो माह का वेतन पुरस्कार स्वरूप दिया। दस जून को जनरल स्मिथ और ह्यूरोज ने ग्वालियर का किला पुनः तात्या टोपे और नाना जी पेशवा से जीत लिया तथा महाराजा जयाजीराव सिन्धिया को पुनः गद्दी सौंप दी गई। तब वित्तमन्त्री अमरनाथ बाँठियाँ को सर्राफा बाजार ग्वालियर में फाँसी पर लटका दिया गया। ये माहेश्वरी वैश्य थे। भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम को दिया गया इनका योगदान कभी नहीं भुलाया जा सकता तथा इनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

लाला झनकू मल अग्रवाल :

10 मई 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों ने स्वतन्त्रता संग्राम की जो अलख जगायी थी उसकी चिनगारी से

धौलाना, पिलखुवा, झासना क्षेत्र भी अछूता नहीं रहा था। इस स्वतन्त्रता संग्राम में पिलखुवा और धौलाना क्षेत्र के राजपूतों के 144 ग्रामों के राजपूतों ने हिस्सा लिया था तथा अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध खुली बगावत की थी। धौलाना में 13 राजपूतों के साथ लाला झनकूमल अग्रवाल को भी सरेआम फाँसी पर लटका दिया गया। अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने वालों की जमीन जब्त करके उन्हे यातनाएं दी गईं।

धौलाना के अमर शहीद लाला झनकूमल अग्रवाल ने इस विद्रोह में सक्रिय योगदान किया था। इन्होंने न केवल धन से बल्कि हर तरह से विद्रोहियों की मदद की थी। वे गावों में जाकर ग्रामीणों को अंग्रेजों के विरुद्ध भड़काते रहते थे तथा अंग्रेजों को लुटेरा, विधर्मी और गौहत्यारा बताते थे। 13 राजपूतों के साथ जब लाला झनकूमल को पकड़ कर मैदान में लाया गया तो उसने जोर से भारत माता की जय का नारा लगाया तथा उसके चेहरे पर खौफ या भय का नामोनिशान नहीं था। अंग्रेज अफसर ने झनकू मल से पूछा लाला तुम बनिये होकर भी इनके साथ क्यों रहे? लाला झनकूमल ने कहा कि देश भक्ति तो हमारी रग-रग में बसी हुई है। हमारे कतरे-कतरे में, हमारे रक्त के कण-कण में, हमारी प्रत्येक श्वास में देशभक्ति बसी हुई है। हम भामाशाह के वंशज हैं। हमारे हृदय में भी भामाशाह की राष्ट्र भक्ति बसी हुई है।

तदुपरान्त लाला झनकूमल अग्रवाल को सबसे पहले फाँसी दी गई। फाँसी के फंदे पर झूलकर लाला झनकूमल सर्वदा के लिए अमर हो गये और उनका नाम हमेशा इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। उनकी कीर्ति, उनका बलिदान, उनका अद्भुत राष्ट्रप्रेम सदैव ही आगे आने वाली पीढ़ी को नव प्रेरणा, नव चेतना तथा नव जागरण एवं नव स्फूर्ति प्रदान करता रहेगा।

pdfelement
Remove Watermark Now

वैश्य जाति के इन महान नायकों को श्रद्धा पूर्वक नमन करते हुए मैंने निम्न कविता के माध्यम से उन्हे श्रद्धा-सुमन अर्पित किये हैं-

हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों....

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुम वीर भूमि के वीर पुत्र हो, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुम समाजवाद के प्रणेता, भारत में समाजवाद लाये।
तुम मानवता के प्रहरी बन, भारत में यश-वैभव लाये।
हे! यश वैभव लाने वाले, तुमको है प्रणाम मेरा।
हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुम वीर भूमि के वीर पुत्र हो, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुमने शकों को विध्वंस किया, भारत में गुप्त काल लाये।
तुम न्याय धर्म का पालक बन, भारत में स्वर्णकाल लाये।
हे! स्वर्णकाल लाने वाले, तुमको है प्रणाम मेरा।
हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुम वीर भूमि के वीर पुत्र हो, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुमने ही हेमू बन करके, मुगलों को सबक सिखाया था।
तुमने ही भामाशाह बनकर, माँ का मुकुट बचाया था।
हे! दानवीर और वीर व्रती, तुमको है प्रणाम मेरा।
हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुम वीर भूमि के वीर पुत्र हो, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुमने ही कामायानी रचकर, पावन रस बरसाया था।
तुमने ही मैथली बनकर, देशभक्ति का नाद सुनाया था।
तुमने ही रतन चन्द बनकर, प्रगति का पाठ पढ़ाया था।
हे! राष्ट्रप्रेम के अद्भुत प्रहरी, तुमको है प्रणाम मेरा।

तुम वीर भूमि के वीर पुत्र हो, तुमको है प्रणाम मेरा।
हे! वैश्य जाति के अमर सपूतों, तुमको है प्रणाम मेरा।
तुम वीर भूमि के वीर पुत्र हो, तुमको है प्रणाम मेरा।

लाला मटौल चन्द अग्रवाल :

सन् 1857 की क्रान्ति के दिनों में दिल्ली में मुगल सम्राट बहादुर शाह जफर का शासन था। उसने अंग्रेजों के विरुद्ध तलवार उठा ली थी। लेकिन कुछ दिन बाद स्वतन्त्रता समर के वीर सैनिकों के सामने धन की कमी आगे आने लगी। तब दिल्ली सम्राट बहादुर शाह जफर ने गाजियाबाद के पास डासना के पुराने रईस लाला मटौल चन्द अग्रवाल को बुलाने हेतु अपना एक दूत भेजा। लाला मटौल चन्द सम्राट के पास आये, तो सम्राट ने उनसे कहा कि सेठ साहब, क्या आप हमे कुछ धन उधार दे सकते है? सेठ मटौल चन्द ने कहा कि सम्राट हम भामाशाह के वंशज है जितना धन सम्भव होगा, मैं अवश्य ही लेकर आपके पास आऊँगा। सेठ मटौल चन्द वापिस डासना आये। यह स्थान दिल्ली से लगभग 45 कि0मी0 दूर है। वहाँ पर आकर लाला मटौल चन्द ने छकड़ों में सोने, चाँदी के सिक्के भरवाये तथा बैल गाडियों और रथों में लादकर रात ही रात मे दिल्ली पहुँच गये तथा सारा धन दिल्ली सम्राट बाहुदर शाह जफर के सामने रख दिया। बहादुर शाह की आँखें खुली रह गयीं। उसने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि इतना धन उसे मिल जायेगा। उसने कहा सेठजी आपके अहसान का बदला हम कभी नहीं चुका पायेंगे। यदि हम जिन्दा रहे तो उधार जरूर चुकाया जायेगा। सेठ मटौल चन्द ने कहा कि सम्राट हम भामाशाह के वंशज है यह धन आपको उधार नहीं दे रहे हैं, यह धन तो देश का ही है और के ही काम आयेगा। मैं आपके ऊपर कोई अहसान नहीं कर

pdfelement
Remove Watermark Now

हूँ मैं तो केवल अपने कर्त्तव्य का पालन ही कर रहा हूँ। बहादुर शाह जफर की आँखों में आँसू आ गये। कितना महान है यह व्यक्ति। कितनी महान है इसकी वैश्य अग्रवाल जाति। वहाँ उपस्थित सभी लोगों के मुँह से निकल पड़ा, वाह! सेठजी वाह! सचमुच कितने महान हैं आप?

यद्यपि लाला मटौल चन्द अग्रवाल आज इस दुनिया में नहीं हैं, तथापि उनकी कीर्ति सदैव अमर रहेगी ओर उनका राष्ट्र प्रेम, उनका त्याग, उनका उच्चादर्श, उनका बलिदान प्रत्येक भारतीय के हृदय में सदैव ही देश भक्ति की ज्वाला को जलाये रखेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी :

स्वतंत्रता आन्दोलन के महानायक महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 में पोरबंदर में हुआ था। यह स्थान गुजरात में स्थित है। इनका पूरा नाम मोहनदास करम चन्द गांधी था। इनके पिता का नाम करम चन्द गांधी था, जो राजकोट के राजा के यहाँ दीवान थे। बारह वर्ष की अवस्था में ही कस्तूरबा के साथ इनका विवाह सम्पन्न हो गया था। भारत में अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद बापू कानून की शिक्षा लेने के लिए इंग्लैण्ड गये। वहाँ से बैरिस्टर बनकर जब वापिस लौटे तो राजकोट में इन्होंने वकालत करना प्रारम्भ कर दिया। थोड़े दिनों बाद वे राजकोट से मुम्बई वकालत करने चले गये। वहाँ से उन्हें एक मुकदमे में दक्षिण अफ्रीका जाना पड़ा। जब ये दक्षिण अफ्रीका गये तो इन्होंने वहाँ पर भारतीयों की बहुत ही दयनीय अवस्था देखी। उन्हें कदम-कदम पर अपमानित किया जाता था। अतः इन्होंने सभी भारतीयों को एकत्रित करके सत्यागृह आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। इन्हें अपने उद्देश्य में पूरी सफलता मिली। गाँधी जी वहाँ से

वापिस भारत 1914 में लौट आये। यहाँ आकर इन्होंने कांग्रेस की गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। उस समय प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था। गांधी जी को विश्वास था कि युद्ध के बाद अंग्रेज भारतीयों की माँगों को मान लेगें तथा हमें स्वतन्त्रता मिल जायेगी। अतः उनहोंने इस संकट की घड़ी में अंग्रेजों का साथ दिया। परन्तु युद्ध के बाद भारतीयों को स्वतन्त्रता मिलनी तो दूर, बल्कि सरकार ने दमन नीति का अनुसरण करके नेताओं को जेल में डालना प्रारम्भ कर दिया। यहीं से *"गाँधी-युग"* का प्रारम्भ होता है। अब उन्होंने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग के द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। उनके कार्यक्रम में न केवल स्वतन्त्रता थी बल्कि देश का आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक उत्थान भी था। गांधी जी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा हरिजन-उद्धार पर भी बल दिया।

1920 में उन्होंने असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। स्वदेशी आन्दोलन बड़े जोरों से चला। विदेशी माल का बहिष्कार किया जाने लगा। विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गयी। सन् 1930 में प्रथम गोल मेज सभा लन्दन में हुई। लेकिन कांग्रेस ने उसमें भाग नहीं लिया। 1931 में दूसरी गोल मेज सभा लन्दन में हुई। उसमें कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में गांधी जी ने भाग लिया। वहाँ पर गांधी जी के सम्मान में वहाँ की रानी खड़ी हो गई थी तथा गांधी जी ने घुटनों तक की धोती पहनी हुई थी और ऊपर मात्र, एक शाल था। अर्थात अधनंगे शरीर से उन्होंने हाल में प्रवेश किया था। जबकि राजा की शर्त थी कि सूट पहनकर पूरे लिबास में आना चाहिए। परन्तु गांधी जी ने कहा कि मैं अपने देश का प्रतिनिधि हूँ। वहाँ के लोगों के पास तन ढकने के लिए वस्त्र नहीं हैं। फलतः गांधी जी को अधनंगे वस्त्रों में ही प्रवेश देना पड़ा। लेकिन इस गोल मेज सम्मेलन का भी कोई

pdfelement
Remove Watermark Now

फायदा नहीं हुआ। अंग्रेजों ने हरिजनों को हिन्दुओं से अलग कर दिया। अतः गांधी जी ने 1932 में आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। सारे देश में हलचल मच गयी। सारा देश गाँधी जी के साथ था। शीघ्र ही हिन्दुओं और हरिजनों के सारे नेता पूना में एकत्रित हुए तथा एक समझौता हो गया, जिसे पूना पैक्ट के नाम से जाना जाता है। इसके अनुसार हरिजनों को हिन्दु समाज का अभिन्न अंग मान लिया गया।

सन् 1940 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। आन्दोलन बड़ी तेजी से चला। 1942 में उन्होंने *"अंग्रेजों भारत छोड़ो"* का नारा दिया। फलतः 15 अगस्त 1947 को गांधी जी देश को स्वतंत्र कराने मे सफल हो गये। लेकिन देश के विभाजन को नहीं रोक पाये। जगह-जगह हिन्दु-मुसलमानों में भीषण संघर्ष प्रारम्भ हो गये। 15 अगस्त 1947 को जब देश में आजादी का जश्न मनाया जा रहा था, वे उस समय वर्तमान बंगलादेश के नोआखाली में हिन्दुओं को मुस्लिमों के आक्रमणों से बचा रहे थे। उन्होंने अपने प्राणों की परवाह न करके देश का दौरा किया और मार-काट को बंद करने का भगीरथ प्रयास किया। यद्यपि मारकाट बंद हो गयी, परन्तु उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। 30 जनवरी 1948 को प्यारे बापू की हत्या नाथूराम गोड़से ने कर दी थी। इस प्रकार राष्ट्रपिता की जीवन लीला समाप्त हो गई।

भारत को गाँधी जी की देन :

गाँधी जी विश्व की उन महान विभूतियों में से थे जिन्होंने नवयुग का निर्माण किया। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था, जिसे उन्होंने प्रभावित न किया हो। उनके संदेश, उनके विचार न केवल भारत के लिए वरन् सम्पूर्ण विश्व के लिए थे।

राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक तथा नैतिक कोई ऐसा क्षेत्र नहीं था जिस पर गाँधी जी का प्रभाव न पड़ा हो। अतः सम्पूर्ण राष्ट्र ने उन्हें राष्ट्रपिता की उपाधि से विभूषित किया। राष्ट्र को उनकी मुख्य देन निम्न प्रकार हैं-

1. दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों का उद्धार किया।
2. स्वतन्त्रता आन्दोलन को जन-साधारण का आन्दोलन बनाया।
3. स्वतन्त्रता आन्दोलन में सत्य, अहिंसा के नये अस्त्रों का प्रयोग किया।
4. भारत को स्वतन्त्रता प्रदान कराने में महत्वपूर्ण योगदान किया।
5. हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रयास किया।
6. सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन किया।
7. व्यवहारिक शिक्षा को प्रोत्साहित किया।
8. स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग को प्रोत्साहित किया।
9. किसान आन्दोलन द्वारा किसानों का उद्धार किया।
10. हरिजनों को मन्दिरों में प्रवेश दिलाकर छुआ-छूत को समाप्त कराकर, हरिजनों का उद्धार किया।
11. सादा जीवन उच्च-विचार का पाठ पढ़ाया।

आज विश्व के लगभग 120 देशों में गांधी जी के नाम पर डाक टिकट जारी किये गये हैं तथा 150 देशों में उनकी मूर्ति स्थापित की गई या उनके सम्मान में सड़क या चौराहों का नामकरण किया गया है। कई देशों में उनके नाम से शोध संस्थान चलाये जा रहे हैं। उनके जीवन का एक ही लक्ष्य था *"देश की आजादी"*। उसके लिए उन्होंने सम्पूर्ण भारत में देशभ की जो अलख जगाई वह जन्म जन्मान्तर तक देशवासियों प्रेरणा प्रदान करती रहेगी तथा युगों-युगों तक लोग उनको स्म करते रहेंगे। यद्यपि आज गांधी जी इस संसार में नहीं हैं प

pdfelement
Remove Watermark Now

उनकी कीर्ति सदैव अमर रहेगी तथा भारत के इतिहास में उनका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

इस धरा के महान व्यक्तित्व तथा वैश्य जाति के गौरव एवं भारत राष्ट्र के राष्ट्रपिता के प्रेरक व्यक्तित्व तथा अद्भुत कृतित्व पर मैं अपनी एक कविता यहाँ पर प्रस्तुत कर रहा हूँ जो कि बहुत ही लोकप्रिय हुई है। यह कविता राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के बहुमुखी व्यक्तित्व को प्रकट करती है तथा इस कविता को बार-बार पढ़ने पर महात्मा गाँधी का चित्र ही नहीं चरित्र भी सामने आ जाता है-

इतिहास पुरूष गाँधी

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

सन् अट्ठारह सौ सत्तावन में, स्वातन्त्र युद्ध हुआ था भारत में।
कुछ देश भक्त रजवाड़ों ने, क्रान्ति बिगुल बजाया भारत में।
लेकिन काल चक्र की गति से, हो गयी क्रान्ति असफल।
थी विकल वेदना सबके मन में, क्यों हुयी क्रान्ति निष्फल।।
सबके मन में था एक प्रश्न, क्यों हुये गुलाम हम सभी आज।
क्या वह दिन भी आ पायेगा, जब देखेगें हम अपना राज।
निराशा और हताशा के स्वर ही आते थे सबके मन में।
ज्वालामुखी धधक रहा था, आक्रोश मचा था जन-जन में।।
थी दो अक्टूबर की प्रातः बेला, रिमझिम मेघ बरसते थे।
सन् अट्ठारह सौ उनहत्तर था, वन में मोर थिरकते थे।
थी ऐसी सुन्दर मधुमय बेला, पिता करमचन्द के घर में।
गुजरात प्रान्त की एक नगरी, मोहन जन्मा पोरबन्दर में।।
ज्योतिष ने भविष्यवाणी की, यह अवतारी होगा भारत का।
इस विश्व पटल के ऊपर यह, युग-पुरूष बनेगा भारत का।

यह 'सत्य' शब्द का बीज-मंत्र फैला देगा जन-जन में।
यह नव-क्रान्ति का वाहक बनकर, प्रकाश भरेगा जन-जन में।।
उसने होम कर दिया सारा जीवन, स्वतन्त्रता की वेदी पर।
जनमानस अब आमादा था, भारत आजाद कराने पर।
बच्चा-बच्चा तैयार खड़ा था, अब माँ पर शीश कटाने को।
घर-घर में अब बिगुल बजा था, माँ को स्वतन्त्र कराने को।।
उनके जीवन का एक ही लक्ष्य, जिस पर प्राण न्यौछावर थे।
था भारत का अब एक ही नेता, जिस पर सब न्यौछावर थे।
डांडी हो या गोल-मेज, सबमें गांधी दिखलाई देता था।
सारा भारत उसके पीछे था, वह आगे दिखलाई देता था।।
उसमें चुम्बक जैसा आकर्षण था, जो खींच रहा था सबको।
उसमें कुछ ऐसा जादू था, जो सम्मोहित करता था सबको।
जो उसके सम्मुख जाता था, वह उसका ही हो जाता था।
उसमें कुछ ऐसा अद्भूत था, जो सब पर भारी पड़ता था।।
थी चौदह अगस्त की अर्द्धरात्रि, जब आजाद हुआ प्यारा भारत।
थी चौबीस बजकर एक मिनट, जब जाग रहा था सारा भारत।
आज निशा भी कुछ ऐसी थी, जो सबको प्यारी लगती थी।
वह रूप निशा का अद्भुत था, जो जगमग-जगमग करती थी।।
यह उसके प्रयासों का फल था, जो हमने आजादी पाई।
और थी उसकी यह तपश्चेतना, जो फलीभूत होती आई।
अफसोस कि एक पागल हाथी ने, निर्मर्मता की हद कर दी।
जब हत्यारे, भीरू, गोडसे ने, गांधी जी की हत्या कर दी।।
लेकिन वो अटल सूर्य विश्व पटल पर, चमक रहा है अब भी।
उसका सत्याग्रह इस भूमण्डल पर, दमक रहा है अब भी।
सत्य-अहिंसा और प्रेम का, नारा गूँज रहा है अब भी।
श्वांस-श्वांस में बसा हुआ हैं, गांधी जिन्दा है अब भी।।
अमर हो गया उसका जीवन, और अमर हुआ उसका बलिदान।
अमर हो गयी गाथा उसकी, और अमर हो गया उसका ज्ञान।

pdfelement
Remove Watermark Now

उसकी अमर हो गयी तपश्चेतना, जय जय जय गांधी महान।
प्रकाश तुम्हारा फैल रहा है, वैश्य जाति, जय जय महान।।
नमन तुम्हें करता जग सारा, नमन तुम्हें, हे! प्रकाश पुँज।
नमन तुम्हारी अभिलाषा को, हे! वैश्य जाति के गौरव कुँज।
निश्छल भक्ति, सत्य-अहिंसा, और प्रेम पयोधि के सोपान।
नमन तुम्हें है बारम्बार, हे! वैश्य जाति के गौरव महान।।

लाला लाजपत राय :

स्वतन्त्रता संग्राम के सिंह पुरूषों में लाला लाजपत राय का बड़ा ही प्रतिष्ठित स्थान है। उनकी शूरता, वीरता और निर्भीकता के कारण ही उन्हें *"पंजाब केसरी"* की उपाधि से विभूषित किया गया। वे बड़े ही क्रान्तिकारी विचारों के उग्रवादी नेता थे। बाल, पाल, लाल की तिकड़ी स्वतन्त्रता इतिहास में सदा अमर रहेगी।

लाला लाजपत राय का जन्म 28 फरवरी सन् 1865 को उनके ननिहाल जिला फिरोजाबाद में डोडी ग्राम में हुआ था। इनके पिता लुधियाना जिले में स्थित ग्राम जगरांव के निवासी थे। इनके पिता सेठ राधा कृष्ण एक प्रतिष्ठित अग्रवाल वैश्य थे। इन्होंने लाहौर के गवर्नमैन्ट कालिज से एम0ए0 तथा मुख्तारी की परीक्षा पास की तथा लाहौर में वकालत प्रारम्भ कर दी। वकालत के साथ लाला जी सामाजिक गतिविधियों में भी भाग लेने लगे। इनके पिता आर्य समाजी थे। अतः ये भी आर्य समाजी हो गये। इन्होंने सामाजिक कुरीतियाँ विशेषकर अस्पृश्यता तथा दीन दुखियों की सहायता करने का व्रत लिया। इन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए स्कूल और कालिज बनवाये। अकाल के समय लाला जी ने जनता की जो सेवा की वह प्रशंसनीय है। शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए तथा अछूतोद्धार एवं समाज सेवा के जो कार्य

लाला जी ने किये वे सदैव ही सराहनीय रहेगें।

लाला जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अतः वे इतने से ही संतुष्ट न रह सके। उन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में भी कूदने का मन बना लिया। अतएव वे उसमें कूद पड़े। उस समय कांग्रेस में दो विचारधाराएं प्रवाहित हो रही थीं। एक उग्र विचारधारा, दूसरी नम्र विचारधारा। उग्र विचारधारा का नेतृत्व लोकमान्य तिलक कर रहे थे तथा नम्र का नेतृत्व गोपाल कृष्ण गोखले कर रहे थे। लाला जी ने तिलक जी का अनुगमन किया। उन्होंने क्रान्तिकारियों का खुलकर साथ देना प्रारम्भ कर दिया। उनके ओजस्वी भाषण से जनता मन्त्र मुग्ध हो गयी। अंग्रेजी सरकार उनके पीछे पड़ गयी। वे अंग्रेजों से लोहा लेने के पक्ष में थे। उन्होंने 1905 में बनारस कांग्रेस में प्रस्ताव रखा कि भीख माँगना बन्द किया जाये, तथा देश को सशक्त बनाया जाए। इस समय गोपाल कृष्ण गोखले कांग्रेस के अध्यक्ष थे। अतः यह प्रस्ताव पारित नहीं हो सका तथा अंग्रेजों ने लाला जी को देश से निकाल दिया। 1906 में कलकत्ता कांग्रेस मे दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में यह प्रस्ताव पारित हो गया तथा इसके साथ ही औपनिवेशिक स्वराज्य का ध्येय भी घोषित हुआ। तथा लाल, बाल, पाल की त्रिमूर्ति उग्र राष्ट्रवादी नेता के रूप में विख्यात हुई। 1908 से 1916 तक से माँड़ले जेल में रहे। इन्होंने युवकों को प्रेरणा देने के लिए मैजिनी तथा गैरीवाल्ड़ी की जीवनियाँ भी लिखीं। उन्होंने *"यंग इण्डिया"* नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की। जिस पर ब्रिटिश सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया। इन्होंने *"वन्दे मातरम्"*, *"पंजाबी"* और *"दि प्यूपिल"* नामक तीन समाचार पत्रों का प्रकाशन भी किया। वस्तुतः इनकी लेखनी बहुत ही सशक्त थी। उनकी अन्य पुस्तकों में *"भगवत गीता का संदेश"*, *"ब्रिटेन का भारत के प्रति ऋण"*, *'दुखी भारत'*, *'हिन्दू-मुस्लिम एकता'* तथा *'तरूण भारत'*

pdfelement
Remove Watermark Now

महत्वपूर्ण है। इनकी ओजस्वी वाणी के साथ लेखनी भी बहुत सशक्त थी। अतः नवयुवकों के आप हृदय सम्राट थे। इनकी सबसे प्रसिद्ध और चर्चित पुस्तक *'अनहैप्पी इण्डिया'* थी जो इन्होंने मिस मेयो की भारत विरोध की कुख्यात पुस्तक के जवाब मे लिखी थी। इसकी लाखों प्रतियां देश भर में बांटी गईं। 1920 में लाला जी को कांग्रेस का सभापति चुना गया। महात्मा गाँधी ने इस अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव रखा तथा बहुमत से यह प्रस्ताव पारित हुआ। लेकिन चौरी-चौरा की हिंसा की घटना के कारण महात्मा गांधी ने इस आन्दोलन को वापिस ले लिया था। लाला जी चौरी-चौरा की घटना के बाद तेजी से चलते हुए इस आन्दोलन को, बन्द करने के, गाँधी जी के विचार से सहमत नहीं थे। 1923 में आपने मोती लाल नेहरू के साथ मिलकर स्वराज्य दल की स्थापना की तथा आप केन्द्रीय सभा में चुने गये। आपके प्रयत्नों के कारण लाहौर में डी0ए0वी0 कालिज लाहौर की स्थापना हुई। आपने इसके निर्माण हेतु स्वयं 50 हजार रूपये दान किये थे। आप 1925 में हिन्दू महासभा के भी अध्यक्ष चुने गये थे। देश और जाति के लिए आप अपना सर्वस्व बलिदान हेतु तत्पर रहते थे।

उन्होंने अपने ही पत्र *"वन्दे मातरम्"* में लिखा था कि-

मेरा मजहब - हक परस्ती,
मेरी मिल्लत - कौम परस्ती,
मेरी अदालत - अन्तःकरण,
मेरी जायदाद - मेरी कलम,

1928 में साइमन कमीशन भारत आया। *'साइमन गो बैक'* के नारों से सारा देश गूँज उठा। 18 अक्टूबर 1928 को साइमन कमीशन लाहौर आया। लाला जी के नेतृत्व में साइमन कमीशन को काले झण्डे दिखाये गये। लाला जी को लाठियों के

प्रहार से पीटा गया। तब लाला जी ने कहा कि *"मुझ पर किया गया लाठी का एक-एक प्रहार, ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में कील बन कर रहेगा।"* लाठी के प्रहार से घायल लाला जी का 17-11-1928 को निधन हो गया।

इनकी मृत्यु पर गांधी जी ने कहा कि *"भारतीय गगन-मण्डल से एक महान नक्षत्र का लोप हो गया।"*

यद्यपि लाला जी परलोक वासी हो गये हैं लेकिन उनका चरित्र, उनका परिश्रम, उनका अदम्य साहस, उनका राष्ट्र प्रेम तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु उनका बलिदान, भारतीय इतिहास में सदैव ही याद किया जाता रहेगा और उनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। इनकी महानता को देखते हुए इनके सम्मान मे भारत सरकार ने एक डाक टिकट भी जारी किया।

विपिन चन्द्र पाल :

उग्र राष्ट्रवाद का नेतृत्व करने वाली 'लाल, बाल, पाल' की त्रिमूर्ति के तीसरे नक्षत्र बंगाल के वैश्य परिवार में जन्मे विपिन चन्द्र पाल थे जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट देशभक्ति तथा अभूतपूर्व वक्तृता शैली और अद्भुत योग्यता से बंगाल में ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ें हिला दी थीं। वे विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, स्वदेशी और राष्ट्रीय शिक्षा के दृढ़ समर्थक थे। उनके विचार इतने उग्र थे कि कुछ बातों में तो वे तिलक जी से भी आगे थे।

विपिन चन्द्र पाल 1887 में, कांग्रेस में, साधारण सदस्य के रूप में सम्मिलित हुए तथा तिलक जी की राष्ट्रवादी विचारधारा से प्रभावित होकर उनके अनुगामी बन गये। आप उस समय के नरम कांग्रेसी नेताओं द्वारा अपनाई जा रही चाटुकारिता की प्रवृति के कटु आलोचक थे तथा भिक्षावृति की नीति के विरोधी थे। उनका कथन था कि *"हम देश में ऐसे कार्य करेगें, जनता को*

pdfelement
Remove Watermark Now

ऐसे साधन उपलब्ध करायेंगे, राष्ट्र की शक्ति को इस प्रकार सुसंगठित करेंगे, जनता में स्वराज्य की ऐसी भावना जागृत करेंगे, कि हम किसी भी शक्ति को, जो हमारे विरोध में खड़ी हो, उसे परास्त करने में सफल होंगे।"

जब ब्रिटिश सरकार द्वारा बंगाल विभाजन की योजना प्रकाशित की गई तभी विपिन चन्द्र पाल द्वारा इसके विरोध में तीव्र प्रतिक्रिया की गई।

उन्होंने सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के साथ मिलकर इस विभाजन योजना के विरोध हेतु सात अगस्त 1905 को कलकत्ते के टाउन हाल में बंग-भंग का विरोध, विदेशी सामान का बहिष्कार तथा स्वदेशी सामान का प्रचार और प्रसार का प्रस्ताव पारित कराया।

1906 में विपिन चन्द्र पाल देश प्रेम की अग्नि को प्रज्ज्वलित करने हेतु मद्रास चले गये। वहाँ पर शासन ने उनके भाषणों को राजद्रोहात्मक करार दिया तथा उन्हें मद्रास छोड़ने हेतु विवश कर दिया। विपिन चन्द्र पाल को "साम्राज्य के भीतर स्वराज्य" की माँग पसन्द न थी। यह प्रस्ताव दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में 1906 में कलकत्ते में कांग्रेस अधिवेशन में नरमपन्थियों द्वारा पारित कराया गया था। वह इसे अव्यवहारिक समझते थे। उन्होंने पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति को ही अपना लक्ष्य घोषित किया था। बंगाल के महान क्रान्तिकारी नेता के रूप में विख्यात वारीन्द्र कुमार घोष तथा भूपेन्द्र नाथ दत्त ने *'युगान्तर'* में एक लेख में लिखा था कि *"क्या शक्ति के उपासक बंगालवासी रक्त बहाने से डर जायेंगें? इस देश में अंग्रेजों की कुल संख्या डेढ़ लाख से अधिक नहीं है, यदि तुम्हारा संकल्प दृढ़ हो तो अंग्रेजी राज्य एक दिन में ही समाप्त हो सकता है। देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना जीवन अर्पित कर दो परन्तु उससे पूर्व कम से कम एक अंग्रेज का जीवन समाप्त कर दो।"*

उग्र राष्ट्रवादी विचारों से ओत-प्रोत विपिन चन्द्र पाल के मन-मस्तिष्क पर इस क्रान्तिकारी लेख का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इस लेख से विपिन चन्द्र पाल खुलकर क्रान्तिकारियों की मदद करने लगे।

विपिन चन्द्र पाल के इन उग्र राष्ट्रीय कार्यों के कारण सरकार विपिन चन्द्र पाल को अपना घोर शत्रु समझने लगी। सन् 1907 में उन्हें अरविन्द घोष के विरुद्ध गवाही देने हेतु बुलाया गया परन्तु उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया। उन्हें 6 मास की सजा दी गई। जेल से छूटने के बाद 1908 में उन्हें तीन वर्ष के लिए देश से निर्वासित कर दिया गया। ये तीन वर्ष उन्होंने इंग्लैण्ड में बिताये। यहाँ पर यह बतलाना भी उचित होगा कि विपिन चन्द्र पाल से सरकार कितना घबराती थी। यह इस पत्र से ही स्पष्ट है, जो 1907 में वायसराय ने विपिन चन्द्र पाल को निष्कासन की सजा हेतु भारत मन्त्री को लिखा था-

"पाल का व्यवहार दानवी है और हम उसके खतरे को नजर अंदाज नहीं कर सकते। इस प्रकार के अपराधियों पर मुकदमा चलाने की नीति है परन्तु कलकत्ते में ऐसा कोई जूरी नहीं मिलेगा, जो विपिन चन्द्र पाल को धारा 124 ए (राजद्रोह) में अपराधी घोषित कर दे। विपिन चन्द्र पाल जैसे खास मामलों में निष्कासन ज्यादा सीधा और कारगर तरीका होगा, बनिस्वत मुकदमा चलाने के।"

1932 में विपिन चन्द्र पाल की मृत्यु हो गयी। ये जीवन भर नवयुवकों को राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रसेवा तथा राष्ट्रप्रेम की प्रेरणा देते रहे। इनकी प्रेरणा से हजारों-हजारों नवयुवकों ने देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी।

pdfelement
Remove Watermark Now

लाला हरदयाल एम0ए0 :

लाला हरदयाल की बुद्धि बड़ी तीव्र थी, जिसे एक बार पढ़ लिया, वह सदा के लिए उनको याद हो जाता था।

जिस प्रकार बंगाल में विपिन चन्द्र पाल नवयुवकों को प्रेरणा देने के लिए उग्र राष्ट्रवादी विचार धारा को सम्पूर्ण बंगाल में फैला रह थे, उसी प्रकार पंजाब में लाला हरदयाल ने 1907 में सरदार अजीत सिंह, भाई परमानन्द के साथ मिलकर क्रान्तिकारियों को संगठित किया तथा उन्हें उग्र राष्ट्रवाद की ओर प्रेरित किया। इन्होंने पंजाब के किसानों को संगठित करके सरकार की भूमि सम्बन्धी नीति का विरोध किया तथा लाहौर और रावलपिण्डी में विरोध प्रदर्शन हुए। तत्पश्चात 1909 में सरकार द्वारा भूमि सम्बन्धी नीति में जनता की माँग के अनुरूप परिवर्तन कर दिए गये।

लाला हरदयाल ने अमेरिका पहुँचकर 1913 में *'गदर पार्टी'* की स्थापना की। उन्होंने अमेरिका के सेनफ्रांसिस्को नगर से *"गदर"* नामक समाचार पत्र भी प्रकाशित करना प्रारम्भ किया भारत की स्वतन्त्रता के प्रयास किये। लाला हरदयाल ने अमेरिका में रह रहे सभी भारतीयों को एकत्रित किया तथा उन्हें उग्र राष्ट्रवाद की ओर प्रेरित किया। अमृतसर के व्यापारी गुरुदत्त सिंह ने जो कि सिंगापुर में ठेकेदारी करते थे, एक जापानी कम्पनी से "कोमांटागारू" नामक एक जलपोत लेकर गदर पार्टी को देकर, महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। लाला हरदयाल ने अमेरिका और कनाडा में घूमकर भारतीय स्वतन्त्रता हेतु अलख जगायी तथा वहाँ पर रहने वाले भारतीयों को संगठित किया। देश की स्वतन्त्रता हेतु उनका योगदान अविस्मरणीय है। भारत सरकार ने उनकी सेवाओं को देखते हुए उनके सम्मान में, उनके नाम पर एक डाक टिकट

जारी किया। भारत के इतिहास में उनका नाम सदैव ही आदर और सम्मान के साथ लिया जायेगा।

डॉ0 भगवान दास माहौर :

आपका जन्म सन् 1910 में दतिया के पास छोटी बडौनी में हुआ था। आपकी शिक्षा आपके मामा नाथूराम माहौर के घर पर हुई जो कि झाँसी के रहने वाले थे। 1928 में जब लाला लाजपत राय की हत्या सान्डर्स द्वारा लाठी बरसाने से हुई तो आपके हृदय में बदला लेने की भावना जागृत हुई। चन्द्रशेखर आजाद काकोरी षड़यंत्र केस के कारण फरार थे। आपने सदाशिव को साथ लेकर सभी क्रान्तिकारियों को इकठ्ठा किया। सान्डर्स के वध के समय भगवान दास माहौर जी घटना स्थल पर मौजूद थे। इस केस में माहौर जी को फरार अभियुक्त घोषित किया गया।

जब चन्द्रशेखर आजाद, सदाशिव तथा माहौर जी दक्षिण में क्रान्तिकारियों को इकठ्ठा करने हेतु गये, इनके पास में पिस्तौल, बम व कारतूस थे। ग्वालियर से जब ये भुसावल पहुँचे, भुसावल में इन्हें गाड़ी बदलनी थी। जैसे ही इन्होंने अपना सामान उतार कर रखा कि पुलिस वालों ने इनके सामान की चैकिंग की। उसमें बम, पिस्तौल और कारतूस मिले। माहौर जी ने गोली चलाई तथा वहाँ से भाग खड़े हुए, लेकिन रास्ता अनजाना था। अतः पकड़ लिए गये। आजाद ने इनके पास एक पिस्तौल भिजवाई तथा मुखबिरों को समाप्त करने का काम सौंपा। हथकड़ी और बेड़ियों के साथ यह काम बड़ा ही दुष्कर था लेकिन इन्होंने फणीन्द्रनाथ घोष तथा जय गोपाल मुखबिर पर गोली चलायी। फणीन्द्र बचकर भाग गया तथा जय गोपाल घायल हो गया। इन्हें आजीवन काले पानी की सजा दी गई। जेल से छूटने पर ये बी0ए0, एम0ए0 पास करके शिक्षक बन गये। बाद में आगरा विश्वविद्यालय से

pdfelement
Remove Watermark Now

पी0एच0डी0 की डिग्री प्राप्त की। ये बुन्देल खण्ड डिग्री कालिज, झाँसी में हिन्दी के प्रवक्ता एवं बाद में रीडर रहे। सन् 1979 में आप स्वर्ग को प्रस्थान कर गये। भारतीय इतिहास में आपका नाम सदैव अमर रहेगा।

आचार्य नरेन्द्रदेव :

आपका जन्म सीतापुर मे वैश्य परिवार में सन् 1889 में हुआ था। आपकी शिक्षा इलाहाबाद व बनारस में हुई। आपने अल्पायु में ही कांग्रेस में प्रवेश कर लिया था। आप जब बीस वर्ष के थे, तभी 1909 में कांग्रेस के साधारण सदस्य बन गये। फिर 1915 में *'होमरूल लीग'* के सदस्य बन गये। 1926 में आप काशी विद्यापीठ के आचार्य बने। 1929 में आपने रूस की यात्रा की तथा आपकी विचारधारा कम्युनिस्टों की ओर परिवर्तित होने लगी। आप अच्छे वक्ता थे। 1942 के आन्दोलन में आपको जेल हुई तथा अहमद नगर जेल में रखा गया। जब देश आजाद हुआ तो आपने कांग्रेस से अलग सोशलिस्टों का एक अलग ग्रुप बना लिया। बाद में 1948 में आपने सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। आप उच्चकोटि के साहित्यकार थे। आप लखनऊ व बनारस विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। सन् 1962 में आपका देहावसान हो गया। लेकिन राष्ट्र आपकी देशभक्ति, आपकी संगठन शक्ति, आपकी प्रगतिवादी विचारधारा को सदैव ही स्मरण करता रहेगा।

सेठ जमना लाल बजाज :

सम्पूर्ण भारत वर्ष में केवल मात्र सेठ जमना लाल बजाज का ही एक ऐसा परिवार था जिसके सभी व्यक्ति 1942 तक जेलयात्रा कर चुके थे। जमना लाल बजाज व उनकी पत्नी जानकी देवी बजाज कई बार वर्धा, नागपुर, जबलपुर में जेल जा चुके थे।

उनके पुत्र कमलनयन बजाज 1932 में सत्याग्रह करके जेल गये। राधा कृष्ण बजाज को 1941 में दो वर्ष की कैद हो गयी थी। इनके दामाद श्रीयुत श्रीमन्नारायण अग्रवाल को 18 माह की सजा काटनी पड़ी। कमलनयन बजाज की पत्नी सावित्री देवी भी रायपुर और जबलपुर जेलों में रही। इस प्रकार इस परिवार ने आजादी के राष्ट्रीय आन्दोलनों में जेल जाकर उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

आपका जन्म 1891 में हुआ। आप महात्मा गांधी की छाया बनकर उनके साथ रहते थे। गांधी जी उन्हें अपना पाँचवा पुत्र मानते थे। 1916 में आपने स्वदेशी व्रत की शपथ ली तथा गांधी जी से भेंट की और गाँधी जी के अनुगामी बन गये। 1923 में आपने नागपुर में झण्डा-सत्याग्रह किया। 1927 में वर्धा में लक्ष्मी नारायण मन्दिर में हरिजन प्रवेश कराया। 1934 में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। उन्होंने हरिजनोद्धार हेतु हरिजन सेवा मण्डल बनाया। शिक्षा के विकास हेतु अनेक स्कूल कालेज बनवाये तथा अनेक गौशाला बनवाईं। गांधी जी को देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन हेतु आपने ब्लैंक चैक बुक दे दी थी। ग्यारह फरवरी 1942 को आपका परलोकवास हो गया। आपकी उत्कृष्ट सेवाओं को देखते हुए, राष्ट्र ने भारत माता के इस महान सपूत के सम्मान में, दिनांक 4.11.1970 को डाक टिकट जारी किया। भारतीय इतिहास में आपका नाम बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा।

श्री चन्द्रभानु गुप्त :

आपका जन्म 1902 में अलीगढ़ में हुआ था। आप अपने विद्यार्थी जीवन से ही आर्य समाज के अखिल भारती संगठन के अन्तर्गत आर्य कुमार सभा में भाग लेना प्रारम्भ व

pdfelement
Remove Watermark Now

दिया था। आपके ऊपर गाँधी जी के विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा। अतः आप काँग्रेस में सम्मिलित हो गये थे। गांधी जी के साबरमती आश्रम में जाकर आपने, आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके, देश की आजादी के महासमर में, अपना सम्पूर्ण जीवन बलिदान करने का व्रत लिया। आपने "काकोरी षड़यंत्र केस" के क्रान्तिकारियों का मुकदमा निःशुल्क लड़ा। क्रान्तिकारियों ने देश में सशस्त्र क्रान्ति करने हेतु बड़ी मात्रा में शस्त्र खरीदे तथा इन शस्त्रों की कीमत चुकाने के लिए क्रान्तिकारियों ने 9 अगस्त 1925 को लखनऊ के निकट काकोरी नामक स्थान पर रेलगाड़ी रोककर सरकारी खजाना लूट लिया था। इस केस में 40 व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया था। इस केस में पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, रोशन सिंह और अशफाक उल्लाह खाँ को फाँसी तथा शचीन्द्र नाथ सान्याल और शचीन्द्र बख्शी तथा मुकन्दी लाल गुप्त को आजीवन कारावास एवं मन्मथ नाथ गुप्त को 14 वर्ष की कैद की सजा दी गई थी तथा कई अन्य व्यक्तियों को भी सजाएं दी गई थीं। इस केस में चन्द्रभानु गुप्त ने अपनी विद्वता का परिचय देते हुए कई लोगों को फाँसी के फन्दे से बचाया था।

देश स्वतन्त्र होने पर आप उ0प्र0 मन्त्री मण्डल में मन्त्री बने। फिर उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने। तत्पश्चात आप तीन बार उ0प्र0 के मुख्यमन्त्री बने। आप अभूतपूर्व संगठनकर्ता थे। 1980 में भारत माता के इस महान सपूत का देहावसान हो गया। आपका विचार था कि-

"एक पराधीन राष्ट्र, बलिदान का मार्ग अपनाकर ही, स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकता है।"

आपका यह विचार युग-युगान्तर तक देश के नवयुवकों को बलिदान करने की प्रेरणा देता रहेगा।

स्वतन्त्रता की प्राप्ति हेतु आपका बलिदान, आपकी सेवा-समर्पण की भावना सदैव ही याद की जाती रहेगी। अपनी मृत्यु से पूर्व अपनी वसीयत में आपने लिखा कि- *"मैं एक भिखारी की भाँति पैदा हुआ और एक भिखारी की तरह जिया तथा एक भिखारी की भाँति ही आज मैं इस नश्वर संसार से विदा ले रहा हूँ।"*

भारत रत्न डॉ0 भगवान दास :

भारत रत्न डॉ0 भगवान दास का जन्म 12.1.1869 को काशी में हुआ था। उनके पूर्वज अग्रोहा के मूल निवासी थे। 16वीं शताब्दी के मध्य ये लोग दिल्ली आ गये थे। उसके बाद चुनार और अहरौरा के आंचलों में बस गये थे। आर्य समाज के जन्मदाता महर्षि दयानन्द जी से आपके पिता का गहरा सम्पर्क था। डॉ0 साहब ने बी0ए0 की परीक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। काशी क्वीन्स कालिज से आपने एम0ए0 किया। फिर काशी विश्वविद्यालय से पी0एच0डी0 की। शुरू में उन्होंने डिप्टी कलैक्टर के पद पर सरकारी नौकरी की। उसके बाद, गांधी जी के सम्पर्क में आने पर आपने सरकारी नौकरी छोड़ दी तथा काशी विद्यापीठ के कुलपति बने। आपने काशी विद्यापीठ से हजारों नवयुवकों को राष्ट्र हित के लिए तथा देश की आजादी के लिए तैयार किया। आपके सुपुत्र श्रीयुत श्रीप्रकाश गुप्त पाकिस्तान में स्वतन्त्र भारत के पहले राजदूत बने। आपकी सेवाओं को देखते हुए भारत सरकार ने आपकों *"भारतरत्न"* की उपाधि से विभूषित किया। डा0 भगवान दास अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान थे। आपने *"मानवधर्म-सार"*, *"प्रणवाद"*, *"साईन्स ऑफ पीस"* आदि दर्जनों पुस्तकें लिखीं। उनकी पुस्तकें विदेशों तक में लोकप्रिय हुईं।

pdfelement
Remove Watermark Now

डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल (1907-1966) :

आपका जन्म उत्तर प्रदेश के ग्राम खेड़ा जिला गाजियाबाद में हुआ। आपकी प्रथम नियुक्ति पुरातत्व विभाग मथुरा में हुई। तदन्तर एण्टी क्वीन्स म्युजियम दिल्ली के अध्यक्ष बने। फिर आप कला स्थापत्य विभाग हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के अध्यक्ष बने। आपने वेदों के प्रचार-प्रसार का भी महान कार्य किया तथा संस्कृत साहित्य को हिन्दी में अनुवाद करके हिन्दी साहित्य के सृजनकर्त्ता बने। 'पाणिनी कालीन भारत', 'हर्ष चरित- एक सांस्कृतिक अध्ययन', 'सत्यवान-सावित्री', कादम्बरी', 'पृथ्वी-पुत्र', 'कल्पवृक्ष', 'पौद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ' और 'उरू-ज्योति' आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। आप भारतीय पुरातत्व विभाग के दीर्घकाल तक अध्यक्ष रहे। आपने जीवन पर्यन्त एक साधक के रूप में पुरातत्व सम्बन्धी सामग्रियों का उद्घाटन करके भारतीय संस्कृति की विविध पर्तों को खोलने का प्रयास किया। भारतीय इतिहास में, आपका नाम सदैव ही अमर रहेगा।

डॉ0 राममनोहर लोहिया (1910-1967) :

भारत में समाजवादी आन्दोलन के प्रणेता डॉ0 राममनोहर लोहिया का जन्म फैजाबाद जिले में अकबरपुर में हुआ था। ग्रेजुएशन करने के बाद आप उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए इंग्लैण्ड गये। वहाँ पर एम0ए0 करने के उपरान्त जर्मनी गये। वहाँ बर्लिन यूनिवर्सिटी से डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। आपने बम्बई और कलकत्ते में गुप्त रेडियों केन्द्र स्थापित किये तथा नेपाल क्षेत्र में "आजाद दस्ते" के लिए कार्य किया। आपने नेहरू जी की अधिनायकवादी नीतियों के विरोध में 1948 में कांग्रेस छोड़ दी थी तथा आचार्य नरेन्द्र देव के साथ

मिलकर सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की। आपने समाज के उपेक्षित वर्ग के उत्थान के लिए कार्य किया तथा सारा जीवन दलितों और पिछड़ों के उत्थान में लगा दिया। मण्डल-आयोग का नारा आपका ही दिया हुआ था। आप अपने जीवन काल में 40 बार जेल गये। आपकी प्रखर वाणी और तेजस्विता के सभी कायल थे। आप अपनी प्रखर वाणी से संसद को गुंजा देते थे। आपके तर्कों का जवाब किसी के पास नहीं होता था। वित्तमन्त्री एवं प्रधानमन्त्री नेहरू जी तक को आपने कई बार निरूतर कर दिया था। आपने जीवन में सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया। देश और प्रदेशों में गैर कांग्रेसी सरकार की स्थापना के आप प्रणेता थे। आपकी प्रखर वाणी और तेजस्विता के कारण 1967 में कई प्रदेशों में गैर कांग्रेसी सरकारें बनी। आपकी सेवाओं का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने आपके सम्मान में डाक टिकट जारी किया।

काकोरी षड़यन्त्र केस" के महान क्रान्तिकारी :

क्रान्तिकारियों ने देश को सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा आजाद कराने हेतु काफी मात्रा में शस्त्र खरीद कर क्रान्तिकारियों तक पहुँचाये तथा इस आन्दोलन को और तेजी से बढ़ाने हेतु, और शस्त्रों की आवश्यकता थी। अतः पं0 राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में क्रान्तिकारियों ने 9.8.1925 को लखनऊ के पास काकोरी नामक स्थान पर रेल रोक कर सरकारी खजाना लूट लिया। उस समय यह खजाना दस लाख रूपये का था। इस विषय में 40 क्रान्तिकारी पकड़े गये थे। जिसमें से राम प्रस बिस्मिल, राजेन्द्र लौहिडी, रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खाँ फाँसी की सजा तथा वैश्य जाति के मुकन्दलाल गुप्त को आजी कारावास, मन्मथ नाथ गुप्त को 14 वर्ष की कैद, हर गोवि गुप्त को 6 वर्ष की सजा तथा मेरठ के श्री विष्णु शरण दुबलि

pdfelement
Remove Watermark Now

(रस्तौगी वैश्य) को काले पानी की सजा हुई। इन क्रान्तिकारियों का मुकदमा निःशुल्क श्री चन्द्रभानु गुप्त द्वारा लड़ा गया जोकि बाद में उ0प्र0 के मुख्यमन्त्री बने।

श्री श्यामलाल गुप्त पार्षद (1895-1877) :

आपका जन्म 1895 में कानपुर के नवल नामक ग्राम में हुआ था। आपने कई बार स्वतन्त्रता संग्राम हेतु जेल यात्राएं की तथा कारागार में अनेक यातनाएं सहन कीं। आपने निम्नलिखित *'झण्डागान'* की रचना की-

'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा'....

इस गीत ने आपको सम्पूर्ण देश में ख्याति दिलाई तथा भारत सरकार ने आपको 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया। आपने कानपुर में 'वैश्य' नामक मासिक पत्रिका का सम्पादन जीवन पर्यन्त किया।

श्री बनारसी दास गुप्त (उ0प्र0) :

आपका जन्म बुलन्दशहर में हुआ। आपने कम आयु में ही राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था तथा इसी कारण आपको कई बार जेल जाना पड़ा और इसी कारण आप अपनी पढ़ाई भी पूरी नहीं कर सके।

आपने कई बार बुलन्दशहर से विधान सभा में प्रतिनिधित्व किया तथा उ0प्र0 मन्त्री मण्डल में मन्त्री पद ग्रहण किया। आपने 1978 से 1980 तक उ0प्र0 के मुख्यमन्त्री के पद को सुशोभित किया। आप लोकसभा के सदस्य भी रहे। आप ओजस्वी भाषणकर्ता तथा अभूतपूर्व संगठनकर्ता थे।

बनारसी दास गुप्त (हरियाणा वाले) :

आप सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी थे। जींद प्रजा मण्डल के प्रमुख कार्यकर्ता थे। हरियाणा के दो बार मुख्यमन्त्री बनें। अखिल भारतीय वैश्य महासम्मेलन के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। आपके निर्देशन में ही अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन हुआ तथा अग्रोहा का विकास हुआ। जब उड़ीसा में मारवाड़ी वैश्य बंधुओं पर अत्याचार हुए तब आपने 1980 में उड़ीसा में मारवाड़ी वैश्य अग्रवाल बन्धुओं के बीच में जाकर उनकी समस्याओं को सुना तथा अनकी आवाज को प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी तक पहुँचाया। इन्दिरा गांधी ने तभी उड़ीसा के मुख्यमन्त्री को डाँट कर कहा कि भविष्य में इस प्रकार मारवाड़ी वैश्य अग्रवाल बन्धुओं पर अत्याचार नहीं होने चाहिए।

श्री कैलाश प्रकाश गुप्ता :

श्री कैलाश प्रकाश गुप्ता का जन्म 17.7.1904 को मेरठ जिले के परीक्षित गढ़ कस्बे में हुआ था। वे प्रारम्भ से ही प्रतिभाशाली छात्र रहे। कैलाश प्रकाश ने आगरा विश्वविद्यालय से एम0एस0सी0 में प्रथम स्थान प्राप्त करके गोल्ड मैडल प्राप्त किया। आप छात्र जीवन से ही आजादी के आन्दोलन में जुड़ गये। आप 1940 एवं 1942 के आन्दोलन में जेल गये। जेल से लौटने पर अध्ययन कार्य में लग गये। आप 1948 से 1952 तक उ0प्र0 विधान परिषद के सदस्य रहे। 1952 से 1962 तक मेरठ से विधायक रहे। 1962 से 1974 तक विधान परिषद के सदस्य रहे। आप उ0प्र0 सरकार में शिक्षा मन्त्री एवं वित्तमन्त्री रहे। आपात काल में 1975 से 1977 तक जेल में रहे। 1977 में आप मेरठ लोकसभा सीट से लोकसभा सदस्य रहे। आपने केन्द्रीय मन्त्री शाहनवाज खाँ को एक लाख से

pdfelement
Remove Watermark Now

भी अधिक वोटों से हराया। आपने मेरठ में स्पोर्टस स्टेड़ियम, मैडिकल कालिज तथा विश्वविद्यालय का निर्माण कराया। मेरठ विश्वविद्यालय ने उन्हें डी0लिट0 की मानद उपाधि प्रदान की। उनका निधन 12 नवम्बर 1988 में हुआ।

श्री रामेश्वर प्रसाद गोलवारा :

आपका जन्म पटना के एक सम्पन्न वैश्य परिवार में सन् 1909 में हुआ था। आपने 1928 में बी0ए0 किया। तत्पश्चात एल0एल0बी0 किया। आपने 1931 से वकालत करना प्रारम्भ कर दिया। उस समय राष्ट्रीय जागरण का नवप्रभात हो रहा था। स्वतन्त्रता के आन्दोलन की किरणें पूरे भारत वर्ष में फैल रही थीं। गांधी जी की स्वदेश पुकार से आपका भावुक हृदय देश के लिए मचल उठा। दलितों की आह, शोषितों की कराह ने आपके हृदय को झकझौर डाला। राष्ट्र की पुकार पर आपने, अपना सारा जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया। आपकी जनप्रियता बढ़ती गयी। आप लोगों के नयनों के नूर हो गये। सन् 1940 में लोगों ने आपको पटना में म्युनिसिपैलिटी में निर्विरोध चुनकर आपके प्रति आस्था व्यक्त की। तत्पश्चात पटना कारपोरेशन में छः बार उपमहापौर तथा दो बार महापौर के पद पर चुनकर जनता ने आपको गौरवान्वित किया। सन् 1978 में आपका देहावसान हो गया।

वैश्य जाति के कुछ अन्य बलिदानी बन्धु :

स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने वाले कुछ प्रमुख वैश्य बन्धुओं की सूची यहाँ पर दी जा रही है, उन्होंने गांधी जी द्वारा चलाये गये सत्याग्रहों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया तथा जेल गये और यातनाएँ सहीं-

1. कृष्णदास शारदा- (माहेश्वरी वैश्य) बीकानेर में फाँसी हुई।

2. जे0एम0 सेन गुप्ता - बंगाल भूख हड़ताल में मृत्यु।
3. वंशी लाल - जगदीशपुर (बिहार)
4. केशव प्रसाद - मीठापुर जिला पटना (बिहार)
5. आचार्य राम सरन दास - मुरादाबाद उ0प्र0
6. लाला भजनलाल - सराय अगस्त जिला एटा (उ0प्र0)
7. श्रीमति महारानी देवी - अलीगंज एटा (उ0प्र0)
8. मथुरा प्रसाद साहू - कटोकर तालाब गया (बिहार)
9. मुरलीधर अग्रवाल - एडवोकेट झाँसी (उ0प्र0)
10. कामरेड राधा कृष्ण माहौर - झाँसी (उ0प्र0)
11. प्रेम नारायण कनकने - झाँसी (उ0प्र0)
12. प्रभागी लाल गुप्त - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
13. नाथुराम गाँधी - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
14. श्री मैथिलीशरण गुप्त - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
15. सत्यनारायण साहू - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
16. गणेश गुप्त - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
17. पुतलू साहू - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
18. राम टहल साहू - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
19. रामसरन आजाद - जय. प्रकाश नारायण के साथ हजारी बाग जेल में रहे।
20. जगधारी गुप्त - जय प्रकाश नारायण के साथ हजारी बाग जेल में रहे।
21. गुलाब चन्द गुप्त - जय प्रकाश नारायण के साथ हजारी बाग जेल में रहे।
22. पन्नालाल गुप्त - अलीगंज एटा (उ0प्र0)
23. लाला हुण्डी लाल गुप्त - कासगंज एटा (उ0प्र0)
24. राम किशोर गुप्त - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
25. श्री निवास गुप्त - चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
26. ओम प्रकाश - अलीगंज एटा (उ0प्र0)

pdfelement
Remove Watermark Now

27. केशव गुप्त – मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)
28. श्री विष्णु प्रभाकर – मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)
29. मनोहर लाल महावर – मुल्तान में 1946 में शहीद हुए।
30. गणेश प्रसाद – चिरगाँव जिला झाँसी (उ0प्र0)
31. प्रोफेसर किशन चन्द जी – आचार्य प्रेम महाविद्यालय, वृन्दावन (उ0प्र0)
32. अशर्फी लाल माहौर – सराय अगस्त एटा (उ0प्र0)
33. भजन लाल माहौर – सराय अगस्त एटा (उ0प्र0)
34. लक्ष्मण दत्त रस्तौगी – एडवोकेट बदायूं (उ0प्र0)
35. लाला राम गुप्ता – इटावा (उ0प्र0)
36. बाबू राम गुप्ता – अलीगंज एटा (उ0प्र0)
37. रतन लाल पोरवार – रतलाम मध्य प्रदेश
38. लाला राम चरण पोरवार – भरथना इटावा (उ0प्र0)
39. गोपीचन्द पोरवार – अमरावती (म0प्र0)
40. गौरी शंकर पोरवार – विधूना इटावा (उ0प्र0)
41. छोटे लाल गुप्त – इलाहाबाद (उ0प्र0)
42. कन्हैया लाल पोरवार – कालपी जालौन (उ0प्र0)
43. राम टहल साहू – तमालपुर मुंगेर (बिहार)
44. राम किशन आर्य और उनकी पत्नी सोना देवी आर्य – पति पत्नी दोनों सक्रिय क्रान्तिकारी रहे।
45. हंस राज अग्रवाल – भटिण्डा में तिरंगा लहराया।
46. सेठ रामनाथ जी – सन् 1942 में जेल गये तथा गाँधी जी की हत्या के समय उनके पास थे।
47. कामरेड चिरंजी लाल – सन् 1942 के आन्दोलन में जेल में रहे।
48. बनारसी दास गोयल – सन् 1942 के आन्दोलन में जेल में रहे।

49. खूबराम सर्राफ – बीकानेर नरेश महाराजा गंगा सिंह के निरंकुश शासन के विरुद्ध 'लोकपरिषद बीकानेर' बनाई तथा कई बार जेल (4 वर्ष तक) में रहे।
50. सत्य नारायण सर्राफ – बीकानेर नरेश महाराजा गंगा सिंह के निरंकुश शासन के विरुद्ध 'लोकपरिषद बीकानेर' बनाई तथा कई बार जेल (4 वर्ष तक) गये।
51. सेठ राम निरंजन सराबगी – मैजिस्ट्रेट की अदालत में झण्डा फहराया तथा जेल गये।
52. बैजनाथ प्रसाद – सन् 1942 के आन्दोलन में जेल में रहे।
53. सेठ मालचन्द हिसारिया – सन् 1942 के आन्दोलन में जेल में रहे।
54. पदम सुख अग्रवाल – सन् 1942 के आन्दोलन में जेल रहे।
55. सन्तलाल जैन – पटना सचिवालय पर झण्डा फहराया और फरार हो गये। पुलिस ने इनके मकान को जला डाला था।
56. उदय चन्द जैन – 42 में जलूस निकाला तथा पुलिस की गोली से आप मारे गये।
57. प्रेम प्रकाश अग्रवाल – आप मुरादाबाद के रहने वाले थे 42 के आन्दोलन के समय पुलिस की गोली से आप मारे गये।
58. राधा देवी गोयन्का – आप उमराव मल डालमिया की सुपुत्री थीं तथा 42 के आन्दोलन में जेल गयीं।
59. बाबू लाल मारवारिया – सन् 40 और 42 में जेल गये।
60. श्रीयुत श्रीमन्नारामण अग्रवाल – आप गांधी जी के अनुयायी थे तथा जमनालाल बजाज के दामाद थे। आप

pdfelement
Remove Watermark Now

कई बार जेल गये। संसद सदस्य रहे तथा गुजरात के राज्यपाल रहे।

61. श्री शिवप्रसाद गुप्ता – काशी में भारत माता का मन्दिर बनवाया। स्वतन्त्रता आन्दोलन मे कई बार जेल गये तथा सिंगापुर की काल कोठरी में यातनाएं सहीं।

62. आचार्य जुगल किशोर – सरदार भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा, यशपाल आदि क्रान्तिकारी लोग आचार्य जुगल किशोर के शिष्य थे। आप कानुपर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा उ0प्र0 के शिक्षा मंत्री रहे अपने जीवन में 12 बार जेल गये।

63. लाला बद्री प्रसाद (बुलन्दशहर) – आप स्वतंत्रता आन्दोलन में चार बार जेल गये।

64. श्री वासुदेव गुप्त (आगरा) – क्रान्तिकारियों की अग्रिम पंक्ति में रहे। 40 से 42 तक जेल में रहे तथा बहुत यातनाएं सहीं।

उपरोक्त सूची के बाद अभी भी सैकड़ों वैश्य बन्धु हैं जो अभी भी अज्ञात हैं। उनकी खोज जारी है। जो नाम हमें विभिन्न पुस्तकों, लेखों आदि से अब तक मिले हैं, वे ही हम दे पाये हैं।

इसके अतिरिक्त सन् 1975 की इमरजैन्सी में भी हजारों वैश्य बन्धु जेल गये। उत्तर प्रदेश सरकार ने इनको लोकतंत्र रक्षक सेनानी पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसी तारतम्य में, मैं गुलावठी के तीन भाईयों का जिक्र कर रहा हूँ। सबसे बड़े श्री सुरेश चन्द गुप्ता, दूसरे श्री नरेश चन्द गुप्ता, तीसरे श्री मूलचन्द गुप्ता। ये तीनों भाई 1975 की इमरजैन्सी में जेल गये तथा इन तीनों भाईयों को लोकतन्त्र रक्षक सेनानी के पुरस्कार से उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया है। श्री नरेश चन्द गुप्ता जी ने हमें बताया है कि सन् 1975 की इमरजैन्सी में वैश्य बन्धु ही

अधिकतर जेल गये थे तथा इमरजैन्सी में वैश्यों का ही उत्पीड़न सबसे अधिक किया गया था। सन् 1975 की इमरजैन्सी में जेल गये वैश्य बन्धुओं की लिस्ट बहुत लम्बी है।

मैंने वैश्य जाति की महान विभूतियों का वर्णन निम्नलिखित कविता के माध्यम से किया है। इसे बार-बार दोहराइयेगा तथा अपने महान पुरुषों की स्मृति को अपने हृदय में संजोकर रखें–

तूफानों में बुझ न सकें जो.....

(रचनाकार- शान्ति स्वरूप गुप्त)

भारत माँ के आँगन में, वैश्य जाति के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्भुत दीप जले।।

समाजवाद का दीप जलाया, अग्रोहा के आँगन में।
समरसता का भाव जगाया, भारत माँ के प्राँगण में।
इस दीपक को खून से सींचा, अग्रसेन महाराज ने।
धाराओं के प्रचण्ड प्रवाह में, वैश्य जाति के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्भुत दीप जले।।

राष्ट्रवाद का दीप जलाया, उज्जैयनी के आँगन में।
स्वर्णकाल का युग आया था, भारत माँ के प्राँगण में।
इस दीपक को लहू से सींचा, चन्द्रगुप्त महाराज ने।
गुप्तकाल की नींव रखी थी, स्वर्ण काल के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्भुत दीप जले।।

समुद्रगुप्त ने दीप जलाया, युद्धों का बलिदानों का।
शक-हूणों को मार भगाया, मान बढ़ाया भारत का।

pdfelement
Remove Watermark Now

भारत की सीमायें फैलीं, कामरूप से काबुल तक।
महान विजेता कहलाया वह, विश्व विजय के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

विक्रमादित्य ने दीप जलाया, भारत के सम्मान का।
विदेशों में भी यश फैलाया, भारत के अभिमान का।
फाहियान में यहाँ आकर, माँ की महिमा गाई थी।
माँ का वैभव अमर रहे, घर-घर में ऐसे दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

हर्षवर्धन ने दीप जलाया, त्याग और बलिदानों का।
देश-विदेश में यश फैलाया, भारत माँ के गौरव का।
ह्वेनसांग ने यहाँ आकर, भारत की महिमा गाई थी।
माँ तेरा यौवन अमर रहे, राष्ट्रवाद के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

हेमचन्द्र ने दीप जलाया, तलवारों, तीर-कमानों का।
सिंहों सम हुंकार भरी थी, नायक था वीर जवानों का।
दिल्ली का सम्राट बना था, वीर शिरोमणि कहलाया।
वैश्य जाति का मान बढ़ाया, राष्ट्र-प्रेम के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

भामाशाह ने दीप जलाया, दानों और बलिदानों का।
जब इतिहास गवाह बना था, मुगलों के अत्याचारों का।
संघर्षों का बिगुल बजाया, हल्दी घाटी के मैदानों में।
हिन्दू धर्म का ध्वज फहराया, बलिदानों के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

गाँधी ने भी दीप जलाया, आजादी के नारों का।
सत्य, अहिंसा, हथियार बने थे, आजादी के परवानों का।
स्वतंत्रता की अलख जगाकर, अंग्रेजी शासन कुचल दिया।
जन-जन में हुँकार भरी थी, देशभक्ति के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

लोहिया, मैथिली, चन्द्रभानु ने अगणित दीप जलाये थे।
जन-जन मे उत्साह भरा था, अनुपम दीप जलाये थे।
वैश्य जाति के गौरव को, नील गगन तक पहुँचाया।
भारत का सम्मान बढ़ाया, ऐसे अगणित दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

भारत माँ के प्रांगण में, वैश्य जाति के दीप जले।
तूफानों में बुझ न सके जो, ऐसे अद्‌भुत दीप जले।।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-7

"अग्रवालों का इतिहास"

सबसे पहले भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सन् 1871 ई0 में *"अग्रवालों की उत्पत्ति"* नामक एक लघु पुस्तिका लिखी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की इस छोटी सी पुस्तक ने अग्रवाल समाज में एक हलचल पैदा कर दी थी। इससे अग्रवालों को पहली बार अपने गौरवपूर्ण एवं वैभवपूर्ण इतिहास का ज्ञान प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण अग्रवाल समाज ने यह निश्चित किया कि अग्रवालों के गौरवमयी इतिहास की रचना करायी जाये, जिसे सम्पूर्ण जगत स्वीकार करे। अतः अग्रवाल महासभा ने अपने इलाहाबाद अधिवेशन में सन् 1920 में एक प्रस्ताव पारित किया कि जो व्यक्ति अग्रवाल जाति का इतिहास लिखेगा उसे 5000/- रुपये का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपने अथक परिश्रम से अग्रोहा तथा अग्रसेन का इतिहास, धूल भरी पर्तों से ढूंढ कर *"अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास"* नामक पुस्तक लिखी।

पेरिस विश्वविद्यालय से इस पर उन्हें डॉक्टरेट मिली। इस पुस्तक पर अग्रवाल महासभा ने उन्हें 5000/- रुपये का पुरस्कार प्रदान किया।

डॉक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा लिखित *"अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास"* नामक पुस्तक ने सम्पूर्ण विश्व के सामने अग्रवालों के गौरवमयी इतिहास की विस्तृत झाँकी प्रस्तुत की। उसमें उन्होंने अग्रसेन को अग्रवालों का आदि पुरुष माना है। उन्होंने अग्रसेन से ही अग्रवाल वंश का प्रारम्भ माना है तथा अग्रोहा को अग्रसेन की राजधानी माना है। इसके बाद डॉक्टर स्वराज मणि अग्रवाल द्वारा लिखित "अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल"

नामक पुस्तक द्वारा इस विषय पर प्रकाश डाला गया। लेकिन आश्विन शुक्ला-1 विक्रमी सम्वत् 2062 सन् 2005 में महाराजा अग्रसेन जयन्ती के पावन पर्व पर ग्रन्थकार श्री रामगोपाल 'बेदिल' जी द्वारा *"श्री अग्रभागवत"* नामक महान ग्रन्थ का लोकापर्ण हुआ। यह दिन सम्पूर्ण अग्रवाल जाति के लिए परम हर्ष एवं सौभाग्य का दिन है तथा एक गौरवमयी दिन है क्योंकि *"श्री अग्रभागवत"* नामक ग्रन्थ में अग्रसेन, अग्रोहा एवं अग्रवालों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण जानकारी विस्तारपूर्वक दी गई है।

श्री अग्रभागवत क्या है?

महर्षि वेद व्यास के समान ही उनके प्रधान शिष्य सामवेद के आचार्य महर्षि जैमिनी जी ने एक विशालकाय ग्रन्थ *"जय भारत"* की रचना की थी, जो कि *"जैमिनीय जय भारत"* के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस विशाल ग्रन्थ में भारत के पुण्य कर्मा सूर्यवंश के महान नरेशों का वर्णन किया गया है। इसी 'जय भारत' ग्रन्थ के भविष्य पर्व में सूर्यवंशी महाराजा अग्रसेन जी की पुरुषार्थ गाथा का वर्णन किया गया है। महाराजा अग्रसेन जी का सम्पूर्ण चरित्र *"अग्रोपाख्यानम"* जय भारत ग्रन्थ के भविष्य पर्व का अब तक का सर्वथा अनुपलब्ध श्रेष्ठतम जन कल्याणकारी उपाख्यान है। सूर्यवंशी महाराजा अग्रसेन जी के महान चरित्र का यह उपाख्यान (*अग्रोपाख्यानम*) श्री अग्रभागवत है। श्री अग्रभागवत की कथा, मरण को उद्यत, दिग्भ्रान्त, अशक्त परीक्षित पुत्र महाराजा जनमेजय को लोकधर्म साधना का मार्ग प्रशस्त करने हेतु वेद व्यास के प्रधान शिष्य महर्षि जैमिनी जी द्वारा सुना गई। इस अग्रभागवत की कथा के परिणामस्वरूप, क्रोध से भ हुए, शोक और चिन्ता से ग्रसित, अशान्त परीक्षित कुमार राज जनमेजय ने, परम शान्ति अर्जित करके तथा मानव धर्म धार करके, लोक में कीर्ति तथा परम मोक्ष प्राप्त किया।

pdfelement
Remove Watermark Now

पूर्व प्रसंग

पाण्डवों के स्वर्गारोहण के उपरान्त अभिमन्यु पुत्र कौरव कुल भूषण परीक्षित महाराज सम्राट बने। उस समय भारत में छोटे-छोटे कुल 536 राज्य थे जिन्हें गणराज्य कहा जाता था। प्रत्येक गणराज्य में अपने-अपने नियम और कानून तथा रीति-रिवाज थे। महाराजा परीक्षित प्रज्ञावान, धर्मज्ञ एवं दयालु तथा प्रजावत्सल थे, परन्तु कलि और काल के प्रभाव ने धर्मज्ञ महाराजा परीक्षित की मति फेर दी। उन्होंने शिकार का मन बनाया और वन में जा पहुँचे। बाणों में बिंधे मृग के पीछे वे सारा दिन भागते रहे, परन्तु मृग उनके हाथ नहीं आया। वे थककर चकनाचूर हो गए और प्यास से व्याकुल हो गये। ऐसी अवस्था में वे शमीक ऋषि के आश्रम में जा पहुँचे। शमीक ऋषि समाधि में लीन थे। कलि के प्रभाव वश राजा परीक्षित ने वहाँ पड़े मृत सर्प को अपने वाण की फाल से उठाकर, शमीक ऋषि के गले में डाल दिया। शमीक ऋषि के पुत्र महातपस्वी श्रृंगी ऋषि को जब यह ज्ञात हुआ, तो उन्होंने महाराजा परीक्षित को सात दिन के अन्दर तक्षक नाग द्वारा विष दंशित करने का शाप दे दिया। परीक्षित ने जैसे ही अपने माथे से मुकुट उतारा, उन्हें तत्काल अपनी भयंकर भूल का ज्ञान हो गया। वे अपनी मुक्ति के अनुसंधान का विचार करने हेतु गंगा के पावन तट पर जा पहुँचे। उसी समय परमात्मा ने शुकदेव जी को प्रेरित किया और भगवान शिव के अवतार महर्षि शुकदेव जी न केवल परीक्षित, अपितु जगत के कल्याण हेतु स्वयं वहाँ पधारे।

तब परम् कृपालु महर्षि शुकदेव जी ने आसन्न-मरणा परीक्षित को *"श्रीमद् भागवत"* की कथा सुनाई तथा मुक्ति का परम् मार्ग प्रशस्त कर दिया। सातवें दिन ऋषि के शाप से जब तक्षक ने उन्हें डसा तो उनकी आत्मा परमात्मा में विलीन हो

गई। तत्पश्चात् जनमेजय को सम्राट पद पर अभिषिक्त किया गया। प्रजावत्सल महाराजा जनमेजय की पतिव्रता धर्मपत्नी महारानी *'वपुष्टमा'* ने दो पुत्रों को जन्म दिया। एक थे चन्द्रपीड़, दूसरे थे सूर्यापीड़। जब तक्षक नाग द्वारा अपने पिता की मृत्यु के बारे में उतंक ऋषि से उन्हें ज्ञात हुआ, तो वे विचलित हो गये। उन्होंने बदले की भावना से, उद्वेलित होकर नागयज्ञ किया। मन्त्रों के बल से लाखों, करोड़ों सर्प नष्ट हो गये। एक ओर मन्त्रों की ध्वनि उठती थी दूसरी ओर विनिष्ट होते नागों का करुण क्रन्दन। यह ज्ञात होते ही तक्षक भागकर सुरक्षा हेतु इन्द्र के सिंहासन से चिपक गया। मन्त्रों के प्रभाव से इन्द्रासन भी डगमगाने लगा। तब नागराज वासुकि ने अपने भाँजे 'आस्तिक' को नाग यज्ञ बन्द करवाने हेतु प्रेरित किया। तदन्तर ऋषि 'आस्तिक' ने यज्ञ मण्डप में पहुँचकर जनमेजय को समझाया कि आपके इस कृत्य से देवता कुपित हो जायेंगे तथा सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु एवं वरुण आदि सभी देवगणों के कुपित होने पर प्राकृतिक प्रकोपों के कारण पृथ्वी पर हाहाकार मच जायेगा। अन्तोगत्वा ऋषि आस्तिक ने अपनी युक्ति से समस्त नागवंश को इस भीषण संकट से विमुक्त करा दिया।

इसके बाद महाराजा जनमेजय ने अश्वमेध यज्ञ करने हेतु दृढ़ निश्चय कर लिया। तब महर्षि व्यास जी ने राजभवन पहुँचकर अश्वमेध यज्ञ न करने हेतु उन्हें समझाया कि यही यज्ञ पहले भी महाभारत के रूप में विनाश का कारण बना।

परन्तु अहंकार के वशीभूत होकर जनमेजय ने व्यास जी को भी खरी-खोटी सुनाकर वापिस भेज दिया। अन्तोगत्वा महाराजा जनमेजय ने विधि पूर्वक अश्वमेध यज्ञ की दीक्षा ले ही ली।

pdfelement
Remove Watermark Now

यज्ञ में अश्व की बलि दी गई। अश्वमेध के विधानानुसार उस क्षत-विक्षत अश्व के निकट महारानी वपुष्टमा ने शयन किया। जनमेजय को ऐसा प्रतीत होने लगा कि जैसे अश्व पुनर्जीवित हो गया हो। इस भ्रम से राजा भ्रमित और विचलित हो गए। उन्होंने अधर्यु से पूछा कि अश्व तो मरा ही नहीं? अधर्यु ने कहा कि राजन यह इन्द्र का छल है। इन्द्र अश्व में आविष्ट हुआ और उसने रानी वपुष्टमा का भोग किया है। यह सुनते ही महाराजा जनमेजय कुपित हो गए। उन्होंने इन्द्र को शाप दे दिया। ऋत्विजों को अपमानित करके राज्य से निकाल दिया तथा पतिव्रता रानी वपुष्टमा को कुलटा घोषित करके राज्य से भगा दिया। दुखियारी वपुष्टमा अन्तोगत्वा कुरुवंश के संरक्षक महर्षि वेद व्यास जी के आश्रम में जा पहुँची। व्यास देव जी ने उन्हें सांत्वना दी। महाराजा जनमेजय जी, महर्षि व्यास जी की सीख को पहले ही अनसुनी कर चुके थे, अतः उन्होंने अपने प्रधान शिष्य महर्षि जैमिनी जी को जनमेजय को मार्गदर्शन करने हेतु भेजा।

तब महर्षि जैमिनी जी राजभवन पहुँचे जहाँ कुरु कुल भूषण जनमेजय बीते हुए भयंकर अतीत को स्मरण करके क्षण भर भी शान्ति नहीं पा रहे थे। उनका मन गहन चिन्ता और शोक में डूबा हुआ था तथा उनके मुखमण्डल पर गहन उदासी और निराशा के भाव स्पष्ट दिखाई दे रहे थे।

तब क्रोध और ईर्ष्या से भरे हुए तथा चिन्ता से क्रुद्ध परीक्षित कुमार राजा जनमेजय से महर्षि व्यास जी के परमशिष्य वेदज्ञ महर्षि जैमिनी जी ने यह बात कही-

हे महाप्राज्ञ जनमेजय! जिस प्रकार जल के प्रवाह के प्रतिकूल तैरना कठिन होता है उसी प्रकार देवकृत भाग्य से पार पाना भी कठिन अवश्य है, तथापि धीरमना पुरुष देवों द्वारा विघ्न उपस्थित किये जाने पर भी, धैर्य का कदापि परित्याग नहीं करते,

अपितु धैर्य धारण करके ही, उन बाधाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

हे जनमेजय्! जैसे समुद्र के पार जाने की इच्छा रखने वाले व्यक्ति के लिए, जहाज की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार स्वर्ग की इच्छा करने वालों के लिए, धर्म का आचरण ही जहाज है।

अतः हे जनमेजय! अब मैं तुम्हें सूर्यवंश के महाप्रतापी राजा अग्रसेन जी के परम पुण्यदायी इतिहास को सुनाता हूँ। इसको आप एकाग्रचित होकर सुनो। यद्यपि महाराजा अग्रसेन के कर्मों की कथा विस्तार से कहना सम्भव नहीं है, फिर भी मैं, उनके द्वारा किये गए, अद्भुत कार्यों की कथा कहता हूँ, जो कि मानव जाति के लिए अत्यन्त हितकारी एवं परम कल्याणकारी है। हे जनमेजय! महाराजा अग्रसेन, इस पृथ्वी पर जो राजा है, उसमें वे अत्यन्त श्रेष्ठ राजा हैं।

जनमेजय ने कहा कि महर्षि ऐसे महान राजा श्री अग्रसेन जी के, पुण्य कर्मों की कथा, मुझ धर्मच्युत व्यक्ति से, धर्म प्राप्ति की इच्छा को दृष्टिगत रखते हुए, अवश्य कहिए। मैं आपसे सादर निवेदन करता हूँ, कि मुझ जिज्ञासु को, महाराजा अग्रसेन जी के पुरुषार्थ की कथा विस्तारपूर्वक सुनाइयेगा।

तब महर्षि जैमिनी जी ने अशान्त और व्याकुल तथा शोकग्रस्त महाराजा जनमेजय को शान्ति प्रदान करने वाली सुखद और मानवोचित जीवन, पथ-प्रदर्शक श्री अग्रसेन जी की यह पावन जीवन गाथा सुनाई।

महाराजा अग्रसेन जी की कथा

महाराजा अग्रसेन जी की यह कथा मानव मात्र को सांसारिक माया पर विजय प्रदान कराने वाली है तथा पठन पाठ

pdfelement
Remove Watermark Now

करने वाले व्यक्तियों को सुख-शान्ति, वैभव एवं कीर्ति प्रदान करने वाली है। महाराजा अग्रसेन जी की यह पावन गाथा उन सभी मानवों का पथ प्रदर्शन करने वाली तथा सुख समृद्धि प्रदान करने वाली है, जो कि इसे पढ़ते हैं, या सुनते हैं। यह कथा महाफल दायिनी है। अतः इसे अवश्य ही सुनना या पढ़ना चाहिए।

एक बार परमतीर्थ नैमिष्यारण्य में सन्त समागम हो रहा था। वहाँ पर जिज्ञासु वृत्ति के अनेक सन्त पधारे हुए थे। तब शौनक जी ऋषि ने सभी जिज्ञासुओं की ओर से, सर्व शास्त्रों और वेदों के ज्ञाता लोमहर्षण सूत जी महाराज से सादर निवेदन किया, कि आप हमें महाराजा अग्रसेन के कर्मों की कथा, विस्तारपूर्वक सुनाइये। तब सूत जी ने कहा, कि हे शौनक जी! व्यास जी के परम शिष्य वेद और शास्त्रों के विशेषज्ञ, महर्षि जैमिनी जी ने अशान्त तथा शोक और शंकाओं से ग्रस्त, जनमेजय से जिस प्रकार इस कथा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया था, उसी प्रकार मैं भी आपको यह कथा विस्तारपूर्वक सुनाता हूँ। आप सभी लोग उसे ध्यानपूर्वक सुनियेगा।

सूत जी ने कहा कि स्वयं के ही भरण पोषण में लिप्त क्षुद्र वृत्ति वाले राजा तो सैकड़ों हैं परन्तु परहित को ही स्वहित मानने वाले यदि कोई हैं, तो वे केवल महाराजा अग्रसेन ही हैं। जब कुरुकुल भूषण महाराजा जनमेजय अपने अतीत का स्मरण करके क्षण भर भी शान्ति नहीं पाते थे और उनका मन चिन्ता और शोक में डूबा हुआ था, तब महर्षि जैमिनी जी ने कहा, कि हे महाराजा जनमेजय, तुम्हें विदित ही है कि सूर्यवंश में महाराजा इक्ष्वाकु वंश आदि वंश के रूप में विख्यात हैं। इस कुल में महाराजा मान्धाता, महाराजा सगर, दिलीप, भगीरथ, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, रोहिताश्व, कुकुत्स्य, मरुत्त, रघु, अज, दशरथ, भगवान श्री राम, लव-कुश आदि अनेकों कीर्तिवान्त राजा हुए हैं। इसी

कुल में महाराजा अग्निवर्ण के देवपुत्रों के सदृश्य पाँच पुत्र हुए, जिनमें से तीन पुत्रों ने अपने वंश का विस्तार किया। इसी कुल में विश्वसाह के पुत्र प्रसेनजित हुए, इनके पुत्र वृहत्सेन हुए। वृहत्सेन के पुत्र वल्लभ सेन हुए।

सूर्यकुल में महाराजा वल्लभ सेन प्रतापपुर के राजा थे। प्रतापपुर उन्नीस गाँवों का देश था, जिस पर राजा श्री वल्लभसेन राज्य करते थे। वल्लभ सेन की धर्म पत्नी विदर्भ कन्या भगवती थी। इन्हीं भगवती के गर्भ से आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की प्रथमा तिथि के दिन रविवार को मध्यान्ह काल के महेन्द्र समय में अत्यन्त भाग्यशाली बालक ने जन्म लिया। उस समय हस्त नक्षत्र था तथा कन्या लग्न था। उस बालक को देखकर ऋषिगणों ने कहा कि यह बालक महान यश को प्राप्त करेगा तथा दानशील, क्षमाशील एवं कीर्तिवन्त राजा होगा। जन्म से ग्यारह दिन बीत जाने पर, उस बालक का नामकरण संस्कार किया। तब पुरोहित ने उस बालक का नाम अग्रसेन निश्चित किया। किशोर अवस्था आने पर अग्रसेन ने महर्षि ताण्ड्य के आश्रम में गुरु की सेवा में रहकर, गुरुकुल में ज्ञान अर्जित किया। ऋषि ताण्ड्य द्वारा दिये गये ज्ञानमयी उपदेशों, से अल्प समय में ही अग्रसेन ने वेद शास्त्र के सभी छः अंगों निरुक्त, ज्योतिष, व्याकरण, कल्प, शिक्षा एवं छन्द में प्रवीणता प्राप्त की। उसके बाद ऋषि ने सभी शिष्यों को तलवार, परधि, तोमर, प्रास आदि शस्त्र विद्या सिखाई तथा अनेकों शत्रुओं से अकेले ही युद्ध करने की कला सिखाई। उन्होंने सतत् अभ्यास बल से बाणों को छोड़ने, लौटाने तथा संधान करने में, अत्यन्त तीव्रता प्राप्त की। महर्षि ताण्डय ने उनकी अलौकिक बुद्धि को देखकर, उन्हें अस्त्र शस्त्रों का रहस्यमयी ज्ञान प्रदान किया।

एक दिन आश्रम में जहाँ अग्रसेन शिक्षा प्राप्त कर रहे थे,

pdfelement
Remove Watermark Now

उसी आश्रम के वन में मुनि कुमारी शुभा तपस्वियों का वेश धारण करके, विचरण कर रही थी। तभी एक राजा रतीन्द्र ने ऋषि कन्या शुभा को पकड़ कर उसे जबरन रथ में बैठा लिया। तब आश्रम के सभी कुमार उस कन्या के करुण निवेदन को सुनकर तत्काल वहाँ आ पहुँचे। अग्रसेन ने उस पापाचारी रतीन्द्र के केश पकड़ लिए। सभी कुमारों ने लात घूंसों से उसकी धुनाई की तथा वे सब उसे जान से मारने के लिए उद्यत हो गए। तब अग्रसेन ने उसके मुँह पर कीचड़ मलकर काला कर दिया तथा महामुनि ताण्ड्य के समक्ष उपस्थित किया तब महामुनि ताण्ड्य ने कहा कि इस पापाचारी को छोड़ दो, वत्स।

तत्पश्चात एक दिन महर्षि ताण्ड्य ने अग्रसेन से कहा कि वत्स तुम सभी शस्त्र एवं शास्त्रों में दक्ष हो चुके हो। अतः अब तुम्हें अपने माता-पिता के पास जाकर उनकी सेवा करनी चाहिए। तब अग्रसेन ने हाथ जोड़कर महर्षि ताण्ड्य से आशीर्वचन लेकर तथा महर्षि की परिक्रमा करके, आश्रम से घर के लिए प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर उन्होंने अपनी सहिष्णुता, दयालुता, सरलता तथा सद्गुणों से अपने पिता राजा वल्लभसेन की कीर्ति को भी अपने गुणों से ढक दिया। सम्पूर्ण राज्य में अब लोग युवा अग्रसेन के गुणों का गान करने लगे।

जैमिनी जी कहते हैं कि हे धर्मज्ञ जनमेजय, एक दिन पाण्डवों के दूत ने राजमहल में प्रवेश किया और वल्लभसेन से कहा कि मैं पाण्डवों की ओर से युद्ध में आपको अपनी सेना सहित, सम्मिलित होने के लिए, निमन्त्रण देने के लिए आया हूँ। तब महाराज वल्लभसेन ने कहा कि हे दूत जैसे समस्त पाण्डव विजय के लिए अभिलाषी हैं, उसी प्रकार हम भी, उनकी विजय हेतु कटिबद्ध हैं। तब अग्रसेन ने अपने सभासदों से कहा कि हे शूरवीरों जो क्षत्रिय रूप में जन्मा है वह मृत्यु के भय से कभी

नहीं डरता। हे शूरवीरों, चिन्तन कीजिए कि पराक्रम दिखाने का यह श्रेष्ठ समय प्राप्त हुआ है। मैं इस धर्म युद्ध में अपने पूर्वजों, सूर्यवंश के पराक्रमी राजाओं का अनुसरण करते हुए, अवश्य ही ऐसा पराक्रम दिखाऊँगा कि जिसे कोई दूसरा नहीं कर पायेगा। तब पिता वल्लभ सेन ने कहा कि वत्स तुम अभी मात्र सोलह वर्ष के हो, इस अल्पावस्था में, मैं तुम्हें भला युद्ध में कैसे भेज सकता हूँ? जब तक मैं युद्ध में विजयी होकर न लौट आऊँ तब तक तुम मेरी अनुपस्थिति में युवराज की तरह राज्य का पालन करो। तब अग्रसेन ने कहा कि आप योद्धा के रूप में न सही, मुझे अपने द्वितीय सहायक के रूप में ही अवश्य ले चलिए। तब पिता वल्लभ सेन ने अग्रसेन से कहा कि अब तो विजय निश्चित है, साथ ही महान यश की भी प्राप्ति होगी। महाभारत युद्ध में दसवें दिन भीष्म पितामह का पाण्डवों के साथ भीषण युद्ध हुआ। उसमें भीष्म के बाणों से बिंधकर महाराजा वल्लभ सेन घायल होकर पृथ्वी पर गिर गये। तब अग्रसेन ने अपने पिता के वध को न सहने के कारण, क्रोध में आकर, अपने तीक्ष्ण बाणों से युद्ध भूमि में रथी, अतिरथी और महारथियों को विदीर्ण कर डाला। तब सभी राजाओं ने प्रसन्न होकर युवा अग्रसेन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

युद्ध समाप्त हो जाने पर भगवान श्री कृष्ण ने अग्रसेन से कहा कि हे वत्स आपके पिता जी ने इस धर्मयुद्ध में अपनी देह को त्याग कर महान वीरगति प्राप्त की है। अतः वे स्वर्गवासी होने पर भी शोक करने के योग्य नहीं हैं। तब धर्मराज युधिष्ठिर ने कहा कि मैंने युद्ध भूमि में कुमार अग्रसेन के महाबल को देखा है। अग्रसेन तुम धन्य हो, तुमने मेरी आत्मा पर विजय प्राप्त कर ली है। तब अग्रसेन ने कहा कि वास्तव में, मैं धन्य हूँ क्योंकि मुझे श्री कृष्ण का इस प्रकार सानिध्य प्राप्त हुआ। अब मैं

pdfelement
Remove Watermark Now

आपके चरण कमलों का आश्रय कभी नहीं छोड़ूंगा। तत्पश्चात वे हस्तिनापुर से निकलकर प्रतापपुर की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर उन्होंने पुरोहितों के निर्देशों के अनुसार वल्लभ सेन के परलोक सम्बन्धी सभी कर्म किये तथा आत्म शुद्धि हेतु अनुष्ठान किये। तत्पश्चात राज्य के प्रबन्धकर्ता, ब्राह्मण, मन्त्री एवं राज्य परिवार के सदस्य, राजपुरोहित के साथ मन्त्रणा करने लगे कि अब वल्लभ सेन के उपरान्त किसे राज्य का उत्तराधिकारी बनाया जाये। तब पुरोहित ने वल्लभ सेन के अनुज कुन्द सेन (जो कि उस समय राज्य का कार्यभार देख रहे थे) से कहा कि युवराज अग्रसेन शास्त्रों के ज्ञाता हैं, सदाचार सम्पन्न हैं, वीरता और पराक्रम से पूर्ण हैं। अब आप इनका राज्याभिषेक कीजिए। ये इस राज्य के एकमात्र अधिकारी हैं। तब कुन्द सेन तथा उसके पुत्र वज्रसेन ने अग्रसेन के विरुद्ध षड़यन्त्र रचकर सोते हुए अग्रसेन को बन्दी बना लिया तथा बेड़ियों से जकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया। तब अग्रसेन को उनके पिता के एक विश्वासपात्र आमात्य ने कारागार से भगाने में सहायता की।

जैमिनी जी कहते हैं कि आमात्य ने अग्रसेन के सभी बन्धन काट दिये। तत्पश्चात् अग्रसेन सुरंग के मार्ग द्वारा दूर चले गये। जब कुन्द सेन को यह ज्ञात हुआ कि अग्रसेन भाग गया है, तो उन्होंने अपने सैनिकों से उस वन में आग लगवा दी। तब अग्रसेन ने एक पर्वत की गुफा में रहकर अपनी जान बचाई। तब सहज जिज्ञासावश महाराज जनमेजय ने पूछा कि हे महर्षि (जैमिनी जी) इस प्रकार उस वन के जल जाने पर भी, ऐसा क्या कारण था कि अग्नि ने श्री अग्रसेन को दग्ध नहीं किया? तब जैमिनी जी ने कहा कि वायु का वेग अग्रसेन की ओर से, दूसरी ओर हो गया था, जिस कारण अग्रसेन पूर्णतः सुरक्षित रहे। तब अपने फूफा अनंगपाल के सहयोग से, उस दग्ध वन को पार

करके, अग्रसेन प्रतापपुर की सीमा से बाहर निकल गये। एक वन को पार कर, वे दूसरे वन में पहुँच गये। यह वन अत्यन्त दुरुह था, तथा किसी भी राज्य के अधीन नहीं था। उसी वन में महर्षि गर्ग का आश्रम था। अग्रसेन की भेंट वहाँ महामुनि गर्ग से होती है। महर्षि गर्ग के श्री चरणों में प्रणाम करके अग्रसेन ने कहा कि मैं प्रतापपुर का युवराज अग्रसेन हूँ तथा मेरे पिताश्री का नाम वल्लभसेन है। मेरे पिताश्री महाभारत के युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गये हैं। मैं दुर्भाग्य के प्रकोप से यहाँ आ गया हूँ। हे महामुने! मुझे लगता है कि राज्य लिप्सा ही युद्धों का मूलभूत कारण है। अतः अब मैं युद्ध को त्याग कर शान्ति से भिक्षा माँग कर, अपना जीवन यापन करना ही श्रेष्ठ समझता हूँ।

हे महामुनि! ज्योतिषशास्त्र के ज्ञाता श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने "मेरा राज्य अभिषेक होगा" ऐसा कहा था, लेकिन आज ये सब बातें असत्य हो गयी हैं। हे तेजस्वी महामुनि! अब न तो मेरी राज्य की आकांक्षा है और न ही मुझे सुख की चाह है। मुझमें अब जीने की भी कोई अभिलाषा नहीं है। अग्रसेन की निराशावादी बातों को सुनकर गर्ग ऋषि ने कहा, कि जो बीत चुका उस पर शोक करना उचित नहीं है। पराक्रम शून्य, असमर्थ, डरपोक, निस्तेज, धैर्यहीन मनुष्य अपने यश और पुरुषार्थ दोनों का ही विनाश करता है। क्षत्रिय पुरुष अपने पराक्रम से ही उस अमरत्व को प्राप्त कर लेते हैं, जिसे योगीजन अपने योग से तथा तपस्वीजन अपनी तपस्या से प्राप्त करते हैं। हे वत्स अग्रसेन, आशा बड़ी बलवान होती है। यह एक ऐसी आश्चर्यजनक सांकल है, कि जिससे बँधे हुए व्यक्ति बड़े वेग से दौड़ते हैं, लेकिन जो निराश व्यक्ति हैं, वे पंगु की भाँति अकर्मण्य पड़े रहते हैं। अतः तुम अपने हृदय से भय, कायरता, दुर्बलता का परित्याग कर उठ खड़े हो जाओ और मैं शीघ्र ही ऐसा उपाय करूँगा कि तु

pdfelement
Remove Watermark Now

इस पृथ्वी पर पूजनीय और वन्दनीय हो जाओगे। तब अग्रसेन जी ने गर्ग ऋषि के चरण छूकर कहा, कि हे महामुनि आपने मेरी निराशा का अन्त करके मुझे नवजीवन और नवउत्साह के दर्शन कराये हैं।

तत्पश्चात एक दिन अग्रसेन ने गर्ग ऋषि से कहा कि हे मुनिवर! मुझे इस महान दुःख से मुक्ति हेतु कोई अद्भुत रहस्य कहिये। तब गर्ग ऋषि ने कहा कि पूर्वकाल में एक सुरथ नाम का राजा था। उसके मन्त्रियों ने षड़यन्त्र करके उसका राज्य हड़प लिया। तब सुरथ, अपने राज्य के छिन जाने के कारण, चिन्ताग्रस्त होकर वनों में चले गये। वहाँ उनकी मुलाकात मेधा मुनि से हुई। इसी प्रकार समाधि नामक वैश्य जो कि अपना धन, ऐश्वर्य, पत्नी और पुत्रादि से विमुख हो चुका था वह भी मेधा मुनि के चरणों में आ गया था। तब सुरथ और समाधि नामक वैश्य ने मेधा मुनि से पूछा कि हे महामुने! मानव, सुख और आनन्द को प्राप्त कर सके, ऐसा कोई उपाय बताइये। तब मेधा मुनि ने उन्हें बताया कि यह सारा जगत महामाया के प्रभाव से ही सम्मोहित हो रहा है। यह सब भगवान विष्णु की माया ही है, जिससे सब मोहित हो जाते हैं। वस्तुतः सम्पूर्ण चर-अचर जगत, महामाया के द्वारा ही रचा गया है। यदि वे प्रसन्न हो जाती हैं, तो मनुष्यों को मोक्ष तक का वरदान दे देती हैं। तुम उन्हीं देवी की शरण में जाओ। वे ही जगत के समस्त ऐश्वर्य, भोग, स्वर्ग, मोक्ष आदि की प्रदाता हैं। तब सुरथ और समाधि वैश्य ने कहा कि हमें देवी के किस स्वरूप की आराधना करनी चाहिए और उसका क्या विधान है। कृपया करके हमें बताइये।

तब मेधा ऋषि ने कहा कि यह रहस्य परम गोपनीय है। परन्तु मैं तुम्हें यह रहस्य अवश्य ही बतलाऊँगा। तब मेधा ऋषि ने बताया कि त्रिगुण (*सत, रज, तम*) मयी, परम ईश्वरी

महालक्ष्मी ही सबका आदि कारण हैं। वे ही सम्पूर्ण जगत को अपने दृश्य और अदृश्य रूपों से व्याप्त करके स्थिर हैं। महालक्ष्मी कान्ति, रूप और सौभाग्य से सुशोभित हैं। वे चार भुजाओं वाली हैं। ये चार भुजाएं वरद, चक्र, गदा तथा शंख से अलंकृत हैं। ये कमलासन पर विराजमान हैं। इनका नाम कमला, महालक्ष्मी, रुकमाम्बुजासना (स्वर्ण कमलासन पर विराजमान) आदि नामों से पूजी जाती हैं। ये ही भगवान विष्णु के साथ इस जगत का पालन पोषण करती हैं। इनकी यदि भक्तिपूर्वक स्तुति की जाये, तो ये उपासक को सब कुछ प्रदान कर देती हैं। इस प्रकार मेधा मुनि के द्वारा अत्यन्त गोपनीय रहस्य को जानकर वे दोनों व्यक्ति (*राजा सुरथ एवं समाधि वैश्य*) महालक्ष्मी की तपस्या के लिए चले गये। उन्होंने अपनी तपस्या से महादेवी को प्रसन्न किया। इस प्रकार राजा सुरथ ने अपना राज्य प्राप्त किया तथा समाधि वैश्य ने मनोवांछित वरदान के रूप में परम मोक्ष प्राप्त किया।

महर्षि गर्ग ने कहा कि हे अग्रसेन जैसा पूर्व में मेधा ऋषि ने सुरथ और समाधि वैश्य को बताया, वही परम रहस्यमयी ज्ञान मैंने तुम्हें सुनाया है। अतः हे अग्रसेन! सम्पूर्ण जगत को व्यवस्थित करने वाली, समस्त प्राणियों में पराशक्ति के रूप में विद्यमान, भगवान विष्णु की प्रिया श्री महालक्ष्मी का तुम पूजन करो। समस्त वैभव एवं ऐश्वर्य को प्रदान करने वाली श्री महालक्ष्मी का पूजन तुम उसी प्रकार करो, जैसे बच्चे भूख से व्यथित होने पर माँ के पास विनय करते हैं। जगत की मातेश्वरी की उपासना भी ठीक उसी प्रकार करनी चाहिए। जैमिनी जी कहते हैं कि हे जनमेजय! तदन्तर श्री अग्रसेन ने आश्रम में माटी से महालक्ष्मी का विग्रह (*मूर्ति*) बनाकर उसकी मन्त्रोक्त विधि से स्थापना की तथा आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की विजय प्रदा

pdfelement
Remove Watermark Now

दशमी के दिन जप-तप प्रारम्भ किया तथा वे श्री महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए जप-तप में लीन हो गये।

माँ लक्ष्मी का स्तवन करते हुए अग्रसेन ने कहा कि हे माँ! जिस प्रकार अबोध बालक को, माता उसके पोषण हेतु स्वयं ही अपने स्तन को, बालक के मुख में दे देती है, ठीक उसी प्रकार हे जगत माते! आप भी हमारा पोषण कीजिए। हम भी आपके अबोध बच्चे हैं। हे माते! मैं अभी तक आपकी कृपा दृष्टि से वंचित रहा हूँ। आप सभी सौभाग्यों की प्रदाता हैं। आप मुझमें अपनी शक्ति का प्रादुर्भाव करें, जिससे मैं प्रतापी और सभी अधिकारों से सम्पन्न हो सकूँ। हे जगत माते! आप सभी सिद्धियों, सभी ऐष्णाओं (*अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष*) की प्रदाता हैं। मैं आपको नमस्कार करता हूँ। हे माते! मैं दीनों में सबसे अधिक दीन हूँ और आप दयालुओं में परम दयालु हैं। आपकी कृपा दृष्टि मात्र से ही दीनता क्षण भर में ही समाप्त हो जाती है। ऐसा कहते हुए हरिप्रिया महालक्ष्मी जी को हृदय में धारण करके श्री अग्रसेन मौन व्रती होकर समाधिस्थ होकर जगत जननी की तपस्या में लीन हो गये।

तब, विनय से नमित, श्री अग्रसेन ने, दिव्य प्रभा से युक्त, परम तेजमयी, अनन्त आभायुक्त, सौम्य स्वरूपिणी, जगत माता महालक्ष्मी के साक्षात् दर्शन किये। तब श्री अग्रसेन बार-बार महालक्ष्मी जी का अभिवादन करने लगे। तब प्रसन्न होकर महालक्ष्मी जी ने कहा कि हे वत्स अग्र मैं तुमसे परम तुष्ट हूँ। तुमने अपनी तपस्या से मुझे परितुष्ट किया है, मैं तुम्हें वरदान देने के लिए तुम्हारे सम्मुख प्रत्यक्ष रूप से आ गई हूँ। तब अग्रसेन ने कहा कि यदि आप मुझे वर देना चाहती हैं, तो यह वर दीजिए, कि आपमें मेरी भक्ति अविचल रहे, स्थायी रहे, अटल रहे। मेरे हृदय में सकल सृष्टि के, समस्त जीवों के प्रति सदा ही,

दया का भाव बना रहे। मेरा ध्यान आपके श्री चरणों में सदा ही लगा रहे। हे मातेश्वरी! सोते, जागते एवं सुसुप्त अवस्था में भी मेरा चित्त आपकी भक्ति में ही लीन रहना चाहिए। हे मातेश्वरी! जो भी जन, आपका स्मरण करे, आप कभी उनका परित्याग न करें। हे जगत माते! मैं लोभ, मोह, क्रोध पर सदैव विजय प्राप्त करूं तथा मेरे चित्त में सत्य व तप विद्यमान रहें। तब महालक्ष्मी ने कहा कि हे वत्स, तुम्हारी स्वहित से रहित, सम्पूर्ण मानवता के विकास हेतु, श्रेष्ठ कामना है। अतः मैं तुम्हें वरदान देती हूँ, कि तुम्हारी सभी अभिलाषाएं पूर्ण हों।

श्री अग्रसेन ने देवी द्वारा प्रदत्त, उस वरदान को, अपने पराक्रम से सफल किया, जैसे थोड़ी सी आग, वायु का सहारा पाकर प्रचण्ड अग्नि का रूप धारण कर लेती है, उसी प्रकार श्री अग्रसेन ने भी महर्षि गर्ग का आश्रय तथा महालक्ष्मी का वरदान प्राप्त किया। महर्षि गर्ग ने अग्रसेन से कहा हे वत्स, अब तुमने महालक्ष्मी जी का वरदान प्राप्त कर लिया है। अतः अब तुम अपने पुरुषार्थ और पराक्रम से अपना राज्य स्थापित करो। तब अग्रसेन ने कहा हे महामुनि, मेरे पास धन नहीं है और बिना धन के जनशक्ति सम्भव नहीं है। तब गर्ग ऋषि ने कहा कि महाराज मरुत्त ने सौ यज्ञ करके दिव्य वर की प्राप्ति की थी। उन्होंने ब्राह्मणों को विपुल धन दान दिया था। वह स्वर्ण कोष यहाँ पर भूमि में दबा पड़ा है। तुम उसी सूर्यकुल के महाराजा मरुत्त के यशस्वी वंशज हो, तुम स्वर्ण कोष के अधिकारी हो। अतः तुम उसे ग्रहण करो। महर्षि गर्ग ने बताया कि यह सम्पूर्ण मरु प्रदेश अब तुम्हारे अधीन होगा।

तब महर्षि गर्ग ने सभी आश्रम के वेदज्ञ द्विजों को साथ लेकर, अग्रसेन जी का नृप के रूप में, उस मरु प्रदेश का, अभिषेक कर दिया तथा उस स्थान को बताया, जहाँ पर महाराजा

pdfelement
Remove Watermark Now

मरूत्त का धन, पृथ्वी में दबा हुआ था। उस स्थान को खुदवाने पर महाराजा अग्रसेन को महालक्ष्मी की कृपा से विपुल स्वर्ण राशि तथा हीरे, जवाहरात तथा रत्नों की प्राप्ति हुई। तब उस मरू प्रदेश में अग्रसेन ने एक सुन्दर पुरी का निर्माण कराया। वह पुरी *'आग्रेय'* (अग्रोहा) के नाम से विख्यात हुई। तब अग्रसेन जी अपार धन, रत्न, मणि तथा स्वर्ण मुद्राओं से भरे कलशों को लेकर महर्षि गर्ग के आश्रम में आये। महर्षि गर्ग ने अग्रसेन को आशीर्वाद दिया, कि तुम्हारे पास सदैव अक्षय धन सम्पत्ति रहेगी और शत्रु तुमसे सदैव पराजित ही रहेंगे। इस प्रकार महाराजा अग्रसेन प्रजा के हित के कार्यों में संलग्न रहने लगे जिससे दिनों दिन उनके राज्य की उन्नति होने लगी। तदन्तर एक महोत्सव में प्रतापपुर से कुछ लोग आये। महाराजा अग्रसेन ने उनकी अगवानी की तथा अपनी माता भगवती एवं अनुज शौर्यसेन की बारे में पूछा। तब आगन्तुकों ने बताया कि आपके कुल पुरोहित सौम्य ऋषि, आपकी माताश्री एवं अनुज शौर्यसेन को लेकर, प्रतापपुर को त्यागकर, कहीं अन्यत्र चले गये हैं। यह कोई भी नहीं जानता, कि वे कहाँ गये हैं। तब अग्रसेन ने कुछ ब्राह्मणों को प्रचुर मात्रा में धन देकर, अपनी माँ भगवती देवी एवं अनुज शौर्यसेन की खोज में चारों दिशाओं में दूतों को भेजकर, खोजबीन का कार्य पूर्ण कराया।

जनमेजय ने जैमिनी ऋषि से पूछा कि महर्षि क्या यह सत्य है, कि श्री अग्रसेन नागकन्या के पति हैं? यह असम्भव *(वैष्णव तथा शैवों का सम्बन्ध)* कैसे सम्भव हुआ। मुझे कृपा करके सारा वृतान्त विस्तार से बताइये। तब जैमिनी जी कहते हैं राजा अग्रसेन न्यायशील, धर्मज्ञ, समृद्ध और बलशाली राजा थे। उनके राज पुरोहित गर्ग मुनि भी नीति शास्त्र में निपुण थे। एक दिन महर्षि गर्ग ने महाराजा अग्रसेन को बताया कि नागलोक के राजा

महीधर की कन्या माधवी, धर्म पूर्ण आचरण करने वाली, सर्व सुखों को प्रदान करने वाली, सुन्दर, सुशील नागकन्या है। अतः आप राजा महीधर की कन्या को पत्नी रूप में शीघ्र ही, वरण करने हेतु मणिपुर में जाओ। अग्रसेन ने कहा, कि हे महर्षि उस नागलोक में जाना किस प्रकार सम्भव हो सकता है। तब महर्षि गर्ग ने कहा कि नागलोक के परमपूज्य महामुनि उद्दालक वहाँ मौजूद हैं, वे मेरे मित्र हैं। वे वहाँ ऐसा प्रयत्न करेंगे कि नागों का मन तुम्हारे प्रति कृपा युक्त हो जायेगा। अतः हे राजन अग्रसेन तुम अतिशीघ्र मणिपुर जाओ और नागराज महीधर की सुपुत्री को पत्नी रूप में प्राप्त करो। वह सम्पूर्ण आग्रेय गणराज्य के लिए सुख दायिनी होगी। तुम्हारे आने तक मैं इस गणराज्य का पालन एवं संरक्षण स्वयं करूंगा।

तब महर्षि गर्ग को नमस्कार करके उन्होंने मणिपुर को प्रस्थान किया। सबसे पहले वे अतल प्रदेश में पहुँचे। वहाँ से वितल प्रदेश पहुँचे। तत्पश्चात अनेक वनों एवं नदियों को पार करके, वे रसातल नामक प्रदेश में पहुँचे। उसके बाद वे, पाताल नामक प्रदेश में पहुँचे, वहाँ उसकी राजनगरी मणिपुर को देखा। यहाँ पर लोहित नदी के किनारे महर्षि उद्दालक का आश्रम था। अग्रसेन ने महर्षि उद्दालक के श्री चरणों में प्रणाम करके, उन्हें अपना परिचय दिया। तब महर्षि उद्दालक ने, महाराजा अग्रसेन को सातों द्वीपों *(तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, पाताल)* के बारे में बताया तथा उन्होंने यह भी बताया कि मणिपुर में ही तुम्हें नागसुता मिलेगी। तुम नागों को अपनी बुद्धि से ही जीत सकते हो। इन्हें बल से नहीं जीता जा सकता। त अग्रसेन ने मणिपुर में प्रवेश किया। तदन्तर उन्होंने लोहित न में स्नान करके भगवान शिव के परम लिंग *'हाटकेश्वरम'* दर्शन करके उन्हें नमस्कार किया।

pdfelement
Remove Watermark Now

जैमिनी कहते हैं कि हे जनमेजय, नागराज महीधर की परमसुन्दरी रानी थी। उसका नाम नागेन्द्री था। नागेन्द्री ने परम सुन्दरी एक कन्या को जन्म दिया। उसका नाम था माधवी। वह कन्या तीनों लोकों में परम सुन्दरी थी। देवलोक, नागलोक तथा नरलोक तीनों लोकों को वह कन्या विमोहित कर रही थी। एक दिन नागराज महीधर ने अपनी पुत्री से पूछा, पुत्री तुम्हें कैसा वर चाहिए। यदि तुम्हें कोई नागपुत्र प्रिय हो तो बता दो। तब माधवी ने कहा कि मैं किसी भी नागपुत्र को अपना पति नहीं बनाना चाहती, क्योंकि वे विषैले रसायनों को ग्रहण करके मोह ग्रस्त हो चुके हैं। तब महीधर ने कहा कि यदि तुम्हें नागपुत्रों में से कोई प्रिय नहीं है, तो तुम देवताओं के राजा इन्द्र का वरण कर लो। तब माधवी ने कहा, कि मुझे इन्द्र की कदापि कामना नहीं है, क्योंकि वे सदैव कामुक रहते हैं तथा वे दूसरों की उन्नति भी नहीं सह सकते। अतः आप मेरे लिए किसी मनुष्य (नर) वैष्णव पर विचार कीजिएगा।

तदन्तर अपनी सखियों के साथ एक दिन माधवी उपवन में विहार करने गयी। तभी वहाँ पर इन्द्र भी पहुँच गये। उन्होंने सभी नागकन्याओं से कहा कि हे सुन्दरियों मैं तुम सबको अपनी पत्नियों के रूप में प्राप्त करने की कामना करता हूँ। तुम मुझे अंगीकार करके दीर्घ आयुष्य एवं अक्षय यौवन को प्राप्त करो। तब नागकन्या माधवी ने इन्द्र के वचनों का उपहास उड़ाते हुए कहा, कि हे देवेन्द्र! चाहे मैं मर जाऊं, परन्तु मैं तुम्हें क्या किसी भी देवता का, वरण नहीं करूंगी। नागसुता माधवी के ऐसे कठोर वचनों को सुनकर, देवराज इन्द्र कुपित होकर, वहाँ से चले गये। तब सभी नाग कन्याएं, उस उपवन के बीच में स्थित सरोवर में स्नान करने लगी।

तभी वहाँ पर गायों तथा बछड़ों का समूह पानी पीने आ पहुँचा। उसी के साथ ही एक हिंसक व्याघ्र भी, वहाँ भीषण गर्जना करता हुआ, आ पहुँचा। सभी गाय एवं बछड़े उसकी भयंकर गर्जना से भयातुर होकर काँपने लगे। तब श्री अग्रसेन जी ने, जो कि उस समय उसी उपवन में एक पीपल के पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे, तुरन्त बड़ी फुर्ती से, गाय एवं बछड़ों की रक्षा करने के उद्देश्य से, व्याघ्र के चारों ओर बाणों का एक ऐसा घेरा बना दिया, कि जिससे व्याघ्र उसी घेरे के अन्दर रह गया और गाय, बछड़े तथा नागकन्याएं सभी सुरक्षित हो गये। उनके इस दिव्य कृत्य को देखकर नागराज कन्या माधवी उन्हें, इस प्रकार निहारने लगी, जिस प्रकार पुष्प वाटिका में श्री सीता जी, श्री राम को निहार रही हों। माधवी ने मन ही मन उस दिव्य पुरुष अग्रसेन को, अपने पति के रूप में, स्वीकार करने का निश्चय कर लिया। उधर अग्रसेन जी भी, उस अतीव मनोहारी नाग सुन्दरी को देखकर अत्यन्त हर्षित हुए। तब नागराज कन्या माधवी भगवान शंकर प्रिया पार्वती जी का ध्यान करके प्रार्थना करने लगी कि हे रघुकुमारी! आप मुझे, पति के रूप में इन्हें ही, प्रदान कीजिएगा। मैं बार-बार आपको नमन करती हूँ। उसी समय उपवन के चौकीदारों ने जाकर नागराज महीधर से, माधवी के सम्मोहन का वह सारा वृतान्त सुना दिया, जो उन्होंने उस उपवन में देखा था।

तब राजा महीधर ने सेनापति को आदेश दिया। सेनापति अपनी चतुरंगिणी सेना लेकर अग्रसेन के पास आ गये। अग्रसेन उस सेना पर अकेले ही ऐसे टूट पड़े जैसे अकेला सिंह हाथियों के झुण्ड पर टूट पड़ता है। तब सेनापति चित्राँग ने अपनी पन्नगी माया से अग्रसेन को सर्पाकार वाणों से बाँध लिया। सेनापति चित्राँग ने अपने सैनिकों को अग्रसेन को मार डालने का आदेश दिया, परन्तु नागों के महामन्त्री ने चित्राँग से कहा कि मारने से

pdfelement
Remove Watermark Now

पहले, यह जान लो कि यह नर श्रेष्ठ कौन है? यह मारने योग्य है, या सम्मान करने योग्य है। वास्तव में यह पुरुष श्रेष्ठ, सर्वदा सम्मान का अधिकारी है। महामन्त्री के नीतियुक्त वचनों को सुनकर सेनापति ने कहा कि ऐसा ही होगा। तब सेनापति अग्रसेन को पहरेदारों के संरक्षण में सौंपकर स्वयं नागराज महीधर के राजभवन की ओर चला गया। वहाँ अग्रसेन की सारी रात्रि जागते हुए व्यतीत हुई। सुबह को भगवान भास्कर को देखकर अग्रसेन ने प्रार्थना की, हे सूर्यदेव! आप सम्पूर्ण जगत को उत्पन्न करने वाले हो। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आपके ही प्रकाश पुंज से प्रकाशमान है। हे प्रपितामह! (*क्योंकि अग्रसेन जी सूर्यवंशी हैं*) मैं बन्धन में पड़ा हुआ हूँ। आप मुझे शीघ्र ही बन्धन मुक्त कीजिए। सूर्य देव की कृपा से अग्रसेन जी सभी बन्धनों से मुक्त हो गये।

उसी समय माधवी ने अपनी माता नागेन्द्री से कहा, कि हे माते! देव, नाग, नर आदि सभी में श्रेष्ठ किसी विशिष्ट पुरुष को में पति रूप में चाहने लगी हूँ। हे माते! मैं उनके सिवा किसी दूसरे को कदापि पति रूप में वरण नहीं करूँगी, चाहे मुझे अपने प्राणों का परित्याग ही, क्यों न करना पड़े। हे माते! ऐसा दिव्य पुरुष, जो स्वयं कामदेव के समान सुन्दर एवं मनमोहक है। ऐसा पहले कभी नहीं देखा गया होगा। तब नागेन्द्री ने स्वयं जाकर नागराज महीधर को अपनी पुत्री का सारा वृतान्त कह सुनया। नागराज ने कहा कि स्वयं इन्द्र का प्रस्ताव मेरे पास आया है। मैं इन्द्र के साथ इसका विवाह करना चाहता हूँ। जब माता नागेन्द्री द्वारा पिता की बाते माधवी को बताई गयी, तब माधवी ने कहा कि मैं उस दिव्य पुरुष के सिवा किसी अन्य का वरण नहीं कर पाऊँगी, अन्यथा मैं अपने प्राणों को ही विसर्जित कर दूँगी। तब सखी चित्रा के कहने पर माधवी गौरी पूजा हेतु सखियों सहित नदी पर गई। वहाँ पहुँच कर माधवी ने कहा, कि

हे गौरी मैया, जिसे मैंने पति मान लिया, उसी दिव्य पुरुष को, आप पति रूप में मुझे प्रदान करें।

माधवी के मन की बात को जानकर जगदम्बा उमा कहने लगी, कि माधवी जैसी तुम्हारी मन की अभिलाषा है, वैसा ही तुम पाओगी। अर्थात् तुम्हारी अभिलाषा ही पूर्ण होगी। तभी नागराज महीधर ने अपनी राजसभा में आकर अपने मन्त्रियों से इस विषय पर गहन मन्त्रणा की। जब नागराज महीधर अपने मन्त्रियों से गहन मन्त्रणा कर रहे थे, उसी समय, वहाँ पर, श्री अग्रसेन नागपाश से बन्धन मुक्त होकर पधारे। उन्होंने नागराज महीधर से कहा कि मैं विख्यात सूर्यकुल में उत्पन्न महाराजा बल्लभ सेन का पुत्र अग्रसेन हूँ। महर्षि गर्ग तथा महालक्ष्मी जी की कृपा से मैंने, स्वयं अपने राज्य की संरचना की है। मैं नागसुता माधवी देवी को वरण करने की कामना लेकर यहाँ आया हूँ। तब महीधर ने कहा कि सुना है नरलोक में, कुटुम्बी जन आपस में ही एक दूसरे को, अपमानित करते हैं और एक दूसरे को नीचा दिखाने में ही लगे रहते हैं। भाई पर आपत्ति पड़ने, पर हर्ष मनाते हैं। दूसरे भयों से अधिक, स्वजाति भाईयों से प्राप्त भय ही, अधिक कष्टदायक होता है। अतः हे वैष्णव, जिनका अन्तःकरण शुद्ध नहीं है, उनके लिए नागकन्या की प्राप्ति असम्भव है। अतः तुम यहाँ से चले जाओ। शैव और वैष्णवों का सम्बन्ध, कदापि सम्भव नहीं है, अतः तुम तुरन्त ही यहाँ से लौट जाओ।

तब अग्रसेन ने नागराज से कहा कि आपका कथन सही नहीं है। आप मेरे पिता तुल्य हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है, कि आप पूर्वाग्रहों एवं द्वेष भावनाओं से ग्रसित हैं। शिव जी ज्ञान के प्रतीक हैं, वहीं विष्णु भक्ति के प्रतीक हैं बिना भक्ति ज्ञान नह होता तथा ज्ञान बिना भक्ति नहीं होती। वस्तुतः ईश्वर एक ही है फिर शैव और वैष्णवों में यह फर्क क्यों है? क्या ईश्वर एक नह

pdfelement
Remove Watermark Now

है? जिस प्रकार स्वर्ण एवं स्वर्ण से बने आभूषणों में कोई भेद नहीं होता, उसी प्रकार शिव और विष्णु में कोई भेद नहीं है। वस्तुतः ईश्वर एक ही है। हे नागराज! जिस प्रकार नाग, भगवान शिव के आभूषण स्वरूप हैं, उसी प्रकार शेष नाग पर, भगवान विष्णु, महालक्ष्मी सहित विराजमान हैं। अतः आप दोनों संस्कृतियों के प्रतीक स्वरूप हैं। अतः आप शैवों एवं वैष्णवों में, अपनी भेद-दृष्टि का, परित्याग कीजिएगा। तब राजा महीधर ने कहा, कि हे राजन! आप द्वारा जिस प्रकार, शिव और विष्णु के एकात्म स्वरूप को, दर्शाया गया है, वह आश्चर्यजनक है। आपने आज हमारे ज्ञान चक्षु खोल दिये हैं। वास्तव में ईश्वर एक ही है। तब अग्रसेन ने कहा, कि हे नागेन्द्र! नर और नागों के परस्पर सम्बन्ध स्थापित होने पर, सदियों से चला आ रहा बैर-विरोध समाप्त हो जायेगा तथा नागवंश की इस सुकन्या से हमारे वंश में भी तेजस्विता का संचार होगा, जिससे दोनों ही कुल यशस्वी होंगे। अतः मैं आपकी सुपुत्री माधवी देवी के साथ विवाह का प्रस्ताव रख रहा हूँ।

तब महीधर ने कहा, कि मैं माधवी का पाणिग्रहण तुम्हारे साथ कैसे कर सकता हूँ, मैं देवराज इन्द्र से इस हेतु वचनबद्ध हूँ। यदि मैं, तुम्हारे साथ माधवी का पाणिग्रहण कर भी देता हूँ, तो देवराज इन्द्र आपके साथ बैर कर सकते हैं। तब अग्रसेन जी ने कहा कि देवराज इन्द्र भला ऐसा क्यों करेंगे? मैं शरीर से सत्याचरण करता हूँ। मन से उनका निरन्तर चिन्तन करता रहता हूँ। वे भला मेरे साथ पापपूर्ण व्यवहार क्यो करेंगे? श्री अग्रसेन की ऐसी बातों को सुनकर सभी नाग अत्यन्त हर्षित होने लगे। इसी बीच महर्षि उद्दालक जी भी उसी समय, वहाँ पर पधारे। उनके सामने ही नागराज ने, अपनी पुत्री माधवी का विवाह श्री अग्रसेन से करने का निर्णय कर लिया।

विवाह की तैयारियाँ होने लगी। दोनों पक्षों के अतिथिगण मणिपुर में पधारने लगे। तब शुभ मुहुर्त में नागराज महीधर ने श्री अग्रसेन जी से कहा कि हे राजेन्द्र! मेरी यह सुपुत्री माधवी, अब, आपकी सहधर्मिणी एवं सहचरी है। अब आप इसका हाथ अपने हाथों में लीजिए। तब उन दोनों ने घी की आहुति दी तथा दोनों सात पग, साथ-साथ चले। उन दोनों के विवाह से नर और नाग (*शैव और वैष्णव*) दोनों संस्कृतियों का मिलन हुआ तथा नागराज महीधर ने अपने सात द्वीपों में से एक द्वीप अर्थात् एक तल (*राज्य*) अग्रसेन को दहेज में दे दिया तथा उसका नाम *"अग्रतल"* रखा गया। इसके साथ ही साथ दहेज में अनेक हाथी, घोड़े तथा हीरे-जवाहारात, रत्न, स्वर्ण आदि प्रदान किये गये।

तदन्तर नागकन्या माधवी को साथ लेकर अग्रसेन अपने मनोहारी नगर आग्रेयपुरी में पधारे। वहाँ पर उनके संरक्षक सौम्य ऋषि, अनुज शौर्यसेन तथा माता भगवती देवी उनकी अगवानी के लिए आगे बढ़े। महाराजा अग्रसेन अपनी सहधर्मिणी माधवी के साथ इस प्रकार लग रहे थे जैसे रति और कामदेव साक्षात् पधार रहे हैं। आज वधु के साथ पुत्र अग्रसेन के मिल जाने पर, माता वैदर्भी (भगवती) परम धन्य हो गई हैं। यह परम सौभाग्य का दिन है कि चिरकाल से बिछुड़े हुए, पुत्र अग्रसेन का आज अपनी माता और अनुज शौर्यसेन से मिलन हो रहा है। तब रेशमी वस्त्र धारण करके महारानी माधवी देवी, अपनी सासुमाता के श्री चरणों में अभिवादन करके, उनके पास विनीत भाव से खड़ी हो गयी। तब माता वैदर्भी ने कहा, हे पुत्रवधु! तुम अखण्ड सौभाग्यवती रहो, जिस प्रकार महालक्ष्मी, भगवान श्री नारायण में भक्तिभाव एवं प्रेम रखती हैं, उसी प्रकार तुम भी, अपने पति अग्रसेन प्रेम में सदा अनुरक्त रहो, यह मेरा आशीर्वाद है। जैमिनी कहते हैं, कि हे महाप्राज्ञ जनमेजय! आग्रेयपुरी के मध्य

pdfelement
Remove Watermark Now

महादेवी लक्ष्मी जी का शुभ मन्दिर है। वहाँ रात-दिन महालक्ष्मी जी का पूजन अर्चन होता रहता है। यहाँ साक्षात् महालक्ष्मी सभी वस्तुओं में अपनी अनन्त कलाओं सहित व्याप्त होकर विराजमान हैं। वह आग्रेय गणराज्य पुण्य, धन, सुख और धर्म से परिपूर्ण है। वहाँ की वाटिकाएं देवोद्यान सी प्रतीत होती हैं। वहाँ की विपुल सम्पदा मानों तीनों लोकों का उपहास कर रही हों। वहाँ नारियाँ साक्षात् महालक्ष्मी तथा नर साक्षात् नारायण के समान हैं। वहाँ ऐसा प्रतीत होता है मानों भगवान विष्णु ने, भूतल पर दूसरा *'वैकुण्ठ'* स्थापित कर दिया हो।

हे जनमेजय! तब अचानक वर्षा सत्र में देवराज इन्द्र ने आग्रेय गणराज्य में वर्षा बन्द करा दी। सभी लोग व्याकुल होने लगे। अकाल की काली छाया राज्य में पड़ने लगी। तब माधवी देवी ने विनीत भाव से अग्रसेन से निवेदन किया, कि बादलों का जल दैव कृपा पर आधारित है, परन्तु नदियों का जल, मनुष्यों के स्वयं के प्रयत्नों से प्राप्त किया जा सकता है। महारानी माधवी की इस योग्य सलाह से राज्य भर में नहरों द्वारा पानी लाया गया तथा चारों ओर फसल लहलहाने लगी। इससे इन्द्र ने कुपित होकर अग्निदेव को आदेश दिया, कि सभी फसलों को आग द्वारा भस्म कर दें। आग के प्रकोप से लहलहाती फसलें जलने लगी। तब महर्षि गर्ग ने अग्रसेन को वास्तविकता का ज्ञान कराया तथा इन्द्र देव व अग्निदेव द्वारा किये अनर्थ का ज्ञान कराया। तदन्तर महाराजा अग्रसेन ने विचार किया, कि इससे विमुक्ति हेतु महालक्ष्मी की शरण में जाना चाहिए। तब उन्होंने महालक्ष्मी का अनुष्ठान किया। जगत जननी महालक्ष्मी ने वरदान दिया, मैं तुम्हें इस संकट से विमुक्त करती हूँ, आप कोई अन्य वर माँगे। तब अग्रसेन ने कहा, कि आप सदैव मुझ पर प्रसन्न रहे, मेरी यही कामना है। तदन्तर श्री अग्रसेन ने देवराज इन्द्र को युद्ध के लिए

आह्वान किया। तब देवराज इन्द्र ने बाणों की वर्षा कर दी तथा अग्रसेन के धनुष को काट डाला। दोनों ओर से इस भयानक संग्राम को देखकर सभी लोग व्याकुल और भयाकुल हो गये। तदन्तर, युद्ध के मध्य में देवर्षि बृहस्पति देव आ खड़े हुए। तब दोनों ने हथियार डाल दिये। देवगुरू बृहस्पति जी ने कहा, कि युद्ध सदैव ही विनाश का कारण होता है, अतः इस कलह को समाप्त करने के लिए, सन्धि करना आवश्यक है। तब देवराज इन्द्र ने कहा, कि मैंने यह सब अग्रसेन के शील की परीक्षा के लिए किया था। अब मैं अग्रसेन के साथ ऐसी मैत्री करना चाहता हूँ जिसका कभी अन्त न हो।

तब अग्रसेन ने कहा कि देवराज, मैं आपकी मैत्री पाकर धन्य हो गया हूँ। तब इन्द्र ने कहा कि हे राजन! तुम अग्रसेन के नाम से तीनों लोकों में विख्यात रहोगे। तीनों लोकों में तुम्हारी कीर्ति अजर-अमर रहेगी। तभी मंगलकारी वर्षा ने धरा का अभिषेक किया। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ने लगी। महर्षि जैमिनी ने कहा कि हे नृप जनमेजय! इस प्रकार मनुष्य अपने पुरुषार्थ से, दैव को भी अपने अनुकूल बना सकता है, जैसे कि अग्रसेन ने बनाया। राजरानी माधवी देवी महाराजा अग्रसेन की एकमेव पत्नी थी। वे पतिव्रता, रूपवती, सुशील, परम कुलीन नारी थी। माधवी देवी ने अपने गर्भ से क्रमशः अट्ठारह पुत्रों को जन्म दिया तथा एक पुत्री को जन्म दिया।

अट्ठारह पुत्रों के नाम थे क्रमशः

1.	विभु सेन	2.	विक्रम सेन
3.	अजेय सेन	4.	विजय सेन
5.	अनल सेन	6.	नीरज सेन
7.	अमर सेन	8.	नगेन्द्र सेन
9.	सुरेश सेन	10.	श्रीमन्त सेन

Remove Watermark Now

11. सोम सेन 12. धरणीधर सेन
13. अतुल सेन 14. अशोक सेन
15. सुदर्शन सेन 16. गणेश्वर सेन
17. सिद्धार्थ सेन 18. लोकपति सेन
19. इनकी एकमात्र पुत्री का नाम ईश्वरी था।

इन अट्ठारह पुत्रों की शादी विदिशा नरेश नागवंश के राजा वासुकि की 18 पुत्रियों के साथ सम्पन्न हुई।

अट्ठारह पुत्रों की पत्नियों के नाम क्रमशः निम्न प्रकार थे-

1.	विभु सेन	- चित्रा
2.	विक्रम सेन	- शुभा
3.	अजेय सेन	- शीला
4.	विजय सेन	- कान्ति
5.	अनल सेन	- स्वाति
6.	नीरज सेन	- रेणुका
7.	अमर सेन	- क्षमा
8.	नागेन्द्र सेन	- शिरा
9.	सुरेश सेन	- राखी
10.	श्रीमन्त सेन	- श्रीमाला
11.	सोम सेन	- शान्ति
12.	धरणीधर सेन	- प्रिया
13.	अतुल सेन	- सुकन्या
14.	अशोक सेन	- सावित्री
15.	सुदर्शन सेन	- हेमवती
16.	सिद्धार्थ सेन	- तारा
17.	गणेश्वर सेन	- नागमणि
18.	लोकपति सेन	- प्रभावती

19. ईश्वरी नामक पुत्री का विवाह काशी नरेश के पुत्र महेश के साथ सम्पन्न हुआ जोकि ब्रह्मस्वरूप महामुनि के रूप में विख्यात हुए।

इसी प्रकार उनके अनुज शौर्यसेन की पत्नी अनन्त नागसुता 'दक्षिणी' के गर्भ से पाँच पुत्र उत्पन्न हुए।

तदन्तर महाराजा जनमेजय ने जैमिनी ऋषि से कहा कि महर्षि मेरे मन में यह सन्देह उत्पन्न हो गया है, कि क्षत्रियों का यह वंश जिसकी उत्पत्ति सूर्यवंश से हुई और जिसमें महाराजा इक्ष्वाकु, महाराजा मान्धाता, सगर, दिलीप, भगीरथ, मरूत्त, हरिश्चन्द्र, रोहिताश्व, रघु, अज, दशरथ, भगवान राम, लवकुश जैसे कीर्तिवन्त राजा हुए हैं। जिनकी कथाएं और गाथाएं जन-जन में, पुण्य स्मरण स्वरूप विद्यमान हैं। यह महान वंश वैश्य धर्मा क्यों हो गया? तब जैमिनी जी ने कहा हे जनमेजय! अब मैं तुम्हें, वह वृतान्त सुनाता हूँ, जिसके कारण महाराजा अग्रसेन की प्रशंसा देवता, ऋषि और मुनिगण करते हैं। महाराजा अग्रसेन का वह कर्म परम धन्य था, जो कि सम्पूर्ण मानव मात्र को सुख प्रदान करने वाला है। उसी कर्म की वजह से महाराजा अग्रसेन की कीर्ति, युग-युगान्तर तक, तीनों लोकों में अजर-अमर रहेगी, तुम इसे ध्यानपूर्वक सुनो।

जब श्री अग्रसेन ने देखा कि उनका वंश, पुत्र-पौत्रादि के रूप में बहुत विकसित हो गया है। तब उन्होंने विचार किया कि इस वंश को व्यवस्थित करके वंश कीर्ति की वृद्धि की जाये। उन्होंने इस विषय में गर्ग ऋषि से विचार विमर्श किया। महर्षि गर्ग ने कहा कि तुम्हें अपनी संतति को गोत्र कृत करके अप सद्गुणों से युक्त, वंश का विकास करना चाहिए। अतः तु वंशकर नामक यज्ञ कीजिए। आपके वंशकर होने से आप

pdfelement
Remove Watermark Now

अभिलाषाएं सफल होंगी। तब अग्रसेन ने वंशकर यज्ञ करने का निश्चय किया।

चैत्र मास की पूर्णिमा तिथि को अग्रसेन ने यज्ञ की दीक्षा ली। शुभ-मुहुर्त में श्री अग्रसेन ने उस क्षेत्र को हल से जोत कर यज्ञ मण्डप तैयार कराया। तब महाराजा अग्रसेन ने उस वंशकर यज्ञ में आचार्य पद पर कुल पुरोहित महर्षि गर्ग का वरण किया तथा महर्षि वेद व्यास को ब्रह्मा के पद पर, अभिषिक्त किया और महर्षि कश्यप, वशिष्ठ, गौतम, अत्रि, जैमिनी, भारद्वाज, साकल, भारवी, शांडिल्य, श्रंगी, ताण्डय, मुदगल, कौशिक, कौण्डियो, आश्वलायक, माडव्य, गालव ये सभी क्रमशः ऋत्विज बनाये गये। तत्पश्चात विधिवत इन्द्रादि देवताओं को तथा दिव्यपालों को और सभी देवताओं को मन्त्रों द्वारा हविष्य प्रदान किया गया। इस प्रकार सत्रह दिनों तक क्रमशः सत्रह यज्ञ पूर्ण हो गये। यज्ञ में नित होने वाले रूधिर स्नान, मांसयुक्त बलिकर्म को देखकर महाराजा अग्रसेन जी के हृदय में ग्लानि उत्पन्न हो गई और वे विचलित हो गये। तदन्तर उन्होंने विचार किया कि यज्ञ में जो पशुबलि का विधान है, वह किसी भी दशा में मंगलकारी नहीं हो सकता। हिंसा कर्म को कभी धर्म नहीं कहा जा सकता। तब महर्षि गर्ग द्वारा समझाये जाने पर उन्होंने प्रश्न किया कि वनों को काटने वाले, पशुओं की हत्या करने वाले, रक्तिम कर्म करने वाले, यदि स्वर्ग जायेंगे, तो नरक कौन जायेगा? अतः मैं, ऐसे क्षत्रिय धर्म का परित्याग करता हूँ और अब मैं, वैश्य धर्म स्वीकार करता हूँ।

इस प्रकार महाराजा अग्रसेन ने अपने क्षत्रिय वर्ण की आहुति देकर मानवता के प्रतीक *'वैश्य वर्ण'* को अपना लिया तथा अपना अट्ठारहवां यज्ञ अहिंसक तरीके से पूर्ण किया। तत्पश्चात् वहाँ पर उपस्थित अग्रपुत्रों, आग्रेय निवासी तथा सभी उपस्थित

लोगों ने 'अहिंसा ही मानव धर्म है, मैं इसका पालन करूंगा' इस प्रकार की प्रतिज्ञा की। महर्षि जैमिनी जी कहते हैं, कि हे जनमेजय! बुद्धिमान और धर्मज्ञ होना ही ब्राह्मणत्व है, वीर होना ही क्षत्रित्व है, करूणा और दया से पवित्र होना ही वैश्यत्व है, इस दृष्टि से सभी स्वरूपों में समान रूप से प्रशंसित होने वाले, महाराजा अग्रसेन जी ईश तुल्य महामानव हैं।

तदन्तर महाराजा अग्रसेन जी के यश, वैभव, ऐश्वर्य एवं कीर्ति से व्यथित होकर कुछ राजा, महाराजा अग्रसेन से ईर्ष्या करने लगे। उन राजाओं ने क्रोध में भरकर यह निश्चित किया कि हम सब लोग मिलकर आग्रेय गणराज्य को तहस-नहस करके, वहाँ के विपुल धन को अपने अधिकार में कर लेंगे। ऐसा सोचकर, उन दुष्ट बुद्धि वाले राजाओं ने, आग्रेय गणराज्य को चारों ओर से घेर लिया। तब युवराज विभुसेन महातेजस्वी सेनापति पदमकेतु तथा अपनी सेना के साथ युद्धभूमि में पहुँच गये। विभुसेन की शरवृष्टि से राजा दिग्गज सेन, राजा यतेन्द्र तथा अन्य राजागण, मूर्छित (संज्ञा शून्य) होकर गिर पड़े। तब युवराज विभु सेन उन नृपतियों को महाराज अग्रसेन के पास लाकर बोले, कि अब ये सारे नृप आपके दास हो गये हैं। महाराजा अग्रसेन ने उन सभी नृपतियों को मुक्त कर दिया। तब दिग्गज सेन तथा यतेन्द्र ने अग्रसेन से कहा कि वास्तव में, आप राजा नहीं महाराजा हैं। हम सब आपके वास्तविक स्वरूप को नहीं जानते। आप विराट हैं, हमें क्षमा प्रदान करें। सभी नृपतियों से उन्होंने कहा कि सभी राजागण आपसी बैर-भाव त्यागकर, अब निर्बैर हो जायें। अतः सभी नृपतिगण महाराजा अग्रसेन से अनुराग करने लगे तथा वे 'अजात शत्रु' कहलाने लगे।

तदन्तर महाराजा अग्रसेन ने कारागार में, अपराधी के रूप में बन्द शाकुन्त नाम के एक ब्राह्मण को देखकर कहा, कि यह

pdfelement
Remove Watermark Now

तो मेरा बचपन का मित्र है। तब, उन्होंने उस ब्राह्मण से पूछा, कि तुमने ऐसा कौन सा अपराध किया है, जिसके कारण तुम्हें कारागार में आना पड़ा। तब उस ब्राह्मण ने कहा, कि उसने जो यह अपराध किया है, वह भूख के वशीभूत होकर ही किया है। अतः कारण मैं नहीं मेरी और मेरे परिवार की भूख है। तब अग्रसेन ने अपने बड़े पुत्र विभु सेन को बुलाकर कहा कि मेरे राज्य में सबको रोजगार सुलभ कराया जाये। अतः उन्होंने अपने राज्य में यह व्यवस्था बनाई कि जो भी व्यक्ति इस राज्य में आयेगा, उसे प्रत्येक परिवार एक ईंट एवं एक मुद्रा (तत्कालीन मुद्रा निष्क) प्रदान करें। अग्रसेन ने अपने पुत्र विभु सेन से कहा, कि जो व्यक्ति याचना नहीं करता, परन्तु उसे सहयोग की आवश्यकता है। सामाजिक स्तर पर उसकी तलाश करनी चाहिए। समाज को एक दूसरे का ध्यान रखना चाहिए, अतः ऐसे व्यक्ति की आजीविका के प्रबन्ध हेतु, राज्य के सभी बन्धुओं को, उसके घर पर जाकर, उस पर उपकार करने की दृष्टि से नहीं, अपितु सद्भावना की दृष्टि से कर्ज स्वरूप नहीं, अपितु भेंट स्वरूप एक ईंट एवं एक मुद्रा देने का विधान किया गया। यह सर्वोत्थान की भावना ही उनके महान *"समाजवाद"* की भावना थी, जो कि सम्पूर्ण विश्व में अद्वितीय थी। वस्तुतः महाराजा अग्रसेन का सम्पूर्ण जीवन-कर्म, लोक कल्याण का प्रत्यक्ष स्वरूप है। उनका कथन था कि "सारे जगत का कल्याण करना ही मानव का परम धर्म है।"

इस प्रकार 108 वर्ष की अवस्था प्राप्त होने पर उन्होंने अपने पुत्र विभु से कहा, कि अब हमें वानप्रस्थ का व्रत लेकर, वनों में जाकर तपस्या करनी चाहिए। अतः वे अपने बड़े पुत्र विभु सेन को राज्य सौंपकर मार्गशीर्ष पूर्णिमा को आग्रेय से चले गये। तदुपरान्त वनों में पहुँचकर उन्होंने महालक्ष्मी जी की आराधना

की। तब महालक्ष्मी जी ने प्रकट होकर वर मांगने हेतु कहा। तब अग्रसेन ने कहा कि आपमें हमारी अचल भक्ति सदा बनी रहे, आपसे मैं बार-बार यही याचना करता हूँ। तब प्रसन्न होकर महालक्ष्मी ने वरदान दिया कि तुम्हारा वंश जगत में विख्यात होगा तथा उसी से तुम्हारा तेज सम्पूर्ण जगत में फैलेगा। जब तक सूर्य और चन्द्रमा विद्यमान हैं, तब तक पूजित होने पर मैं तुम्हारे कुल का परित्याग नहीं करूंगी। इस प्रकार वर देकर महालक्ष्मी अन्तर्ध्यान हो गयीं। तदन्तर ध्यान और वैराग्य का बल प्राप्त करके, उन्होंने परम मोक्ष प्राप्त किया।

तब महाप्राज्ञ जनमेजय ने जैमिनी ऋषि से कहा, कि हे महर्षि! अकेला क्षीर सागर ही सदा सन्ताप नाशक कहा जाता है, यदि उसमें मलयाचल की सुगन्धित वायु संयुक्त हो जाये और उसके अमृत जल को चन्द्रमा की पवित्र किरणें शीतल कर दें तथा वह पुष्पों से अलंकृत हो जाये, तो फिर क्षीर सागर के उस अद्वितीय स्वरूप का क्या कहना?

अतः महाराजा अग्रसेन का मनोहारी, रसमय तथा मार्गदर्शक अमृत तुल्य चरित्र आपके श्रीमुख से सुनकर, मेरा मन निश्चय ही शीतलता से युक्त हो गया है। हे मुनि श्रेष्ठ, अब मेरा मन शान्त और स्थिर हो गया है। अब मेरा क्रोध, ग्लानि, शोक, चिन्ता, भ्रम, ईर्ष्या सब दूर हो गये हैं। ऐसे महान चरित्र को बार-बार सुनने की इच्छा होती है। सूत जी कहते हैं कि हे शौनक जी! महर्षि जैमिनीकृत यह अद्भुत पुरुषार्थ पूर्ण महाराजा अग्रसेन जी के कर्मों की गाथा तथा पावन चरित्र मैंने तुम्हें सुनाया है। इससे सभी सुखों की प्राप्ति होती है तथा दुःखों का नाश होता है।

◆ ◆ ◆

pdfelement
Remove Watermark Now

अध्याय-8

"अग्रसेन, अग्रवाल, अग्रोहा"

अग्रवाल शब्द की प्राचीनता : अग्रवाल शब्द अत्यन्त प्राचीन है। यह लगभग 5130 वर्ष पुराना है। लेकिन इसके प्रचलन के सम्बन्ध में जैन विद्वान परमानन्द शास्त्री ने अनेकों ग्रन्थों एवं शिलालेखों के आधार पर लिखा है, कि यह शब्द सन् 1100 से पूर्व प्रचलन में आ चुका था। पहले अग्रवाल को अगरवाल कहा जाता था। सन् 1132 में तोमर वंश के प्रतापी राजा, सम्राट अनंगपाल के शासन काल में, कविवर श्रीधर द्वारा रचित पासणाहु चरित में "अयरवाल" जाति का उल्लेख किया गया है। सन् 1336 में लिखी गई धातृ-प्रशस्ति में अयरवाल का उल्लेख किया गया है। यशकीर्ति ने हरिवंश पुराण में अयरवाल शब्द का उल्लेख किया है।

सन् 1354 ई0 में 'प्रद्युम्न चरित' काव्य के रचयिता श्री सुधारू जैन कवि ने अपना परिचय देते हुए स्पष्ट लिखा था कि :

"अगरवाल की मेरी जाति,
पुर अग्रोहा मुहि उत्पाति।"

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मुद्रा तत्व विद डा0 परमेश्वरी लाल गुप्त ने पता लगाया कि फिरोजशाह तुगलक के शासन काल में मौलाना दाऊद ने सन् 1370 में अग्रवाल जाति की चर्चा की थी। पुरातत्वतेत्ता डा0 वासुदेवशरण अग्रवाल के प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर पता लगाया था कि शेरशाह सूरी के शासनकाल में सन् 1540 में मलिक मौहम्मद जायसी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पद्मावत' में अग्रवाल जाति का उल्लेख किया है।

सबसे पहले भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने सन् 1871 ई0 में *"अग्रवालों की उत्पत्ति"* नामक एक लघु पुस्तिका लिखी। इसका आधार उन्होंने भविष्यपुराण में वर्णित महालक्ष्मी व्रतकथा को बताया।

इस कथा के अनुसार राजा अग्रसेन के पिता का नाम वल्लभ था तथा एक बार उनके राज्य में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। दुर्भिक्ष का कारण इन्द्र की अग्रसेन के प्रति ईर्ष्या थी। अग्रसेन के वैभव से ईर्ष्यालु होकर इन्द्र ने उन्हें अपने अधीन करना चाहा। अतः उसने अपनी शक्ति से उनके राज्य में वर्षा बन्द कर दी। अतएव भयंकर दुर्भिक्ष के कारण सारी प्रजा त्राहि-त्राहि करने लगी। तब अग्रसेन ने कुलदेवी महालक्ष्मी का पूजन प्रारम्भ किया। महालक्ष्मी उनकी दृढ़ता, साहस और भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हुई और वरदान मांगने को कहा। तब राजा अग्रसेन ने कहा कि इन्द्र मेरे राज्य में अशान्ति पैदा करना चाहता है। तब महालक्ष्मी ने उन्हें अभयदान दिया तथा कहा कि तुम मणिपुर जाकर नाग राजाओं से अपने सम्बन्ध स्थापित करो इससे तुम्हारे राज्य और कुल में वृद्धि होगी।

राजा महीधर ने माधवी का विवाह अग्रसेन के साथ बड़े उत्साह के साथ किया तथा दहेज में हाथी, घोड़े, रत्न, स्वर्ण, उत्तम वस्त्र आदि प्रदान किये। यह बात जब इन्द्र ने नारद से सुनी तब इन्द्र ने राजा अग्रसेन से सन्धि कर ली तथा "मधुशालिनी" नाम की अप्सरा उनके दरबार की शोभा बढ़ाने हेतु भेंट की। तत्पश्चात उन्होंने राज्य की समृद्धि हेतु पुनः तपस्या करने का निश्चय किया। उन्होंने घने जंगलों में कठिन तपस्या प्रारम्भ कर दी। तब महालक्ष्मी उनके व्रत से प्रसन्न होकर जंगल में अपना आलोक बिखराती हुई प्रकट हुई तथा राजा से कहा कि हे राजन! तुम इस कठिन व्रत को बन्द करो और अपने राज्य में

pdfelement
Remove Watermark Now

जाकर प्रजा की भलाई के कार्य करो। मैं तुम्हें समस्त वैभव व सिद्धी प्रदान करूँगी। आज से यह कुल तेरे नाम से जाना जायेगा तथा अग्रवंशी प्रजा तीनों लोकों में अग्रगण्य होगी। जब तक अग्रकुल में महालक्ष्मी की पूजा होती रहेगी, तब तक यह कुल सदा धन, वैभव और ऐश्वर्य से सम्पन्न रहेगा।

महादेवी के वरदान के पश्चात् राजा अग्रसेन ने अग्रोहा में आकर अग्रोहा नगर की स्थापना की। यह काल कलियुग का प्रारम्भिक काल था। इस नगर में ऊँचे-ऊँचे भवन पंक्तियों में बड़े ही सुन्दर ढंग से बनाये गये थे। उन्हें सड़कों एवं चौराहों से समृद्ध किया गया था। नगर में मन्दिर, तालाब, बावड़ी बनवाये गये, बगीचे लगवाये गये। फलफूल व भाँति-भाँति के वृक्षों से नगर की शोभा को सुसज्जित किया गया। भाँति-भाँति के पक्षी जैसे शुक, मयूर, हंस, कोकिला आदि लाकर नगर के पास के जंगलों में छोड़े गये। इस प्रकार इस नगर की शोभा इन्द्रपुरी के समान हो गई। नगर के बीचों-बीच महालक्ष्मी का विशाल मन्दिर बनवाया गया। वहाँ दिन-रात पूजा चलती रहती थी। तत्पश्चात राजा ने अश्वमेघ यज्ञ किये। सत्रह यज्ञ सम्पन्न हो गये, अट्ठारहवें यज्ञ में घोड़े का मांस बलि के रूप में दिया जाना था। तभी आकाश वाणी हुई, अर्थात तभी राजा के अंतः करण से यह ध्वनि प्रस्फुटित हुई "हिंसा द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो सकती।"

अतः जीवों पर दया करो तथा राज्य की वृद्धि करो। राजा ने यज्ञ में बलि न देकर, अहिंसक तरीके से यज्ञ सम्पन्न किया।

महालक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार एक बार राजा अग्र महालक्ष्मी पूजन कर रहे थे। तभी लक्ष्मी ने उनसे कहा कि वे अब पुत्र को सिंहासन प्रदान करें तथा स्वयं वानप्रस्थ ग्रहण करें। अतः वैसाख मास की पूर्णिमा को अग्रसेन ने अपने पुत्र विभु को राज्य सौंप दिया तथा स्वयं वानप्रस्थ लेकर तपस्या करने चले

गये। उनहोंने कलि सम्वत् 108 वर्ष तक राज्य किया। उसके बाद उनके पुत्र विभु ने 100 वर्ष तक शासन किया। सन् 1871 में महालक्ष्मी व्रत कथा को आधार मानते हुए भारतेन्दु हरिशचन्द ने *"अग्रवालों की उत्पत्ति"* नामक एक छोटी सी पुस्तिका प्रकाशित कराई। इसमें राजा अग्रसेन ने आग्रेय गणराज्य को सुसंगठित करके एक वृहत गणराज्य का रूप दिया।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र की इस छोटी सी पुस्तक ने अग्रवाल समाज में हलचल पैदा कर दी। इससे अग्रवालों को पहली बार अपने गौरव पूर्ण इतिहास का ज्ञान हुआ। सम्पूर्ण अग्रवाल समाज ने यह निश्चित किया कि अग्रवाल जाति के एक गौरवमयी इतिहास की रचना करायी जाये, जिसे सम्पूर्ण जगत स्वीकार करे। अतः अग्रवाल महासभा ने अपने इलाहाबाद अधिवेशन में सन् 1920 में एक प्रस्ताव पारित किया कि जो व्यक्ति अग्रवाल जाति का इतिहास लिखेगा, उसे 5000 रूपये का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। श्री सत्यकेतु विद्यालंकार ने अपने अथक परिश्रम से अग्रोहा तथा अग्रसेन का इतिहास, धूल भरी पर्तों से ढूँढ़कर *"अग्रवाल जाति का प्रचीन इतिहास"* नामक पुस्तक लिखी। पेरिस विश्वविद्यालय से इस पर उन्हें डाक्टरेट मिली। इस पुस्तक पर अग्रवाल महासभा ने उन्हें 5000 रूपये का पुरस्कार प्रदान किया।

डाक्टर सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा लिखित *"अग्रवाल जाति का प्रचीन इतिहास"* नामक पुस्तक ने सम्पूर्ण विश्व के सामने अग्रवालों के गौरवमयी इतिहास की विस्तृत झाँकी प्रस्तुत की। उसमें उन्होंने अग्रसेन को अग्रवालों का आदि पुरूष माना है उन्होंने अग्रसेन से ही अग्रवाल वंश का प्रारम्भ माना है तथा अग्रोहा को अग्रसेन की राजधानी माना है। इसके आधार पर तथा डाक्टर स्वराज्य मणि द्वारा लिखित *"अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल"*

pdfelement
Remove Watermark Now

नामक पुस्तक को आधार मानते हुए अग्रवाल समाज का गौरवमयी इतिहास निम्न प्रकार से प्रारम्भ करते हैं।

महाराजा अग्रसेन

महाराजा अग्रसेन एक ऐतिहासिक पुरुष थे। उनका जन्म महाभारत युद्ध के पूर्व हुआ था। महाभारत युद्ध के पश्चात् देश की डाँवाडोल राजनैतिक परिस्थितियों में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ था। उन्हीं नवोदित राज्यों में महाराजा अग्रसेन का अग्रोहा गणराज्य भी था। इनके छोटे भाई का नाम शूरसेन था। दोनों ही भाई बल, विद्या, बुद्धि तथा रण कौशल में अद्वितीय योद्धा थे। उन्होंने अपने राज्य की स्थापना अपने पराक्रम से की थी। ये सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा थे। लेकिन महाराजा अग्रसेन द्वारा अट्ठारहवें यज्ञ में बलि न देने के कारण वैश्य धर्म स्वीकार करके, क्षत्रिय से वैश्य बने। अपनी सूझ-बूझ तथा तपस्या और लगन से क्षत्रियों के समान ही वैश्य गणराज्य की स्थापना की थी और वैश्यों में इस गणराज्य की रक्षा हेतु क्षत्रियोचित गुणों एवं कर्मों को उत्पन्न करके, एक विशाल गणराज्य के महान शासक बने। उन्होंने शिव और लक्ष्मी की आराधना करके देवी शक्ति प्राप्त की। उन्होंने शिव की तपस्या से शक्ति तथा लक्ष्मी की आराधना से धन की प्राप्ति की थी, क्योंकि उन्हें अपने गणराज्य की वृद्धि हेतु शक्ति एवं धन दोनों की ही आवश्यकता थी। उन्होंने नागवंश से वैवाहिक सम्बन्ध जोड़कर अपनी राज्य शक्ति को और अधिक सुदृढ़ बनाया था। उन्होंने अपनी राजधानी अग्रोहा को ऐसे स्थान पर बनाया था, जहाँ पर चारों ओर मरुस्थल था तथा चारों ओर कटीली झाड़ियों के जंगल थे। वहाँ पर दूर-दूर तक पानी का नामोनिशान तक नहीं था। लेकिन यह स्थान सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं उपयुक्त था, ताकि वहाँ पर कोई आक्रमणकारी जल्दी पहुँचने का साहस न कर सके। उन्होंने स्वयं

अपने राज्य में बड़े-बड़े तालाबों का निर्माण कराया। उन्होंने अपने राज्य को विस्तार करके इसमें हिसार, हाँसी, तोसाम, सिरसा, नारनौल, रोहतक, पानीपत, दिल्ली, जींद, कैथल, मेरठ, सहारनपुर, जगाधारी, विधि नगर, नाभा, अमृतसर, अलवर, उदयपुर तक फैलाया था। इन अट्ठारह नगरों में उन्होंने पंचायती राज्य की नींव डाली थी तथा सभी व्यक्तियों में समन्वयवाद और समरसता की भावना को विकसित किया और सम्पूर्ण वैश्य समाज को उच्चतम प्रतिष्ठा के गौरवमयी स्थान पर प्रतिष्ठापित किया। उनके राज्य में यदि कोई व्यक्ति बाहर से आता था, तो उसे एक मुद्रा तथा एक ईंट प्रत्येक परिवार द्वारा दी जाती थी। इससे वह आगन्तुक व्यक्ति एक मुद्रा से लखपति बन जाता था तथा एक ईंट से अपना मकान बनाकर गृहपति बन जाता था। यह उनकी आज से लगभग 5000 वर्ष पूर्व की समाजवादी व्यवस्था का उच्चतम आदर्श स्वरूप था। ऐसे सुदृढ़ संस्कार युक्त, धार्मिक, समन्वयवादी एवं समरसतावादी तथा समाजवादी राज्य की स्थापना का दूसरा उदाहरण विश्व में दुर्लभ है।

अग्रसेन पहले वैश्य थे जिन्हें वैश्य होते हुए भी महाराजा की पदवी से विभूषित किया गया था। इससे पूर्व यह सम्मान केवल क्षत्रियों को ही दिया जाता था। महाराजा अग्रसेन को क्षत्रियों की भाँति छत्र एवं चंवर रखने की अनुमति भी दी गई थी। उन्होंने सम्पूर्ण वैश्य जाति को एक सूत्र में आबद्ध करने हेतु अट्ठारह गोत्रों की स्थापना की। उस समय सम्पूर्ण वैश्य समाज अठारह उपजातियों में या 18 कबीलों में बँटा हुआ था। उन सबको एक-एक गोत्र प्रदान करके, उन अट्ठारह उपजातियों को या 18 कबीलों को एक मंच पर लाकर, एक सूत्र मे आबद्ध कर दिया। उन्होंने रक्त शुद्धि के लिए यह परम्परा कायम कर दी कि कोई भी व्यक्ति स्वगोत्र में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित नहीं करेगा

pdfelement
Remove Watermark Now

अर्थात अपने गोत्र को बचाकर दूसरे गोत्र में ही सभी व्यक्ति वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करेंगे। उन्होंने जाति से बाहर भी विवाह सम्बन्ध को निषिद्ध ठहराया था। इसी कारण वैश्य अग्रवाल जाति देश में धर्म और संस्कृति तथा शक्ति का अद्भुत केन्द्र रही।

उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने हेतु अट्ठारह यज्ञ किये लेकिन अट्ठारहवें यज्ञ में उन्हें पशु बलि के कारण घृणा उत्पन्न हो गई अतः अट्ठारहवें यज्ञ को अहिंसक तरीके से पूर्ण किया। आज भी वैश्य अग्रवाल जाति निरामिष भोजन, परोपकारी वृत्ति, मानवतावादी दृष्टिकोण, दया, उदारता, करूणा, सहानुभूति, सम्वेदना जैसे मानवोचित गुणों से परिपूर्ण है।

महाराजा अग्रसेन ने एक सुव्यवस्थित राज्य का आदर्श स्वरूप इस देश को प्रदान किया। जहाँ पर राजा एक निरकुंश तानाशाह न होकर, पिता तुल्य प्रजा पालक के रूप में, देश का शासन करता था। उन्होंने एक जनहितकारी राज्य की अवधारणा को मूर्तरूप दिया तथा एक आदर्श राज्य की स्थापना करके, विश्व के सम्मुख एक "मॉडल" प्रस्तुत किया। महाराजा अग्रसेन ने तत्कालीन बिखरी हुई राष्ट्रीय शक्तियों और जातीय स्फुर्लिगों को समेटा-बटोरा, पुष्पित-पल्लवित तथा एकत्रित किया और उनको चिरकाल के लिए सशक्त राष्ट्रीयता के सूत्रों में आबद्ध कर दिया। उस समय सुसंगठित जातियाँ ही सबल राष्ट्रीयता का आधार थीं। देश की एकता-अखण्डता, शान्ति और समृद्धि के लिए, महाराजा अग्रसेन जी ने जो आदर्श उपस्थित किये, उनके लिए वे, एक राष्ट्रीय पुरूष के रूप में, सदैव ही चिर-वन्दनीय रहेंगे। वे ऐसे महापुरूष हैं, जो मर कर भी अमर है क्योंकि उनके जीवन-सूत्र आज भी हमारे पथ-प्रदर्शक हैं तथा आज भी वे सम्पूर्ण वैश्य अग्रवाल जाति के प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। वे अग्रवालों के लिए, अब न केवल आदि पुरूष हैं, वरन् वे उनके श्रद्धा और विश्वास

के प्रतीक भी हैं। ठीक उसी प्रकार, जिस प्रकार श्री राम और भगवान श्री कृष्ण सम्पूर्ण हिन्दू जनमानस के लिए पूजनीय, वन्दनीय और आराध्य हैं।

ऐसे पूजनीय, वन्दनीय महापुरूष महाराजा अग्रसेन जी की वन्दना मैं यहाँ पर दे रहा हूँ। इसे बार-बार दोहराइयेगा, ताकि महाराजा अग्रसेन का चरित्र व उनके उच्च आदर्श आपके सम्मुख साकार हो जाये-

अग्रसेन वन्दना

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

अग्रवंश के हे उद्गाता, तुमको है शत बार नमन।
अग्रसेन! तेरे चरणों में, अर्पित तन, मन, धन, जीवन।।

तुम ने वैश्यों को नयी दृष्टि दी, नूतन नव-परिवेश दिया।
एक रूपया और एक ईंट का, सबको शुभ संदेश दिया।।
अग्रोहा को राज्य बनाया, करते सदा प्रजा चिन्तन।
तुमको है शत बार नमन, तुमको है शत बार नमन।।

सत्य, अहिंसा और प्रेम का, जग को नव संदेश दिया।
समाजवाद है महान धरा पर, ऐसा शुभ संदेश दिया।।
पौरूष से इतिहास बनाया, वैश्य जाति का कर चिन्तन।
तुमको है शत बार नमन, तुमको है शत बार नमन।।

होम कर दिया सारा जीवन, राष्ट्र-यज्ञ में समिधा बन।
मौन-तपस्वी, वीरव्रती, आलोक दे गये बन दिनकर।।
हम किरणें हैं तेरे तेज की, चमका देंगे धरा गगन।
तुमको है शत बार नमन, तुमको है शत बार नमन।।

pdfelement
Remove Watermark Now

मानवता का संदेश तुम्हारा, घर-घर में पहुँचायेंगे।
जय अग्रसेन, जय अग्रोहा, घर-घर में दीप जलायेंगे।।
जय वैश्य जाति, जय अग्रसेन, तुमको है शत बार नमन।
अग्रवंश के हे उद्गाता, तुमको है शत बार नमन।।
तुमको है शत बार नमन, तुमको है शत बार नमन।
अग्रवंश के हे उद्गाता, तुमको है शत बार नमन।।

अग्रसेन का काल

डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार ने अग्रसेन के काल के बारे में *'अग्रवैश्यवंशानुकीर्तनम्'* का सहारा लेकर उसी के आधार पर अग्रसेन के काल को प्रमाणित आधार प्रदान किया है। उन्होंने *"अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास"* के पृष्ठ 148 पर लिखा है, कि अग्रवैश्यवंशानुकीर्तनम के अनुसार राजा अग्रसेन ने कलियुग सम्वत् के 108 वें वर्ष तक राज्य किया तथा मार्ग शीर्ष की पूर्णिमा के दिन अपने पुत्र विभु को राजगद्दी सौंप कर वानप्रस्थ धारण करके वनों को चले गये। इससे यह स्वतः ही स्पष्ट है कि अग्रसेन का काल द्वापर युग की अन्तिम बेला तथा कलियुग का प्रारम्भिक काल था। यह वहीं काल था, जब कुरूवंश की शक्ति क्षीण हो रही थी तथा भारत में नये नये राज्यों का उदय हो रहा था। उसी समय अग्रसेन ने भी अपने नवीन राज्य की स्थापना की। डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार ने अग्रसेन के पूर्वजों को वैशालक वंश के समकालीन प्रमाणित करके, राजा अग्रसेन के काल को, ऐतिहासिक मान्यता प्रदान की। वैशालक वंश के राजा विशाल की आठ कन्याओं का विवाह धनपाल के आठ पुत्रों के साथ सम्पन्न हुआ था। अतः धनपाल को विशाल के समकक्ष मानते हुये उसकी इक्कीसवीं पीढ़ी में राजा अग्रसेन का समय कलियुग के प्रारम्भिक

काल में ही दर्शाया गया है, जो कि आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व का होता है। इसी आधार पर इस वर्ष महाराजा अग्रसेन जी की 5132 वीं जयन्ती मनायी गयी। अतः काल गणना के आधार पर अग्रसेन जी का जन्म ईस्वी सन् 3124 वर्ष पहले हुआ था। अर्थात आज से 5132 वर्ष पूर्व क्वार सुदी प्रथमा के दिन अग्रसेन जी का जन्म वल्लभ के घर पर हुआ था।

अग्रोहा

भारत के इतिहास में एक विशेष बात यह रही हैं कि बारम्बार बड़े साम्राज्य कायम हुए, फिर टूटे और टूटकर छोटे-छोटे राज्य कायम हुए। प्रारम्भ में श्री राम ने छोटे-छोटे राज्यों को एक करके सम्पूर्ण भारत वर्ष को एक विशाल साम्राज्य में आबद्ध कर दिया था, परन्तु कालान्तर में फिर छोटे-छोटे राज्यों का निर्माण हुआ। उन्हें श्री कृष्ण ने पाण्डवों के द्वारा एक सूत्र में आबद्ध किया। तदन्तर चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार, अशोक, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन आदि ने विशाल साम्राज्य स्थापित किये, परन्तु हर बार देश की एकता और अखण्डता छिन्न-भिन्न होती गई और छोटी-छोटी रियासतों में बँटकर रह गयीं। वे रियासतें बाद मे अपनी परम्परा से जुड़ती गयी, पनपती रहीं और बढ़ती गयीं। इसी कड़ी में अग्र गणराज्य का इतिहास भी इन्हीं विविधताओं की एक कहानी है। अग्रोहा का राज्य भी अग्र गणराज्य के राजा अग्रसेन से ठीक उसी प्रकार जुड़ा हुआ हैं, जिस प्रकार 'तैक्षिल' नामक राजा से तक्षशिला राज्य का नाम जुड़ा है।

अग्रोहा की खुदाई

सन् 1888 ईस्वी में पंजाब प्रान्त के पुरातत्व सर्वेक्षक सी0टी0 रॉजर्स ने अग्रोहा के टीलों की सर्वप्रथम खुदाई करवाई

pdfelement
Remove Watermark Now

थी। इस खुदाई में ईंट की दीवारें, फर्श तथा गलियारे मिले तथा बहुत बड़ी मात्रा में राख मिली। इससे यह स्पष्ट होता है, कि वहाँ पर भयंकर अग्निकांड हुआ था। इस खुदाई में कुछ मुद्राएँ, कुछ मूर्तियाँ, मनके आदि प्राप्त हुए। रॉजर्स की यह खुदाई केवल पन्द्रह दिन तक चली। रॉजर्स ने यह प्रमाणित कर दिया कि यह स्थान प्राचीन काल में अत्यन्त समृद्ध और वैभवशाली नगर के रूप में विद्यमान था। यहाँ के रहने वाले अग्रवाल वैश्य थे। जो कालान्तर में बिखर कर आसपास के क्षेत्रों में जा कर बस गये।

सन् 1938-39 में खुदाई का कार्य पुनः प्रारम्भ हुआ। यहाँ पर जो खाईयाँ खोदी गईं, उससे यह स्पष्ट होता है, कि टीले के नीचे एक सुनियोजित एवं समृद्धिशाली बस्ती थी जिसके मकान पक्की ईंटों से बने हुए थे। एक निवास दूसरे निवास से अलग था। इनके कमरों के फर्श प्रायः एक जैसे थे। घरों में घुसने के लिए दरवाजे थे तथा चौखट थी। यद्यपि दरवाजे एवं चौखट नहीं मिली लेकिन उनके कड़े, कील आदि मिली जिससे स्पष्ट है कि दरवाजे व चौखट लकड़ी के बनाये गये थे।

श्री एच0एल0 श्रीवास्तव ने अग्रोहा उत्खनन के सम्बन्ध में जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया, उसी के आधार पर डा0 राय गोविन्द चन्द ने अपने 'अग्रवाल शब्द' नामक लेख में लिखा हैं, कि यहाँ पर मिट्टी की मोहरें, जली हुई मूर्तियाँ, जला हुआ अनाज तथा जला हुआ हस्तलिखित ग्रन्थ एक सोने के मनके के साथ प्राप्त हुआ इससे यहाँ की समृद्धशाली संस्कृति का पता चलता है। यहाँ पर मिट्टी के बर्तनों में टोंटीदार करवे, हाँडी, कटोरे, लोटे, प्याले, तश्तरी, हण्डे, मिले। तांबे की वस्तुओं में एक तलवार, एक चम्मच, एक हाथ का कड़ा, कान के बुन्दे आदि मिले। प्राप्त तलवार से यह सिद्ध होता है कि वहाँ के नागरिक व्यापारी होने के साथ-साथ शस्त्र विद्या में भी निपुण थे तथा लड़ाकू यौद्धा भी थे।

"अग्रोहा से प्राप्त सामग्री की विवेचना"

ताँबे की चम्मच : चम्मच को कुछ लोग विदेशी देन मानते हैं, परन्तु अग्रोहा में प्राप्त ताँबे की चम्मच, इस बात का प्रमाण है कि हमारे यहाँ भारत वर्ष में चम्मच का प्रयोग प्राचीन काल से हो रहा था। इसका प्रयोग सामान निकालने हेतु किया जाता था।

ताँबे का कड़ा : हाथ में पहनने हेतु ताँबे का कड़ा प्रयोग किया जाता था। आज भी वैश्य परिवारों में कंगन के रूप में इसका प्रयोग करते हैं।

ताँबे की तलवार : ताँबे की तलवार से पता चलता है, कि वहाँ के निवासी लड़ाकू योद्धा भी थे तथा वे युद्ध में तलवारों का प्रयोग करते थे।

ताँबे के बुन्दे : आज भी वैश्य महिलाएँ कानों में सोने के आभूषण पहनती हैं। उस समय भी महिलाएं कान में तांबे के बुन्दे पहनती थीं।

चाँदी के सिक्के : पाँच चाँदी के सिक्के एक मिट्टी के बर्तन में गड़े हुए मिले तथा दूसरे बर्तन में इक्यावन चौकोर चाँदी के सिक्के मिले। जिन पर एक ओर "अग्रोदक अगाच्छ जनपदस" लिखा है तथा दूसरी ओर किसी में पेड़, किसी में वृषभ बना है।

वृषभ : सिक्कों में वृषभ बना है, जो वैश्यों का मुख्य व्यवसाय कृषि, गोपालन तथा व्यापार का प्रतीक था। व्यापार में बैलगाड़ी द्वारा ही यात्रा की जाती थी तथा सामान की ढुलाई होती थी।

चार रंग के सुन्दर बक्से : वे कपड़े आदि वस्तुएं रखने के काम आते थे।

pdfelement
Remove Watermark Now

गृहस्थी की सामग्री : खुदाई में चकला, बेलन, सिल और सिलबट्टा आदि मिले हैं जोकि गृहस्थी में काम आते थे।

मिट्टी के बर्तन : मिट्टी की हाँड़ी, कटोरी, लोटे, प्याले, तश्तरी मिली हैं जिनका गृहस्थी के कार्यों में उपयोग होता था।

मिट्टी की हाथदार धूपदानी : मिट्टी की धूपदानी प्राप्त हुई। इससे सिद्ध होता है कि भगवान की पूजा के लिये इसका प्रयोग किया जाता था। आज भी अगरबत्ती खोसने के लिए तरह-तरह की धूपदानी देखी जा सकती हैं।

पत्थर की मूर्तियाँ : गदा, चक्रधारी वराह की मूर्ति, जिसका बायाँ पैर कमल पर स्थित है तथा दूसरे पैर के नीचे उपासक दोनों हाथ उठाकर बैठा है। मूर्ति के चार हाथ हैं। चक्र व गदा ऊपर वाले हाथों में है, नीचे एक हाथ में स्त्रीरूपी पृथ्वी को उठाये हुए तथा दायाँ हाथ घुटनों के पास स्थित है। कन्धे में लम्बा हार हैं, नीचे अधोवस्त्र है।

दूसरी मूर्ति कुबेर की है जिसे उकड़ू बैठा हुआ दिखाया गया है। पेट बाहर निकला हुआ है। वैश्यों में कुबेर की पूजा आज भी होती है, क्योंकि कुबेर धन के राजा हैं। महिष मर्दिनी की चार हाथों वाली मूर्ति है जो महिष को मार रही है। दाहिना पैर महिष पर रखा हुआ है। वे बायें पैर पर खड़ी है।

महिष मर्दिनी की एक अन्य मूर्ति है जिसमें ऊपर के हाथों में शंख, चक्र हैं। नीचे बाँये हाथ में त्रिशूल, दाँये हाथ में महिष की पूँछ पकड़े हुए है। मस्तक पर मुकुट कानों में कुण्डल हैं। गले में हार है तथा मेखला स्पष्ट दिखाई देती है एवं हाथों में कंगन है। महिष मर्दिनी दुर्गा की पूजा शक्ति के रूप में की जाती थी।

वैश्य अग्रवाल जाति के पाँचवे धाम 'अग्रोहा' के ऐश्वर्य का वर्णन मैंने निम्नलिखित कविता के माध्यम से किया है। इसमें अग्रोहा की महानता, प्राचीनता, भव्यता के दर्शन होते हैं। इसे बार-बार दोहराने से अग्रोहा का चित्र तथा मन्दिर की मूर्तियों के सजीव दर्शन हमें होने लगते हैं, तथा अग्रोहा धाम की पावनता एवं पवित्रता के दर्शन होते हैं। अग्रोहा के पावन धाम में स्थित महालक्ष्मी तथा माँ सरस्वती एवं महाराजा अग्रसेन के विशाल मन्दिर का सजीव वर्णन यहाँ पर किया है। उसी सजीवता के दर्शन हम इसे बार-बार दोहराने से कर सकते हैं तथा हमें इस भव्य मन्दिर की महानता और भव्यता के दर्शन होते हैं।

ऐश्वर्य हमारा चमक रहा है.....

(रचयिता- शान्ति स्वरूप गुप्त)

चन्दन वन सा महक रहा है, अग्रोहा का पावन धाम।
ऐश्वर्य हमारा चमक रहा है, अग्रोहा में ललित-ललाम।

ऊँची-ऊँची पौढ़ी पर, मन्दिर भव्य विशाल बना।
संगमरमर के सुन्दर कोटे, लगता है छवि धाम घना।

सुभग-सलौने तीनों मन्दिर, जुड़े हुये तीनों हैं एक।
मन रोमांचित हो जाता है, उन तीनों की शोभा देख।

शोभा देती महालक्ष्मी, अनुपम छटा बिखेर रहीं।
दिव्य-सलौना रूप घना है, बीचों-बीच बिराज रहीं।

दाँयी ओर दादा श्री हैं, विराज रहे साकारमयी।
अनुपम तेज चमकता मुख पर, चेहरा है प्रतापमयी।

तलवार हाथ में ऐसी है, अद्भुत रूप दमकता है।
दूर-दृष्टि आँखों में बसती, दिव्य-स्वरूप चमकता है।

pdfelement
Remove Watermark Now

बायीं ओर सरस्वती जी की, शोभा निरख निराली है।
शुभ्र शान्त दिव्य लोचन हैं, शोभा सुभग-सलौनी है।

कल्पना साकार सी लगती है, सुन्दर रूप समाया है।
निरख-निरख मन्दिर की शोभा, मन सबका हर्षाया है।

चन्दन-वन सा महक रहा है, अग्रोहा का पावन धाम।
ऐश्वर्य हमारा चमक रहा है, अग्रोहा में ललित-ललाम।

"अग्रवाल" शब्द का अध्ययन

सबसे पहले भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने सन् 1871 में भविष्य पुराण से ली गई महालक्ष्मी व्रत कथा के आधार पर *"अग्रवाल जाति की उत्पत्ति"* नाम की पुस्तिका प्रकाशित की। इस छोटी-सी पुस्तिका में उन्होंने अग्रवाल शब्द की विवेचना करते हुए यह विचार व्यक्त किया है कि 'अग्रवाल' शब्द सम्भवतः 'अग्रबाल' शब्द का रूपान्तर है। इसका विश्लेषण करते हुए उन्होंने बताया कि यह शब्द अग्र + बाल है जिसका सीधा अर्थ है अग्रसेन के बालक अर्थात अग्रसेन के वंशज।

दूसरी धारणा जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर द्वारा प्रस्तुत की गई। उनके अनुसार 'अग्रवाल' शब्द 'अग्रपाल' से बिगड़कर बना है। उनके अनुसार पहले अग्रवाल क्षत्रिय थे तथा सेना के अग्रभाग में रहते थे जिसकी वजह से वे 'अग्रपाल' कहलाये यही शब्द वाद में 'अग्रवाल' कहलाया। लेकिन अग्रभागवत के अनुसार अग्रसेन सूर्यवंशी क्षत्रिय थे। अट्ठारहवें यज्ञ में पशु बलि से उन्हें घृणा हो गई। अतः उन्होंने क्षत्रिय धर्म छोड़कर वैश्य धर्म अपना लिया।

डॉ0 परमेश्वरी लाल गुप्त एवं कुछ अन्य विद्वानों ने यह मत व्यक्त किया है कि व्यवसाय विशेष में लगे समुदाय को वाल

प्रत्यय लगाकर व्यक्त करने के उदाहरण हैं जैसे पत्थर वाले, सलमे वाले, गोटे वाले, टोपी वाले, आदि इसी प्रकार सुगन्धित लकड़ियों के व्यापार करने वाले या यज्ञ सामग्री का व्यापार करने वाले अगरवाल कहलाये। उस समय यज्ञ का बहुत अधिक महत्व था। इसीलिए 'अगर' का व्यवसाय उन्नति पर रहा होगा और इन्होंने अपनी एक अलग श्रेणी बना ली होगी।

डॉ0 राय गोविन्द चन्द तथा अन्य विद्वानों के अनुसार स्थान विशेष पर रहने वालों से कुछ उपजातियाँ बनीं, जैसे चुरू जनपद से चुरूवाल, पोरबन्दर से पोरवाल, खण्डेला जनपद से खण्डेलवाल, वरन् के रहने वाले वरनवाल, मथुरा के माथुर कहलाये, उसी प्रकार 'अग्रोहा' के रहने वाले अगरवाल कहलाये। जो बाद में 'अग्रवाल' शब्द में परिवर्तित हो गया। डॉ0 सत्यकेतु विद्यालंकार तथा हिन्दी के सुप्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पं0 अम्बिका प्रसाद वाजपेयी भी इसी मत के हैं। उनके अनुसार जैसे बूढ़ा+आपा= बुढ़ापा हो जाता है उसी प्रकार अगरवाल से अग्रवाल हो जाता है। अगरवाल, अइरवाल, अयरवाल, सब एक ही विशलेषण के भिन्न-भिन्न रूप हैं। मूल शब्द 'अग्र' है तथा वाल इसमें प्रत्यय लगाकर शुद्ध शब्द 'अग्रवाल' बना है।

मैं यहाँ पर अग्रवालों की विशेषताओं एवं महत्व पर प्रकाश डालते हुए अपनी कविता आपके सामने रखने का प्रयास कर रहा हूँ।

अग्रवाल का अर्थ

(रचनाकार- शान्ति स्वरूप गुप्त)

अग्रवाल का अर्थ सुनहरा, हम सबको समझाते हैं।
इसमें वर्णित वर्णमाला का, ज्ञान सभी को करवाते हैं।

pdfelement
Remove Watermark Now